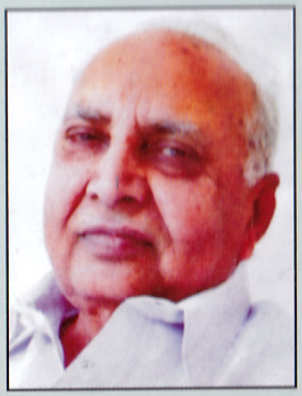

फणीश सिंह

जन्म 15 अगस्त 1941 को ग्राम नरेन्द्रपुर जिला सिवान (बिहार) में। 15 वर्ष की आयु में प्रयाग हिन्दी साहित्य सम्मेलन से 'विशारद' की परीक्षा उत्तीर्ण की। एम.ए. तथा बी. एल. करने के पश्चात अगस्त 1967 में पटना उच्च न्यायालय में वकालत आरंभ की। छात्र जीवन से ही हिंदी साहित्य से अनुराग। इनके लेख और यात्रा संस्मरण विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। 1983 में मास्को और 1986 में कोपेनहेगन विश्व-शान्ति सम्मेलन में शामिल हुए। भारत-सोवियत मैत्री संघ के प्रतिनिधि के रूप में तत्कालीन सोवियत संघ की पाँच बार यात्रा की। 2006 में ऐप्सो के सात सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल के साथ चीन की यात्रा की। वे अब तक छः महाद्विपों के 75 देशों की यात्रा कर चुके हैं। हाल में इन्होंने दक्षिण पूर्व एशिया पर अपने भ्रमण के पश्चात एक रोचक पुस्तक की रचना की है। गोर्की और प्रेमचंद के कृतित्व एवं जीवन दृष्टिकोणों की सादृष्यता पर शोध कार्य की प्रेरणा ली और इस विषय में पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। हिन्दी साहित्य एवं अन्य सामाजिक विषयों पर इनकी 20 रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी है। भारतीय सांस्कृतिक संबद्ध परिषद के सलाहकार समिति के सदस्य। ऐप्सो के बिहार राज्य परिषद के महासचिव। राज्य के अनेक सांस्कृतिक संस्थाओं के पदाधिकारी। कौमी एकता संदेश के संपादक।

अभिधा प्रकाशन
E-mail : abhidhapublication@gmail.com
Mob. : 08092037270

ISBN 978-93-87533-70-7

लू शुन की लोकप्रिय कहानियाँ ■ सम्पादक : फणीश सिंह

लू शुन की लोकप्रिय कहानियाँ

सम्पादक
फणीश सिंह

लू शुन की लोकप्रिय कहानियाँ

सम्पादक
फणीश सिंह

अभिधा प्रकाशन

ISBN 978-93-87533-70-7

प्रथम संस्करण
2019
सर्वाधिकार
फणीश सिंह

प्रकाशक
अभिधा प्रकाशन
रामदयालु नगर, मुजफ्फरपुर-842002

अक्षर-संयोजन
अजीत कुमार

मुद्रक
बी० के० ऑफसेट, दिल्ली - 32

मूल्य
500/- (पाँच सौ रुपये)

Lu-Shun Ki Lokpriye Kahaniyan
***By* Fanish Singh** **Rs. 500.00**

अनुक्रम

भूमिका **05**

एक पागल की डायरी 13
खुंग ई ची 24
औषधि 30
आ क्यू की सच्ची कहानी 40
नववर्ष की बलि 94
अतीत के लिए पछतावा 112
चंद्रलोक की ओर उड़ान 134
अनोखी तलवार 148
शरत की रात 169
मुसाफिर 172
स्वर्ग की मरम्मत 179
बाढ़ नियंत्रण 189
मोठ संग्रहण 207
दर्रे से विदाई 227
आक्रमण का विरोध 239
पुनर्जीवन 252

❐

भूमिका

लूशुन के बिखरे निबंध, कहानी-संग्रह, गद्य, कविताएँ और संस्मरण चीनी समाज का विश्वकोश है जिनमें जनता का जीवन और संघर्ष तथा बीसवीं शताब्दी के शुरू से लगातार चौथे दशक तक के महान ऐतिहासिक काल के अनुभव भरे पड़े हैं। उनमें साम्राज्यवाद और सामंतवाद के विरुद्ध, जनता के सभी उत्पीड़कों के विरुद्ध तथा चीन की प्रगति में बाधक सभी अँधेरी भ्रष्ट शक्तियों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा है। उनकी रचनाओं में हमें 1911 ई. की क्रांति के समय से लगातार 4 मई आन्दोलन और फिर पहले और दूसरे क्रांतिकारी गृहयुद्ध की स्थितियों का विस्तृत और गहरा चित्रण मिलता है।

लूशुन की कहानियों, निबंधों, गद्य-कविताओं और संस्मरणों का यह एक सामान्य परिचय है। लेखक बनने के बाद उन्होंने एक क्रांतिकारी जनवादी से एक कम्युनिस्ट में व्यक्तित्वांतरण किया। उन्होंने वृद्ध श्वान रुन थू, आ क्यू, श्यांगलिन की पत्नी जैसी मामूली लोगों को उनके दुर्भाग्य से छुटकारा दिलाने के लिए रास्ता तलाशा और उनके लिए लड़े। वह अपने उद्देश्य के प्रति समर्पित रहे और क्रांति के रास्ते पर बढ़ते रहे। जैसे ही उन्होंने उस रास्ते पर कदम रखा वह चीन की भावी मुक्ति की रोशनी में नहा गए। जनता की असीम रचनात्मक शक्ति ने लगातार उनकी प्रतिभा को नया जीवन दिया।

उन्होंने कहा कि 'वर्तमान समय में हमारे तीन प्रमुख उद्देश्य हैं—पहला अस्तित्व बनाए रखना, दूसरा भोजन और कपड़ा प्राप्त करना और तीसरा आगे बढ़ना। उनके बीच आने वाले हर बाधा को हटाना होगा चाहे वह प्राचीन हो या आधुनिक मानव-निर्मित हो या दैवी या प्राचीन विधि-विधान, गौरव-ग्रंथ, पवित्र भविष्य-दर्शी बहुमूल्य मूर्तियाँ, परम्परागत नुस्खे और गुप्त निदान कुछ भी क्यों न हों।" और अंततः उन्होंने घोषणा की कि "तथ्यों से मैंने सीखा है कि भविष्य निश्चय ही उभरते सर्वहारा के हाथ है।" इसलिए वे 'सर्वहारा क्रांति के उमड़ते

तूफान' का उपयोग अपने देश की धरती को साफ करने तथा 'जड़ निरर्थक और सड़े गले' को खत्म करने के लिए करना चाहते थे। वे सोवियत संघ के समर्थक थे और आशा करते थे कि चीन में भी एक दिन समाजवादी समाज स्थापित होगा। वे चाहते थे कि शोषित-पीड़ित लोग 'मनुष्य की तरह' रह सकें तथा पृथ्वी के तल से एकदम नई अनजानी समाज व्यवस्था पैदा हो सके जिससे कि करोड़ों लोग अपने भाग्य के खुद मालिक बन सकें।'

चीनी संस्कृति में उसकी जड़ें गहरी थीं। उन्होंने एक सुधारक की लगन से विदेशी साहित्य का विस्तार से अध्ययन किया था। उनके लेखन पर विदेशी, विशेषकर रूसी (उसमें भी गोगोल का विशेष रूप से) प्रभाव देखा जा सकता है। इस प्रकार उन्होंने चीनी साहित्य को आधुनिक विश्व साहित्य के प्रगतिशील रुझानों से जोड़ा। लूशुन ने जिस प्रकार विदेशी साहित्य के प्रभावों को ग्रहण कर चीन की राष्ट्रीय संस्कृति का अंग बना दिया, वह ऐतिहासिक महत्व का कार्य था। उन्होंने स्वयं अपने लेखन में उस कार्य को सम्पन्न किया। उदाहरण के लिए अपनी प्रारंभिक रचना 'एक पागल की डायरी' में उन्होंने लिखा, "मैंने इसको लिखते समय सौ या उससे अधिक विदेशी कहानियों का और अपने चिकित्सा ज्ञान का सहारा लिया है। लूशुन के विचारों की व्यापकता और गहराई उनकी कला में साथ-साथ दिखाई पड़ती है। उनमें चीनी समाज और संस्कृति की गहरी पड़ताल और जनता से गहरे संबंधों का प्रमाण मिलता है।

इन जनवादी लेखकों की मान्यता रही है कि पूँजीपति वर्ग केवल धन के लिए धन कमाता है। उसका न कोई सामाजिक उद्देश्य होता है, न सांस्कृतिक ध्येय। इन्होंने अपने समाज में व्याप्त इस अंधकार के विरुद्ध संघर्ष करते हुए प्रकाश की पक्षधरता स्वीकार की और आह्वान किया कि हर गंभीर, यथार्थवादी लेखक का दायित्व है कि प्रकाश की ओर अंधकार के विरुद्ध संघर्ष में शामिल हो जिससे मानवजाति के विरोध में खड़ी आदिम भयावहता, पाशविक दासता उद्घाटित हो और मनुष्य की अनिवार्य महत्ता एवं प्रकाश की कामना प्रकट हो सके। अंधकार के विरुद्ध प्रकाश के संघर्ष में हिस्सेदारी के सिलसिले में 1923 में प्रकाशित कहानी संग्रह 'द आऊट क्राय' में लूशुन ने लिखा है : "किसी देश की जनता को बदलने के लिए, उसका मनोबल ऊँचा करने के लिए, साहित्य से अधिक उत्तम माध्यम दूसरा नहीं हो सकता। लूशुन ने सभी प्रकार की रचनाओं में नितांत संघर्षशील चेतना की अभिव्यक्ति, सामाजिक अनुभवलब्ध विभिन्न द्वन्द्व-संघातों के रूपायन एवं शैल्पिक प्रतिफलन के माध्यम से किया है। उनकी यह संघर्षशील चेतना तर्क-निर्भर सुतीक्ष्ण अस्त्र-उपकरण की तरह प्रयुक्त हुई है

जिसके द्वारा उनके चिंतन-जगत में सघर्ष निरंतर जारी रहता है। उनके साहित्य में भावुकता का अतिरेक कहीं भी नहीं देखा जा सकता। माओत्से तुंग ने लूशुन के इसी वैशिष्ट्य को लक्ष्य कर कहा था कि, लूशुन प्रकृत यथार्थवादी, सदा-सर्वदा आक्रोषहीन एव नितान्त स्थिर संकल्प पुरुष थे।

लूशुन की कहानी 'दवाई' रुग्णसमाज का यथार्थवादी 'एक्सपोजर' है, क्रांति के सम्बन्ध में प्रतीकात्मक पैरेबुल है, सन्तान की असामयिक मृत्यु पर माता-पिता की प्रगाढ़ वेदना का मर्मस्पर्शी चित्र है, नियोजित क्रूरता की निर्मम कथा है। लूशुन ने इस कहानी में चीन की सामन्ती समाज-व्यवस्था की निश्चित मृत्यु की घोषणा की है। एक क्रान्तिकारी के रक्त में सनी हुई रोटी खा लेने के बाद भी 'हुआ' की मृत्यु प्रतीक के इसी पक्ष को उजागर करती है। 'शिया' की मृत्यु के माध्यम से लेखक ने तत्कालीन चीन में क्रान्तिकारी पक्ष को एक तरह से निराशापूर्ण स्थिति प्रदान कर दी है। फिर भी उसकी मृत्यु का प्रतिवाद जिस दृढ़ स्वर में किया गया है, वह अविस्मरणीय और प्रेरणादायक है।

'एक पागल की डायरी' शैलीगत वैशिष्ट्य तथा 'आइरनी' के प्रतिफलन की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण कहानी है। यद्यपि यह पाश्चात्य ढंग पर लिखी गयी कहानी मानी जाती है किन्तु इस कहानी का शिल्प तथा शीर्षक भी विख्यात रूसी कथाकार गोगोल की एक कहानी के आधार पर निर्मित मानी गयी हैं

'आः क्यू की सच्ची कहानी' लूशुन की ही नहीं, आधुनिक चीनी कथा-साहित्य की उपलब्धि मानी जाती है। यह एक विश्व-विख्यात कहानी है किन्तु कुछ समीक्षकों की राय में कलात्मक उपलब्धि की दृष्टि से इस कहानी की अत्यधिक प्रशंसा कर दी गयी है।

'कफन' के घीसू की तरह ही आः क्यू को भी बार-बार अपमानित-लांछित होना पड़ता है अर्थात् घीसू और आः क्यू सामंती व्यवस्था द्वारा लांछित-प्रताड़ित जीवन जीने को बाध्य कर दिये गये हैं किन्तु घीसू उस आत्मछल का शिकार नहीं है, क्यू जिसकी जकड़बन्दी की गिरफ्त में बुरी तरह फंसा है।

'खुंग ईची' कहानी सामंती-व्यवस्था में साधारण व्यक्ति की दयनीय स्थिति का मार्मिक चित्र है। कहानी का नायक किताबों की चोरी करता है। यह एक लिरिकल कहानी है, रेखाचित्र जैसी रचना। एक अंग्रेज समीक्षक ने इसी कहानी में हेमिंग्वे की--'निक आदम्स' सिरीज वाली कहानियों की-सी विशेषता देखी है। 'तलाक' कहानी में एक परित्यक्ता ग्रामीण युवती के अन्तर्द्वन्द्व का सजीव चित्र अंकित है। 'मेरा पुराना घर' में पुराने नियम-कानून पर आक्रमण किया गया है।

लूशुन की कहानियाँ समय की चाप से उपजी है। यथार्थ निरपेक्ष सौंदर्यशास्त्रीय प्रेरणा से उन्होंने कुछ भी नहीं लिखा। उन्होंने जो कुछ लिखा—सोद्देश्य, जनगण के पक्ष में, इस बात का प्रचार करने के लिए कि अपमानपूर्ण जीवन जीने से अच्छा मर जाना है। इस दिशा में मिली उनकी सफलता इस तथ्य को पुष्ट करती है कि किसी बड़े उद्देश्य का प्रचार करने वाली रचना ही महान होती है। लगभग अपनी समस्त रचनाओं में लू शुन ने इस साहित्यिक कार्यभार का जैसा कलात्मक निर्वाह किया है, वह विश्वसाहित्य में बेजोड़ माना जाता है। लू शुन की कहानी-कला के उस सर्वाधिक समृद्ध-पक्ष का, जिसे 'सटायर' का विद्रूप प्रवणता कहा जाता है, 'चंद्रलोक की उड़ान' कहानी में उत्तम प्रतिफल हुआ है। उनके इस वैशिष्ट्य की चर्चा करते हुए माओत्से तुंग ने कहा था, 'लू शुन की निर्मम लेखन ने तलवार की तरह समस्त घृण्य तत्वों का सिरच्छेद किया है' ध्यान में रखना चाहिए लू शुन की यह तलवार सीधी-सरल रेखा की तरह न थी—उसमें थी व्यंग्य की वक्रता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि इसी के वशीभूत उन्होंने अपने प्रथम कहानी संग्रह 'युद्ध का आह्वान' की भूमिका में लिखा कि 'इट इज क्लियर, देन, देट माई स्टोरिज फाल फार शॉर्ट ऑव बिंग वर्क्स आफ आर्ट।' इस अत्यधिक नम्रतापूर्ण कथन से भी यही प्रकट होता है कि लू शुन अपनी कहानियों को चीनी जनता को शिक्षित करने का एक सशक्त माध्यम ही मानते थे 'कलात्मक उपलब्धि' नहीं।

'औषधि' कहानी में एक युवक कहता है, 'इस विशाल राज्य के मालिक तो हम हैं। असली राजा तो प्रजा है। 'शराब की दुकान', 'मानव विद्वेषी', 'सुखी परिवार', 'तलाक' तथा 'खुंग ई ची' जैसी कहानियाँ तत्कालीन समाज में बुद्धिजीवियों के संघर्ष तथा आशाभंग के बोध को व्यक्त करती हैं। अब हम उनकी कहानी 'औषधि के अध्ययन के सिलसिले में उनकी कला, राजनीति समाज आदि। प्रश्नों के प्रति दृष्टिकोण को देखेंगे। लू शुन ने राजनीतिक संघर्ष के दौरान जो अनुभव प्राप्त किये थे उनका किसी भी कहानी में प्रत्यक्ष घटनागत वर्णन नहीं मिलता बल्कि कहानियों के पाठ से जो पहली प्रतिक्रिया होती है वह यह कि, राजनीतिक-सचेतन कहानीकार लूशुन कहानियों में 'राजनीतिक चिंतन' से अधिक 'सामाजिक चिंतन' के प्रति सचेष्ट थे। 'औषधि' कहानी की विषयवस्तु है सामंती चीनी समाज में प्रचलित वह वीभत्स कुसंस्कार कि, यदि यक्ष्मा के किसी रोगी को आदमी के खून में रोटी भिंगो कर खिला दी जाय तो वह यक्ष्मा के रोग से अवश्य मुक्त हो जायेगा।

'आक्यू की सच्ची कहानी' में परम्परागत शिल्प-शैली का निर्वाह एकदम

नहीं किया गया है। फिर भी इसे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति मिली। इसलिए कि इसके माध्यम से 'लू शुन ने कहानी की कला में एक सर्वथा नवीन पद्धति का समावेश किया। डा. सनयात सेन के नेतृत्व में 1911 में छिड़ वंश की निरंकुश राजसत्ता को उखाड़ फेंका गया था किन्तु सामंतवादी समाज में कोई बुनियादी परिवर्तन नहीं हुआ, साधारण मनुष्य की कोई भी आशा पूरी न हुई। राजा का पतन हुआ किन्तु उसकी जगह अनेक सामन्तों और युद्धसरदारों ने ले ली। साम्राज्यवादियों के साथ गठजोड़ से अन्यायपूर्ण शासन चलता रहा, धनिक और धनी होते रहे। 'आ क्यू की कहानी' लू शुन ने इसी पृष्ठभूमि में लिखी है। लू शुन की दृष्टि व्यक्ति की ओर न होकर सम्पूर्ण समाज और देश की ओर रही है, इसी कारण उनकी कहानी की कोई घटना अथवा चरित्र चीनी समाज की कोई किसी विशेष घटना या विशेष चरित्र नहीं।

लूशुन के निबंध उनकी साहित्य रचना का सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। लूशुन ने चीनी मिथकों और पुराकथाओं को भी विषयवस्तु बनाया है। 'स्वर्ग का सुधार' में उन्होंने प्राचीन चीनियों की अन्वेषण धर्मिता का चित्रण किया है। 'चन्द्रलोक की ओर उड़ान' निजंधरी धनुर्धर ई के बारे में है। 'बाढ़ को शांत करना' और 'आक्रमण के विरुद्ध' कहानियों में प्राचीन चीन के महान नायक और संत ऊ तथा मो त्जी को दिखाया गया है। 'अनोखी तलवार' में अत्याचारियों ने बदला लेने के लिए दमितों को विद्रोह करने के लिए उत्साहित किया गया है।

इस प्रकार लूशुन ने बुद्धिजीवियों और नौजवानों के आदर्शों के बारे मे निर्णय इस आधार पर किया कि उनका समस्त जनता के साथ संबंध क्या है। अतः यह कहा जा सकता है कि लूशुन के लेखन में उनका दृष्टिकोण और लक्ष्य उनकी कहानियों में साफ देखे जा सकते हैं। यही बात उनकी गद्य कविताओं, संस्मरणों तथा विशेषकर उनके निबंधों के बारे में भी सच है। उनके संस्मरणों में सबसे प्रभावशाली हिस्सा वह है जब वे किसानों और हथकरघा मजदूरों की खुशमिजाजी, बुद्धिमानी और जीवन के प्रति लगाव का और उनके द्वारा रची गयी लोक कला का सुंदर वर्णन करते हैं। 'जंगल घास' में संकलित अधिकांश कविताओं में साम्राज्यवादियों तथा उत्तरी सेनाध्यक्ष सामंतों के विरुद्ध संघर्ष के दौरान लू शुन की भावनाओं का वर्णन है।

एक लड़ाकू और एक कलाकार के दृष्टिकोण से लूशुन ने समझाया कि उन्होंने क्यों निबंध के रूप को अपनाया। उन्होंने कहा "कुछ लोगों ने मुझे संक्षिप्त आलोचनात्मक निबंध न लिखने के लिए कहा। मैं उनकी इस चिंता के लिए

आभारी हूं और मैं जानता हूँ कि कहानियाँ लिखना महत्वपूर्ण है। लेकिन एक समय ऐसा आया जब मुझे विशेष प्रकार से लिखना पड़ा। मैं समझता हूँ कि अगर कला के राजमहल में इस तरह के विधि-निषेध हैं तो मुझे उसमें नहीं घुसना चाहिए। लेकिन रेगिस्तान में खड़े होकर आँधियों को देखना, खुश होने पर हँस पड़ना और दुःख पर चिल्लाना तथा गुस्से में आकर गाली बकना मुझे अच्छा लगता है। रेत और पत्थरों से मुझे खरोचें आ सकती हैं और मेरा शरीर लहूलुहान और क्षत-विक्षत हो सकता है। लेकिन समय-समय पर मैं जमे हुए खून और खरोचों को सहला तो सकता हूँ। और यह उन चीनी साहित्यकारों के पद-चिन्हों पर चलने से कम रुचिकर नहीं है जो शेक्सपियर से निकटता बनाने के नाम पर विदेशी डबलरोटी और मक्खन खाते हैं।"

उन्होंने इतने विविध विषयों को इसलिए उठाया क्योंकि वे चीनी जनता को नई जिंदगी का रास्ता दिखाना चाहते थे। वे घट रही जनवादी क्रांति और आने वाती समाजवादी क्रांति का रास्ता दिखाना चाहते थे। लूशुन ने दिखाया कि शासकों व विदेशी आक्रमणकारियों के लिए अनंत काल से चीनी इतिहास 'मानव भक्षी उत्सवों से भरा पड़ा है। जनता की नियति यही रही है कि उत्पीड़कों ने उसका 'भक्षण' किया है।

एक महान निबंधकार की अपनी इस भिन्न शैली के कारण लूशुन चीन की सांस्कृतिक क्रांति में एक प्रसिद्ध विवादी और महानतम प्रतिभा के लेखक बन गए जिन्होंने अपने से पूर्व के सभी लोगों को पीछे छोड़ दिया। इस पूरे काल में लुशून नए साहित्य के केन्द्रीय व्यक्तित्व और प्रमुख प्रतिनिधि रहे। उन्होंने आधुनिक चीनी लेखकों को जो यथार्थवादी दृष्टिकोण और कला के सिद्धान्त दिए वे पुराने के अस्वीकार और नए के स्वीकार के लिए तथा लेखन में नए सौन्दर्य प्रतिमानों की स्थापना में कारगर हथियार थे। उनका अपना लेखन और बाद के वर्षों में उनके द्वारा लिखी समाजवादी यथार्थवादी साहित्य आधुनिक चीनी लेखन में एक नए युग के विकास का सूचक है।

लूशुन की शैली सबसे भिन्न उनकी विशेष अपनी होने के साथ-साथ खास चीनी भी हैं वे चीनी साहित्य में नवजागरण के अग्रदूत हैं। और क्योंकि उन्होंने अपनी नवीनता को लोकप्रिय माँगों से जोड़ा इसएिल वे चीनी साहित्य की महान गौरवशाली परम्परा के समर्थक और सच्चे उत्तराधिकारी थे। लू शुन की रुचि और शैली में हम चीनी श्रमिक जनता की बुद्धिमत्ता, रुचि और शैली को साकार देख सकते हैं।

लूशुन के पास विशाल शब्द-भंडार है। उन्होंने भाषा पर बहुत ध्यान

दिया। उन्होंने कहा, "मैं किसी चीज को लिखकर उसे कई बार पढ़ता हूँ। अगर कोई वाक्य मेरे कानों को खटका तो मैं उसे सहज बनाने के लिए कुछ शब्द जोड़ या काट देता हूँ। जब मुझे उपयुक्त बोलचाल के शब्द नहीं मिले तो मैंने इस उम्मीद से क्लासिकल का सहारा लिया कि पाठक उन्हें समझेंगे। मैंने स्वेच्छाचारी ढंग से ऐसे मुहावरों का कभी प्रयोग नहीं किया जिन्हें केवल मैं ही, और कभी-कभी तो मैं भी नहीं, समझ सकता। उनकी भाषा का मुख्य स्रोत था लोगों की जीवित जबान, उनके मुहावरे, उनकी बातचीत तथा पुरानी पुस्तकों और क्लासिक संदर्भों से कुछ सूक्तियाँ। कभी-कभी वे विदेशी 'शब्दों या वाक्यगठन का भी उपयोग करते हैं। लू शुन के लेखन ने चीनी भाषा को समृद्ध किया और उसमें संक्षिप्तता, शक्ति, विविधता तथा व्यंग्य के गुणों को विकसित किया।"

लूशुंन का व्यंग्य समाज के अँधेरे पक्ष को संक्षेप में उघाड़कर सामने रख देता है। उन्होंने कहा, "व्यंग्य की जान सच्चाई है। सच्चाई के बिना व्यंग्य हो नहीं सकता। और उन्होंने इन विचारों को व्यवहार में लागू किया। उनके व्यंग्य अत्यंत शक्तिशाली और मारक हैं क्योंकि उनमें यथार्थ का सच्चा प्रतिबिंब है। उनके 'भाले और तलवार' की कार्य नीति के साथ मिलकर उनके ये व्यंग्य शत्रु पर प्रहार करने की शक्ति, बुराई की शक्तियों को बेपर्द करने के साहस को और पैना और तेज कर देते हैं। शत्रु चाहे किसी भी वेश में क्यों न हो, वह लू शुन के भाले या सर्जरी के चाकू से बच नहीं सकता। वे बड़ी ही सहजता से आदमी के दिल को खोल देते हैं। लू शुन का व्यंग्य ठंडा दिखते हुए भी भावनाओं से भरा है। वह तीखा भी है और मजबूत भी। अंत में विश्व साहित्य में एक लेखक के रूप में लू शुन की विशेषता है चीनी श्रमिक जनता के साथ उनका गहरा संबंध और उनके लेखन में चीनी वैशिष्ट्य की गहरी पकड़।

हमें प्रसन्नता है कि लू शुन की कहानियाँ प्रगतिशील पाठकों को आकर्षित करेगी और उनमें समाज के उत्थान के लिए एक नया जोश भरेगी।

1, नीतिबाग, पटना-800014

—फणीश सिंह

□

एक पागल की डायरी

दो भाई थे। उनका नाम बताना यहाँ जरूरी नहीं है। दोनों ही हाई स्कूल में मेरे अच्छे दोस्त थे। परन्तु कई वर्षों तक मुलाकात न होने से संपर्क टूट गया। कुछ समय पहले सुना कि उनमें से एक बहुत बीमार है। मैं अपने पुराने घर को वापस लौट रहा था तो सोचा कि रास्ते में उन लोगों से मिलता चलूँ। लेकिन वहाँ एक ही भाई से मुलाकात हुई। उसने बताया कि छोटा भाई बीमार था।

उसने कहा, "मुझे बेहद खुशी हुई है कि तुम इतनी दूर से हमसे मिलने के लिए आए। अब छोटे भाई की तबीयत ठीक है। उसे अन्य जगह सरकारी नौकरी मिल गई है, वहीं गया है।" उसने हँसते-हँसते दो जिल्दों में अपने भाई की डायरी मुझे दिखाई और कहा कि इनको पढ़कर भाई की बीमारी को समझा जा सकता है। तुम पुराने मित्र हो इसलिए तुम्हें देने में कोई हर्ज नहीं है। मैंने डायरी ले ली और उसे पूरा पढ़ गया। समझ गया कि वह एक मनोरोग से पीड़ित था। लिखावट बहुत ही अटपटी और बेतरतीब थी और उसमें कुछ बेसिरपैर की बातें भी थीं। डायरी में तारीखें भी नहीं थीं केवल स्याही के रंग और लिखावट के फर्क से अनुमान लगाया जा सकता था कि वह अलग-अलग समय में लिखी गई होगी। उसके कुछ हिस्सों में एक तरतीब भी थी। चिकित्सा-विज्ञान में शोध की दृष्टि से उपयोगी हो सकने वाले एक हिस्से को मैंने नकल कर लिया। डायरी की बेतुकी बातों तक को मैंने बदला नहीं है बस कुछ नाम बदल दिए हैं जो उन देहाती लोगों के हैं जिन्हें कोई जानता-पहचानता तक नहीं। जहाँ तक शीर्षक का सवाल है वह ठीक हो जाने पर स्वयं लेखक का ही दिया हुआ है। मैंने उसे नहीं बदला।

1

आज की रात चाँद बहुत उजला है।

मैंने पिछले तीन वर्षों में चाँद को नहीं देखा। इसलिए आज जब उसे

देखा तो मन में उमंग लहराने लगी। लगता है पिछले तीन वर्ष अंधकार में ही बिता दिए। अब मुझे चौकस रहना होगा। कुछ गड़बड़ जरूर है वरना चाओ परिवार का कुत्ता मुझे दो बार क्यों घूरता!

मेरा डर अकारण नहीं है।

2

आज की रात आसमान में चाँद का कोई नामोनिशान नहीं। वह अमंगल सूचक है। आज सुबह जब मैं सतर्कता से बाहर निकला तो चाओ साहब ने मुझे ऐसे देखा मानो मुझे देखकर डर गए हों, मानों मेरा खून करना चाहते हों। यहाँ सात-आठ दूसरे लोग भी थे जो मेरे बारे में फुसफुसाकर बात कर रहे थे जैसे डर रहे हों कि मैं उन्हें देख न लूँ। जितने लोग मिले सबका यही हाल था। उनमें जो सबसे डरावना था वह मुझे देखते ही हँसने लगा। मैं सिर से पाँव तक काँप उठा। समझ गया कि इन लोगों ने सब तैयारी कर ली है।

फिर भी मैं बिना डरे अपनी राह चलता गया। मेरे आगे चलते बच्चे भी मेरी ही चर्चा कर रहे थे। उनकी आँखों के भाव भी चाओ साहब की तरह थे और उनके चेहरे भय से जर्द पड़ गए थे। सोचा, मैंने इन बच्चों का क्या बिगाड़ा है जो मुझसे ऐसे पेश आ रहे हैं! मुझसे रहा नहीं गया और पूछ बैठा, "मुझे बताओ तो।" लेकिन वे सब भाग गए।

समझ में नहीं आता कि चाओ साहब मुझसे क्यों नाराज हैं या सड़क पर मिले दूसरे लोग मुझसे क्यों खफा हैं। मुझे ऐसी कोई बात नहीं याद आ रही बस यही कि बीस वर्ष पहले ऊ चिड (ऊ चिड का अर्थ है 'प्राचीन'। लू शुन का संकेत यहाँ चीन में सामंती उत्पीड़न के लंबे इतिहास की ओर है) साहब की पुरानी बही पर मेरा पैर पड़ गया था और वे बहुत नाराज हो गए थे। लेकिन चाओ साहब तो उन्हें जानते तक नहीं! लेकिन हो सकता है उन्होंने किसी दूसरे से इसके बारे में सुन लिया हो और बदला लेने की ठान ली हो। वे सड़क चलते लोगों को मेरे खिलाफ भड़का रहे हों! लेकिन इन बच्चों को इस सबसे क्या मतलब! ये लोग तो उस घटना के समय पैदा भी नहीं हुए थे। फिर ये मुझे ऐसे घूरकर क्यों देख रहे थे मानो मुझसे डरे हों ओर मेरा खून कर देना चाहते हों! इससे मुझे घबराहट हो रही है। अजब परेशानी है।

मैं सब जानता हूँ। इनके माँ-बाप ने इन्हें यह सब सिखाया होगा।

3

मैं रात में सो नहीं सकता। बिना ठीक से सोचे-विचारे ये सब बातें समझ में नहीं आ सकतीं।

इन लोगों को देखो—इनमें से कई को मजिस्ट्रेट बंद करवा चुका है, कई स्थानीय भद्रजनों से थप्पड़ खा चुके हैं, कइयों की बीवियों को सरकारी अमले उठा ले गए, कइयों के माँ-बाप साहूकारों से परेशान होकर आत्महत्या कर चुके हैं। लेकिन यह सब भुगतकर भी वे ऐसे भयभीत और खूनी दिखाई नहीं दिए जितना कल दिखे।

और सबसे विचित्र तो वह औरत थी जो गली में अपने लड़के को पीटते हुए चीख रही थी, "बदमाश कहीं के! तूने मुझे इतना दुखी किया है कि मैं तुझे कच्चा खा जाऊँगी।" लेकिन इस बीच वह मुझे ही देखे जा रही थी। मैं अपनी घबराहट नहीं छिपा सका और भाग खड़ा हुआ। तब लंबे-लंबे दाँतों, क्रूर चेहरे वाले लोग मेरी खिल्ली उड़ाने लगे। बुजुर्ग छन मुझे पकड़कर घर ले आए।

वे जब मुझे पकड़कर घर लाए तो घर के लोगों ने ऐसा दिखाया जैसे मुझे पहचानते ही न हों। उनकी आँखों में भी वही भाव था जो बाकी सबकी में था। जब मैं पढ़ने के कमरे में गया तो उन्होंने बाहर से कुंडी बंद कर दी जैसे मुर्गी या बत्तख को दरबे में बंद कर दिया गया हो। इससे मैं और परेशान हो गया।

कुछ दिन पहले की बात है भेड़िया शिशु गाँव से हमारा एक आसामी फसल की बरबादी की खबर देने आया था। उसने मेरे बड़े भाई को बताया कि उनके गाँव में लोगों ने एक गुंडे को घेरकर मार डाला। उसके बाद कुछ लोगों ने उसका दिल और कलेजा निकाल लिया, उन्हें तेल में तला और खा गए जैसे इससे उनकी बहादुरी बढ़ जाएगी। मैंने जब बीच में टोका तो भैया और आसामी दोनों मुझे घूरने लगे। वे भी उसी तरह मुझे देख रहे थे जैसे सड़क पर लोग देख रहे थे।

यह सोचकर ही मैं एड़ी से चोटी तक सिहर उठा।

ये लोग आदमखोर हैं, ये मुझे भी खा सकते हैं।

याद आया, "तुझे कच्चा चबा जाऊँगी" कहती औरत, क्रूर चेहरों पर लंबे दाँतों वाले हँसते लोग और आसामी द्वारा सुनाई गई वह कहानी। ये सब गुप्त संकेत हैं। अब मैं समझा इन लोगों की बातों में कितना विष भरा है, उनकी हँसी कितनी मारक है। उनके दाँत कितने सफेद और चमकीले हैं। ये इन्हीं दाँतों से आदमियों को खाते हैं।

मैं जानता हूँ कि मैं कोई बुरा आदमी नहीं हूँ। लेकिन जब से ऊ साहब की बही पर मेरा पैर पड़ा है तब से लोग मेरे पीछे पड़ गए हैं। ये मुझसे कुछ छिपा रहे हैं। जब ये किसी से नाराज होते हैं तो उसे बदमाश समझ लेते हैं। मुझे

याद है जब बड़े भैया मुझे लिखना सिखाते थे तो किसी भी भले-से-भले आदमी को मैं बुरा सिद्ध कर देता तो उन्हें वह बहुत पसंद आता। यदि मैं बुरे लोगों के दोषों पर पर्दा डाल देता तो वे कहते, "बहुत अच्छा, यह तुम्हारी मौलिकता है।" मैं उनके मन के रहस्यों को कैसे समझ सकता हूँ—खासकर जब ये लोग किसी को खा जाने की बात सोच रहे हों!

किसी भी चीज़ को समझने के लिए ठीक से सोच-विचार करना जरूरी है। जहाँ तक याद पड़ता है प्राचीन काल में लोग मनुष्यों को खा जाते थे। लेकिन इस बारे में मैं बहुत आश्वस्त नहीं हूँ। इस बारे में इतिहास की किताबों में खोज करने पर भी कोई क्रमबद्ध जानकारी नहीं मिली। प्रत्येक पृष्ठ पर 'सद्गुण और सदाचार' शब्द मिलते हैं। क्योंकि मुझे नींद नहीं आ रही थी इसलिए आधी रात तक पंक्तियों के बीच में अर्थ दीखने लगे। सारी पुस्तक केवल इन दो शब्दों से भरी थी—"लोगों को खा जाओ।"

पुस्तक में लिखे ये सारे शब्द, आसामी की सारी बातें मेरी ओर गूढ़ हँसी से घूर रही है।

मैं भी तो मनुष्य हूँ ओर ये लोग मुझे खा जाना चाहते हैं।

4

सुबह मैं कुछ देर तक चुपचाप बैठा रहा। बूढ़ा छन खाना लेकर आया—एक कटोरे में सब्जी, दूसरे में भाप से पकाई मछली। मछली की आँखें सफेद और पथरीली थीं और उसका मुँह आदमखोर लोगों के मुँह की तरह खुला था। कुछ ग्रास खाने के बाद मुझे यह मालूम नहीं चला कि वह मछली का माँस था या मनुष्य का। इसलिए मैंने सब उगल डाला।

मैंने कहा, "छन दादा, भैया से कहो कि कोठरी में मेरा दम घुट रहा है, मैं बाहर बगीचे में टहलना चाहता हूँ।" बूढ़ा छन चुपचाप बाहर चला गया और तुरंत वापस आकर उसने दरवाजा खोल दिया।

मैं बिना उठे चुपचाप देखता रहा कि अब वे क्या करेंगे। मुझे विश्वास था कि वे मुझे बाहर नहीं जाने देंगे। इतने में बड़े भैया भी एक बूढ़े आदमी को साथ लिए धीमे कदमों से आए। बूढ़े की आँखों में कातिलाना चमक थी। कहीं मैं देख न लूँ इसलिए उसने गर्दन झुका ली लेकिन चश्मे के भीतर से कनखियों से मेरी ओर देख लेता था।

"आज तो तुम्हारी तबीयत बहुत अच्छी लग रही है।" भैया ने कहा।

"हाँ", मैंने कहा।

"मैंने तुम्हारी जाँच कराने के लिए ही हो साहब को आज यहाँ बुलाया

है।

"बहुत अच्छा", मैंने कहा। लेकिन मैं समझ गया कि हकीम के वेष में यह बुड्ढा असल में जल्लाद है। मेरी नब्ज देखने के बहाने वह मेरे माँस का अनुमान लगा रहा था क्योंकि उसमें इसका भी हिस्सा होगा। इस पर भी मैं डरा नहीं। हालाँकि मैं आदमखोर नहीं हूँ लेकिन मुझमें उनसे अधिक साहस है। मैंने यह सोचकर अपनी दोनों कलाइयाँ आगे बढ़ा दीं कि देखूँ क्या करता है। बूढ़ा चौकी पर बैठ गया और आँखें मूँद मेरी नब्ज देखता रहा, कुछ देर मौन रहा बिना हिले-डुले। फिर अपनी धूर्त आँखें खोलकर बोला, "अपनी कल्पना को काबू में रखो, कुछ दिन तक आराम करो, तुम ठीक हो जाओगे।"

अपनी कल्पना को काबू में रखो! कुछ दिन तक आराम करो! यानी मैं मोटा हो जाऊँ जिससे उन्हें ज्यादा माँस खाने को मिले। लेकिन इससे मेरा क्या भला होगा! इसे ही 'ठीक' होना कहते हैं। मैं समझ गया, ये लोगों को खाना भी चाहते हैं लेकिन खुलेआम ऐसा नहीं कर पा रहे इसलिए भलमनसाहत का ढोंग भी रच रहे हैं। यह सोचकर ही हँसी के मारे मेरे पेट में बल पड़ गए। मेरी हँसी नहीं रुक सकी और मैं ठहाका लगाकर हँस पड़ा। बड़ा मजा आया। मैं जानता था कि इसी हँसी में निर्भीकता और आत्मविश्वास भरे थे। भैया और बूढ़े हकीम के चेहरे पीले पड़ गए। वे लोग मेरी निर्भीकता और आत्मविश्वास देखकर डर गए।

लेकिन मेरा साहस उन्हें मुझे खा जाने को और आतुर बना रहा है जिससे कि उनमें भी वह साहस पैदा हो जाए। बूढ़ा हकीम दरवाजे से बाहर जाते-जाते भैया के कान में कहता गया, "इसे तुरंत खाना है।" भैया ने सिर हिलाकर हामी भरी। तो तुम भी इस साजिश में शामिल हो! इस रहस्योद्घाटन से मुझे धक्का तो लगा लेकिन मैं जानता था कि यह होना ही था। मेरा अपना भाई मुझे खा डालने के षड्यंत्र में शामिल है।

मेरा अपना ही बड़ा भाई आदमखोर है।

मैं एक आदमखोर का छोटा भाई हूँ।

मैं, जो दूसरे लोगों द्वारा खाया जाने वाला हूँ, एक आदमखोर का छोटा भाई हूँ।

5

पिछले कुछ दिनों से एक दूसरी बात मन में उठ रही है। हो सकता है हकीम के वेष में वह बूढ़ा जल्लाद न हो, हकीम ही हो। लेकिन वह आदमखोर तो है ही। वैद्यों के पुरखे ली शि चन (एक प्रसिद्ध चीनी औषधि-वैज्ञानिक

(1518-1593)। उसकी पुस्तक 'कनछाओखुंग' में मानव माँस के औषधि के रूप में प्रयोग का कोई जिक्र नहीं है। यह पागल की ही एक कल्पना थी) की जड़ी-बूटियों की पोथी में साफ लिखा है नर-माँस को उबालकर खाया जा सकता है। तो फिर वह वैद्य कैसे कह सकता है कि वह आदमखोर नहीं है।

जहाँ तक बड़े भैया का सवाल है उनके आदमखोर होने का तो एक और प्रमाण मेरे पास है। वे जब मुझे पढ़ाते थे तो उन्होंने स्वयं मुझे बताया कि, "लोग अपने बेटों को खाने के लिए बदल लेते थे।' (एक प्राचीन चीनी इतिहास-ग्रंथ 'च्यो ह्वान' में लिखा है कि ई.पू. 488 के घेरे में घिरे हुए लोगों में ऐसी भुखमरी फैली की उन्होंने "अपने बेटों को खाने के लिए बदल लिया।") और एक बदमाश के बारे में उन्होंने कहा था कि उसे मार डालना ही काफी नहीं होगा बल्कि "उसका गोश्त खा डालना चाहिए, उसकी चमड़ी का बिछौना बना लेना चाहिए।" मैं उस समय छोटा था। यह सुनकर देर तक मेरा दिल धड़कता रहा। जब भेड़िया शिशु गाँव के हमारे आसामी ने एक बदमाश का कलेजा निकालकर खा जाने की बात कही थी तो भैया को कोई आश्चर्य नहीं हुआ, वे चुपचाप सिर हिलाते रहे। यह साफ है कि वे पहले जैसे ही खूँखार हैं। चूँकि "बेटों को खाने के लिए बदल लेना" संभव है, तो किसी भी चीज को बदला जा सकता है और किसी को भी खाया जा सकता है। उन दिनों भैया की इन व्याख्याओं को मैं सुन लेता था, उनके बारे में सोचता नहीं था। लेकिन अब मैं खूब समझता हूँ कि ऐसी बातें करते समय उनके मुँह में नर-माँस का स्वाद भर आता होगा और उनका मन मनुष्य को खाने के लिए व्याकुल हो उठता होगा।

6

घना अँधेरा है। मुझे नहीं पता दिन है कि रात। चाओ परिवार का कुत्ता फिर भौंक रहा है।

शेर की तरह खूँखार, खरगोश की तरह डरपोक, लोमड़ी की तरह चालाक...

7

मैं उनके तरीकों को जानता हूँ। वे सीधे-सीधे नहीं मारेंगे। वे इसके परिणामों से भयभीत हैं। इसलिए इन्होंने षड्यंत्र का जाल ऐसे फैलाया है कि मैं आत्महत्या के लिए विवश हो जाऊँ। पिछले कुछ दिनों से गली के पुरुषों और स्त्रियों का बरताव और बड़े भैया के रग-ढंग से यह साफ जाहिर हैं। ये लोग तो चाहेंगे कि आदमी अपनी पेटी को शहतीर से बाँध उसमें झूल जाए। तब उन पर खून का आरोप भी नहीं लगेगा और उनकी तमन्ना भी पूरी हो जाएगी। इसी की

कल्पना करके ये खुशी से फूले नहीं समा रहे। चाहे कोई व्यक्ति डर और चिंता से मर जाय और उसमें रक्त-माँस कुछ भी न बचे लेकिन ये लोग उसे भी खा डालेंगे।

ये लोग केवल मुरदार माँस खाते हैं। मैंने ऐसे ही एक घिनौने जानवर 'लकड़बग्घा' के बारे में कहीं पढ़ा है जो मुरदार माँस ही खाता है। वह मोटी-से-मोटी हड्डी को भी दाँत से चबाकर निगल जाता है। इसकी कल्पना से ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। लकडबग्घा भेड़िये की जाति का है और भेड़िया कुत्ते की जाति का। इससे साफ है कि वह भी इस षड्यंत्र में शामिल है। बूढ़े हकीम की आँखें झुकी हुई थीं लेकिन मैं समझ गया।

लेकिन सबसे दुःखद तो मेरे भाई का इसमें शामिल होना है। आखिर वह भी आदमी है, उसे डरना चाहिए। क्यों वह मुझे खा जाने के लिए दूसरों के साथ मिला है! क्या आदत से लोग इतने मजबूर हो जाते हैं कि बुरे-भले में फर्क हीं नहीं कर पाते! या बड़े भैया इतने क्रूर-हृदय हैं कि जानबूझकर अपराध कर रहे हैं।

सबसे पहले मैं अपने आदमखोर भाई का ही भंडाफोड़ करूँगा और सबसे पहले उसे ही यह पाप करने से रोकूँगा।

8

असल में ये बातें बहुत पहले ही उनकी समझ में आ जानी चाहिए थीं!

आचानक कोई भीतर आया। वह बीस-एक वर्ष का नौजवान होगा लेकिन मैं उसका चेहरा ठीक से नहीं देख पाया। वह मुस्करा रहा था लेकिन जब उसने मुझे नमस्कार किया तो उसकी मुस्कान बनावटी-सी लगी। मैंने उससे पूछा, "क्या नर-मांस खाना उचित है ?"

वह मुस्कराता हुआ बोला, "जब कहीं अकाल नहीं पड़ा है तो कोई नर-मांस क्यों खाएगा ?"

मैं एकदम समझ गया कि यह भी उन्हीं में से है। लेकिन मैंने साहस करके अपना सवाल फिर दोहरा दिया :

"क्या यह उचित है ?"

"आखिर तुम ऐसा सवाल क्यों पूछ रहे हो ? तुम वास्तव में ही.... मजाकिया हो.... आज मौसम सुहावना है।"

"ठीक है, मौसम अच्छा है, चाँदनी भी खूब उजली है। पर तुम मेरी बात का जवाब दो, क्या यह उचित है ?"

वह परेशान होकर बोला, "नहीं...।"

"नहीं! तो फिर लोग ऐसा क्यों करते हैं ?"

"तुम्हारा मतलब क्या है ?"

"मेरा मतलब! भेड़िया-शिशु गाँव में लोग मनुष्यों को खा रहे हैं। तुम सारी किताबों में देख लो ताजा लाल अक्षरों में यही लिखा पड़ा है।"

उसके भाव बदल गए। उसका चेहरा पीला पड़ गया। मुझे घूरते हुए वह बोला, "हो सकता है, यह सदा से ही होता आया है।"

"सदा से होता आया है, क्या इसलिए उचित है ?"

"मैं इस बारे में तुमसे बहस नहीं करना चाहता। तुम्हें भी इस पचड़े में नहीं पड़ना चाहिए। ये फिजूल की बातें हैं।"

मैं उछल पड़ा और आँखें फाड़कर देखने लगा। वह नौजवान गायक हो गया था। मैं पसीने से तर हो गया। नौजवान की उम्र मेरे भाई से बहुत कम थी, लेकिन फिर भी उनके साथ था। उसके माँ-बाप ने उसे यह सब सिखाया होगा और मुझे डर है कि उसने अपने बेटे को भी यह सिखा दिया होगा। तभी तो वे जरा-जरा से छोकरे मुझे यों घूर-घूरकर देखते हैं।

9

मनुष्यों को खा जाने का लालच लेकिन एक साथ ही स्वंय को खाए जाने का भय। सब एक-दूसरे को गहरी आशंका से देखते हैं...

यदि वे इन शंकाओं और भयों से मुक्त हो जाएँ तो मजे में काम पर जा सकते हैं, घूम सकते हैं और आराम से सो सकते हैं। यह कोई मुश्किल बात तो नहीं। लेकिन ये एक-दूसरे को ऐसा अच्छा कदम उठाने नहीं देते और बाप-बेटे, पति-पत्नी, भाई-भाई, मित्र, गुरु-शिष्य, एक-दूसरे के जानी दुश्मन बन गए हैं और एक-दूसरे को खा जाने के षड्यंत्र में शामिल हैं।

10

आज सुबह मैं बड़े भैया से मिलने गया। वे ड्योढ़ी के सामने खड़े आकाश की ओर ताक रहे थे। मैं उनके पीछे दरवाजे और उनके बीच खड़ा हो गया और बहुत ही शांत और विनम्र स्वर में बोला—

"भैया, मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूँ।"

"कहो, क्या है?" उन्होंने मेरी ओर मुड़ते हुए सिर हिलाया।

"कोई खास बात तो नहीं है, पर मैं कह नहीं पा रहा। भैया, शायद सभी आदमी लोग थोड़ा-बहुत मानव-मांस खाते थे। बाद में जब उनके विचार बदले तो उनमें से कुछ ने मानव-मांस खाना बंद कर दिया और सभ्य मनुष्य बनने की कोशिश की। लेकिन कुछ लोग अभी भी खाए जा रहे हैं—मगरमच्छों की तरह। कुछ जीव विकास करके मछली बन गए, पक्षी बन गए, बंदर बन गए

और अंततः मनुष्य बन गए। लेकिन जिन्होंने अच्छाई को विकसित करने का प्रयत्न नहीं किया, वे रेंगने वाले जीव ही बने रहे। नर-मांस खाने वाले लोग न खाने वालों की तुलना में कितने असभ्य महसूस करते होंगे। उनसे भी अधिक लज्जा जितनी रेंगने वाले जीव बंदरों के सामने करते हैं।

"प्राचीन काल में ई या ने अपने बेटे को पकाकर च्ये और चओ' (ई. पू. सातवीं शताब्दी में ई या, छी के ड्यक का मुँहलगा रसोया था। जब ड्यूक ने कहा कि उसने बच्चों की माँस कभी नहीं चखा तो ई या ने अपना बेटा ही उसे परोस दिया था। च्ये और चओ इससे पहले के शासक थे। यहाँ उनका उल्लेख पागल की मानसिक विक्षिप्तता का प्रमाण है।) के सामने परोस दिया था। यह एक पुरानी कहानी है। लेकिन इसमें भी पूर्व जिस दिन से फान यू (एक मिथक चरित्र) ने स्वर्ग और धरती बनाए तथा ई या के बेटे से लगाकर श्वी शी लिन (अफसर की हत्या के अपराध में मौत की सजा पाने वाला एक क्रांतिकारी (1907)। उसके दिल और जिगर का गोश्त खाया गया था।) के जमाने तक और फिर श्वी शी लिन के जमाने से लेकर भेड़िया-शिशु गाँव में पकड़े आदमी तक मनुष्य एक-दूसरे को खाते रहे हैं। पिछले साल शहर में एक अपराधी को मौत की सजा दी गई और तपेदिक के एक मरीज ने उसके खून में रोटी डुबोकर खा ली थी।"

"मैं जानता हूँ कि ये लोग मुझे खा जाने चाहते हैं। यह सही है कि तुम अकेले उन्हें इससे नहीं रोक सकते लेकिन तुम उनसे क्यों मिल गए हो! ये लोग आदमखोर हैं और कुछ भी कर सकते हैं। ये मुझे खा जाएँगे और बाद में तुम्हें भी नहीं छोड़ेंगे। फिर ये लोग एक-दूसरे को भी नहीं छोड़ेंगे। लेकिन यदि तुम अपना रास्ता बदल दो तो सब चैन से रह सकते हैं। मानो कि प्राचीन काल से ही यह सिलसिला चला आ रहा है लेकिन आज हम इसे खत्म करने की कोशिश कर सकते हैं और कह सकते हैं कि ऐसा नहीं होगा। भैया मैं जानता हूँ कि तुम ऐसा कर सकते हो। अभी उस दिन असामी लगान घटाने के लिए कह रहा था तो तुमने कह दिया था कि ऐसा नहीं हो सकता।"

भैया पहले तो लापरवाही से हँसते रहे, फिर उनकी आँखों में खून उतर आया और जब मैंने उनका रहस्योद्घाटन कर दिया तो उनका चेहरा पीला पड़ गया। इसी बीच दरवाजे के बाहर अच्छी-खासी भीड़ जमा हो गई थी। चाओ साहब और उनका कुत्ता भी वहां थे। सब लोग गर्दनें बढ़ाकर भीतर झाँक रहे थे। मैं उन सबके चेहरे नहीं देख पाया। लगता था कई लोगों ने अपने चेहरे ढके हुए थे। दूसरे वही पुराने चेहरे थे—लंबे दाँतों वाले भयावने चेहरे जो अपनी हँसी दबा

रहे थे। मैं जानता था वे सब मिले हुए हैं, सब आदमखोर हैं। उनमें से कुछ का ख्याल था कि जब हमेशा से ही ऐसा है तो मनुष्यों को खाना बुरी बात नहीं। कुछ इसे बुरा मानते हुए भी लालच दबा नहीं पा रहे थे और चाहते थे कि लोग उनका भेद न जान पाएँ। इसीलिए मेरी बात सुनकर उन्हें गुस्सा तो आया लेकिन वे फिर भी होंठ भींचे मुस्कराते रहे।

अचानक भैया का चेहरा काला पड़ गया और वे जोर से चिल्लाए—

"भागो यहाँ से, क्यों भीड़ लगा रखी है ? क्या पागल कोई तमाशे की चीज है ?"

तब मैं उनकी चाल समझा। वे अपनी राह से टलने वाले नहीं हैं। इन लोगों ने सारी योजना बना ली है। उन्होंने मुझे पागल घोषित कर दिया है। भविष्य में जब ये लोग मुझे खायेंगे तो इन्हें दोष देने की बाजय लोग इनके कृतज्ञ होंगे। जब भेड़िया-शिशु गाँव के असामी ने एक बदमाश को खा जाने की बात कही तो ये लोग ऐसे ही खुश हुए थे। यह उनकी पुरानी चाल है।

बुजुर्ग छन भी गरमी खाता भीतर आ गया। लेकिन वह मेरा मुँह बंद नहीं कर सके। मैं उन्हें अगाह कर देना चाहता हूँ—

"अगर तुमने अपने को नहीं बदला तो तुम सब एक-दूसरे द्वारा खा लिए जाओगे। तुम लोग कान खोलकर सुन लो एक दिन तुम वास्तवकि आदमी द्वारा नष्ट कर दिए जाओगे जैसे शिकारी द्वारा भेड़िये और रेंगने वाले जंतु नष्ट हो गए।"

बूढ़े छन ने सब लोगों को भगा दिया। भैया कहीं चले गए। छन ने मुझे कमरे में जाने के लिए कहा। वहाँ घुप्प अँधेरा था। सिर के ऊपर की बल्लियाँ और कड़ियाँ हिलती जान पड़ रही थीं। उनका आकार बढ़ता ही जा रहा था। फिर छत मुझपर आ गिरी।

छत का बोझ इतना ज्यादा था कि मैं हिल भी नहीं सका। वे लोग यही चाहते थे कि मैं मर जाऊँ। मैं जानता था कि यह बोझ खयाली है। मैं जोर लगाकर उठा और पसीने में लथपथ बाहर आया। मैं उनको आगाह करना चाहता था—

"तुम्हें तुरंत अपने को बदलना होगा। अपना मन सिरे से बदलना होगा। याद रखो, भविष्य में दुनिया में आदमखोरों के लिए कोई जगह नहीं होगी..."

11

कोठरी का दरवाजा हमेशा बंद रहता है। सूरज ने निकलना बंद कर

दिया है। केवल दो बार खाना भिजवा दिया जाता है।

मैंने खाने की चापस्टिकें उठाई तो भैया का खयाल आ गया। मैं जानता हूँ मेरी छोटी बहन कैसे मरी थी। यह सब उन्हीं की करतूत थी। तब मेरी बहन केवल पाँच वर्ष की ही थी। वह कितनी प्यारी और निरीह थी। माँ रो-रोकर बेहाल हो रही थी। भैया उसे चुप करा रहे थे। कारण शायद यह था कि उन्होंने खुद ही उसे खा डाला था और अब रोना देख उन्हें शर्म आ रही थी। अगर उनमें शर्म-हया होती...।

मेरी बहन को भैया ने ही खाया लेकिन मुझे नहीं मालूम माँ यह भेद जान सकीं या नहीं।

मेरा ख्याल है कि माँ सब जानती थीं। पर माँ जब रो रही थी तो उसने साफ-साफ कुछ नहीं कहा। शायद उन्होंने कहना ठीक नहीं समझा। मुझे याद आता है मैं चार-पाँच साल का था। मैं सहन में बैठा था। भैया ने कहा था—यदि किसी के माँ-बाप बीमार हों तो उसे जरूरत पड़ने पर अपने शरीर का माँस काटकर भी खिला देना चाहिए। यही एक सपूत का धर्म है। माँ ने उनकी बात का विरोध नहीं किया। अगर नर-मांस का एक टुकड़ा खाया जा सकता है तो पूरे आदमी को भी खाया जा सकता है। और जब मैं माँ के विलाप की याद करता हूँ तो कलेजा भर आता है। बड़ी आवश्चर्य की बात है।

12

मैं अब और सहन नहीं कर सकता।

मेरी समझ में आ गया है कि मैं अब तक ऐसे लोगों के बीच रह रहा हूँ जो चार हजार वर्ष से मानव-मांस का आहार करते आ रहे हैं। भैया ने अभी घर का भार संभाला ही था कि कुछ दिन बाद छोटी बहन मर गई। उन्होंने उसका मांस हमारे खाने में मिलाया होगा और हमने अनजाने में ही खा लिया होगा।

संभव है अनजाने में मैं अपनी बहन के मांस के कई टुकड़े खा लिए हों। और अब मेरी बारी है....

मेरे जैसा आदमी चार हजार वर्षों के मानव-भक्षी इतिहास के रहते हुए कैसे बेखबर रहा। मैं आने वाले वास्तविक आदमी को अपना मुँह कैसे दिखाऊँगा?

13

संभव है ऐसे ही बच्चे हों जिन्होंने अभी नर-मांस नहीं खाया हो। इन बच्चों को तो बचा लें...

❐

खुंग ई ची

लूचन कस्बे में शराब की दुकानों की बनावट विशिष्ट है। उनमें घुसते ही एक समकोणीय काउंटर होता है जहाँ शराब गर्म करने के लिए गर्म पानी रखा रहता है। दोपहर या शाम के समय जब लोग काम से छूटकर आते हैं तो शराब का प्याला ले लेते हैं। बीस वर्ष पहले एक प्याली शराब का दाम चार ताँबे के सिक्के था, मगर अब दस ताँबे के सिक्के हो गया है। लोग वहीं खड़े-खड़े आराम से गरम-गरम शराब पीते हैं। एक और ताँबे के सिक्के में बाँस के कल्ले की या सौंफ के मसाले में पके मटर की एक प्लेट मिल जाती है जो शराब के साथ चलती है। कलेजी-कबाब बारह सिक्कों में मिलती है। लेकिन यहाँ आने वाले अधिकांश ग्राहक छोटी जाकेट वाले गरीब लोग होते हैं जो इतना खर्च नहीं कर सकते। जहाँ तक बड़े चोगों वाले लोगों का सवाल है, वे अंदर कमरे में बैठकर खाने और पीने का आनंद लेते हैं।

बारह वर्ष की आयु में मैंने कस्बे के किनारे के खुशहाली मदिरालय में नौकरी कर ली थी। मालिक क्योंकि मुझे निरा बुद्धू समझता था और लंबे चोगों वाले ग्राहकों के लिए ठीक नहीं मानता था, इसलिए मुझे बाहर के कमरे में 'आम लोगों' का काम दिया गया। वैसे तो छोटे लोगों को संभालना आसान काम था पर उनमें कई टेढ़े मिजाज के लोग भी आ जाते थे जो पीली शराब लेने से पहले अपनी आँखों से केतली की तली देख लेते थे कि उसमें कहीं पानी तो नहीं है और अपनी आँखों के सामने केतली को गरम पानी में रखवाते थे। ऐसी चौकसी बरतते थे कि मजाल है बूँद भर पानी मिलाया जा सके। कुछ दिन बाद ही मालिक को लगा कि मैं यह काम करने के लायक नहीं हूँ। भाग्यवश एक बड़े आदमी ने मुझे दुकान पर रखवाया था इसलिए नौकरी से तो नहीं हटाया लेकिन मुझे शराब गरम करने का नीरस काम सौंप दिया।

उसके बाद मैं दिनभर काउंटर के पीछे खड़ा काम में लगा रहता। हालाँकि मैं मालिक का काम बखूबी निबाह रहा था, पर इस काम से मेरा मन ऊब गया था। मालिक का चेहरा मनहूस-सा था और जो ग्राहक आते वे भी रूखे मिजाज के थे। बड़ी मनहूसियत छाई रहती थी। जब कभी दुकान में खुंग ई ची आ जाता तो कुछ हँसी-ठट्ठा हो जाता। इसलिए उसकी याद आज भी बनी है।

खुंग लम्बा चोगा पहनने वाला एकमात्र व्यक्ति था जो काउंटर पर खड़े होकर पीता था। खुंग एक अच्छा ऊँचा कद्दावर आदमी था जिसके झुर्रियों भरे चेहरे पर कभी-कभी घाव या खरोंच के निशान बने होते थे। उसकी लम्बी खिचड़ी दाढ़ी उलझी-उलझी रहती थी। खुंग का चोगा तो लम्बा था, परंतु बहुत मैला और चिथड़ा-सा हो गया था। उसे देखते ही लगता था कि कम-से-कम दस वर्षों से उसे न तो धोया गया है, न ही सिला। वह बात के बीच-बीच में ऐसे पेचीदा शब्द बोलता था कि उसकी बात आधी ही समझ में आती थी, क्योंकि उसका कुलनाम खुंग था, इसलिए लोगों ने उसका नाम 'खुंग ई ची' रख दिया था, जो बच्चों को पुराने किस्म की किताबों के पहले तीन अक्षरों से बनता है। वह जैसे ही दुकान में कदम रखता तो हर आदमी के चेहरे पर मुस्कान आ जाती। कोई पुकार उठता—

"खुंग ई ची यह क्या? चेहरे पर ये नए दाग कैसे आ गए?"

खुंग अनसुनी कर सीधा काउंटर पर आ जाता और नौ सिक्के रख दो प्याली गरम शराब तथा मसालेदार चना-मटर माँग लेता। तब कोई दूसरा जरा ऊँची आवाज में कह देता—

"तुमने जरूर फिर चोरी की है।"

"क्यों किसी भलेमानुस पर झूठी तोहमत लगा रहे हो।" खुंग घूर कर देखता और जवाब देता।

"झूठी तोहमत ? अभी परसों ही मैंने अपनी आँखों से तुम्हें हो के घर से किताबें चुराने के जुर्म में पिटते देखा।"

खुंग का चेहरा तमतमा जाता, माथे की नसें फूल आतीं। वह विरोध करता, "पुस्तक-पोथी उठाना भी कोई चोरी होती है ? पुस्तक उठाना एक विद्वान के लिए चोरी नहीं माना जाता।" और फिर प्राचीन ग्रन्थों में से कोई उद्धरण सुना देता जैसे "सज्जन की सत्यनिष्ठा निर्धनता में भी बनी रहती है।" (कन्फ्यूशियस की सूक्ति-संग्रह' नामक पुस्तक से उद्धृत।) इसी तरह की अनेक पंडिताऊ बातें और सब लोग उसकी बातों पर हँसने लगते और सारी

दुकान में खुशी का वातावरण छा जाता।

लोगों की कानाफूसी से मुझे पता चला कि खुंग अनेक क्लासिकी ग्रंथ पढ़ चुका है, पर कभी कोई सरकारी परीक्षा पास नहीं कर सका। जीविका के अभाव में हालात बिगड़ती गई और अब तो माँगने तक की नौबत आ गई है। भाग्यवश खुंग की लिखावट बहुत सुन्दर थी जिससे उसे लिखाई का काम मिल जाता था और किसी तरह निर्वाह हो जाता था। पर ऐबी भी तो कम नहीं थी, नशे-पानी की आदत डाल ली और काहिल अव्वल दर्जे का था। कुछ दिन ढंग से काम करता और फिर किताब, कागज, कूच और स्याही समेत चम्पत हो जाता। कई बार ऐसे ही चकमा देने के बाद भला उसे लिखाई का काम कौन देता? काम नहीं मिला तो लाचार होकर उठाईगिरी पर आ गया। पर हमारी दुकान पर वह एक आदर्श ग्राहक था जो वादे पर अपना बकाया चुका देता। पर कभी-कभी गरीब का हाथ सचमुच तंग रहता, जिसकी वजह से मालिक को उसका नाम उधारखाते की तख्ती पर लिखना पड़ जाता। खुद् हमेशा महीने के अंदर ही अपना हिसाब चुकता कर देता और उसका नाम तख्ती से कट जाता।

आधी प्याली पी लेने के बाद खुंग स्वस्थ हो जाता। तब तक कोई दूसरा बोल उठता—

"खुंग सच कहना, क्या तुम सचमुच पुस्तक-पोथी बाँच लेते हो ?"

खुंग कनखियों से देख चुप रह जाता मानो ऐसी बात का क्या उत्तर दे। लेकिन प्रश्न जारी रहते, "अच्छा यह बताओ कि तुम न्यूनतम सरकारी परीक्षा भी क्यों पास नहीं कर पाए ?"

खुंग का खीझता और तिलमिलाता चेहरा स्याह हो जाता और वह होठों ही होठों में न समझ आने वाली पंडिताऊ बातें बड़बड़ाने लगता। तब सब लोग जोर से हँस देते, और सारी दुकान का वातावरण उल्लासमय हो उठता।

सब हँसते तो मैं भी हँसी में शामिल हो जाता क्योंकि उस समय मालिक से डाँट का डर नहीं रहना था। मालिक सबको हँसाने के लिए खुद की खुंग से छेड़खानी करता रहता था। खुंग फिजूल समझ उन लोगों की अनसुनी कर पीठ फेर लेता और हम छोकरों से बातें करने लगता।

एक दिन उसने मुझसे पूछ लिया—"तू कभी पाठशाला में पढ़ा है ?"

मैंने हामी भरी तो वह बोला, "अच्छा तो लिखकर दिखा मटर में 'हु इ' अक्षर कैसे लिखते हैं ?"

मुझे अच्छा नहीं लगा। 'ऊँह, यह भिखमंगा मेरा इम्तहान लेगा।" यह

सोचकर उसकी बात अनुसनी कर मैं चला आया। कुछ देर रुककर खुंग बड़ी आत्मीयता से फिर बोला—

"हु इ' लिखना नहीं आता तुझे ? मैं सिखाऊँगा। तुम इसे याद रखना। बाद में जब तेरी अपनी दुकान होगी तो लिखा-पढ़ी में यह काम आएगा।"

खुंग की बात मुझे अजीब लगी, क्योंकि अपनी दुकान में बैठने की बात मेरे लिए महज एक सपना थी। इसके अलावा मेरा मालिक तो 'हु इ' वाली मटर की अदद बही-खाते में चढ़ाता ही नहीं था। मैंने अनमना-सा जवाब दिया, "वाह, इसके लिए कौन बड़े पण्डित की जरूरत है। देखो, क्या यह बुनियादी अक्षर नहीं है ?"

खुंग खिल उठा। काउंटर की मेज पर हाथ मारकर बोला, "शाबाश! 'हु ई' लिखने के चार अलग-अलग तरीके हैं। क्या तुझे मालूम है ?" लेकिन मेरा धैर्य चुक गया। मैंने मुँह फेर लिया। मगर खुंग प्याली में उँगली डुबो कर काउंटर पर लिखकर दिखाने लगा। उसने मेरी उपेक्षा देखी तो उसका मुँह लटक गया और उसने आह भरी।

कभी-कभी शराब की दुकान में हँसी-मजाक का शोरगुल सुनकर पड़ोस के बच्चे चले आते और खुंग को घेर लेते। खुंग मसालेदार चना-मटर, एक-एक, दो-दो दाने उनके हाथ पर रख देता। बच्चे नमकीन खाकर और पाने की आशा में उसे घेरे रहते। परेशान होकर खुंग अपनी प्लेट को हाथ से ढककर छिपा लेता और आगे की ओर झुककर कहता, "जाओ-जाओ, अब नहीं है। खत्म हो गया। फिर सीधे होकर मटर की प्लेट पर एक नजर डालकर विश्वास दिलाता "जाओ-जाओ, अब नहीं है। सचमुच खतम हो गया है।" छोकरे जोर से हँसते हुए भाग जाते।

इस तरह खुंग हमारा मनोरंजन करता। मगर उसके बिना भी सब चलता ही था।

एक दिन, शरदोत्सव से कुछ दिन पहले मालिक दुकान के हिसाब-किताब में डूबा हुआ था। सहसा कलम रखकर वह पुकार उठा, "बहुत दिनों से खुंग ई ची नहीं आया। उसके नाम उन्नीस ताँबे के सिक्के बकाया है।" तब कहीं ख्याल आया कि खुंग सचमुच बहुत दिनों से नहीं आया था।

"अरे वह अब क्या आएगा", कोई ग्राहक बोल उठा। "उस दिन ऐसी मार पड़ी है कम्बख्त पर कि उसके घुटने ही टूट गए।"

"अरे ! मालिक ने कहा।

"फिर चोरी में पकड़ा गया। हिम्मत तो देखो, इस बार तिंग साहब प्रसिद्ध विद्वान के यहाँ चोरी करने जा पहुँचे। वहाँ से बचकर कैसे निकल आता?"

"तब क्या हुआ ?"

"होता क्या ? पहले तो उन लोगों ने पकड़कर उससे इकबाली बयान लिखवा लिया। फिर खूब मारा। रात भर पीटा। मार-मार कर कम्बख्त के घुटने तोड़ दिए।"

"फिर ?"

"फिर क्या, पैरों से तो गया।"

"फिर क्या हुआ ?"

"फिर... कौन जानता है फिर क्या हुआ ? शायद मर ही गया हो।"

मालिक ने और कुछ नहीं पूछा, 'अपने बही-खाते पर झुककर हिसाब-किताब करता रहा।

शरदोत्सव बीत चुका था। जाड़ा पड़ने लगा था। ठिठुरन बढती जा रही थी। हालाँकि मैं अगीठी के पास ही खड़ा रहता था, फिर भी मुझे रुई की बंड्डी पहननी पड़ती थी। एक दिन तीसरे पहर, जब दुकान में कोई ग्राहक नहीं था और मैं अंगीठी के पास बैठा ऊंघ रहा था, तो सहसा किसी के कदमों की आहट हुई और फिर सुनाई दिया—

"एक प्याली शराब तो गरम कर दो।"

आवाज बहुत धीमी थी, पर पहचानी हुई लगी। आँख खोली तो कोई दिखाई नहीं दिया। खड़े हाकर काउंटर के ऊपर से झुककर देखा तो नीचे फर्श पर खुंग बैठा दिखाई दिया। खुंग दरवाजे की ओर आँख लगाए था। चेहरा सूखा हुआ, बीमार-सा अस्त-व्यस्त। उसके बदन पर एक फटी-पुरानी बंडी थी। घुटने मोड़े चटाई के एक टुकड़े पर बैठा था जो रस्सी से उसके कंधे पर बँधा था। मुझसे आँख मिली तो फिर बोला—

"एक प्याली शराब तो गरम कर दो भैया।"

मालिक ने गद्दी से झुककर देखा और बोला, "खुंग है क्या ? अरे तेरी तरफ उन्नीस ताँबे के सिक्के बकाया हैं।"

"वह...अब की बार आऊँगा तो चुका दूँगा"—खुंग ने उदास से स्वर में कहा, "आभी के तो यह नकद ले लो, पर भैया शराब जरा अच्छी देना।"

मालिक ने सदा की तरह ठट्ठा किया—"खुंग तुम फिर पकड़े गए चोरी में?"

इस बार खुंग ने हठपूर्वक प्रतिवाद नहीं किया। खीसें निकालकर बोला, "मुझसे मजाक क्यों करते हो भाई ?"

"हँसी की बात क्या है इसमें ? चोरी में नहीं पकड़े गए तो पैर कहाँ तुड़वाए ?"

"गिर पड़ा था भैया", खुंग धीरे से बोला, "गिरने से हड्डी टूट गई।" उसने बड़ी कातरता से मालिक की ओर देखा, जैसे अनुरोध कर रहा हो कि ऐसी बात न करे। तब तक और भी लोग आ गए और खुंग को देखकर दुकान में हँसी के फुव्वारे छूटने लगे। मैंने शराब गरम की और खुंग के सामने रख दी। खुंग ने अपनी फटी बंडी की जेब से चार ताँबे के सिक्के निकालकर मेरे हाथ पर रख दिए। मैंने देखा उसके हाथ मिट्टी से सने थे। मैं समझ गया, बेचारा हाथों के बल रेंगता आया है। खुंग ने प्याली की शराब पी ली और फिर हाथों के सहारे रेंगता हुआ हँसी-ठट्ठा व तानेबाजी सुनता हुआ दुकान से निकल गया।

काफी दिन बीत गए, खुंग फिर नहीं दिखाई दिया। वर्ष के अंत में जब मालिक ने हिसाब लिखने के लिए उधार खाते की पटिया को नीचे उतारा तो उसे याद आ गया, खुंग की तरफ उन्नीस ताँबे के सिक्के बकाया थे। अगले साल नाग-नौका उत्सव के मौके पर उसने फिर यह बात दोहराई। साल भर बाद फिर से शरदोत्सव आया तो मालिक ने इस विषय पर कोई बात नहीं की। एक और नया वर्ष भी आ गया, परंतु खुंग फिर दिखाई नहीं दिया।

उसके बाद मैंने फिर कभी उसे नहीं देखा। जान पड़ता है, खुंग ई ची अब सचमुच इस संसार में नहीं रहा।

औषधि

वह शरद ऋतु का उषाकाल था। चाँद क्षितिज पर झुक गया था, पर सूर्योदय में अभी देर थी और आकाश में गहरी नीलिमा छायी हुई थी। रतजगा करने वाले प्राणियों को छोड़कर बाकी अभी सब नींद में थे। बूढ़ा श्वान सहसा अपने बिस्तर में उठ बैठा। उसने माचिस से चीकट कुप्पी जलायी जिससे चायघर की दोनों कोठरियों में धुँधला प्रकाश फैल गया।

"क्या तुम अभी जा रहे हो ?" एक बुढ़िया की आवाज आयी। अंदर की कोठरी से खाँसने की आवाज सुनाई दी।

"हूँ।"

बूढ़े श्वान ने कपड़े पहनते हुए यह सुना। फिर हाथ बढ़ाकर बोला "ला, दे।"

तकिये के नीचे थोड़ी देर टटोलकर बुढ़िया ने चाँदी के डालरों की थैली उसे थमा दी। बूढ़े श्वान ने घबराकर उसे जेब में रख लिया और फिर दो बार जेब को थपथपाया। कागज की लालटेन जलाकर और कुप्पी को बुझाकर बूढ़ा अंदर कोठरी में गया। कपड़ों में सरसराहट हुई और फिर खाँसी। खाँसी थमी तो बूढ़ा धीमे से बोला, "बेटा।... तू बिस्तर में ही रहना।... दुकान तेरी माँ देख लेगी।"

कुछ उत्तर नहीं मिला तो श्वान ने समझ लिया बेटा फिर गहरी नींद सो गया है। वह गली में जा पहुँचा। बाहर अभी अँधेरा था और सड़क भी मुश्किल से दिखाई पड़ रही थी। कंदील की रोशनी बूढ़े के चलते पाँवों पर पड़ रही थी। कहीं-कहीं कुत्ते दिखाई दिए, पर वे भौंके नहीं। बाहर खूब ठिठुरन थी परंतु बूढ़ा उत्साह से चला जा रहा था, जैसे फिर से जवानी आ गई हो और उसके शरीर में एक अद्‌भुत प्राणदायक शक्ति उत्पन्न हो गई हो। वह लंबे-लंबे डग भरने लगा। अब आकाश में प्रकाश बढ़ने लगा था और सड़क भी

साफ-साफ दिखाई पड़ रही थी।

श्वान अपने विचारों में डूबा तेजी से चला जा रहा था कि सामने चौराहा दिखाई पड़ा और वह विस्मय से ठिठककर रुक गया। कुछ कदम पीछे लौटा और सड़क के किनारे एक बंद दुकान के छज्जे के नीचे खड़ा हो गया। कुछ देर खड़ा रहा तो जाड़ा लगने लगा।

"शायद कोई बूढ़ा है।"

"खूब प्रसन्न जान पड़ता है।...."

श्वान चौंका। उसने ध्यान से देखा--सड़क पर कई लोग चले जा रहे थे। जाने वालों में से एक ने घूमकर उसकी ओर देख भी लिया। उसे पहचान तो नहीं पाया, पर उसकी आँखें चमक गईं, जैसे भूखे की आँखें खाना देखकर चमक उठती है। श्वान ने अपनी कंदील की ओर नजर डाली, वह बुझ गई थी। उसने अपनी बंडी की जेब को हाथ से दबाया। थैली सुरक्षित थी। श्वान ने नजर उठाकर देखा तो सड़क पर दो-दो, तीन-तीन करके कई अजीब-से लोग आ-जा रहे थे, जैसे भटकी आत्माएँ इधर-उधर भटक रही हों। श्वान ने फिर ध्यान से उनकी ओर देखा तो और कोई विशेष बात नजर नहीं आई।

सड़क पर कुछ सैनिक भी घूमते दिखाई दिए। उनकी वर्दियों पर आगे और पीछे सफेद गोल निशान दूर से ही दिखाई दे रहे थे। सिपाही जब समीप आ गए तो उनकी वर्दियों पर गहरे लाल रंग के बार्डर भी दिखाई देने लगे। कुछ पल बाद एक साथ बहुत से कदमों की आहट सुनाई दी और वे लोग बढ़ गए। पहले से आए लोग भी उनके साथ मिल गए। चौराहे पर जाकर सब लोग ठहर गए और अर्धचन्द्राकार खड़े हो गए।

श्वान ने भी उस ओर देखा मगर लोगों की पीठ ही दिखाई दी। सभी लोगों की पूरी तनी गर्दनें देखकर लगता था जैसे कोई अदृश्य हाथ उनके बत्तखों को थामे हों। कुछ देर सन्नाटा रहा, फिर एक आहट हुई। भीड़ में थिरकन-सी जान पड़ी और चौराहे पर खड़े लोग एक साथ हल्ले में पीछे लौट पड़े जिनके धक्के से बूढ़ा श्वान गिरते-गिरते बचा।

"दाम निकाल, तब मैं तेरी चीज दूँगा।" एक आदमी श्वान के सामने रुककर बोला। आदमी सिर से पैर तक काले कपड़ों में था। आँखें खंजर की तरह चमक रही थीं। श्वान भयानक आशंका से सिमट गया। स्याहपोश ने अपना बड़ा सा हाथ पैसों के लिए बढ़ा दिया। उसके दूसरे हाथ में भाप छोड़ती बेलनाकार रोटी थी जिससे धरती पर लाल-लाल बूँद टपक रही थीं।

बूढ़े श्वान ने घबराहट में जेब टटोल कर थैली बाहर निकाली और काँपते हाथ से देना चाहता था पर रोटी ले लेने का उसे साहस न हुआ। काला स्याहपोश अधीरता से झुँझला उठा, "डर से क्यों मरा जा रहा है ? लेता क्यों नहीं?" श्वान को फिर भी साहस न हुआ तो स्याहपोश ने श्वान के हाथ से कंदील छीन ली और कंदली का कागज का शेड फाड़ रोटी को कागज में लपेट कर श्वान के हाथ में ठूँस दिया। श्वान से थैली लेकर उसे टटोलकर देखा। "बूढ़ा मूर्ख..." बड़बड़ाता हुआ वह चल दिया।

"किसकी बीमारी के लिए ले जा रहा है ?" श्वान को सुनाई दिया, पर उसने कोई उत्तर नहीं दिया। श्वान कागज में लिपटी रोटी को बहुत सावधानी से सँभाले लौट रहा था, जैसे कोई बड़ी साध से पाए बड़े वंश के एकमात्र वारिस को सँभाल कर लिए जा रहा हो। बाकी किसी का कोई महत्व नहीं। अब वह इस नए जीवन को अपने घर में रोपेगा और सुखी होगा। सूर्योदय हो गया था। सामने घर तक उजली सड़क दिखाई दे रही थी। श्वान घर की ओर चला जा रहा था। चौराहे पर लगा पत्थर पीछे छूट गया था जिस पर मिटते-से, सुनहरे अक्षरों में लिखा हुआ था 'पुरानी ड्योढ़ी'।

2

जब श्वान लौटकर घर पहुँचा तो दुकान में झाड़-पोंछे हो चुकी थी। मेजें धुली-पुँछी चमक रही थीं, परंतु ग्राहक अभी नहीं आए थे। उसका लड़का ही दीवार के साथ लगी मेज पर बैठा खाना खा रहा था। लड़के के माथे से पसीने की बड़ी-बड़ी बूँदें टपक रही थीं। उसकी दोहरी बंडी पीठ से लदी सटी हुई थी। कँधों और हँसली के उभर आए हाडों के बीच से गर्दन ऐसे उठी हुई थी, जैसे कोई चीज गढ़े में खोंस दी गई हो। लड़के को इस अवस्था में देखकर श्वान के माथे पर फिर चिन्ता की रेखाएँ उभर आईं। उसकी पत्नी हड़बड़ाकर रसोई से निकल आई—उत्सुकता भरी आँखों से अधीर स्वर में पूछा—

"मिल गई?"

"हाँ।"

श्वान बुढ़िया के साथ रसोई में चला गया। दोनों में कुछ बातें हुईं। बुढ़िया रसोई से निकल कर गली में चली गई और कुछ ही क्षणों में लौटी तो कमल का सूखा पत्ता लिए थी। बुढ़िया ने पत्ता मेज पर फैला दिया। श्वान ने कंदील के कागज में लिपटी रक्त भींगी रोटी निकाली और पत्ते पर रख दी। श्वान का बेटा खाकर उठ रहा था। माँ उसको देखकर बोल पड़ी—

"बेटा, अभी न जा। जरा बैठा रह।"

बूढ़े ने अँगीठी में आग जला दी और फिर रोटी पर से उतरे कंदील के रंगीन कागज और पत्ते में लिपटी रोटी को अँगीठी पर रख दिया। अँगीठी से धुआँ उठा और फिर लाल-काली लपटें उठीं और दुकान में विचित्र-सी गंध भर गई।

"क्या महक रहा है ? क्या खा रहे हो ?" कुबड़े ने दुकान में कदम रखते ही पूछा। कुबड़े का दिन दुकान में ही बीतता था। सुबह दुकान खुलते ही आ बैठता और रात दुकान बढ़ाने के समय लौटता। वह एक कोने में जा बैठा। उसके प्रश्न का किसी ने उत्तर नहीं दिया।

"लपसी है ?"

श्वान ने कोई उत्तर नहीं दिया और उसके लिए चाय बनाने लगा।

बुढ़िया भीतर की कोठरी में चली गई थी। उसने बेटे को वहीं बुला लिया। बेटे को चौकी पर बैठाकर एक तश्तरी में काली-सी टिकिया उसके सामने रखकर पुचकारा—

"ले बेटा, खा ले...अब तू चंगा हो जाएगा।"

श्वान के बेटे ने टिकिया उठाकर देखी। अजीब-सा लगा, जैसे स्वयं अपना जीवन-मरण हाथ में उठाए हो। लड़के ने टिकिया को तोड़ा। जली हुई रोटी के भीतर से सफेद-सी भाप उठी और फैल गई। रोटी ऊपर से जल गई थी, पर भीतर से अच्छी थी। लड़के ने रोटी खा ली। तश्तरी पड़ी रह गई। बुड्ढा-बुढ़िया समीप खड़े बेटे की ओर ममताभरी आँखों से देखते रहे जैसे दोनों आँखों से आशीर्वाद दे रहे हों और बेटे के शरीर का रोग समेट लेना चाहते हों। बेटे का हृदय तेजी से धड़कने लगा। उसने सीने को दोनों हाथों से दबा लिया और खाँसने लगा।

"बेटे, थोड़ी देर के लिए सो जा, बस अब तू चंगा हो जाएगा", माँ ने कहा।

लड़का चुपचाप जाकर खाँसता हुआ बिस्तर पर लेट गया। जल्दी ही उसे नींद आ गई। माँ के कान बेटे के श्वान की गति की ओर थे। जब समझ लिया कि सो गया है तो थेकलीदार पुराना लिहाफ उसे ओढ़ा दिया।

3

दुकान में ग्राहकों की भीड़ थी। श्वान ताँबे की बड़ी केतली हाथ में लिए जल्दी-जल्दी ग्राहकों के लिए चाय बनाता जा रहा था। परंतु आँखों के नीचे

काले गड्ढे पड़ गए थे।

"कहो बाबा, क्या हाल-चाल है?... कोई तकलीफ तो नहीं?" एक दढ़ियल ग्राहक ने पूछ लिया।

"नहीं, कुछ नहीं", श्वान जरा मुस्करा दिया।

"कुछ नहीं?... तुम जरा मुस्कराए तो जान में जान आई। हमें तो फिक्र हो गई थी।" प्रौढ़ ने अपनी चिन्ता से मुक्ति पाई

"श्वान को दम लेने की भी फुर्सत नहीं है।" कोने से कुबड़ा बोल उठा, "बेचारे का बेटा...।" बात पूरी नहीं हुई कि तभी दुकान में एक आदमी ने कदम रखा—गाल लटके हुए और शरीर भारी-भरकम। वह कत्थई रंग का कुरता पहने था, बटन खुले हुए, कुरते को कमर पर चौड़ी पेटी से लापरवाही से समेटे। आते ही श्वान से चिल्लाकर बोला—

"खिला दिया लड़के को ? कुछ फायदा हुआ ? भाग्य अच्छे हैं तुम्हारे श्वान। भाग्य की ही तो बात है कि मुझे समय से खबर मिल गई।..."

एक हाथ में केतली और दूसरे से सम्मान दिखाते हुए श्वान ने मुस्कराते हुए सुना। पहलवान की बात सभी अदब से सुन रहे थे। भीतर की कोठरी से बुढ़िया भी निकल आई। बुढ़िया की आँखों के नीचे भी चिन्ता की झांई फैली हुई थी। पहलवान की खुशामद में वह भी मुस्कराई। बुढ़िया के हाथ में प्याला था जिसमें चाय की नई पत्ती और जैतून का टुकड़ा था। श्वान ने प्याले में खौलता पानी छोड़कर पहलवान के लिए चाय बना दी।

"शर्तिया इलाज है। कोई मामूली नुस्खा नहीं।" पहलवान बोला।

"देखा नहीं था, बिलकुल ताजा गरम-गरम लाकर दिया था तुम्हें। गरम-गरम तुमने भी खिला दिया होगा।"

"हाँ, और नहीं तो क्या, चाचा खुंग मदद न करते तो यह हमारे बस का थोड़े ही था।" बुढ़िया ने बहुत कृतज्ञता प्रकट की।

"अरे शर्तिया इलाज है। आदमी के ताजे गरम-गरम खून में रोटी भिंगोकर खाने से कैसा ही तपेदिक हो, शर्तिया ठीक हो जाता है।"

'तपेदिक' शब्द सुनकर बुढ़िया का चेहरा उतर गया। फिर भी उसने मुस्कराने का यत्न किया और किसी बहाने से उठकर भीतर चली गई। पहलवान ने उस ओर ध्यान नहीं दिया। बहुत जोर-जोर से बोले जा रहा था जिससे भीतर की कोठरी में सोया लड़का जाग उठा और खाँसने लगा।

"श्वान के लड़के ही के भाग थे कि ऐसा मौका बन गया। अब क्या

है, अब तो समझो कि लड़का चंगा हो गया। तभी तो बूढ़ा श्वान इतना खुश है।" दढ़ियल आदमी बात करते-करते पहलवान के पास आ बैठा, और उसने धीरे से कहा—

"खुंग साहब, सुना है आज जिस बदमाश की गर्दन काटी गई वह श्या परिवार का लड़का था। क्या नाम था ? किस जुर्म में गर्दन काटी गई ?"

"कौन ? विधवा श्या का लड़का। वह बदमाश ?"

पहलवान ने एक नजर चारों ओर डाली। यह देख कि सभी लोगों की उत्सुक आँखें उसी की ओर लगी हुई थीं। वह पहले से भी ऊँचे स्वर में बोला—

"अरे बड़ा बदमाश था। साले के सिर पर मौत खेल रही थी। जानबूझकर मरा। हमारे हाथ क्या लगा, कुछ भी नहीं। उसके कपड़े-लत्ते भी शरीर से उतार कर लाल आँखों वाले जेलर ने दबा लिए। यह तो बूढ़े श्वान की किस्मत थी कि इसका काम बन गया, उसके रिश्ते का चाचा श्या भी भाग्यवान था, उसने इनाम ले लिया। पच्चीस औंस नकद चाँदी मार ली। उसके पल्ले से कौड़ी भी खर्च नहीं हुई।"

श्वान का बेटा कोठरी से निकल आया। वह दोनों हाथों से सीना दबाए खाँसता जा रहा था। वह रसोई में चला गया। कटोरे में बासी भात ले लिया। भात पर खौलता पानी डाला और खाने लगा। माँ ने लड़के के पास आकर प्यार से पूछा—

"अब कैसा लग रहा है बेटा ? वैसी ही भूख मालूम हो रही है ?"

"अरे अब यह शर्तिया ठीक हो जाएगा।" लड़के की ओर देखकर पहलवान बोल उठा फिर पास बैठे लोगों को बताने लगा। "उस लड़के का चाचा श्या बड़ा चालू आदमी है। अगर उसने लड़के का भेद न दे दिया होता तो उसके खानदान भर की गर्दन काट दी जाती, घर-जमीन सब जब्त हो जाती। उसने उल्टे इनाम मार लिया। पर लड़का था बड़ा बदमाश। जेलर को भी बगावत के लिए उकसा रहा था।"

"बाप रे, 'इतनी हिम्मत ?" एक ओर बैठे पच्चीस-छब्बीस बरस के एक नौजवान ने तिरस्कार के साथ कहा।

"लाल आँखों वाले जेलर ने उसे समझाया कि मुखबिर बन जा। लड़का उल्टे जेलर को ही पाठ पढ़ाने लगा। कहने लगा विशाल छिङ् साम्राज्य के मालिक तो हम ही हैं। सुना तुमने ? क्या यह बुद्धिमानी की बात थी? जेलर को यह तो मालूम था कि लड़के की बस बुढ़िया माँ ही है, पर यह ख्याल थोड़े

ही था कि कमबख्त के घर कुछ भी नहीं निकलेगा। जेलर के हाथ कुछ नहीं लगा तो यों ही चिढ़ा बैठा था। लड़का उसे उल्टा पढ़ाने लगा। देखो तो साले का दिमाग। बाघ की मूँछ पकड़ने चला था। जेलर ने दो-चार हाथ जड़ दिए साले को।"

"जेलर साहब बहुत तगड़े मुक्केबाज रहे हैं भैया। वह हाथ पड़े होंगे कि लड़के के होश ठिकाने आ गए होंगे।" कोने में बैठे हुए कुबड़े ने राय दी।

"बदमाश ने पिटाई की भी परवाह नहीं की। उल्टे अफसोस जताता रहा।"

"ऐसे बदमाश के अफसोस का क्या।" दढ़ियल ने राय दी।

पहलवान ने दढ़ियल की ओर तिरस्कारपूर्ण नजरों से देखा—"अरे तुम समझे भी ? लड़का अफसोस करके माफी थोड़े ही माँग रहा था। वह तो कोतवाल की अक्ल पर अफसोस जता रहा था कि कितना बेसमझ है।"

सब लोग टकटकी लगाए सुनते रहे। कोई कुछ नहीं बोला। श्वान के लड़के ने भात खा लिया। वह पसीना-पसीना हो रहा था, सिर से भाप निकल रही थी।

"जेलर को अक्ल दे रहा था। बौरा गया था, और क्या।" दढ़ियल बोल उठा, मानो उसे सहसा सारी बात समझ में आ गई हो।

"बौरा नहीं गया था तो और क्या ?" पीठे बैठे नौजवान ने कहा।

ग्राहकों में एक बार स्फूर्ति आ गई। सब फिर आपस में बातें करने लगे। दुकान में बातचीत की गूँज भर गई। लड़के को फिर खाँसी का दौरा आ गया। पहलवान उठकर उसके पास गया और लड़के के कंधे पर थपकी दी—

"अरे अब तो इलाज हो गया तेरा, अब काहे को खाँसता है। हो जा चंगा।"

"बौरा रहा है," पहलवान के समर्थन में कुबड़ा गर्दन हिलाकर बोल उठा।

4

शहर की फसील के साथ-साथ पश्चिमी दरवाजे के बाहर की जमीन पहले शामिलाती थी। धरती के बीचोंबीच पैदल चलने वालों ने राह बचाने के लिए पगडंडी बना दी थी। पगडंडी के दोनों ओर कब्रें फैली हुई थीं। बाएँ हाथ, सजा पाकर कत्ल किए जाने या जेल में मरने वाले लोगों को दफनाया जाता था और दाएँ हाथ बहुत गरीब या भिखारी लोगों को दफनाया जाता था। पगडंडी के

दोनों ओर पाँतों में बनी कब्रें ऐसी जान पड़ती थीं मानों वे किसी धनी व्यक्ति के जन्म-दिन पर तरतीबवार सजे हुए बेलनाकार पकवान हों।

उस साल बहुत जाड़ा पड़ा था। छिड्-मिंग का पर्व आ गया था, परंतु अब भी बहुत सर्दी थी। बेद के पेड़ों पर अभी कल्ले ही फूट रहे थे। पौ फटे अभी बहुत देर नहीं हुई थी। श्वान की बुढ़िया पगडंडी के दाहिनी ओर कब्रिस्तान में पहुँच गई। एक ताजी बनी कब्र के साथ बुढ़िया ने चार तश्तरियों में चार किस्म के पकवान और एक कटोरा भात रख दिया और बैठकर रोने लगी। बुढ़िया ने मृतक की आत्मा की शान्ति के एिल कब्र पर कागज के कुछ नोट जला दिए और खोई हुई सी बैठी रही, जैसे किसी की प्रतीक्षा कर रही हो। वह स्वयं नहीं जानती थी क्यों बैठी है और किसकी प्रतीक्षा कर रही है ? हवा का एक झोंका आया, बुढ़िया के छोटे-छोटे श्वेत केश फैल गए। पिछले एक वर्ष में उसके बाल पहले से ज्यादा पक गए थे।

पगडंडी पर चिथड़े पहने एक और सफेद बालों वाली बुढ़िया भी चली आ रही थी। बुढ़िया एक पुरानी, लाल रंग की गोल टोकरी लिए थी। टोकरी के डोरी में बँधे नोट भी लटक रहे थे। बुढ़िया धीमे-धीमे कदम रखती चली जा रही थी। उसकी नजर श्वान की बुढ़िया पर पड़ी तो वह झिझक गई। मुरझाए चेहरे पर संकोच झलक गया। परंतु उसने साहस किया और पगडंडी के बाँई ओर घूमकर एक कब्र के समीप जा हाथ की टोकरी धरती पर रख दी।

दोनों कब्रें पगडंडी के समीप ही एक-दूसरे के सामने थीं। श्वान की बुढ़िया दूसरी बुढ़िया को देखती रही। उस बुढ़िया ने भी टोकरी से चार तश्तरियों में पकवान और एक कटोरा भात निकालकर कब्र पर रख दिया और खड़ी होकर रोई। फिर उसने भी नोट जलाए। "उस कब्र में इसी अभागी का लड़का होगा", श्वान की बुढ़िया ने सोचा। वह उधर ही देख रही थी। पगडंडी के बाँई ओर वाली बुढ़िया अपने लड़के की कब्र के सामने लड़खड़ाते हुए दो-चार कदम चली। उसने ठिठक कर खोई-खोई सी नजरों से चारों ओर देखा। उसके घुटने काँप गए। फैली हुई आँखें पथरा-सी गई।

श्वान की बुढ़िया को लगा कि पगडंडी के पार खड़ी बुड़िया शोक से बेहोश होकर गिर पड़ेगी। वह उठी और पगडंडी लाँघ कर दूसरी बुढ़िया के पास चली गई। धीमे से बोली, "धीरज धरो बहन, चलो घर लौट चलें।"

"हूँ, बुढ़िया ने सिर झुका लिया। अपनी धुँधली आँखें कब्र की ओर लगाए उसने पूछा, "देखो देखो, वह क्या है ?"

श्वान की बुढ़िया ने उस ओर ध्यान से देखा, नई बनी कब्र की मिट्टी पर अभी सब जगह घास नहीं उग पाई थी। जगह-जगह नंगी मिट्टी दिखाई दे रही थी। श्वान की बुढ़िया ने आँखें फैलाकर देखा तो विस्मित रह गई। उस कब्र पर लाल और सफेद फूल एक माला के आकार में उगे हुए मालूम पड़ते थे।

दोनों बूढ़ियों की नजरें कमजोर हो चुकीं थीं पर उन्होंने ध्यान से देखा तो सन्देह नहीं रहा। सचमुच कब्र पर फूल उगे हुए मालूम पड़ते थे। फूल अधिक नहीं थे, बहुत ताजे भी नहीं थे, परंतु बड़ी सावधानी व जतन से उगाए हुए जान पड़ते थे। श्वान की बुढ़िया ने अपने लड़के की कब्र और दूसरी कब्रों पर भी नजर डाली। जहाँ-तहाँ कोई-कोई पीला छोटा-सा फूल सरदी में ठिठुर रहा था। उसे मन में एक कचोट-सी अनुभव हुई। वह स्वयं ही समझ नहीं पा रही थी कि उसे क्यों, कैसा लग रहा है।

दूसरी बुढ़िया इस बीच अपने लड़के की कब्र के बिलकुल करीब पहुँच गई थी। उसने झुककर ध्यान से फूलों को देखा। "जड़ें तो नहीं हैं", वह बुदबुदाई, "उग आए तो नहीं लगते। कौन आया होगा ? बच्चे भी यहाँ खेलने नहीं आते। हमारे नाते-रिश्ते वालों में से भी कोई कभी नहीं आया। ये फूल कहाँ से आ गए ?" बुढ़िया सोच नहीं पा रही थी। उसकी आँखों से आँसू टपकने लगे और पुकारकर रो उठी—

"हाय मेरे बेटे, तुझ पर बड़ा जुल्म हुआ। हाय, तुझे कब्र में भी चैन नहीं। तू अब भी कलप रहा है। तभी तो ये फूल उग आए हैं, ताकि मैं तेरा दुख जान लूँ।"

बुढ़िया ने फिर चारों ओर देखा। कोई नहीं था। एक पेड़ की सूखी डाल पर सिर्फ एक कौआ बैठा था। बुढ़िया फिर बोली, "जालिमों ने तुझे कत्ल कर डाला। लेकिन बदला चुकाने का दिन जरूर आएगा। भगवान कभी न कभी जरूर सुनेगा। हे भगवान, मेरे बेटे को शांति दे।.... बेटे, अगर तेरी आत्मा यहाँ है तो तू सुन रहा है तो उस कौवे को उड़ाकर अपनी कब्र पर बैठा दे।"

बयार रुक गई थी। घास-फूस सब ताँबे के तार की तरह स्तब्ध तने खड़े थे। हवा का एक हल्का-सा झोंका आया, झाड़ियों में तनिक सरसराहट हुई और फिर सन्नाटा। चारों ओर निस्तब्धता छाई हुई थी। दोनों बूढ़ियाँ, सुखी घास में खड़ी, कौए को देख रही थी। डाल पर कौआ गर्दन सिकोड़े ऐसे निश्चल बैठा था मानो लोहे की प्रतिमा हो।

पल पर पल बीतते जा रहे थे। बूढ़े जवान कई लोग अपने संबंधियों

की कब्रों पर चले आ रहे थे।

श्वान की बुढ़िया को लगा जैसे उसके मन पर पड़ा पुराना बोझ कुछ हल्का हो गया हो। घर लौटने का ध्यान आया तो दूसरी बुढ़िया से बोली, "चलो, बहन, अब चलें।"

दूसरी बुढ़िया के कलेजे से एक गहरी आह निकली। उसने अपने आपको सँभाला और कब्र पर से भात के कटोरे व तश्तरियों को उठा लिया। एक क्षण के लिए वह रुकी और फिर धीरे-धीरे बड़बड़ाती चल दी—

"न जाने इसका क्या मतलब है ?"

दोनों बूढ़ियाँ पगडंडी पर कोई तीस एक कदम गई होंगी कि उनके पीछे कौआ बहुत जोर से काँव-काँव कर उठा। दोनों चौंक पड़ी और घूमकर देखने लगीं। कौए ने पँख फैला लिए थे। वह उचका और तीर की तरह दूर क्षितिज की ओर उड़ चला।

❐

आ क्यू की सच्ची कहानी

अध्याय : एक
भूमिका

अनेक वर्षों से मैं आ क्यू की सच्ची कहानी लिखने की सोच रहा था। उसे लिखने की इच्छा होते हुए भी मन में दुविधा बनी हुई थी। इससे जाहिर है कि मैं उन लोगों में नहीं जो लेखन-कार्य से गौरव अर्जित करते हैं। कारण यह कि एक अमर व्यक्ति के कारनामों का ब्यौरा देने के लिए हमेशा एक अमर लेखनी की आवश्यकता है। व्यक्ति लेखन के कारण भावी पीढ़ी में ख्याति प्राप्त करता है और लेखन व्यक्ति के कारण—अंततः यह पता नहीं चल पाता कि किसने किस को ख्याति दिलाई। अंत में आ क्यू की कहानी लिखने का विचार एक भूत की तरह मेरे ऊपर सवार हो गया।

मगर ज्यों ही लेखनी उठाई, अमरता से कोसों दूर इस रचना के सृजन में आने वाली कठिनाइयों का अहसास होने लगा। पहला सवाल था कि इसे क्या नाम दिया जाए। कन्फ्यूशियस ने कहा है, "यदि नाम ठीक न हो तो शब्द भी ठीक नहीं जान पड़ेंगे।" इस कहावत पर अत्यंत ईमानदारी से अमल किया जाना चाहिए। जीवनियाँ कई प्रकार की होती हैं, अधिकृत जीवनियाँ, आत्मकथाएँ, अनधिकृत जीवनियाँ, दन्तकथाएँ, पूरक जीवनियाँ, परिवार-कथाएँ, रेखाचित्र... किंतु दुर्भाग्यवश इनमें एक भी नाम ऐसा नहीं, जिससे मेरा काम चल जाय। 'अधिकृत जीवनी ?' जाहिर है कि इस विवरण को किसी अधिकृत इतिहास में अनेक विख्यात व्यक्तियों के विवरण के साथ सम्मिलित नहीं किया जाएगा। 'आत्मकथा' ? किंतु मैं आ क्यू तो हूँ नहीं, इसलिए यह भी ठीक नहीं। यदि इसे 'अनाधिकृत जीवनी' का नाम दिया जाय तो आखिर उसकी 'अधिकृत जीवनी' कहाँ हैं? 'दन्तकथा' कहना भी संभव नहीं है, क्योंकि आ क्यू किसी दन्तकथा का चरित्र तो है नहीं। 'पूरक कहानी' ? लेकिन किसी भी प्रेसीडेंट ने राष्ट्रीय ऐतिहासिक प्रतिष्ठान को अभी तक आ क्यू की 'प्रतिमानित जीवनकथा' लिखने का आदेश नहीं दिया। यह सच है कि यद्यपि इंग्लैंड के अधिकृत इतिहास में

'जुआरियों के जीवन' का कोई उल्लेख नहीं है, फिर भी सुप्रसिद्ध लेखक कॉनन डायल ने 'रोडनी स्टोन' (इस उपन्यास के चीनी रूपांतर का नाम था 'जुआरियों की पूरक कहानियाँ।) नामक उपन्यास की रचना की। किन्तु जहाँ एक सुप्रसिद्ध लेखक को यह सब करने की अनुमति है, वहाँ मुझ जैसे व्यक्ति को इसकी इजाजत कहाँ! तो क्या इसे 'परिवार-कथा' कहा जाए ? लेकिन मुझे तो यह भी नहीं मालूम कि मैं आ क्यू के खानदान का सदस्य हूँ अथव नहीं; फिर उसके बेटे-बेटियों या पोते-पोतियों ने तो मुझे यह काम सौंपा नहीं। अगर इसे 'रेखाचित्र' कहा जाय तो शायद इस पर भी ऐतराज किया जाएगा, क्योंकि आ क्यू का 'पूरा विवरण' तो कहीं उपलब्ध ही नहीं। संक्षेप में यह एक वास्तविक 'जीवन' है, किन्तु चूँकि मेरी लेखन-शैली जरा अपरिष्कृत है और इसमें खोमचेवालों व फेरीवालों की भाषा का प्रयोग किया गया है, इसलिए मैं इसे इतना ऊँचा लगनेवाला नाम नहीं दे सकता। अतएव उपन्यासकारों की, जिनकी गिनती तीन मतों और सम्प्रदायों (तीन मत इस प्रकार थे—कन्फ्यूशियस मत, बौद्धमत और ताओ मत। नौ सम्प्रदायों में कन्फ्यूशियसवादी, ताओवादी, विधानवादी, मोवादी इत्यादि सम्प्रदाय सम्मिलित थे। उपन्यासकारों को, जो इनमें से किसी एक मत या सम्प्रदाय से सम्बद्ध नहीं होते थे, प्रतिष्ठित नहीं माना जाता था) में नहीं होती, प्रचलित शब्दावली के अंतिम दो शब्दों को शीर्षक के लिए चुनूँगा—'विषयान्तर काफी हो चुका और सच्ची कहानी' पर लौट आना चाहिए और अगर इससे प्राचीन काल की 'लिपिकला की सच्ची कहानी' (छिङ् राजवंश (1644-1911) के जमाने के फंग वू द्वारा रचित एक पुस्तक) की याद ताजा हो जाए तो इसमें कोई क्या कर सकता है।

दूसरी कठिनाई मेरे सामने यह थी कि ऐसी जीवनी कुछ इस प्रकार आरंभ होनी चाहिए, "अमुक नाम का व्यक्ति, जिसका कुलनाम अमुक था, अमुक स्थान में रहता था।' लेकिन सच बात तो यह है कि आ क्यू का कुलनाम मुझे मालूम नहीं था। एक बार पता लगा कि उसका कुलनाम शायद चाओ है, लेकिन अगले ही दिन इसके बारे में फिर एक बार बड़ा घपला हो गया था। बात यह थी कि चाओ साहब के बेटे ने काउन्टी की सरकारी परीक्षा-पास कर ली थी और उसकी सफलता की घोषणा ढोल-नगाड़ों के साथ पूरे गाँव में की जा रही थी। आ क्यू, जो अभी-अभी दो प्याली पीली शराब पीकर आया था, इतराता हुआ कहता फिर रहा था कि यह उसके अपने लिए भी बड़े गौरव की बात है क्योंकि वह भी चाओ साहब के ही कुल का आदमी है और ठीक-ठीक हिसाब

लगाया जाय तो उसकी वरिष्टता सफल उम्मीदवार से तीन पीढ़ी ऊपर बैठती है। उस समय आसपास खड़े कुछ लोग तो आ क्यू से दहशत तक खाने लगे थे। लेकिन दूसरे ही दिन बेलिफ उसे चाओ साहब के घर बुला ले गया था। जब बूढ़े महाशय चाओ ने उसकी तरफ देखा था तो उनका चेहरा गुस्से से तमतमा उठा था और वे गरजकर बोल पड़े थे—

"ओ आ क्यू के बच्चे ! तू कहता फिर रहा है कि तू भी हमारे ही कुल का है ?"

आ क्यू ने कोई उत्तर नहीं दिया।

जैसे-जैसे चाओ साहब उसकी तरफ देखते जा रहे थे, उनका पारा लगातार चढ़ता जा रहा था। दो-चार कदम आगे बढ़कर उसे धमकाते हुए उन्होंने कहा, "तुझे ऐसी बेहूदा बात कहने की हिम्मत कैसे हुई ? भला मैं तेरे जैसे लोगों का रिश्तेदार कैसे हो सकता हूँ? क्या तेरा कुलनाम चाओ है ?"

आ क्यू ने कोई उत्तर नहीं दिया और वहाँ से भागने ही वाला था कि चाओ साहब ने आगे बढ़कर उसके मुँह पर एक तमाचा जड़ दिया।

"तेरा कुलनाम चाओ कैसे हो सकता है ? क्या तू समझता है कि तेरी जैसी हैसियत का आदमी भी चाओ खानदान का हो सकता है ?"

आ क्यू ने चाओ कहलाने के अपने अधिकार की पैरवी करने की कतई कोशिश नहीं की और अपना बायाँ गाल सहलाते हुए बेलिफ के साथ बाहर आ गया था। बाहर निकलते ही बेलिफ ने उस पर गालियों की बौछार शुरू कर दी थी, और दो सौ ताँबे के सिक्कों से उसकी हथेली चिकनी करने के बाद ही आ क्यू उससे अपना पिण्ड छुड़ा पाया। जिस किसी ने भी यह घटना सुनी उसने यही कहा कि आ क्यू को उसकी बेवकूफी की वजह से ही मार पड़ी। अगर उसका कुलनाम चाओ ही था—जिसकी संभावना कम थी—तो भी गाँव में चाओ साहब के रहते उसका इस तरह से डिंग मारते फिरना उचित नहीं था। इस घटना के बाद आ क्यू की वंश-परम्परा की कहीं कोई चर्चा नहीं हुई। इसलिए मुझे अब भी ठीक-ठीक मालूम नहीं कि उसका कुलनाम सचमुच क्या था।

तीसरी कठिनाई जिसका सामना मुझे इस रचना के दौरान करना पड़ा, यह थी कि आ क्यू का व्यक्तिगत नाम कैसे लिखा जाय? जब तक वह जिंदा रहा, सभी लोग उसे आह क्वेइ के नाम से पुकारते रहे। लेकिन जब वह नहीं रहा तो किसी ने आह क्वेइ की चर्चा तक न की। कारण स्पष्ट है, वह उन व्यक्तियों में नहीं था, जिनका नाम बाँस की तख्तियों और रेशम के कपड़े पर सुरक्षित (यह

कथन ईसापूर्व तीसरी शताब्दी का है। बाँस की तख्तियों और रेशम के कपड़े को चीन के लोग प्राचीन काल में लेखन सामग्री के रूप में इस्तेमाल करते थे।) रखा जाता है। अगर नाम सुरक्षित रखने की ही बात है, तो निश्चय ही यह रचना इस दिशा में प्रथम प्रयास कहलाएगी। इसलिए मेरे सामने शुरू में ही यह कठिनाई आ खड़ी हुई। मैंने इस सवाल पर बड़ी बारीकी से विचार किया। आह क्वेइ—क्या यहाँ उसका अर्थ पारिजात लगाया जाए अथवा कुलीन वर्ग? अगर उसका दूसरा नाम चंद्र-मण्डप होता, या उसका जन्म-दिन चंद्रोत्सव वाले महीने में मनाया जाता, तो निश्चित ही उसका अर्थ पारिजात लगाया जा सकता था। (पारिजात के फल चंद्रोत्सव वाले महीने में खिलते हैं। चीनी लोककथाओं के अनुसार चंद्रमा पर दिखाई देने वाला धब्बा वास्तव में पारिजात का वृक्ष है।) लेकिन चूँकि उसका कोई दूसरा नाम नहीं था—अगर था भी तो कोई जानता नहीं था—और चूँकि उसके अपने जन्म-दिन के मौके पर निमंत्रण-पत्र भेजकर अपने सम्मान में प्रशंसात्मक कविताएँ कभी प्राप्त नहीं की थीं, इसलिए उसका नाम पारिजात लिखना स्वेच्छाचारिता कहलाएगा। साथ ही अगर उसका आफू (खुशहाली) नाम का कोई बड़ा या छोटा भाई होता, तो उसे अवश्य ही कुलीन वर्ग नाम दिया जा सकता है। लेकिन वह तो अपने किस्म का एक ही आदमी है। इसलिए उसे कुलीन वर्ग नाम देने का कोई औचित्य नहीं है। बाकी तमाम असामान्य रेखाक्षर, जिनकी ध्वनि क्वेइ से मिलती*, इससे भी कम औचित्य रखते हैं। मैंने एक बार यह सवाल चाओ साहब के लड़के से पूछा था, जो काउन्टी की सरकारी परीक्षा पास कर चुका था। लेकिन उसका कहना था कि इनाम का पता इसलिए नहीं लग पा रहा क्योंकि छन तू श्यू (छन तू श्यू (1880-1942) उस समय पेइचिंग विश्वविद्यालय का एक प्रोफेसर और 'नया नौजवान' नामक मासिक पत्रिका का संपादक था। बाद में उसने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के साथ गद्दारी की।) ने 'नया नौजवान' नामक पत्रिका निकालनी शुरू कर दी, जिसमें पश्चिमी वर्णमाला के इस्तेमाल की पैरवी की गई है, इससे राष्ट्रीय संस्कृति बिलकुल तहस-नहस हो रही है। अन्त में, मैंने अपने हलाके के किसी व्यक्ति से अनुरोध किया कि वह स्वयं जाकर आ क्यू के मामले से संबंधित कानूनी दस्तावेजों की जाँच-पड़ताल करे। लेकिन आठ महीने बाद उसने मुझे चिट्ठी लिखी कि उन दस्तावेजों में आह क्वेइ नाम के किसी आदमी का जिक्र नहीं है। हालाँकि मैं पक्के तौर पर यह नहीं बता सकता था कि मेरे मित्र की बात सच भी थी या नहीं अथवा उसने इस संबंध में कोई कोशिश भी की थी

या नहीं, फिर भी जब मैं इस तरह उसके नाम का पता नहीं लगा पाया तो मेरे सामने और कोई चारा नहीं रह गया। चूँकि मुझे डर है कि नई ध्वनि-प्रणाली अभी आम लोगों में प्रचलित नहीं है, इसलिए पश्चिमी वर्णमाला का इस्तेमाल करने में अंग्रेजी हिज्जों के मुताबिक आह क्वेइ नाम लिखने में और उसका संक्षिप्त रूप आ क्यू लिखने में मुझे कोई हर्ज नहीं जान पड़ता। बेशक, यह 'नया नौजवान' पत्रिका का लगभग अंधानुकरण कहलाएगा और इसके लिए मैं बेहद शर्मिंदा हूँ, लेकिन चूँकि चाओ साहब के लड़के जैसा धुरंधर विद्वान भी मेरी समस्या हल नहीं कर पाया, ऐसी हालत में भला मैं और कर ही क्या सकता था?

मेरी चौथी कठिनाई आ क्यू के जन्म-स्थान के बारे में थी। अगर उसका कुलनाम चाओ होता, तो इलाके के मुताबिक वर्गीकरण करने के आज भी प्रचलित पुराने रिवाज के अनुसार 'सौ कुलनाम' (एक पुरानी प्रवेशिका जिसमें सोर कुलनाम पद्य में लिखे होते थे) की टीका देखी जा सकती थी और मालूम हो सकता था कि वह 'क्वान शु प्रांत के थ्यान स्वेइ नामक स्थान का बाशिन्दा' है। लेकिन बदकिस्मती से उसका कुलनाम ही विवादास्पद था, इसलिए जन्म-स्थान भी अनिश्चित हो गया। हालाँकि उसकी ज्यादातर जिंदगी वेइच्वांग में ही बीती, वह अक्सर दूसरे स्थानों में भी रहा इसलिए उसे वेइच्वांग का बाशिन्दा कहना भी ठीक नहीं मालूम होता। वह वास्तव में इतिहास को तोड़ना-मरोड़ना कहलाएगा।

सिर्फ एक बात, जिससे मुझे तसल्ली हुई, यह है कि 'आ' अक्षर बिलकुल सही है। यह निश्चित रूप से किसी झूठी तुलना का परिणाम नहीं है और विद्वतापूर्ण आलोचना की कसौटी पर खरा उतरता है। जहाँ एक दूसरी समस्याओं का तुल्लुक है, उन्हें हल करना मेरे जैसे विद्वत्ताहीन व्यक्ति के बूते की बात नहीं और मैं उम्मीद करता हूँ कि डॉ. हू शी, जो 'इतिहास और पुरातत्व में गहरी रूचि' रखते हैं, के शिष्य भविष्य में इस पर नई रोशनी डाल सकेंगे। लेकिन मैं सोचता हूँ तब तक मेरी 'आ क्यू की सच्ची कहानी' विस्मृति के गर्त में विलीन हो चुकी होगी।

उपर्युक्त पंक्तियों को इस रचना की भूमिका माना जा सकता है।

अध्याय : दो
आ क्यू विजयों का संक्षिप्त विवरण

आ क्यू के कुलनाम, व्यक्तिगत नाम और जन्म-स्थान से संबंधित

अनिश्चितता के अलावा उसके 'अतीत' के बारे में भी कुछ अनिश्चितता बनी हुई है। कारण यह है कि वेइच्वांग के लोगों ने उसके 'अतीत' पर जरा भी ध्यान दिए बिना उसकी सेवाओं का इस्तेमाल किया अथवा उसकी खिल्ली उड़ाई। आ क्यू खुद भी इस विषय में मौन रहता, सिर्फ ऐसे मौकों को छोड़कर जबकि उसका किसी से झगड़ा हो जाता और उसकी तरफ देखता हुआ वह बोल पड़ता, "किसी समय हमारी हालत तुमसे कहीं अच्छी थी। तुम अपने आप को समझते क्या हो ?"

आ क्यू का अपना कोई परिवार नहीं था। वह वेइच्वांग गाँव में संरक्षक-देवता के मंदिर में रहता था। उसके पास कोई नियमित रोजगार भी नहीं था। जो भी छोटा-मोटा काम मिल जाता, कर लेता—गेहूँ काटना होता तो गेहूँ काट देता, चावल पीसना होता तो चावल पीस देता, नाव चलाना होता तो नाव चला देता। अगर ज्यादा दिनों का काम होता तो अपने अस्थायी मालिक के घर में ही रह जाता। लेकिन ज्यों ही काम खत्म होता, वहाँ से चल देता। सो जब भी लोगों के पास काम होता, वे आ क्यू को याद करते। लेकिन वे लोग सिर्फ उसकी सेवाओं को याद करते थे, न कि उसके 'अतीत' को और जब काम समाप्त हो जाता तो वे आ क्यू को भी भूल जाते, उसके 'अतीत' की बात तो दूर रही। एक बार एक बुजुर्ग आदमी ने कहा था, "कितना अच्छा काम करता है आ क्यू।" उस समय सामने खड़े आ क्यू का बदन कमर तक एकदम निर्वस्त्र था, शरीर बेजान व दुबला-पतला था, चेहरे पर उदासीनता थी। दूसरे लोग यह नहीं समझ पाए थे कि ये शब्द उसने समचुच आ क्यू की प्रशंसा में कहे थे अथवा उसकी खिल्ली उड़ाने के लिए। जो हो, आ क्यू यह सुनकर बेहद खुश हुआ था।

आ क्यू दरअसल अपने बारे में बहुत ऊँची राय रखता था। वेइच्वांग के सभी बाशिन्दों को वह अपने से नीचा समझता था। यहाँ तक कि उन दो युवा 'विद्वानों' को भी किसी लायक नहीं समझता था, हालाँकि जयादातर युवा 'विद्वानों' के सरकारी परीक्षा पास करने की संभावना थी। चाओ साहब और छांग साहब की गाँव वाले बहुत इज्जत करते थे, क्योंकि वे दोनों धनी होने के साथ साथ युवा विद्वानों के पिता भी थे। सिर्फ आ क्यू ही ऐसा था जो उनकी खास इज्जत नहीं करता था और सोचता था, "मेरे बेटे शायद इनसे भी ज्यादा महान बनें।"

इसके अलावा, अब आ क्यू को कई बार शहर जाने का मौका मिला

तो स्वभावतः उसका दिमाग पहले से ज्यादा बढ़ गया, हालाँकि इसके बाद वह शहर के लोगों के प्रति और वितृष्णा से भर जाता। मिसाल के लिए, तीन फुट लंबे और तीन इंच चौड़े तख्तो से बने बैंच को वेइच्वांग गाँव के लोग 'लम्बा बैंच' कहते थे। आ क्यू भी उसे 'लम्बा बेंच' कहता था। लेकिन शहर के लोग उसे 'सीधा बैंच' कहते थे और आ क्यू सोचता, "यह कितना गलत है। कितना हास्यास्पद है।" इसके अलावा वेइच्वांग गाँव के लोग जब बड़े सिरे वाली मछली को तेल में तलते तो सभी लोग हरे प्याज की पत्तियों के आधे इंच लंबे टुकड़े काटकर उसके साथ छौंकते थे, जबकि शहर के लोग उन्हें बारीक काट कर उसके साथ छौंकते थे। आ क्यू सोचता, "यह भी कितना गलता है। कितना हास्यास्पद है।" लेकिन वेइच्वांग गाँव के लोग सचमुच बिलकुल अपढ़-गँवार थे और उन्होंने यह कभी नहीं देखा था कि शहर में मछली कैसे तली जाती हैं

आ क्यू, जो 'किसी समय काफी खुशहाल था' और दुनियादारी में कुशल एक 'अच्छा श्रमिक' था, एक बिलकुल मुकम्मिल इंसान होता, अगर बदकिस्मती से उसके शरीर पर कुछ विकृतियाँ न होतीं। सबसे ज्यादा दुखदाई उसकी खोपड़ी पर वे चमकीले निशान थे जो अतीत काल में किसी समय दाद रोग से पीड़ित होने के कारण बन गए थे। हालाँकि ये निशान उसके अपने ही सिर पर थे, लेकिन आ क्यू इन्हें जरा भी सम्मानजनक नहीं समझता था। यही वजह थी कि वह 'दाद' या इससे मिलते-जुलते किसी भी अन्य शब्द का इस्तेमाल नहीं करता था। बाद में इससे एक कदम और आगे बढ़कर उसने 'चमकदार' और 'रोशनी' शब्दों का इस्तेमाल भी बंद कर दिया और इसके बाद 'चिराग' और 'मोमबत्ती' शब्दों का प्रयोग भी छोड़ दिया। जब भी कोई जानबूझकर या अनजाने में इन वर्जित शब्दों का इस्तेमल करता, तो आ क्यू गुस्से से तमतमा उठता, उसके बाद के निशाने लाल हो उठते। यह गुस्ताखी करने वाले की तरफ देखता और अगर वह कोई ऐसा आदमी होता जो जवाब देने में उससे कमजोर साबित होता तो उसे खूब जली-कटी सुनाता और अगर कोई ऐसा आदमी होता जो लड़के में उससे कमजोर होता तो झट उस पर हाथ छोड़ देता। फिर भी यह अजीब बात थी कि इन मुठभेड़ों में अक्सर आ क्यू को ही मात खानी पड़ती। अंत में उसने नई रणनीति अपना ली और अपने प्रतिद्वंद्वी को गुस्से से लाल आँखों से घूरकर ही मन को तसल्ली दे लेता।

बात यह हुई कि जबसे आ क्यू ने लोगों को गुस्सैल लाल आँखों से घुरना शुरू किया, वेइच्वांग के निठल्ले लोगों को उसका मजाक उड़ाने में और

ज्यादा मजा आने लगा। वे ज्यों ही उसे देखते, उकसाने के लिए कह देते—

"देख तो ! रोशनी हो रही है।"

आ क्यू हमेशा की ही तरह उत्तेजित हो उठता और गुस्सैल लाल आँखों से उन्हें घूरने लगता।

"अच्छा तो यहाँ पैराफीन का चिराग रखा है," वे लोग उससे डरे बिना अपनी बात जारी रखते।

आ क्यू कुछ न कर पाकर माकूल जवाब ढूँढ़ पाने के लिए दिमाग पर जोर डालकर कहता, "तुम इस लायक भी नहीं हो कि... ।" ऐसे मौके पर उसे ऐसा लगता मानो उसकी खोपड़ी पर अंकित निशान उसके उदात्त गौरवपूर्ण चरित्र के द्योतक हों, दाद के मामूली निशान न हों। फिर भी, जैसा कि पहले कहा जा चुका है, आ क्यू दुनियादारी में कुशल था, वह फौरन समझ जाता कि उसके मुँह से 'वर्जित शब्द' निकलने जा रहे हैं, इसलिए बात वहीं खतम कर देता।

अगर निठल्ले लोगों को इतने से भी तसल्ली न होती और वे उसे उकसाना जारी रखते तो हाथापाई की नौबत आ जाती। और जब आ क्यू बिलकुल परास्त हो जाता और निठल्ले लोग उसकी भूरी चुटिया खींच कर उसका सिर चार-पांच बार दीवार से टकरा लेते, सिर्फ तभी वे अपनी विजय पर संतुष्ट होकर वहाँ से जाते। आ क्यू एक क्षण के लिए वहीं रुक जाता और मन-ही-मन सोचने लगा, "मालूम होता है मुझे मेरे बेटे ने पीटा है। आजकल कैसा जमाना आ गया है!..." इसके बाद वह भी अपनी विजय पर संतुष्ट होकर वहाँ से चला जाता।

आ क्यू अपने मन में जो कुछ भी सोचता, बाद में दूसरे लोगों को जरूर बताता। इस तरह वे सभी लोग, जो उसकी खिल्ली उड़ाते थे, मनोवैज्ञानिक विजय प्राप्त करने के उसके तरीके को अच्छी तरह जान गए थे। इसलिए बाद में जो कोई भी उसकी भूरे रंग की चुटिया को खींचता या मरोड़ता था, वह उससे पहले ही कह देता, "आ क्यू, बेटा बाप की पिटाई नहीं कर रहा, बल्कि इंसान जानवर की पिटाई कर रहा है। जरा कहो तो, "इंसान जानवर की पिटाई कर रहा है।"

आ क्यू अपनी चुटिया की जड़ मजबूती से पकड़ लेता और सिर टेढ़ा करके कहता, "यह क्यों नहीं कहते कि इंसान कीड़े की पिटाई कर रहा है ? मैं एक कीड़ा हूँ—अब मुझे छोड़ोगे या नहीं ?"

हालाँकि उसका अस्तित्व एक कीड़े के बराबर था, फिर भी निठल्ले लोग जब तक अपनी आदत के मुताबिक आसपास की किसी चीज से पाँच-छह बार उसका सिर न टकरा लेते, तब अपनी विजय पर संतुष्ट होकर वहाँ से जाते और उन्हें इस बात का यकीन हो जाता कि आ क्यू इस बार पूरी तरह हार गया है। लेकिन दस सैकंड बीतने से पहले ही आ क्यू भी अपनी विजय से संतुष्ट होकर वहाँ से चल देता, यह सोचता हुआ कि वह 'सर्वप्रथम आत्म-अकिंचनताकारी व्यक्ति' है, और अगर 'आत्म-अकिंचनताकारी व्यक्ति' शब्द निकाल दिए जाएँ तो सिर्फ 'सर्वप्रथम' रह जाता है। क्या सर्वाधिक अंक लेकर सरकारी परीक्षा पास करने वाला उम्मीदवार भी 'सर्वप्रथम' नहीं है ? "आखिर तुम लोग अपने को समझते क्या हो ?"

अपने दुश्मनों से लोहा लेने के लिए ऐसी चतुर चालें चलने के बाद आ क्यू खुशी-खुशी मदिरालय में जा पहुँचता और दो-चार पैग चढ़ाकर दूसरों से फिर हंसी-मजाक करता, फिर झगड़ा करता, फिर विजयी होकर संरक्षक-देवता के मंदिर में खुशी-खुशी लौट जाता और तकिए पर सिर रखते ही गहरी नींद सो जाता। जब कभी उसकी जेब में पैसा होता तो जुआ खेलने पहुँच जाता। जुआरियों की टोली जमीन पर बैठी होती। उसके बीच आ क्यू भी जा बैठता। उसके चेहरे से पसीना चू रहा होता और वह सबसे ज्यादा जोर से चिल्ला उठता, "हरे नाग पर चार सौ।"

"अरे, बाजी खोलो!" पसीने से तर चेहरे वाला पणधर सन्दूकची खोल देता और जोर से बोल पड़ता—"स्वर्ग का दरवाजा"... 'खुम' को कुछ नहीं मिला।.... 'लोकप्रियता मार्ग' का दाँव खाली गया। आ क्यू के पैसे मेरे हवाले कर दो।"

"मार्ग पर—एक सौ-एक सौ पचास।"

इन शब्दों के साथ धीरे-धीरे आ क्यू का सारा पैसा पसीने से तर अन्य जुआरियों की जेब में पहुँच जाता। अंत में वह मजबूर होकर उनके बीच से बाहर निकल जाता और पीछे बैठकर दूसरों की हार-जीत की चिंता करता हुआ खेल देखता रहता। और जब खेल खत्म हो जाता तो बड़े बेमन से संरक्षक-देवता के मंदिर में लौट जाता। अगले दिन जब काम पर जाता तो उसकी आँखें रतजगे के कारण सूजी हुई होतीं।

लेकिन एक बार जब आ क्यू जीतने पर भी बदकिस्मती से अन्त में हार गया, तो 'सौभाग्य के वेष में दुर्भाग्य भी आ सकता है' वाली कहावत सच

साबित हो गई।

उस दिन वेइच्वांग में देवताओं का उत्सव मनाया जा रहा था। शाम का वक्त था। रिवाज के मुताबिक एक नाटक खेला जा रहा था। और रिवाज के मुताबिक, रंगमंच के निकट जुआ खेलने के लिए बहुत-सी मेजें लगी हुई थीं। नाटक के ढोल-नगारों की आवाज आ क्यू को ऐसी लग रही थी मानो मीलों दूर से आ रही हो। उसके कान सिर्फ पणधर की आवाज की तरफ लगे हुए थे। बाजी बार-बार आ क्यू के हाथ रही। उसके ताँबे के सिक्के चाँदी के सिक्कों में, चाँदी के सिक्के डालरों में बदलते गए, डालरों की ढेरी बढ़ती गई। वह खुशी से उछल पड़ा और जोर से चिल्लाया, "स्वर्ग के दरवाजे पर दो डालर।"

आ क्यू को यह कभी मालूम न हो सका कि किसने झगड़ा शुरू किया और क्यों किया। गाली-गलौज, लात-घूँसों की मार और भगदड़ के कोलाहाल से उसका सिर चकरा गया और जब वह होश में आया तब तक सभी जुए की मेजें और जुआरियों की टोलियाँ नदारद हो चुकी थीं। उसके शरीर का अंग-अंग दुख रहा था; मालूम होता था कि उसे भी लात-घूँसे लगे हैं। आसपास जमा बहुत लोग आश्चर्य से उसकी ओर देख रहे थे। यह अनभुव करता हुआ कि उसकी कोई चीज खो गई है, वह संरक्षक-देवता के मंदिर में लौट गया और जब पूरी तरह शांत हुआ तब कहीं उसे महसूस हुआ कि उसकी डालरों की ढेर गायब हो चुकी है। उत्सव में जुए की मेजें लगाने वाले ज्यादार लोग दरअसल वेइच्वांग के निवासी नहीं थे, इसलिए अपराधियों का पता कैसे लगाया जा सकता था?

चाँदी के सिक्कों की कितनी उजली, कितनी चमकदार ढेरी थी वह। यह सारी की सारी रकम उसकी हो चुकी थी... लेकिन अब वह गायब हो चुकी थी। यह सोचकर भी कि इसे उसके अपने ही बेटे ने चुरा लिया है, उसके मन को तसल्ली नहीं हो पाई। अपने आपको एक कीड़ा समझकर भी उसे चैन नहीं मिला। यह पहला मौका था जब उसे सचमुच पराजय की कटुता का स्वाद चखने को मिला।

किंतु दूसरे ही क्षण उसके अपनी पराजय को विजय में बदल डाला। दायाँ हाथ ऊपर उठाकर उसने कस कर अपने मुँह पर दो थप्पड़ जड़ दिए, इतनी जोर से कि चेहरा दर्द से झनझना उठा। थप्पड़ खाने के बाद उसका दिल कुछ हल्का हो गया, क्योंकि उसे लगा मानो थप्पड़ मारनेवाला तो वह खुद हो और थप्पड़ खानेवाला कोई और हो, और जल्दी ही उसे ऐसा लगा मानो उसने किसी अन्य व्यक्ति की पिटाई की हो—हालाँकि उसका चेहरा अब भी दर्द से झनझना

रहा था। अपनी विजय पर संतुष्ट होकर वह लेट गया।

शीघ्र ही उसकी आँख लग गई।

अध्याय : तीन
आ क्यू की अन्य विजयों का विवरण

हालाँकि आ क्यू सदैव विजय प्राप्त करता जाता था, फिर भी उसे मशहूरी सिर्फ तभी हासिल हुई जब चाओ चाहब ने उसके मुँह पर थप्पड़ मारने की इनायत फरमाई।

बेलिफ के हाथ में दो सौ ताँबे के सिक्के रखने के बाद वह क्रोध से जमीन पर लेट गया। बाद में वह अपने आपसे कहने लगा, "आजकल कैसा जमाना आ गया है, बेटे अपने बाप को पीटने लगते है।..." तब वह चाओ साहब की प्रतिष्ठा के बारे में सोचने लगा, जिन्हें अब वह अपना बेटा समझने लगा था। धीरे-धीरे उसका जोश बुलंद होता गया। वह उठा और 'नौजवान विधवा अपने पति की कब्र पर' नामक गीत की पंक्तियाँ गुनगुनाता हुआ मदिरालय में जा पहुँचा। उस समय जरूर उसे यह महसूस हुआ कि चाओ साहब का दर्जा ज्यादातर लोगों से ऊपर है।

यह कहते हैरानी होती है कि इस घटना के बाद सभी लोग आ क्यू की असाधारण रूप से इज्जत करने लगे। इसका कारण वह शायद यह समझता रहा कि लोग ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि वह चाओ साहब का पिता है। लेकिन वास्तविकता यह नहीं था। वेइच्वांग में दरअसल यह रिवाज था कि अगर सातवाँ बेटा आठवें बेटे को पीट दे अथवा अमुक ली अमुक छांग को पीट दे तो कोई खास बात नहीं समझी जाती थी, लेकिन जब पिटाई की घटना का संबंध चाओ साहब जैसे किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति से होता तो गाँववासी इसे चर्चा का विषय समझते थे और जहाँ एक बार उन्होंने इसे चर्चा का विषय समझ लिया तो पिटाई करनेवाले के एक प्रसिद्ध व्यक्ति होने के कारण पिटने वाले को भी इस प्रसिद्धि का कुछ-न-कुछ भाग अवश्य प्राप्त हो जाता था। पक्के तौर पर कसूर तो आ क्यू का ही माना गया, क्योंकि लोग समझते थे कि चाओ साहब हरगिज गलती नहीं कर सकते। लेकिन अगर आ क्यू ही कसूरवाद था तो सभी लोग असाधारण रूप से उसकी इज्जत करते क्यों जान पड़ते थे ? इसका कारण बताना कठिन है। हम अनुमान लगा सकते हैं कि शायद आ क्यू का यह कहना

कि वह भी चाओ परिवार का ही सदस्य है, इसका कारण था। हालाँकि उसकी पिटाई की जा चुकी थी, फिर भी लोग शायद उसके प्रति आदरपूर्ण व्यवहार करना ज्यादा सुरक्षित होगा। अथवा यह भी कहा जा सकता था कि यह मामला कन्फ्यूशियस के किसी मंदिर में बलि के रूप में चढ़ाए गए गोमांस की तरह है, हालाँकि गोमांस भी शूकर अथवा भेड़-बकरी के मांस की ही तरह पशु का मांस होता है, फिर भी बाद में कन्फ्यूशियसवादी संप्रदाय के अनुयायियों ने उसे छूने का साहस नहीं किया, क्योंकि कन्फ्यूशियस स्वयं इसका सेवन कर चुके थे।

इसके बाद आ क्यू अनेक वर्षों तक सुख-चैन से रहा।

एक दिन बसंत के मौसम में जब वह खुशी से झूमता हुआ जा रहा था तो उसने देखा कमर तक नंगे बदन धूप में बैठा मुछन्दर वांग दीवार के सहारे बैठा जूँ निकाल रहा है। यह दृश्य देखकर आ क्यू को भी खुजली महसूस होने लगी। चूँकि मुछन्दर वांग का शरीर दाद से पीड़ित था और उसके चेहरे पर लम्बी-लम्बी मूँछें थीं, इसलिए सभी लोग उसे 'दाद वाला मुछन्दर वांग' नाम से पुकारते थे। आ क्यू 'दाद वाला' शब्द का इस्तेमाल नहीं करता था, फिर भी वह मुछन्दर वांग को बिलकुल नाचीज समझता था। आ क्यू सोचता था, दाद से पीड़ीत होना कोई खास बात नहीं है, मगर दानें गालों पर मूँछ के बालों के इतने ज्यादा गुच्छे होना सचमुच कितना भद्दा लगता है। सो आ क्यू उसकी बगल में जा बैठा। अगर कोई निठल्ला आदमी होता तो आ क्यू उसके पास इतनी लापरवाही से हरगिज न बैठता, मगर मुछन्दर वांग के पास बैठने में उसे भला किस बात का डर था? सच तो यह था कि आ क्यू का वांग के पास बैठना वांग के लिए बड़े गौरव की बात थी।

आ क्यू ने अपनी अस्तर वाली फटी-पुरानी जाकिट उतार ली और उसे पलट डाला; लेकिन काफी देर खोजने के बाद भी सिर्फ तीन-चार जूँ ही निकल पाया। कारण या तो यह था कि उसने अपनी जाकिट हाल ही में धोई थी अथवा यह कि वह खुद जूँ पकड़ने में एकदम अनाड़ी था। उसने देखा मुछन्दव वांग अब तक लगातार एक के बाद एक कई जूँ पकड़ चुका है और दाँतों के बीच रखकर चट्ट की आवाज के साथ उन्हें मार चुका है।

आ क्यू को पहले निराशा हुई और फिर गुस्सा आने लगा, यह निकम्मा मुछन्दर वांग इतनी ज्यादा जूँ पकड़ चुका है जबकि मैं सिर्फ कुछ ही पकड़ पाया हूँ—कितनी शर्म की बात है। उसके एक-दो बड़ी जूँ पकड़ने की कोशिश की, लेकिन कोई हाथ न आई। बड़ी मुश्किल से वह एक दरमियाने आकर की जूँ

पकड़ पाया, जिसे उसने बड़े रोष के साथ मुँह में डालकर दाँत से कुचल दिया। लेकिन उसके पिचकने की आवाज बड़ी धीमी थी, मुछन्दर वांग की चट्ट की आवाज के मुकाबले बिलकुल धीमी।

आ क्यू के सिर के सारे निशान सुर्ख हो गए। उसने आपनी जाकिट जमीन पर पटक दी और उसकी तरफ थूककर बोला, "साला झबरीला कीड़ा।"

"अब खजुहे कुत्ते, गाली किसे बक रहा है ?" मुछन्दर वांग ने तिरस्कारपूर्ण निगाह ऊपर उठाते हुए कहा।

हालाँकि पिछले कुछ वर्षों में आ क्यू को मिले अपेक्षाकृत सम्मान से उसका घमण्ड कुछ बढ़ गया था, लेकिन जब कभी मारपीट में माहिर लोफरों से पाला पड़ता तो वह बिल्कुल भीगी बिल्ली बन जाता। लेकिन आज उसका मन झगड़ा करने को बेहद मचल रहा था। एक झबरीले गालों वाला कीड़ा उसका अपमान करने का साहस करे ?

"जिस किसी का नाम इससे मेल खाता हो," आ क्यू ने उत्तर दिया और वह दोनों हाथ कमर पर रख तनकर खड़ा हो गया।

"अबे क्या तेरी हड्डियाँ खुजला रही है ?" यह कहता हुआ मुछन्दर वांग भी अपनी जाकेट पहन तनकर खड़ा हो गया।

यह सोचकर कि वांग का इरादा भाग खड़े होने का है, आ क्यू उस पर वार करने के लिए आगे बढ़ा। लेकिन मिट्टी का प्रहार करने से पहले ही मुछन्दर वांग ने उसे दबोच लिया और इतने जोर का झटका दिया कि वह लड़खड़ा कर गिर पड़ा। इसके बाद मुछन्दर वांग ने आ क्यू की चुटिया पकड़कर उसे दीवार की तरफ घसीटा, ताकि उसका सिर हमेशा की तरह दीवार से टकराया जा सके।

"एक शरीफ आदमी जबान इस्तेमाल करता है, हाथ नहीं।" आ क्यू ने सिर टेढ़ा करके विरोध किया।

जाहिर है मुछन्दर वांग कोई शरीफ आदमी नहीं था, इसलिए आ क्यू की बात पर जरा भी गौर किए बगैर उसने एक के बाद एक पाँच बार उसका सिर दीवार से दे मारा और उसे इतने जोर से धक्का दिया कि वह लड़खड़ाता हुआ दो गज दूर जा गिरा। सिर्फ तभी मुछन्दर वांग जीत की खुशी से वहाँ से चला गया।

जहाँ तक आ क्यू को याद है, यह उसकी जिन्दगी में पहला मौका था जबकि उसे इस तरह अपमान का घूँट पीना पड़ा था। मुछन्दर वांग के झबरीले

गालों की वह हमेशा ही खिल्ली उड़ाया करता था, लेकिन वांग ने उसका कभी उपहास तक नहीं किया था, मार-पीट करना तो दरकिनार। मगर आज आशा के विपरीत मुछन्दर वांग ने उसकी पिटाई कर दी थी। शायद लोग बाजार में जो कुछ कह रहे थे, वह सच था, "शहंशाह ने सरकारी इम्तहान लेना बंद कर दिया है। जिन विद्वानों ने ये इम्तहान पास किए हैं, उनकी अब जरूरत नहीं है।" संभवतः इसके परिणामस्वरूप चाओ परिवार की प्रतिष्ठा कम हो गई होगी। लोगों द्वारा आ क्यू के प्रति तिरस्कारपूर्ण रुख अपनाए जाने का क्या यही कारण तो नहीं था ?

आ क्यू अस्थिर खड़ा था।

दूर से आ क्यू का एक और दुश्मन आ रहा था। यह छ्येन साहब का सबसे बड़ा लड़का था, जिससे आ क्यू पूरी तरह घृणा करता था। शहर के एक विदेशी स्कूल में पढ़ने के बाद शायद वह जापान चला गया था। छह महीने बाद जब वह स्वदेश लौटा तो तनकर चलने लगा था और अपनी चुटिया कटवा चुका था। उसकी माँ दसियों बार रो चुकी थी और पत्नी तीन बार कुएँ में छलाँग लगाने की कोशिश कर चुकी थी। बाद में उसकी माँ ने सबको बताया, "जब वह शराब के नशे में था तो किसी शोहदे ने उसकी चुटिया काट दी। अब तक वह न जाने कब का अफसर बन गया होता, लेकिन अब उसे तब तक इन्तजार करना होगा जब तक चुटिया फिर नहीं उग आती।" आ क्यू को उसकी बात पर यकीन नहीं हुआ और वह बड़ी जिद के साथ उसे 'नकली विदेशी दरिन्दा' और 'विदेशी तनखाह पाने वाला देशद्रोही' कहता फिर रहा था। ज्यों ही आ क्यू उसे देखता, धीमी आवाज में गाली बकने लगता।

आ क्यू को उसकी जो चीज सबसे बुरी लगती थी वह थी नकली चुटिया। जिसकी चुटिया भी नकली हो ऐसे आदमी को भला इंसान कैसे कहा जा सकता था; साथ ही चूँकि उसकी पत्नी ने चौथी बार कुएँ में छलाँग मारने की कोशिश नहीं की थी, इसलिए उसे भला एक अच्छी औरत कैसे कहा जा सकता था।

और अब वही 'नकली विदेशी दरिन्दा' उसकी तरफ आ रहा था।

"गंजा... गधा..." पहले आ क्यू उसे सिर्फ धीमी आवाज में ही गाली दिया करता था, ताकि वह सुन न सके। लेकिन आज चूँकि उसका मिजाज ठीक नहीं था और वह अपने दिल की भड़ास निकालना चाहता था, इसलिए ये शब्द उसके मुँह से अनायास ही जरा जोर से निकल गए।

बदकिस्मती से वह 'गंजा' एक चमकदार भूरी छड़ी लिए था, जिसे आ क्यू 'मातमपुर्सी करने वाले की छड़ी' कहता था। लम्बे कदम बढ़ाता हुआ वह आ क्यू पर टूट पड़ा, जो पहले से ही यह अनुमान लगाकर कि उसे मार अवश्य पड़ने वाली है, अपनी पीठ तानकर पिटाई के लिए तैयार था। निश्चय ही बड़े जोर से चटका की आवाज हुई और ऐसा लगा मानो छड़ी से सिर पर वार किया गया हो।

"मैंने तो उसके लिए कहा था।" पास ही खड़े एक बच्चे की ओर इशारा करते हुए आ क्यू ने सफाई पेश की।

चटाक! चटाक!! चटाक!!!

जहाँ तक आ क्यू को याद है, यह उसकी जिन्दगी में दूसरा मौका था जबकि उसे अपमान का घूँट पीना पड़ा था। खुशकिस्मती से जब पिटाई खत्म हो गई तो उसे लगा मामला खत्म हो चुका है। उसे कुछ राहत महसूस हुई। साथ ही अपनी उस मूल्यवान 'भूल जाने की क्षमता' के कारण, जो उसे अपने पूर्वजों से विरासत के रूप में प्राप्त हुई थी, उसे बड़ा फायदा हुआ। वह धीरे-धीरे आगे बढ़ गया और मदिरालय के दरवाजे तक पहुँचते-पहुँचते काफी खुश नजर आने लगा।

तभी 'शान्त आत्म-उत्कर्ष भिक्षुणी-विहार' की एक छोटी भिक्षुणी उसकी तरफ आती दिखाई दी। भिक्षुणी को देखते ही आ क्यू के मुँह से गाली निकल जाती थी और आज हुए अपमान के बाद वह भला उसे गाली दिए बगैर कैसे रह सकता था ? जब उसे अपने अपमान की बात याद आई तो उसका पारा फिर से चढ़ने लगा।

"अच्छा, तो आज मुझे बदकिस्मती का सामना इसलिए करना पड़ा क्योंकि इसकी शकल देखनी थी।" उसने मन-ही-मन कहा।

भिक्षुणी के निकट पहुँच कर उसने जोर से खँखार कर थूका, "आख थू। ... आख थू।।"

छोटी भिक्षुणी उसकी ओर जरा भी ध्यान दिए बिना सिर नीचा करके चलती रही। आ क्यू उसके पास जा पहुँचा और हाल ही में मूँड़े हुए उसके सिर पर हाथ फेरता हुआ पागल की तरह अट्टहास करके बोला, "अरे ओ गंजी, जल्दी जा। तेरा भिक्षु तेरी बाट जो रहा होगा... ।"

"कौन हो जी तुम मुझे छूने वाले?..." भिक्षुणी ने कहा। उसका चेहरा लज्जा से लाल हो उठा और कदम तेजी से उठने लगे।

मदिरालय में उपस्थित लोग खिलखिलाकर हँस पड़े। यह देखकर कि उसका कारनामा लोगों ने पसंद किया है, आ क्यू को बड़ी खुशी हुई।

"अगर तुझे तेरा भिक्षु छू सकता है तो भला मैं क्यों नहीं छू सकता?" यह कहते हुए उसने भिक्षुणी का गाल मसल डाला।

एक बार फिर मदिरालय में उपस्थित लोग खिलखिलाकर हँस पड़े। आ क्यू और ज्यादा फूल उठा और प्रशंसकों को और अच्छी तरह संतुष्ट करने के लिए उसने फिर एक बार भिक्षुणी का गाल जोर से मसल डाला। तब कहीं उसे जाने दिया।

इस घटना ने मुछन्दर वांग और नकली विदेशी दरिन्दे का अपमान भूला दिया। उसे लगा मानो सारे दिन की दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं का बदला ले चुका हो। और ताज्जुब की बात यह थी कि मार खाने के बाद के मुकाबले अब वह कहीं ज्यादा तनावशून्य और हल्का अनुभव कर रहा था, मानो हवा पर सवार हो।

"आ क्यू, तू निपूता ही मर जाए।" छोटी भिक्षुणी ने दूर जाकर रुआँसी आवाज में कोसा।

आ क्यू एक बार फिर खिलखिलाकर हँस पड़ा।

मदिरालय में उपस्थित लोग भी खिलखिलाकर हँस पड़े, हालाँकि उन्हें आ क्यू से कम ही तसल्ली हुई।

अध्याय : चार

प्रेम की दुखान्त कहानी

कुछ विजेता ऐसे होते हैं जो अपनी विजय से तब तक खुश नहीं होते, जब तक उनके प्रतिद्वंद्वी बाघ या बाज की तरह खूंखार न हों; अगर उनके प्रतिद्वंद्वी भेड़-बकरी या मुर्गी की तरह डरपोक हों, तो उन्हें अपनी विजय बिलकुल खोखली जान पड़ती है। कुछ दूसरे विजेता ऐसे होते हैं जो अपने सभी प्रतिद्वंद्वियों को पछाड़कर, सभी दुश्मनों को मौत के घाट उतार कर अथवा उनसे आत्मसमर्पण करवाकर और बिलकुल नाक रगड़वाकर, यह महसूस करने लगते हैं कि अब उनका कोई दुश्मन, प्रतिद्वंद्वी या दोस्त नहीं रहा—केवल स्वयं ही रह गए हैं, सर्वोच्च, एकाकी, निराश और परित्यक्त। तब वे अपनी विजय को एक दुखान्त घटना समझने लगते हैं। लेकिन हमारा नायक ऐसा नहीं था। वह सदैव विजयोल्लास से परिपूर्ण रहता था। यह शायद इस बात का प्रमाण था कि चीन

नैतिक दृष्टि से बाकी दुनिया के मुकाबले श्रेष्ठ है।

जरा आ क्यू को तो देखिए। वह कितना प्रफुल्लित अनुभव कर रहा है, मानो हवा पर तैर रहा हो।

यह विजय वास्तव में विचित्र परिणामों से रहित न थी। काफी समय तक हवा में उड़ने के बाद वह संरक्षक-देवता के मंदिर में जा पहुँचा, जहाँ वह अक्सर लेटते ही खर्राटे मारने लगता था। लेकिन आज रात उसकी आँखों से नींद गायब हो चुकी थी। उसे अनुभव हो रहा था कि उसके अँगूठे और तर्जनी को न मालूम क्या हो गया है, उनमें आम दिनों के मुकाबले अधिक कोमलता आ गई थी। यह कहना मुश्किल था कि उस छोटी भिक्षुणी के चेहरे की कोई मुलायम व कोमल वस्तु उसकी उँगलियों से चिपक गई थी अथवा भिक्षुणी के गालों की रगड़ में उसकी उँगलियाँ मुलायम हो गई थीं।

"आ क्यू, तू निपूता ही मर जाए।"

ये शब्द आ क्यू के कानों में बार-बार गूँज रहे थे। वह सोचने लगा, "ठीक है, मेरी भी पत्नी होनी चाहिए। कारण, अगर कोई आदमी निपूता ही मर जाए तो मृतात्मा को पिण्डदान कौन करेगा....? मेरी पत्नी अवश्य होनी चाहिए।" जैसी कि कहावत है, 'अपुत्रोचित आचरण के तीन रूप होते हैं, जिनमें सबसे निकृष्ट है सन्ताहीन होना।' (मन्शियस (373-389 ईसा पूर्व) का एक उद्धरण)। यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि 'संतानहीन मृतात्मा भूखी ही रह जाती है। (प्राचीन ग्रंथ 'चओ च्यान' का एक उद्धरण)। स्पष्ट है कि उसके विचार ऋषि-मुनियों की शिक्षा के बिलकुल अनुकूल थे। लेकिन बड़े दुख की बात है कि बाद में उसके सिर पर पागलपन सवार हो गया।

"औरत, औरत!..." उसने सोचा।

"...वह भिक्षुक उसका स्पर्श करता है... औरत, औरत... औरत।" उसने फिर सोचा।

हम यह कभी नहीं जान पाएँगे कि उस रात आ क्यू कब सो सका। मगर इसके बाद शायद हमेशा ही उसे अपनी उँगलियाँ जरा कोमल और मुलायम अनुभव होने लगीं, उसके मस्तिष्क में एक उन्माद-सा छाने लगा। "औरत..." वह लगातार सोचता गया।

इससे हम देख सकते हैं कि औरत मानव जाति के लिए एक अभिशाप है।

चीन के अधिकांश पुरुषों को यदि स्त्रियाँ बरबाद न कर देतीं तो

शायद वे ऋषि-मुनि बन गए होते। शांग राजवंश का विनाश ता ची ने किया था और चओ राजवंश का उन्मूलन पाओ स न किया था; जहाँ तक छिन राजवंश का सवाल है, हालाँकि इस बात का ऐतिहासिक प्रमाण मौजूद नहीं है, फिर भी अगर हम यह मानें कि इसका पतन भी किसी औरत के ही कारण हुआ तो शायद ज्यादा गलत नहीं होगा। और यह सच है कि दोंग झुओ की मृत्यु का कारण भी दियाओ चान ही थी। (ता ची ईसा पूर्व बारहवीं शताब्दी में शांग राजवंश के अंतिम राजा की रखैल थी। पाओ से ईसा पूर्व आठवीं शताब्दी में पश्चिमी चाओ राजवंश के अंतिम राजा की रखैल थी। त्याओ छान ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी के एक शक्तिशाली मंत्री तुंग च्यो की रखैल थी।)

आ क्यू भी शुरू में बड़े नैतिक मूल्यों वाला व्यक्ति था। हालाँकि हमें इस बात की जानकारी नहीं है कि उसका मार्गदर्शन किसी अच्छे शिक्षक ने किया था अथवा नहीं, वह 'स्त्री-पुरुष' को सख्ती के साथ एक दूसरे से पृथक रखने के सिद्धांत का हमेशा बड़ी ईमानदारी से पालन करता था तथा छोटी भिक्षुणी और नकली विदेशी दनिन्दे के पाखण्डीपन की ईमानदारी से भर्त्सना करने में कभी पीछे नहीं रहता था। उसकी राय थी, "सभी भिक्षुणियाँ गुप्त रूप से भिक्षुओं के साथ नाजायज संबंध रखती हैं। अगर कोई औरत रास्ते में अकेली चल रही हो, तो वह जरूर बुरे मर्दों को फुसलाना चाहती है। जब कोई मर्द और औरत आपस में बात कर रहे हों तो वे दोनों जरूर अपनी मुलाकात का स्थान य समय निश्चित कर रहे होंगे।" इस तरह के लोगों को सुधारने के लिए वह उन्हें बड़े खूँखार ढंग से घूरता था, ऊँची आवाज में तीखी व्यंग्य करता था, अथवा यदि एकान्त हो तो पीछे से पत्थर तक मार देता था।

कौन कह सकता था कि लगभग तीस वर्ष की उम्र में, जबकि एक आदमी को 'दृढ़ता से खड़ा' (कन्फ्यूशियन ने कहा था कि वह तीन वर्ष की आयु में 'दृढ़ता से खड़ा' है। बाद में इस वाक्यांश का प्रयोग तीन वर्ष की उम्र बताने के लिए होने लगा।) होना चाहिए, वह इस तरह एक छोटी भिक्षुणी पर फिसल जाएगा ? शास्त्रों के अनुसार इस प्रकार का हल्कापन अत्यंत निंदनीय होता है; स्त्री सचमुच ही घृणा की पात्र होती है। कारण, यदि उस छोटी भिक्षुणी का चेहरा कोमल व मुलायम न होता तो आ क्यू उस पर मोहित न होता; यदि उसका चेहरा किसी कपड़े से ढका होता, तो भी ऐसी स्थिति न आती। आज से पाँच-छह साल पहले खुले मंच पर आपेरा देखते समय उसने एक दर्शक स्त्री की टाँग पर चुटकी काट ली थी। लेकिन चूँकि उसकी टाँगे पजामे से ढकी थीं,

इसलिए उस घटना के बाद आ क्यू को ऐसे उन्माद की अनुभूति नहीं हुई थी, जैसी कि आज हो रही है। छोटी भिक्षुणी का चेहरा ढका हुआ नहीं था, जो उसके घिनौने पाखण्डीपन का एक अन्य प्रमाण था।

"औरत..." आ क्यू सोचता रहा।

वह उन औरतों पर कड़ी नजर रखता जिनके बारे में उसे यह ख्याल होता कि वे 'बुरे मर्दों को फुसलाना चाहती हैं,' मगर उसकी तरफ देखकर मुस्कराती तक नहीं थीं। जब कभी कोई औरत उससे बात करती तो वह बड़े गौर से सुनता था, मगर तब तक उसे एक भी औरत ऐसी नहीं मिली थी जिसने उससे गुप्त रूप से मिलने-जुलने के बारे में कोई बात कही हो। ओह! यह औरत के घिनौनेपन का एक अन्य प्रमाण है, वे सब दरअसल, एक झूठी शालीनता का लबादा ओढ़े रहती हैं।

एक दिन जब आ क्यू चाओ साहब के घर चावल पीस रहा था, तो रात का भोजन करने के बाद वह रसोईघर में बैठकर चिलम सुलगाने लगा। अगर किसी और का घर होता तो भोजन के बाद वह फौरन घर लौट गया होता। लेकिन चाओ परिवार के लोग रात का खाना जरा जल्दी खा लेते थे। हालाँकि वहाँ यह नियम था कि खाना खाने के बाद कोई रोशनी नहीं कर सकता था और सब लोग बिस्तर में पहुँच जाते थे, मगर कभी-कभी इसका अपवाद भी देखने को मिलता था। चाओ साहब के बेटे को काउंटी की सरकारी परीक्षा पास करने से पहले इस बात की इजाजत थी कि वह रोशनी करके परीक्षा में आने वाले निबन्धों की तैयारी करे, इसी तरह जब आ क्यू वहाँ काम करने जाता तो उसे इस बात की इजाजत थी कि चावल पीसने के लिए रोशनी किए रखे। इस अपवाद के कारण अपना काम शुरू करने से पहले आ क्यू अब भी रसोईघर में बैठा चिलम पी रहा था।

चाओ परिवार की एकमात्र नौकरानी आमा ऊ ने जब घर के बर्तन-भाँडे माँज लिए तो वह भी लंबे बेंच पर बैठकर आ क्यू से बातें करने लगी--

"मालिकन ने दो दिन से कुछ नहीं खाया, क्योंकि मालिक रखैल लाना चाहते हैं!..."

"औरत... आमा वू...यह छोटी-सी विधवा", आ क्यू ने सोचा।

"हमारी नौजवान मालकिन आठवें चंद्रमास में बच्चा जनने वाली है।..."

"औरत..." आ क्यू सोचता रहा।

उसने अपनी चिलम एक तरफ रख दी और उठ खड़ा हुआ।

"हमारी नौजवान मालकिन..." आमा वू बोलती गई।

"आ, मेरे साथ सो जा।" आ क्यू ने अचानक कहा और आगे बढ़कर उसके पैरों पर गिर पड़ा।

एक क्षण के लिए वहाँ बिलकुल सन्नाटा छा गया।

"हाय माँ।" आमा वू अवाक् रह गई। सहसा काँप उठी और चीखती हुई वहाँ से भाग खड़ी हुई। कुछ देर बाद उसके रोने-सिसकने की आवाज आने लगी।

दीवार के सामने घुटनों के बल बैठा आ क्यू भी अवाक् रह गया। खाली बेंच को दोनों हाथों से थामकर वह धीरे-धीरे उठा। उसे एक धुँधला-सा आभास हो रहा था। कि कुछ-न-कुछ घपला अवश्य हो गया है। वास्तव में इस समय वह खुद भी बहुत घबराया हुआ था। हड़बड़ाकर उसने अपनी चिलम कमरबंद में खोंस ली और चावल पीसने के लिए जाने लगा। लेकिन तभी किसी ने जोर से उसके सिर पर प्रहार किया। घूमकर देखा तो काउंटी की सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार सामने खड़ा दिखाई दिया। उसके हाथ में एक लंबा-सा बाँस था।

"तुझे हिम्मत कैसे हुई... तुझे ?"

लंबा बाँस आ क्यू के कंधों के ऊपर उठा। जब उसने अपना सिर दोनों हाथों से ढक लिया तो प्रहार उसकी उँगलियों की पोरों पर पड़ा। वह दर्द से कराह उठा। जब वह रसोईघर के दरवाजे से भाग रहा था तो उसे लगा पीठ पर भी बाँस का प्रहार हुआ है।

"अबे ओ कछुए की औलाद।" सफल उम्मीदवार ने पीछे से टकसाली जबान में जोर से गाली दी।

आ क्यू भागकर धान कूटने के दालान में जा पहुँचा। वहाँ वह अकेला ही खड़ा था। उसकी उँगलियों की पोरों में अब भी दर्द हो रहा था, 'कछुए की औलाद'--ये शब्द उसके कानों में अब भी गूँज रहे थे क्योंकि यह गाली वेइच्वांग के आम गाँववासी कभी इस्तेमाल नहीं करते थे। इसे सिर्फ वे धनी लोग ही इस्तेमाल करते थे जो किसी-न-किसी रूप में सरकारी अफसर रह चुके थे। इस वजह से यह अधिक चौंकाने वाली और असरदार हो गई थी। अब तक "औरत..." के बारे में सभी तरह के विचार उसके दिमाग से रफूचक्कर हो चुके थे। गालियाँ और मार खाने के बाद उसे ऐसा लगने लगा मानो वह सारा मामला

खत्म हो चुका हो। प्रफुल्लित होकर वह फिर से चावल पीसने लगा। कुछ देर चावल पीसने के बाद उसे गर्मी लगने लगी और वह अपनी कमीज उतारने के लिए रुक गया।

जब आ क्यू अपनी कमीज उतार रहा था तो उसे बाहर कोलाहल सुनाई दिया और चूँकि आ क्यू को हर तरह की सरगरमी में शामिल होना पसंद था, इसलिए कोलाहल का पता लगाता हुआ वह बाहर निकल गया। वह सीधा चाओ साहब के भीतरी आँगन से आ रहा था। हालाँकि संध्या का समय हो चुका था, फिर भी बहुत से लोग वहाँ जमा थे। चाओ परिवार के सभी लोग मौजूद थे जिनमें वह मालकिन भी थी जिसने दो दिन से खाना नहीं खाया था। उसके अलावा पड़ोसिन श्रीमती चाओ और संबंधी चाओ पाए येन व चाओ स छन भी उपस्थित थे।

नौजवान मालकिन आमा ऊ को नौकरों के कमरे से बाहर ले जाती हुई कह रही थी—

"बाहर चल... अपने कमरे में बैठकर दुखी क्यों हो रही है ?"

"हर आदमी जानता है कि तू एक नेक औरत है," श्रीमती चाओ बगल से बोली। "तुझे खुदकुशी का विचार दिमाग से निकाल देना चाहिए।"

आमा ऊ रोती-चिल्लाती रही और मन-ही-मन कुछ बड़बड़ाती रही।

"यह खूब तमाशा है", आ क्यू ने सोचा। "यह छोटी-सी विधवा न जाने क्या गुल खिलाना चाहती है ?" कारण पता लगाने के लिए वह चाओ स छन के पास जा ही रहा था कि अचानक उसकी नजर चाओ साहब के बड़े लड़के पर पड़ी, जो लंबा बाँस हाथ में उठाए उसकी तरफ बढ़ रहा था। लंबे बाँस को देखते ही उसे याद आ गया कि उससे उसकी पिटाई हो चुकी है और वह समझ गया कि यहाँ जो घपला मचा हुआ है उसका किसी-न-किसी रूप में उसके अपने साथ अवश्य ताल्लुक है। वह पीछे मुड़ा और भाग खड़ा हुआ, इस उम्मीद से कि धान कूटने के आँगन में जा छिपेगा, लेकिन यह नहीं सोच सका कि लंबा बाँस उसे पीछे नहीं लौटने देगा। इसके बाद वह फिर से मुड़ा और दूसरी दिशा में भागता हुआ बिना कोई बखेड़ा खड़ा किए पिछले दरवाजे से बाहर चला गया। कुछ ही समय में वह संरक्षक-देवता के मंदिर में जा पहुँचा।

कुछ देर बैठने के बाद आ क्यू ठंड से ठिठुरने लगा और उसके रोंगटे खड़े हो गए। कारण, यद्यपि बसंत आ चुका था फिर भी रातें काफी ठण्डी थीं और पीठ नंगी नहीं रखी जा सकती थी। उसे याद आया कि उसकी कमीज

चाओ परिवार के घर पर रह गई है। डर था कि अगर उसे लेने गया तो सफल उम्मीदवार के लंबे बाँस की मार का स्वाद नहीं फिर न चखना पड़े।

और तभी बेलिफ अन्दर आ पहुँचा।

"तेरा सत्यानाश हो आ क्यू के बच्चे।" बेलिफ ने कहा। "अबे ओ बागी, तू चाओ परिवार की नौकरानी पर हाथ साफ करने से बाज नहीं आया? तूने तो मेरी नींद ही हराम कर दी हैं तेरा सत्यानाश हो।..."

इस तरह गालियों की बौछार होने पर यह स्वाभाविक था कि आ क्यू चुप रहता। अंत में, चूँकि रात का वक्त था इसलिए आ क्यू को बेलिफ के हाथ में दुगुने पैसे, यानी चार सौ ताँबे के सिक्के रखने थे। लेकिन चूँकि उसके पास एक दमड़ी भी नहीं थी, इसलिए उसने अपना टोप जमानत के तौर पर देकर नीचे लिखी पाँच शर्तें मंजूर कर लीं—

1. अगले दिन सुबह आ क्यू एक पौण्ड वजन वाली दो लाल मोमबत्तियाँ और एक बंडल अगरबत्तियाँ चाओ परिवार के पास भेजकर अपने पाप का प्रायश्चित करेगा।

2. ताओ धर्म के उस पुजारी की दक्षिण आ क्यू देगा जिसे चाओ परिवार ने भूत-प्रेतों को भगाने के लिए बुलाया है।

3. भविष्य में आ क्यू चाओ परिवार के घर में हर्गिज कदम नहीं रखेगा।

4. अगर आमा ऊ को बदकिस्मती से कुछ हो गया, तो उसके लिए आ क्यू को ही जिम्मेदार ठहराया जाएगा।

5. आ क्यू अपनी मजूरी और कमीज लेने चाओ परिवार के घर नहीं जाएगा।

आ क्यू ने ये सारी शर्तें मान लीं, लेकिन अफसोस की बात कि उसके पास नगद पैसा बिलकुल नहीं था। भाग्यवश बसंत का मौसम आ चुका था और रूई के लिहाफ के बिना भी गुजारा हो सकता था। इसलिए उसने अपना रूई का खिलाफ दो हजार ताँबे के सिक्कों के बदले गिरवी रखकर उक्त तमाम शर्तें पूरी कीं। अपनी नंगी पीठ झुकाकर नाक रगड़ने के बाद भी आ क्यू के पास कुछ ताँबे के सिक्के बाकी रह गए थे। लेकिन उन्हें देखकर बेलिफ से अपना टोप छुड़ाने के बदले उसने यह सारा पैसा शराब में उड़ा दिया।

चाओ परिवार ने वास्तव में न तो आ क्यू की दी हुई अगरबत्तियाँ जलाईं और न मोमबत्तियाँ। चूँकि उनका इस्तेमाल मालकिन भगवान बुद्ध की

पूजा के लिए कर सकती थीं, इसलिए उन्हें अलग रख दिया गया। आ क्यू की फटी-पुरानी कमीज से नौजवान मालकिन के उस बच्चे की लंगोटियाँ बना दी गईं जो आठवें ग्रदंमास में पैदा हुआ। बचे-खुचे चिथड़ों से आमा ऊ ने अपने जूते का तला तैयार कर लिया।

अध्याय : पाँच
जीविका की समस्या

चाओ परिवार के सामने नाक रगड़ने और उसकी सारी शर्तें मान लेने के बाद आ क्यू हमेशा की ही तरह संरक्षक-देवता के मंदिर में लौट गया। सूरज डूब चुका था। उसे कुछ अजीब-सा लग रहा था। काफी सोच-विचार करने के बाद वह इस नतीजे पर पहुँचा कि शायद पीठ नंगी होने के कारण ही उसे ऐसा महसूस हो रहा है। उसे याद आया उसके पास एक फटी-पुरानी अस्तर वाली जाकिट अब भी मौजूद है। वह जाकिट पहनकर लेट गया। आँख खुली तो देखा सूरज की रोशनी पश्चिमी दीवार के ऊपर तक पहुँच चुकी है। "अरे, सत्यानाश हो गया..." कहता हुआ वह उठ बैठा।

उठने के बाद वह हमेशा की ही तरह गली-कूचों में आवारागर्दों की तरह घूमने लगा। उसे फिर कुछ अजीब-सा लगने लगा, हालाँकि इसकी तुलना नंगी पीठ के कारण होने वाली शारीरिक असुविधा से नहीं की जा सकती थी। जाहिर था कि उस दिन के बाद वेइच्वांग की सभी औरतें आ क्यू से कतराने लगीं; जब भी उसे आता हुआ देखतीं, घर के भीतर छिप जातीं। यहाँ तक कि श्रीमती चाओ भी, जो लगभग पचास की हो चुकी थीं, उसे देखते ही घबराकर बाकी औरतों के साथ घर के भीतर घुस गईं और उन्होंने अपनी ग्यारह वर्ष की लड़की को भी भीतर बुला लिया। यह सब आ क्यू को बड़ा अजीब-सा लगा। "कुतिया कहीं की" उसने सोचा। "ये औरतें अचानक नई-नवेलियों की तरह शर्म करने लगी हैं।....

लेकिन जब कई दिन बीत गए तो उसे और भी जयादा अजीब-सा लगने लगा। पहले, मदिरालय वाले ने उसे उधार देने बंद कर दिया; दूसरे, संरक्षक-देवता के मंदिर के बूढ़े पुजारी ने उससे कुछ ऐसी कड़वी बातें कहीं जिससे ऐसा लगा मानो वह आ क्यू को वहाँ से निकालना चाहता हो, तीसरे, कई दिनों तक—उसे ठीक-ठीक याद नहीं कितने दिनों तक—उसे मजूरी के लिए बुलाने एक भी आदमी नहीं आया। मदिरालय में उधार मिलना बंद होने पर भी

वह काम चला सकता था; बूढ़े पुजारी द्वारा बार-बार मंदिर से निकलने के लिए कहे जाने के बावजूद आ क्यू उसकी शिकायतों की उपेक्षा कर सकता था; लेकिन अगर मजूरी के लिए बुलाने कोई नहीं आया तो क्या वह भूखों मरेगा? यह स्थिति सचमुच एक 'अभिशाप' बनकर आ गई थी।

जब हालात आ क्यू के बरदाश्त के बाहर हो गए, तो वह उन घरों में गया जहाँ उसे नियमित रूप से काम मिलता रहता था—सिर्फ चाओ साहब के मकान को छोड़कर जिसकी दहलीज पार करने की इजाजत उसे नहीं थी—ताकि मालूम कर सके कि आखिर बात क्या है। लेकिन हर जगह लोग उसके साथ आजीबोगरीबो ढंग से पेश आए। घर से बारह आनेवाला आम तौर पर पुरुष ही होता था, जो बेहर चिढ़ा हुआ जान पड़ता था और आ क्यू को इस तरह दुत्कारता था मानो कोई भिखारी हो :

"यहाँ तुझे कुछ नहीं मिलेगा। दफा हो जा यहाँ से।"

आ क्यू को यह सब देखकर और भी ज्यादा आश्चर्य होने लगा। "इन लोगों को पहले अपने काम में मदद के लिए जरूर किसी-न-किसी की आवश्यकता होती थी, "उसने सोचा। "अचानक यह कैसे हो सकता है कि इनके पास कोई भी काम न रह गया हो। जरूर दाल में कुछ काला है।" अच्छी तरह पूछताछ करने पर पता चला कि जब भी उनके यहाँ कोई छोटा-मोटा काम होता तो वे लोग नौजवान डी को बुला लाते। नौजवान डी एक दुबला-पतला, कमजोर कंगाल व्यक्ति था जो आ क्यू की नजरों में मुछन्दर वांग से भी गया-बीता था। कौन जानता था कि यह निचले दर्जे का आदमी उसकी रोजी छीन लेगा। इसलिए इस बार आ क्यू का रोष आम दिनों के मुकाबले कहीं ज्यादा भड़क उठा। रास्ते में चलते-चलते वह गुस्से से उबल पड़ा और अचानक हाथ उठाकर गाने लगा, "हड्डी-पसली चूर तुम्हारी लोहे की छड़ से कर दूँगा।.... ('नाग और बाघ की लड़ाई' नामक आपेरा की एक पंक्ति यह आपेरा शाओशिंग में काफी लोकप्रिय है।)

कुछ दिनों बाद छ्येन साहब के मकान के सामने उसकी मुलाकात नौजवान डी से हो गई। "जब दो शत्रु मिलते हैं तो उनकी आँखों से अंगारे बरसने लगते हैं।" जब आ क्यू करीब पहुँचा तो नौजवान डी निस्तब्ध खड़ा रहा गया।

"अबे ओ पाजी गधे।" आ क्यू क्रोध में फुंफकारा।

"मैं एक कीड़ा हूँ—बस, अब तो खुश हो ?" नौजवान डी ने कहा।

उसकी इस नम्रता से आ क्यू का पारा और ज्याद चढ़ गया। लेकिन चूँकि उसके पास लोहे की छड़ नहीं थी, इसलिए वह हाथ फैलाकर सिर्फ नौजवान डी की चुटिया पकड़ने के लिए झपटा। नौजवान डी एक हाथ से अपनी चुटिया की रक्षा करता हुआ दूसरे हाथ से आ क्यू की चुटिया पकड़ने के लिए आगे बढ़ा। इस पर आ क्यू ने भी खाली हाथ से अपनी चुटिया बचाने की कोशिश की। आ क्यू ने नौजवान डी को पहले कभी कुछ नहीं समझा था, मुर चूंकि कुछ समय से आ क्यू भुखमरी का सामना कर रहा था, इसलिए वह भी अपने प्रतिद्वंद्वी की ही तरह दुबला-पतला और कमजोर हो गया था। इस तरह दोनों ही बराबर के प्रतिद्वंद्वी लग रहे थे। चार हाथों ने दो सिर थामे हुए थे, दोनों आदमी कमर झुकाए हुए थे और कोई आधे घंटे तक छूयेन परिवार की सफेद दीवार पर उनकी नीली इन्द्रधनुषाकार छाया पड़ती रही।

"बहुत हो चुका। बस करो।" कुछ दर्शकों ने कहा। वे शायद उसके बीच सुलह करना चाहते थे।

"बहुत अच्छा, बहुत खूब।" कुछ अन्य दर्शकों ने कहा। लेकिन यह साफ-साफ मालूम न हो सका कि उनका उद्देश्य क्या था—सुलह कराना, लड़ाई करनेवालों की प्रशंसा करना अथवा उन्हें और ज्यादा लड़ने के लिए उकसाना।

मगर दोनों ही योद्धाओं ने उन सब की एक न सुनी। अगर आ क्यू तीन कदम आगे बढ़ता तो नौजवान डी तीन कदम पीछे हट जाता, इसके बाद दोनों स्थिर खड़े रहते। अगर नौजवान डी तीन कदम आगे बढ़ता तो आ क्यू तीन कदम पीछे हट जाता, इसके बाद दोनों फिर से स्थिर खड़े रहते। लगभग आधे घंटे बाद--वेइच्वांग में सिर्फ गिनी-चुनी ही घड़ियाँ थीं, इसलिए ठीक समय बताना मुश्किल है; हो सकता है बीस ही मिनट हुए हों—उनके सिर से भाप उठने लगी और चेहरे पर पसीने की धार बहने लगी। आ क्यू ने अपने हाथ पीछे खींच लिए। उसी क्षण नौजवान डी ने भी अपने हाथ पीछे खींच लिए। दोनों एक साथ कमर सीधी की, दोनों एक साथ पीछे हटे और भीड़ को चीरते हुए निकल गए।

"तेरी खबर फिर कभी लूँगा, कमीने।..." आ क्यू ने उसे कोसते हुए कहा—"मैं भी तेरी खबर फिर कभी लूंगा।" नौजवान डी ने भी वही वाक्य दोहराया।

इस महायुद्ध में न तो किसी की विजय हुई और न पराजय, यह भी मालूम न हो सका कि दर्शकों को इससे संतोष हुआ या नहीं, क्योंकि उनमें से

एक भी आदमी ने अपनी राय जाहिर नहीं की। यह सब होने के बावजूद आ क्यू को रोजगार देने कोई नहीं आया।

एक दिन जब मौसम में कुछ गर्मी थी और गुलाबी बयार से ग्रीष्म के आगमन का आभास हो रहा था तो आ क्यू को कुछ ठण्ड महसूस होने लगी, लेकिन वह ठण्ड तो बरदाश्त कर सकता था—उसकी सबसे बड़ी चिंता भूखे पेट की थी। वह अपना रूई का लिहाफ, टोप और कमीज काफी पहले ही गँवा चुका था। बाद में उसने अपनी रूईदार जाकिट को भी बेच डाला। अब उसके पास सिर्फ एक पाजामा बच गया, जिसे उतारना उसके लिए संभव नहीं था। यह सच है कि उसके पास एक अस्तर वाली फटी-पुरानी जाकिट और थी, लेकिन वह बिलकुल चिथेड़े-चिथड़े हो चुकी थी और सिर्फ जूते के तले बनाने लायक रह गई थी। वह काफी समय से उम्मीद कर रहा था कि उसे कहीं रास्ते में पड़ा पैसा मिल जाएगा, लेकिन अभी तक कामयाब नहीं हो पाया था। वह यह उम्मीद भी कर रहा था कि शायद किसी दिन उसे अपने टूटे-फूटे कमरे में अचानक कोई रकम मिल जाएगी और इसे पाने के लिए उसने अपने कमरे की पूरी छानबीन भी कर डाली थी; लेकिन कमरे में फूटी कौड़ी भी न थी। इसके बाद उसने निश्चय कर लिया कि भोजन की खोज में गाँव के बाहर चला जाएगा।

'भोजन की खोज' में जब वह सड़क पर जा रहा था तो सामने चिरपरिचित मदिरालय और भाप से पकी रोटी पर नजर पड़ी। लेकिन वहाँ एक क्षण के लिए भी रुके बिना, यहाँ तक कि उन्हें पाने के लिए लालायित हुए बिना वह आगे बढ़ गया। उसे इन चीजों की तलाश नहीं थी, हालांकि यह बात वह खुद भी नहीं जानता था कि उसे किस चीज की तलाश थी।

चूँकि वेइच्वांग कोई बड़ा गाँव न था, इसलिए शीघ्र ही उसे पीछे छोड़कर आ क्यू आगे बढ़ गया। गाँव के बाहर ज्यादातर इलाके में धान के खेत फैले हुए थे। दूर क्षितिज तक धान के कोमल अंकुरों की हरियाली छाई हुई थी। कहीं-कहीं गोल-गोल काली-काली आकृतियाँ हिलती-डुलती दिखाई दे रही थीं। वे लोग खेतों में काम करने वाले किसान थे। लेकिन देहाती जीवन की इस आनंदमय अनुभूति से विमुख आ क्यू लगातार अपने रास्ते चलता जा रहा था, क्योंकि वह बखूबी इस बात को जानता था कि यह उनकी 'भोजन की खोज' से कोसों दूर है। अंत में वह 'शांत आत्म-उत्कर्ष भिक्षुणी-विहारी' की चारदीवारी के पास जा पहुँचा।

यह भिक्षुणी-विहार भी चारों तरफ से धान के खेतों से घिरा था।

इसकी सफेद दीवारें हरे-भरे खेतों के बीच स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थीं। पिछवाड़े की तरफ गारे-मिट्टी की नीची दीवार के अंदर की तरफ एक साग-सब्जी का बगीचा था। एक क्षण के लिए आ क्यू ठिठका और उसने अपने चारों ओर नजर डाली। चूँकि आसपास कोई नजर नहीं आया, इसलिए वह एक पेड़ के सहारे उस नीची दीवार पर चढ़ गया। गारे-मिट्टी की दीवार सहसा भरभराकर गिरने को हुई। आ क्यू डर के मारे काँपने लगा। लेकिन शहतूत के पेड़ की शाख से लटककर दीवार फाँदकर वह अंदर चला गया। वहाँ साग-सब्जियों की भरमार थी, लेकिन पीली शराब, भाप से पकी रोटी अथवा अन्य किसी खाद्य-पदार्थ का कहीं कोई चिन्ह न था। पश्चिमी दीवार के निकट बाँसों का झुरमुट खड़ा था, जहाँ बाँस की कोमल कोपलें फूट रही थीं। लेकिन बदकिस्मती से ये कोपलें पकी हुई नहीं थीं। सरसों के पौधे खड़े थे, जो काफी समय पहले ही बीज के लिए चुन लिए गए थे, राई के पौधों पर फूल खिलने वाले थे और पातगोभी की छोटी-छोटी गाँठें बड़ी सख्त मालूम पड़ रही थीं।

परीक्षा में असफल किसी विद्वान के समान निराश हो वह धीरे-धीरे बगीचे के फाटक की तरफ बढ़ने लगा। सहसा वह खुशी से झूम उठा। कारण, उसकी नजर सामने शलजम की क्यारी पर पड़ी। नीचे झुककर उसने शलजम खोदना शुरू कर दिया कि अचानक फाटक के पीछे ऐसे एक घुटा हुआ सिर नजर आया, जो फौरन गायब हो गया। वह वास्तव में वही छोटी भिक्षुणी थी। हालाँकि आ क्यू छोटी भिक्षुणी जैसे लोगों को बेहद हिकारत की नजर से देखता था, फिर भी कभी-कभी ऐसा समय आ जाता है जब 'सावधानी को ही सबसे बड़ी बुद्धिमानी समझा जाता है।' उसने जल्दी-जल्दी चार शलजम उखाड़े, पत्तियाँ तोड़कर फेंक दी और उन्हें अपनी जाकिट में ठूँस लिया। तब तक एक बूढ़ी भिक्षुणी बाहर आ पहुँची।

"भगवान बुद्ध हमारी रक्षा करें। अरे आ क्यू हमारे बगीचे में कूदकर शलजम चुराने की तेरी हिम्मत कैसे हुई ?... हे भगवान, यह कितना बड़ा पाप है। भगवान बुद्ध हमारी रक्षा करें।..."

"मैं तुम्हारे बगीचे में कब कूदा, तुम्हारे शलजम कब चुराए?" आ क्यू ने उत्तर दिया और भिक्षुणी की तरफ देखता हुआ वहाँ से चल पड़ा।

"अभी-अभी चुराए हैं—देख, यह क्या है ?" उसकी जाकिट की तरफ इशारा करते हुए बूढ़ी भिक्षुणी बोली।

"क्या ये तुम्हारे हैं ? क्या तुम इसे साबित कर सकती हो ? तुम..."

अपनी बात पूरी करने से पहले ही आ क्यू सिर पर पाँव रखकर भाग खड़ा हुआ। उसके पीछे एक बेहद मोटा, काला कुत्ता लपका। शुरू में यह कुत्ता सामने के फाटक पर था। वह पीछे के बगीचे में कैसे पहुँचा यह बड़ आश्चर्य की बात थी। काला कुत्ता गुर्राता हुआ आ क्यू के पीछे दौड़ा और उसकी टाँग पर दाँत मारने ही वाला था कि उसी समय उनकी जाकिट में से एक शलजम नीचे गिर गया। कुत्ता चौंका और एक क्षण के लिए वहीं रुक गया। मौके का फायदा उठाकर आ क्यू शहतूत के पेड़ पर चढ़ गया और मिट्टी-गारे की दीवार फाँदकर दूसरी तरफ जा गिरा। काला कुत्ता शहतूत के पेड़ के पास भौंकता रह गया और बूढ़ी भिक्षुणी भगवान को याद करती हुई खड़ी रह गई।

इस डर से कि कहीं भिक्षुणी काले कुत्ते को उसके पीछे फिर न छोड़ दे, आ क्यू ने झटपट शलजम बटोरे और दो-चार छोटे-छोटे पत्थर हाथ में उठाकर भाग निकला। काला कुत्ता फिर नहीं आया। आ क्यू ने पत्थर नीचे फेंक दिए और शलजम खाता हुआ आगे बढ़ गया। उसने मन में सोचा, "यहाँ कुछ नहीं मिलेगा। शहर जाना ज्यादा ठीक रहेगा...।"

तीसरा शलजम खा चुकने तक उसके शहर जाने का फैसला कर लिया था।

अध्याय : छह
उत्थान से पतन की ओर

उस वर्ष चंद्रोत्सव से पहले आ क्यू वेइच्वांग में नहीं दिखाई दिया था। उसके वापस लौटने की खबर सुनकर हर आदमी ताज्जुब करने लगा और पुरानी बातों को याद करके सोचने लगा कि इस बीच आखिर वह गया कहाँ था। इससे पहले जब आ क्यू शहर गया था तो लोगों को पहले से ही बड़ी शान से सूचित कर गया था; चूँकि इस बार उसने ऐसा नहीं किया, इसलिए उसके शहर जाने का किसी को पता ही न चला। शायद उसके संरक्षक-देवता के मंदिर के बूढ़े पुजारी को बताया हो। लेकिन वेइच्वांग के रिवाज के मुताबिक शहर जाना सिर्फ तभी महत्वपूर्ण समझा जाता था जब चाओ साहब, छ्येन साहब अथवा काउंटी के सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार शहर जाते थे। यहाँ तक कि नकली विदेशी दरिन्दे के शहर जाने की भी चर्चा नहीं होती थी, आ क्यू की भला क्या बिसात। शायद इसीलिए बूढ़े पुजारी ने आ क्यू के शहर जाने की बात किसी से नहीं कही थी और गाँववाले इस संबंध में कुछ नहीं जान पाए।

आ क्यू की इस बार की वापसी भी पहले के मुकाबले अलग किस्म की थी और लोगों को आश्चर्य में डालने के लिए काफी थी। साँझ हो चुकी थी। नींद से भरी आँखें लिए वह मदिरालय के दरवाजे पर जा पहुँचा और सीधे काउंटर पर पहुँचकर अपने कमरबंद से मुट्ठीभर चाँदी और ताँबे के सिक्के निकाल उन्हें खनखनाता हुआ काउंटर पर रखकर बोला, "नकद पैसा! शराब लाओ।" वह एक नई अस्तर वाली जाकिट पहने था और कमर में एक बड़ा-सा बटुआ लटक रहा था, जिसके भारी वजन से कमरबंद कुछ नीचे की तरफ झुक गया था।

वेइच्वांग में रिवाज था कि अगर किसी आदमी में कोई अनोखी बात नजर आती तो उसके साथ इज्जत का बरताव किया जाता, न कि बदतमीजी का। हालाँकि उस समय लोग अच्छी तरह जान गए थे कि वह आ क्यू ही है, फिर भी वह फटे-पुराने कोट वाले आ क्यू से बिलकुल भिन्न व्यक्ति बन चुका था। प्राचीन कहावत है, "यदि कोई विद्वान तीन दिन के लिए भी बाहर गया हो, तो उसे नई दृष्टि से देखना चाहिए।" इसलिए वेटर, मदिरालय का मालिक, ग्राहक और सड़क पर आने-जानेवाले सभी लोग स्वाभाविक रूप से उसे एक आदरमिश्रित संदेह की नजर से देख रहे थे। मदिरालय के मालिक ने सिर हिलाकर कहा—

"क्यों भाई आ क्यू, वापस आ गए ?"

"हाँ, आ गया हूँ।"

"खूब पैसा कमाया है तुमने...आखिर गए कहाँ थे ?"

"शहर चला गया था।"

अगले दिन तक यह खबर पूरे वेइच्वांग में फैल गई और चूँकि हर आदमी आ क्यू की सफलता, उसकी नकद पूँजी और नई अस्तर वाली जाकिट की कहानी जानना चाहता था, इसलिए गाँववासियों ने मदिरालय में, चाय की दुकान में और मंदिर की ओलती के नीचे धीरे-धीरे इस खबर की छानबीन शुरू कर दी। नीतजा यह हुआ कि उन्होंने आ क्यू के साथ एक नए सम्मानपूर्ण ढंग से बरताव करना शुरू कर दिया।

आ क्यू ने बताया कि शहर जाकर एक प्रांतीय सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार का घरेलू नौकर बन गया था। उसकी कहानी का यह किस्सा जिसने भी सुना वह चकित रह गया। प्रांतीय सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार का नाम पाए था, लेकिन चूँकि वह पूरे शहर में एकमात्र सफल प्रांतीय उम्मीदवार था, इसलिए उसका कुलनाम लेने की जरूरत नहीं समझी

जाती थी, जब भी कोई प्रांतीय सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार का जिक्र करता तो उसका तात्पर्य पाए साहब से ही होता था। यह बात सिर्फ वेइच्वांग के लोग ही नहीं, बल्कि तीस मील तक के पूरे क्षेत्र के लोग जानते थे, मानो हर आदमी उसका नाम श्री प्रांतीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार ही समझता हो। इतने महत्वपूर्ण आदमी के घर में काम करने वाले की इज्जत होना स्वाभाविक था; लेकिन आ क्यू ने आगे बताया कि कुछ समय बाद उसे वहाँ काम करने की इच्छा नहीं रही, क्योंकि वह सफल उम्मीदवार नम्बर एक 'कछुए की औलाद' था। कहानी का यह किस्सा जिसने भी सुना उसने एक राहत की साँस ली। लेकिन इसके पीछे खुशी छिपी हुई थी, क्योंकि इससे जाहिर हो जाता था कि आ क्यू ऐसे आदमी के घर में काम करने लायक नहीं हैं फिर भी काम न करना बड़े खेद की बात थी।

आ क्यू ने बताया, उसके लौटने का कारण यह भी था कि शहर के लोगों को देखकर उसे तसल्ली नहीं हुई थी, क्योंकि वे लोग लंबे बेंच को सीधा बेंच कहते थे, मछली तलने के लिए हरे प्याज के बारीक टुकड़े इस्तेमाल करते थे और उनमें एक ऐसा नुक्स था जिसका उसे हाल ही में पता लगा था—उनकी औरतें चलते समय अपने कूल्हे ज्यादा आकर्षक ढंग से नहीं मटकाती थीं। लेकिन शहर में कुछ अच्छी बातें भी थीं। मिसाल के लिए वेइच्वांग में हर आदमी बाँस के बत्तीस पाँसों से खेलता था और सिर्फ नकली विदेशी दरिन्दा ही ऐसा था जो 'माच्याङ्' खेलना जानता था, लेकिन शहर में गली-मुहल्लों के लड़के भी 'माच्याङ्' के खेल में माहिर थे। अगर कहीं नकली विदेशी दरिन्दे को इन किशोर शैतानों के हाथ में सौंप दिया जाता तो वे उसे सीधे 'दोजख के बादशाह के दरबार का एक छोटा शैतान' बना डालते। जिन लोगों ने कहानी का यह हिस्सा सुना उसके चेहरे शर्म से लाल हो गए।

"क्या तुम लोगों ने कभी किसी को मृत्यु-दण्ड देते देखा है ?" आ क्यू ने पूछा। "ओह, कितना शानदार दृश्य होता है वह।.... जब वे लोग क्रांतिकारियों को मृत्यु-दण्ड देते हैं.... ओह, कितना शानदार दृश्य होता है वह, कितना शानदार दृश्य होता है।...." बात करते-करते जब उसने सिर हिलाया तो उसके मुँह से निकले थूक के छींटे चाओ स छन के चेहरे पर जा गिरे, जो उसके बिलकुल सामने खड़ा था। जिन लोगों ने कहानी का यह हिस्सा सुना वे डर के मारे काँप उठे। तभी चारों तरफ नजर डालने के बाद उसके अचानक अपना दायाँ हाथ उठाकर मुछन्दर वांग की गर्दन दबोच ली, जो सिर आगे करके उसकी

बात बड़े गौर से सुन रहा था।

"इसका सिर काट डालो।" आ क्यू जोर से चिल्लाया।

बिजली या चकमक पत्थर की चिंगारी की सी तेजी के साथ मुछन्दर वांग ने एक झटके से अपना सिर पीछे खींच लिया और भाग खड़ा हुआ। आसपास खड़े लोग कौतुकपूर्ण आशंका से सिहर उठे। इसके बाद मुछन्दर वांग कई दिनों तक दहशत खाए रहा और आ क्यू के पास फटकने की उसको हिम्मत न हुई, न किसी और को।

हालाँकि यह नहीं कहा जा सकता है कि उस समय वेइच्वांग के निवासियों की नजरों में आ क्यू का रुतबा चाओ साहब के रुतबे से बड़ा था, फिर भी बिना गलतबयानी के खतरे के यह जरूरत कहा जा सकता है कि दोनों का रुतबा लगभग एक जैसा था।

कुछ ही दिनों में आ क्यू की ख्याति अचानक वेइच्वाग के स्त्री समाज में फैल गई। हालाँकि वेइच्वांग में छ्येन और चाओ सिर्फ ये दो परिवार ही ऐसे थे, जिन्हें ठाठ-बाट से रहने वाले परिवार कहा जा सकता था और नब्बे फीसदी बाकी परिवार बिलकुल गरीब थे, फिर भी स्त्री समाज स्त्री समाज ही होता है, और जिस ढंग से आ क्यू की ख्याति उसमें फैल गई थी, उसे एक छोटा-मोटा चमत्कार ही समझा जाएगा। जब भी औरतें आपस में मिलतीं, वे एक-दूसरे से कहतीं, "श्रीमती चओ ने आ क्यू से एक नीले रंग का रेशमी लहँगा खरीदा है। हालाँकि लहँगा पुराना है, फिर भी उसकी कीमत सिर्फ नब्बे सेंट है और चाओ पाए-येन की माँ (इसकी जाँच करना अभी बाकी है, क्योंकि कुछ लोग कहते हैं कि वह चाओ स छन की माँ थी) ने गहरे लाल रंग की विदेशी छींट की बनी बच्चे की पोशाक, जो लगभग नई जैसी थी, सिर्फ तीन सौ ताँबे के सिक्कों में खरीदी थी और उसे इसके दाम में आठ फीसदी की छूट भी मिली थी।

इसके बाद जिन औरतों के पास रेशम का लहँगा नहीं था या जो विदेशी छींट का कपड़ा लेना चाहती थीं, वे इन चीजों को खरीदने के वास्ते आ क्यू से मिलने के लिए बेहद बेचैन हो उठीं। अगर वह कहीं नजर आ जाता तो उससे बचने के बजाय वे उसके पीछे-पीछे चल पड़तीं और रुकने का आग्रह करतीं।

"आ क्यू, क्या तुम्हारे पास कुछ रेशमी लहँगे और हैं ?" वे पूछतीं।

"नहीं है क्या ? हमें विदेशी छींट का कपड़ा भी चाहिए। है तुम्हारे पास?"

बाद में यह खबर गरीब घरों से अमीर घरों में जा पहुँची। श्रीमती चओ अपने रेशमी लहँगे से इतनी खुश हुईं कि वे इसे दिखाने श्रीमती चाओ के पास ले गईं और श्रीमती चाओ ने चाओ साहब के सामने इसकी बहुत तारीफ की।

चाओ साहब ने उस दिन रात के भोजन के समय इस बात की चर्चा अपने लड़के से की, जो काउंटी की सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार था। चाओ साहब ने यह भी कहा कि आ क्यू का आचरण बड़ा संदिग्ध मालूम होता है और उन्हें अपने दरवाजों व खिड़कियों को सावधानी से बंद रखना चाहिए। लेकिन साथ ही वे यह भी जानना चाहते थे कि आ क्यू के पास अब कोई सामान बाकी रह गया है या नहीं और उनका ख्याल था कि उसके पास अब शायद कोई अच्छी चीज बाकी रह गई है। चूँकि श्रीमती चाओ का एक अच्छी, सस्ती फर की जाकिट की जरूरत थी, इसलिए परिवार के अन्दर सलाह-मशविरा करने के बाद यह फैसला किया गया कि श्रीमती चाओ से कहा जाए कि वे आ क्यू का पता लगाकर उसे तुरंत यहाँ ले आएँ। इसके लिए अपवाद रूप में तीसरी बार परिवार का नियम तोड़ा गया--उस रात बत्ती जाए रखने की विशेष इजाजत दी गई।

काफी तेल जल चुका था, लेकिन आ क्यू का कहीं कोई पता न था। पूरा चाओ परिवार बड़ी बेसब्री से इंतजार करता-करता उबासियाँ लेने लगा था। कुछ लोग आ क्यू के अनुशासनहीनता तौर-तरीकों की आलोचना कर रहे थे, कुछ अन्य लोग श्रीमती चाओ को दोष दे रहे थे कि उन्होंने आ क्यू को लाने के लिए ज्यादा कोशिश नहीं की होगी। श्रीमती चाओ को डर था, कहीं ऐसा तो नहीं कि उस साल बसंत में मंजूर की गई शर्तों के कारण आ क्यू को यहाँ आने की हिम्मत ही न हो रही हो। लेकिन चाओ साहब का ख्याल था कि, "इसके बारे में चिंता करने की जरूरत नहीं है, क्योंकि इस बार उसे मैंने खुद बुलाया है।" चाओ साहब ने साबित कर दिया कि वे कितनी पैनी दृष्टि रखते हैं, क्योंकि आखिरकार श्रीमती चाओ के साथ आ क्यू आ ही पहुँचा।

"यह बार-बार कहता जा रहा है कि अब इसके पास कोई चीज बाकी नहीं रह गई, "श्रीमती चओ हाँफती हुई बोलीं। "जब मैंने इससे कहा कि तुम यह सब खुद जाकर बता आओ तो यह बोलता ही चला गया। मैंने इससे कहा. ."

"जनाब।" आ क्यू ओलती के नीचे रुककर मुस्कराने की कोशिश करते हुए बोला।

"आ क्यू, मैंने सुना है कि तुम वहाँ जाकर काफी धनवान बन गए हो," चाओ साहब ने उसके नजदीक जाकर एक नजर उसे ऊपर से नीचे तक देखते हुए कहा। "बहुत अच्छी बात है। अब... लोग कहते हैं कि तुम्हारे पास कुछ पुरानी चीजें हैं।.... उन सबको यहाँ ले आओ, ताकि हम लोग देख सकें।. ... हम उनमें से कुछ चीजें लेना चाहते हैं।..."

"श्रीमती चाओ को मैं बता चुका हूँ कि अब मेरे पास कुछ भी बाकी नहीं रह गया।"

"कुछ भी बाकी नहीं बचा?" श्रीमती चाओ की बात से साफ निराशा झलक रही थी। "ये चीजें इतनी जल्दी कैसे खत्म हो गईं?"

"ये सब चीजें मेरे एक दोस्त की थीं और दरअसल बहुत ज्यादा तो थीं नहीं। लोगों ने खरीद लीं।"

"कुछ न कुछ तो बचा ही होगा।"

"सिर्फ दरवाजे का एक पर्दा रह गया है।"

"दरवाजे का पर्दा ही ले आओ। हम उसे देखना चाहते हैं ?" श्रीमती चाओ झट से बोल उठीं।

"अगर उसे कल ला सको तो ठीक रहेगा, "बिना अधिक उत्साह दिखाए चाओ साहब ने कहा। "आ क्यू, भविष्य में जब भी तुम्हारे पास कोई चीज आए पहले हमें दिखा देना।...."

"हम लोग तुम्हें औरों से कम पैसा नहीं देंगे।" काउंटी सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार बोला। उसकी पत्नी ने आ क्यू की प्रतिक्रिया जानने के लिए तेजी से एक नजर उसकी तरफ देखा।

"मुझे तो एक फर की जाकिट की जरूरत है," श्रीमती चाओ ने कहा।

हालाँकि आ क्यू ने उसकी बात मान ली, लेकिन वह इतनी लापरवाही से बाहर निकला कि उन लोगों को विश्वास नहीं हो पाया कि उसने उनकी बात दिल से मानी है या नहीं। इसकी वजह से चाओ साहब तो इतने निराश, परेशान और चिंतित हो उठे कि उन्हें उबासियाँ आनी बंद हो गईं। काउंटी परीक्षा में सफल उम्मीदवार भी आ क्यू के बरताब से बिलकुल असंतुष्ट था। वह बोला, "ऐसी कछुए की औलाद से बहुत सतर्क रहना चाहिए। अच्छा यह होगा कि बेलिफ को आदेश देकर इसके वेइच्वांग में रहने पर पाबंदी लगा दी जाए।"

लेकिन चाओ साहब नहीं माने। उन्होंने कहा, "कहीं ऐसा न हो कि वह बदला लेने पर उतारू हो जाए। वैसे कभी-कभी इस तरह के मामलों में

'चील अपने खुद के घोंसले में शिकार नहीं करती' वाली कहावत लागू होती है, आ क्यू से उसके अपने गाँव वालों को किसी तरह का डर नहीं होना चाहिए; सिर्फ रात के वक्त उन्हें जरूर ज्यादा चौकन्ना रहना चाहिए।" पिता के इस आदेश से प्रभावित होकर काउंटी परीक्षा में सफल उम्मीदवार ने आ क्यू को गाँव से बाहर निकलने का अपना प्रस्ताव तुरंत वापस ले लिया और श्रीमती चाओ को सावधन कर दिया यह बात किसी के सामने हरगिज न दोहराएँ।

लेकिन अगले दिन श्रीमती चाओ अपने नीले लहँगे को काला रंग करवाने ले गईं, तो उन्होंने क्यू पर लगाए गए आक्षेपों की चर्चा छेड़ दी, हालाँकि काउंटी परीक्षा में सफल उम्मीदवार द्वारा कही गई उस बात का जिक्र उन्होंने नहीं किया, जो उसने आ क्यू को गाँव से निकालने के बारे में की थी। इसके बावजूद, आ क्यू को इससे बेहद हानि हुई। सबसे पहले तो बेलिफ उसके पास जा पहुँचा और दरवाजे का पर्दा उठा ले गया। हालाँकि आ क्यू ने विरोध किया और कहा कि इसे श्रीमती चाओ देखना चाहती हैं, मगर बेलिफ ने वापस देने से इनकार कर दिया और यहाँ तक कि आ क्यू से हर महीने कुछ मुँहभराई की माँग भी की। दूसरे, गाँव वालों के मन में उसके लिए जो इज्जत पैदा हो गई थी, वह अचानक खत्म हो गई। हालाँकि वे लोग अब भी उसके साथ हँसी-मजाक करने का साहस नहीं करते थे, मगर हर आदमी उससे ज्यादा से ज्यादा कन्नी काटने की कोशिश करने लगा। हालाँकि उसके 'सिर काट डालो' का जो डर उनके दिमाग में पहले से बैठा हुआ था, उससे यह भिन्न प्रकार का डर था, फिर भी प्राचीन समाज द्वारा भूत-प्रेतों के प्रति अपनाए गए रवैये से यह काफी मिलता-जुलता था; लोग उसके और अपने बीच एक सम्मानपूर्ण अंतर बनाए रखते थे।

कुछ निठल्ले लोगों ने, जो इस व्यापार की तह में जाना चाहते थे, आ क्यू के पास जाकर अच्छी तरह पूछताछ की। बात छिपाने की जरा भी कोशिश किए बिना आ क्यू ने बड़े गर्व के साथ उनके सामने अपने कारनामों का बखान कर डाला। उसने उन्हें बताया कि शहर में वह महज एक छोटा-सा चोर था, जो न सिर्फ दीवार फाँदने में बल्कि खुले खिड़की-दरवाजों से भीतर जाने में भी असमर्थ था। वह तो सिर्फ खुले खिड़की-दरवाजों के बाहर खड़ा चोरी का माल थाम सकता था।

एक रात के वक्त जब चोरी के माल की एक गठरी उसे थमाने के बाद उसके गिरोह का मुखिया फिर से अंदर गया तो भीतर से बड़े जोर का शोरगुल

सुनाई पड़ा। आ क्यू ने आव देखा न ताब, सिर पर पाँव रखकर भाग खड़ा हुआ। उसी रात वह शहर से भाग कर वेइच्वांग पहुँच गया ओर इसके बाद उसने दुबारा इस व्यापार में लौटने की हिम्मत नहीं की। गाँववासी उसके और अपेन बीच एक सम्मानपूर्ण अंतर इसलिए बनाए रखते थे क्योंकि वे लोग उससे दुश्मनी मोल नहीं लेना चाहते हैं। भला यह कौन जानजा था कि वह एक ऐसा चोर है जिसके अंदर फिर से चोरी करने का साहस नहीं है ? अब कहीं उन्हें मालूम हुआ कि वह सचमुच कितना तुच्छ प्राणी था, जिससे डरने की जरूरत नहीं थी।

अध्याय : सात
क्रांति

सम्राट श्वान थुंग के शासन-काल के तीसरे वर्ष के नवें चद्र-मास की चौदहवीं तिथि को (1911 की क्रांति में इसी दिन शाओशिंग आजाद हुआ था) जिस दिन आ क्यू ने अपना बटुआ चाओ पाए—येन को बेच दिया था—आधी रात के वक्त जब तीसरी घड़ी ने चौथा घंटा बजाया तो एक बड़े-से काले पाल वाली विशाल नौका चाओ परिवार के घाट पर आ लगी। यह नौका अंधकार में उस समय किनारे आ लगी जब गाँव वाले गहरी नींद सो रहे थे, इसलिए उन्हें इसकी कानोंकान खबर न लगी; लेकिन पौ फटने पर जब नौका वहाँ से जाने लगी तो कई लोगों ने उसे देख लिया। जाँच-पड़ताल के बाद मालूम हुआ कि नौका प्रांतीय सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार की थी।

इस घटना से वेइच्वांग में भारी खलबली मच गई और दोपहर होने तक सभी गाँववासियों के दिल तेजी से धड़कने लगे। चाओ परिवार इस नौका की यात्रा के उद्देश्य के बारे में बिलकुल मौन रहा, लेकिन चाय की दुकान और मदिरालय में जोरों की चर्चा थी कि कि क्रांतिकारी लोग शहर में प्रवेश करने वाले हैं और प्रांतीय सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार सिर्फ कुछ टूटे-फूटे संदूक वेइच्वांग में रखवाना चाहता था, मगर चाओ साहब ने उन्हें वापस भिजवा दिया था। वास्तव में प्रांतीय सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार और काउंटी परीक्षा में सफल चाओ परिवार के उम्मीदवार की आपस में बिलकुल नहीं बनती थी; इसलिए आड़े समय में वे भला एक-दूसरे के काम कैसे आ सकते थे ? यही नहीं, चूँकि श्रीमती चाओ चाओ परिवार के पड़ोस में रहती थी और बाकी लोगों के मुकाबले ज्यादा अच्छी तरह जानती थी कि क्या हो रहा है, इसलिए उनकी

बात में कुछ ज्यादा वजन मालूम होता था।

फिर भी इसके बाद यह अफवाह उड़ गई कि प्रांतीय विद्वान खुद नहीं आया, बल्कि उसने एक लंबा पत्र भेजा था, जिसमें उसने चाओ परिवार से अपना दूर का रिश्ता निकाल लिया है और सोच-विचार करने के बाद चाओ परिवार को यह लगा कि संदूक रखने से उन्हें कोई नुकसान नहीं होने जा रहा है, इसलिए उन्होंने ये संदूक अपनी पत्नी के पलंग के नीचे छिपाकर रखवा दिए हैं। जहाँ तक क्रांतिकारियों का ताल्लुक है, कुछ लोगों का कहना था कि वे लोग सफेद रंग के लोहे के टोप और कवच पहनकर—सम्राट छुंग चन की मातमपुर्सी करते हुए (मिग राजवंश के अंतिम सम्राट चन ने 1628 से 1644 तक शासन किया। जब ली च छंग के नेतृत्व में विद्रोही किसानों की सेना ने पेइचिंग में प्रवेश किया, उससे पहले ही छुंग चन ने फाँसी लगाकर आत्महत्या कर ली।)—उस रात शहर में प्रवेश कर चुके हैं।

आ क्यू क्रांतिकारियों के बारे में काफी पहले से जानता था और इस वर्ष उनके सिर कटते अपनी आँखों से देख चुका था। लेकिन चूँकि वह सोचता था कि क्रांतिकारी लोग विद्रोही होते हैं और अगर विद्रोह हो गया तो हालात उसके लिए और मुश्किल हो जाएँगे, इसलिए वह उन्हें हमेशा नापसंद करता था और उनसे दूर ही रहता था। कौन सोच सकता था कि वे लोग प्रांतीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार को भी, जिसकी ख्याति चारों ओर तीस मील तक के इलाके में फैली हुई थी, इतना भयभीत कर सकते हैं ? नतीजे के तौर पर आ क्यू प्रफुल्लित हुए बिना नहीं रह सका, और गाँववासियों के फैले आतंक से उसकी खुशी और बढ़ गई।

"क्रांति होना कोई बुरी बात नहीं," आ क्यू ने सोचा। "उन सब का खात्मा हो.... उन सब का नाश हो!... मैं खुद भी क्रांतिकारियों के पास जाना चाहता हूँ।

कुछ समय से आ क्यू बहुत तंग था और शायद असंतुष्ट भी; इसके अलावा दोपहर के वक्त उसने खाली पेट दो प्याली शराब भी पी ली थी। नतीजे के तौर पर उसे नशा आसानी से चढ़ गया था और जब वह अपने ख्यालों में डूबा हुआ चला जा रहा था तो उसे एक बार फिर ऐसा लगा मानो हवा में उड़ रहा हो। अचानक न जाने कैसे उसे लगा कि वह खुदही क्रांतिकारी है और वेइच्वांग के लोग उसकी हिरासत में हैं। अपनी खुशी को दबाने में असमर्थ होकर वह अनायास ही जोर से चिल्ला पड़ा—

"विद्रोह ! विद्रोह !"

सभी गाँववाले विस्मय से उसकी ओर देखने लगे। आ क्यू ने इतनी अधिक करुणायुक्त आँखें पहले कभी नहीं देखी थीं। इन्हें देखकर उसे भरी गर्मी में बर्फ का पानी पीकर मिलनेवाली ताजगी अनुभव हुई। इसलिए वह और ज्यादा खुश होकर जोर से चिल्लाता हुआ आगे बढ़ गया—

"ठीक है... जो भी मेरे मन भाएगा आज वही मैं लूँगा।.... जो भी मेरे मन भाएगा उसे मीत समझूँगा।"

"त्रा ला, त्रा ला!
है अफसोस मुझे मैंने हत्या कर डाली
चूर नशे में होकर अपने चंग भैया की,
है अफसोस मुझे मैंने हत्या कर डाली...
या, या, या !
त्रा ला, त्रा ला, थुम थी थुम !
हड्डी-पसली चूर तुम्हारी, लोहे की छड़ से कर दूँगा।"

चाओ साहब और उसका लड़का अपने फाटक पर दो रिश्तेदारों के साथ क्रांति के बारे में चर्चा कर रहे थे। आ क्यू ने उन्हें नहीं देखा और वह अपना सिर पीछे की तरफ लटकाए गाता हुआ आगे बढ़ गया—"त्रा ला ला, थुम थी थुम।"

"अरे यार क्यू।" चाओ साहब ने भयमिश्रित स्वर में धीमे से पुकारा।

"त्रा ला!" आ क्यू गाता चला गया। वह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि उसके नाम के साथ 'यार' शब्द का इस्तेमाल किया जा सकता है। उसे पक्का यकीन था कि उसने गलत सुना है और उसे किसी ने नहीं पुकारा। इसलिए उसने अपना गाना जारी रखा, "त्रा ला ला, थुम थी थुम।"

"अरे यार क्यू।"

"है अफसोस मुझे मैंने हत्या कर डाली..."

सिर्फ तभी आ क्यू रूका। कहिए, क्या है ? उसने अपना सिर एक तरफ झुकाकर पूछा—

"आ क्यू!" काउंटी परीक्षा में सफल उम्मीदवार को उसका पूरा नाम लेकर पुकारना पड़ा।

"क्यू, यार... अब..." चाओ साहब की जबान लड़खड़ाने लगी। "क्या यह सच है कि अब तुम अमीर बनते जा रहे हो ?"

"अमीर बनता जा रहा हूँ? बेशक, जो चीज मेरे मन भाती है उसे ले लेता हूँ।...."

"आ क्यू, यार आ क्यू, हम जैसे गरीब दोस्तों की तरफ ध्यान देने की तुम्हें फुरसत ही कहाँ?..." चाओ पाए-येन ने जरा सशंकित होकर कहा, मानो क्रांतिकारियों के रुख की तह लेने की कोशिश कर रहा हो।

"गरीब दोस्त ? लेकिन तुम तो मुझसे ज्यादा अमीर हो,", आ क्यू ने उत्तर दिया और वहाँ से चला गया।

वे लोग हताश होकर मौन खड़े रहे। चाओ साहब और उनका लड़का अपने घर के भीतर चले गए और उस दिन इस प्रश्न पर तब तक विचार-विमर्श करते रहे जब तक बत्ती जलाने का वक्त नहीं हो गया। जब चाओ पाए-येन घर पहँचा तो उसने अपनी कमर में बटुवा निकालकर पत्नी को दिया और उससे कहा कि इसे अपने संदूक की तह में छिपा ले।

कुछ समय तक आ क्यू हवा में उड़ता रहा लेकिन जब संरक्षक-देवता के मंदिर पहुँचा तो उसका नशा उतर चुका था। उस रात मंदिर के बूढ़े पुजारी ने भी उसके प्रति अप्रत्याशित मैत्रीपूर्ण रुख अपनाया और उसे चाय पिलाई। इसके बाद आ क्यू ने पुजारी से दो चौरस केक माँग लिए और उन्हें खा लेने के बाद चार औंस की एक बड़ी अधजली मोमबत्ती और एक छोटा बत्तीदान माँग लिया। मोमबत्ती जलाकर वह अकेले ही अपने कमरे में लेट गया। जैसे-जैसे मोमबत्ती की लौ दीप-महोत्सव की रात के समान घटती-बढ़ती जा रही थी, वैसे-वैसे वह एक अप्रत्याशित ताजगी और प्रसन्नता महसूस अनुभव कर रहा था और इसके साथ-साथ उसकी कल्पना भी नई उड़ान लेने लगी थी।

"विद्रोह ? खूब मजा आएगा... क्रांतिकारियों का दल आएगा। सबके सिर पर लोह का टोप होगा और शरीर पर सफेद कवच। वे लोग तलवारों, लोहे की छड़ों, नुकीले दुधरी चाकुओं और हुक वाले भालों से लैस होंगे। वे लोग जब संरक्षक-देवता के मंदिर से गुजरेंगे तो पुकारेंगे, 'आ क्यू आ जाओ।' और तब मैं उनके साथ चला जाऊँगा।..."

"तब ये सारे गाँववासी हास्यास्पद स्थिति में होंगे, घुटने टेक कर गिड़गिड़ा रहे होंगे, 'आ क्यू, हमें बख्श दो।' लेकिन उनकी बात कौन सुनेगा। सबसे पहले नौजवान डी और चाओ साहब को मौत के घाट उतारा जाएगा, उसके बाद काउंटी की सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार और नकली विदेशी दरिन्दे की बारी आएगी।... लेकिन संभवतः मैं कुछ लोगों को छोड़ दूँगा। कोई

वक्त था जब मैं मुछन्दर वांग को छोड़ देता, लेकिन अब तो मैं उसकी शक्ल भी नहीं देखना चाहता।....

"चीजें... मैं सीधा अंदर चला जाऊँगा और संदूक खोल डालूँगा—चाँदी की सिल्लियाँ, विदेशी सिक्के, विदेशी छींट की जाकिटें... सबसे पहले मैं काउंटी की सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार की पत्नी का निंगबो पलंगमंदिर में उठा ले जाऊंगा और छूयेन परिवार की मेज-कुर्सियाँ भी—अथवा चाओ परिवार की मेज-कुर्सियाँ इस्तेमाल करूँगा। मैं अपने हाथ से तिनका भी नहीं तोड़ूँगा, सिर्फ नौजवान डी को हुक्म दूँगा कि मेरे लिए सारा का सारा सामान उठा लाए और जरा फुर्ती दिखाए, वरना उसे मेरा थप्पड़ खाने के लिए तैयार रहना पड़ेगा।.."

"चाओ से छन की छोटी बहन बड़ी बदसूरत है। कुछ ही वर्षों में श्रीमती चओ की लड़की भी जवान हो जाएगी तो सोचा जाएगा। नकली विदेशी दरिन्दे की पत्नी सिर्फ ऐसे आदमी के साथ सोने को तैयार है जिसकी चुटिया न हो। छिः! वह अच्छी औरत नहीं जान पड़ती। काउंटी की परीक्षा में सफल उम्मीदवार की पत्नी की पलकों में निशान हैं... आमा ऊ मुझे बहुत दिनों से नहीं दिखाई दी, न मालूम वह कहाँ है—अफसोस की बात है कि उसके पाँव बहुत बड़े हैं।"

इससे पहले कि आ क्यू कोई संतोषजनक निर्णय कर पाता, उसके खर्राटों की आवाज आने लगी। चार औंस की मोमबत्ती सिर्फ आधा इंच जली थी, उसकी टिमटिमाती लाल रोशनी में आ क्यू का खुला मुँह चमक रहा था।

"आ हो, हो।" आ क्यू अचानक चिल्लाया और सिर उठाकर फटी-फटी आँखों से चारों ओर देखने लगा। लेकिन जब उसकी नजर चार औंस की मोमबत्ती पर पड़ी तो वह फिर से लेट गया और खर्राटे लेने लगा।

अगले दिन सुबह वह बड़ी देर से उठा। बाहर गली-मोहल्ले में पहुँचा तो हर चीज पहले जैसी ही नजर आई। उसे भूख लग रही थी। काफी दिमाग लड़ाने पर भी उसे कोई रास्ता न सूझा। अचानक उसके मन में एक विचार आया। वह धीरे-धीरे चल पड़ा और जानबूझकर या अनजाने में 'शांत आत्म-उत्कर्ष भिक्षुणी-विहार' में जा पहुँचा।

भिक्षुणी-विहार उस वर्ष के बसंत के ही समान शांत था। उसकी सफेद दीवारें और चमकदार काला फाटक वैसे ही दिखाई दे रहे थे। एक क्षण सोचने के बाद उसने फाटक पर दस्तक दी, जिसे सुनकर भीतर से एक कुत्ता भौंकने लगा। उसने झट टूटी ईंटों के कई टुकड़े उठा लिए और फाटक पर पहुँच कर

और जोर से खटखटाने लगा। काले फाटक को उसने जोर से पीटा कि उस पर कई जगह निशान पड़ गए। अंत में उसे फाटक खोलने के लिए किसी के आने की आहट सुनाई दी।

टूटी ईंटों के टुकड़ें हाथ में उठाए आ क्यू अपनी दोनों टांगें साधे काले कुत्ते से जूझने को तैयार खड़ा था। भिक्षुणी-विहार का फाटक थोड़ा-सा खुला, मगर काला कुत्ता बाहर नहीं निकला। आ क्यू ने अंदर झाँका तो उसे सिर्फ बूढ़ी भिक्षुणी दिखाई दी।

"तुम यहाँ फिर क्यों आए हो ?" बात शुरू करते हुए उसने पूछा।

"क्रांति हो गई है... क्या तुम्हें नहीं मालूम ?" आ क्यू ने अस्पष्ट स्वर में कहा।

"क्रांति... क्रांति तो यहाँ एक बार हो चुकी," बूढ़ी भिक्षुणी बोली। उसकी आँखें रो-रोकर लाल हो रही थी। "तुम्हारी इन क्रांतियों से हम पर न जाने क्या बीतेगी ?"

"क्या कहा ?" आ क्यू ने आश्चर्य से पूछा।

"तुम्हें नहीं मालूम ? क्रांतिकारी यहाँ पहले ही आ चुके हैं।"

"कौन से क्रांतिकारी ?" आ क्यू ने और अधिक आश्चर्य से पूछा।

"काउंटी की सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार और नकली विदेशी दरिन्दा।"

यह सुनकर आ क्यू की सारी हवा निकल गई। जब उस बूढ़ी भिक्षुणी ने देखा कि उसका लड़ाकूपन कुछ कम हो गया है तो उसने फौरन फाटक बंद कर लिया जो आ क्यू के धक्का देने से नहीं खुला। जब उसने दुबारा खटखटाया तो कोई उत्तर नहीं आया।

यह उसी दिन सुबह की बात थी। काउंटी की सरकारी परीक्षा में सफल चाओ परिवार के उम्मीदवार को एकदम खबर मिल गई थी। ज्यों ही उसे पता चला कि क्रांतिकारी उस रात शहर में प्रवेश कर गए हैं, उसने झटपट अपनी चुटिया लपेटकर सिर पर छिपा ली और सबसे पहले छूयेन परिवार के नकली विदेशी दरिन्दे को मिलने गया, हालाँकि उन दोनों के ताल्लुक पहले कभी अच्छे नहीं रहे थे। चूँकि अब समय आ गया था कि "सब लोग मिलकर समाज-सुधार करें", इसलिए उन दोनों के बीच बड़ी आत्मयीतापूर्ण बातचीत हुई। दोनों तुरंत ही एक-सी विचारधारा वाले साथी बन गए और दोनों ने क्रांतिकारी बनने की शपथ ले ली।

कुछ देर माथापच्ची करने के बाद उन्हें याद आया कि 'शांत आत्म-उत्कर्ष भिक्षुणी-विहार' में एक शाही शिलालेख लगा हुआ है जिस पर लिखा है, "सम्राट की जय हो।' जिसे तुरंत हटा दिया जाना चाहिए। यह विचार आते ही वे अपनी क्रांतिकारी योजना को कार्यान्वित करने तुरंत भिक्षुणी-विहार में जा पहुँचे। चूँकि बूढ़ी भिक्षुणी ने उन्हें रोकने की कोशिश की और उनसे कुछ कहा, इसलिए उन्होंने उसे छिंग सरकार समझकर, डंडों से मुट्ठियों से उसकी खोपड़ी पर अनेक प्रहार किए। जब दोनों चले गए तो भिक्षुणी ने विहार का निरीक्षण किया। शाही शिलालेख टुकड़े-टुकड़े करके जमीन पर फेंक दिया गया था और मूल्यवान श्वान धूपदान (काँसे के अत्यंत कलात्मक धूपदान चीन में मिग राजवंश के श्वेन द काल (1426-1435) में बनाए जाते थे), जो करुणा की देवी क्वानयिन की मूर्ति के सामने रखा था, वहाँ से गायब हो चुका था।

यह सब आ क्यू को बाद में मालूम हुआ। उसे इस बात का बड़ा अफसोस था कि उस समय वह सोया क्यों रह गया और वे लोग उसे बुलाने क्यों नहीं आए। उसने मन-ही-मन कहा, "हो सकता है उन्हें भी यह मालूम न हो कि मैं क्रांतिकारियों की पाँतों में शामिल हो हूँ।"

अध्याय : आठ
क्रांति से बहिष्कृत

वेइच्वांग के लोग दिन-ब-दिन आश्वस्त होते जा रहे थे। जो खबरें उनके पास पहुँच रही थीं, उसके आधार पर वे यह बात समझ चुके थे कि क्रांतिकारियों के शहर में प्रवेश करने से कोई खास तब्दीली नहीं आई। मजिस्ट्रेट अब भी सबसे बड़ा अफसर था, सिर्फ उसका ओहदा बदल गया था, प्रांतीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार को भी कोई पद—वेइच्वांग गाँव के निवासियों के लिए इन ओहदों के नाम याद रखना संभव नहीं था—किसी किस्त का कोई सरकारी पद सौंप दिया गया था। फौज का मुखिया अब भी वही पुराना कप्तान था। खटके की बात सिर्फ यह थी कि कुछ बुरे क्रांतिकारियों ने शहर में पहुँचने के बाद लोगों की चुटिया काटकर उन्हें परेशान करना शुरू कर दिया था। सुनने में आया था कि पड़ोस के गाँव को 'साढ़े-तिसेरा' नाम का एक मल्लाह उनके चंगुल में फँस गया था और अब उसकी शक्ल देखने लायक नहीं रही थीं। फिर भी यह खतरा इतना बड़ा नहीं था, क्योंकि पहले तो वेइच्वांग गाँव के लोग वैसे ही शहर बहुत कम जाते थे, फिर जो लोग शहर जाने की बात सोच भी रहे थे,

उन्होंने इस खतरे से बचाने के लिए अपना कार्यक्रम फौरन रद्द कर दिया था। आ क्यू भी अपने पुराने दोस्तों से मिलने शहर जाने की योजना बना रहा था लेकिन ज्यों ही चुटिया काटने की खबर सुनी, उसने अपना विचार बदल दिया।

यह कहना गलत होगा कि वेइच्वांग में कोई सुधार ही नहीं। आने वाले कुछ दिनों में ऐसे लोगों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ती गई जिन्होंने चुटिया लपेटकर सिर पर बाँध ली थी, और जैसा कि पहले कहा जा चुका है, इसकी शुरुआत सबसे पहले काउंटी की परीक्षा में सफल उम्मीदवार से हुई, इसके बाद चओ स छन और चाओ पाए—येन आगे आए और उनके बाद आ क्यू। अगर वह गर्मी का मौसम होता और ये सब लोग अपनी चुटिया लपेटकर सिर पर बांध लेते अथवा गाँठ लगा लेते तो किसी को अचम्भा न होता; लेकिन उन दिनों शरद ऋतु खत्म होने वाली थी, इसलिए गर्मियों के रिवाज को शरद में अपनाकर जिन लोगों ने अपनी चुटिया लपेटकर सिर पर बाँध ली थी, उनका यह फैसला कोई कम बहादुरी का काम नहीं था। और जहाँ तक वेइच्वांग का ताल्लुक है, यह नहीं कहा जा सकता था कि इस बात का सुधारों से कोई संबंध ही न था।

जब चाओ स छन अपनी केशविहीन गर्दन लिए लोगों के सामने पहुँचा तो वे बोल पड़े, "वाह! यह है क्रांतिकारी।"

जब यह बात आ क्यू ने सुनी तो वह बड़ा प्रभावित हुआ। हालाँकि यह काफी पहले ही सुन चुका था कि काउंटी परीक्षा में सफल उम्मीदवार ने अपनी चुटिया लपेटकर सिर पर बाँध ली थी, फिर भी उसके मन में यह विचार कभी नहीं आया कि वह खुद भी ऐसा कर ले। मगर जब उसने चाओ स छन को भी उसके पदचिह्नों पर चलते देखा, सिर्फ तभी उसे ख्याल आया कि वह भी ऐसा ही करेगा। उसने इन लोगों का अनुसरण करने की ठान ली। बाँस की चापस्टिक की सहायता से उसने अपनी चुटिया सिर पर लपेट ली और कुछ संकोच होने के बावजूद अंत में साहस करके बाहर चला गया।

जब वह गाँव की गलियों से गुजर रहा था तो लोगों ने उसकी तरफ देखा मगर किसी ने कुछ नहीं कहा। आ क्यू पहले तो कुछ खीज गया और बाद में बहुत गुस्सा हो गया। कुछ समय से उसका पारा एकदम चढ़ जाता था। वास्तव में उसकी जिंदगी की मुश्किलें क्रांति के पहले की तुलना में बढ़ी नहीं थी और लोग उससे नम्रता से बरताव करते थे तथा दुकानदार नकद पैसे देने का आग्रह नहीं करते थे, फिर भी आ क्यू असंतोष अनुभव करता था। वह सोचता, चूँकि क्रांति हो चुकी है, उसका असर और ज्यादा व्यापक होना चाहिए। तभी

उसकी नजर नौजवान डी पर पड़ी और उसका पारा सातवें आसमान पर पहुँच गया।

नौजवान डी ने भी अपनी चुटिया लपेटकर सिर पर बाँधी हुई थी और मजेदार बात यह थी कि उसने भी चुटिया लपेटने में बाँस की चापस्टिक की ही सहायता ली थी। आ क्यू सोच भी नहीं सकता था कि नौजवान डी भी यह सब करने की हिम्मत कर सकता है, वह इसे बरदाश्त नहीं कर सकता था। नौजवान डी आखिर है किस खेत की मूली ? उसके मन में यह विचार जोरों से मचलने लगा कि उसे वहीं पकड़ लें और उसके सिर पर लगी बाँस की चापस्टिक तोड़ डाले, चुटिया खोल दे और चेहरे पर कई तमाचे जड़ दे, जिससे उसे अपनी औकात भूलने और अपने को क्रांतिकारी समझने की सजा मिल जाए। लेकिन अंत में उसने नौजवान डी की तरफ सिर्फ क्रोधित आँखों से देखा, तिरस्कार से थूका और "छिः।" कहकर उसे जाने दिया।

पिछले कुछ दिनों में सिर्फ नकली विदेशी दरिन्दा ही शहर गया था। चाओ परिवार के काउंटी परीक्षा में सफल उम्मीदवार ने सोचा था कि प्रातीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार द्वारा रखे गए संदूकों के बहाने उससे मुलाकात करने शहर जाएगा, अगर चुटिया कटवा बैठने के डर से उसने अपना विचार बदल दिया था। उसके बेहद तकल्लुफ के साथ एक चिट्ठी लिखी थी और नकली विदेशी दरिन्दे के हाथ शहर भेज दी थी। नकली विदेशी दरिन्दे से उसने यह अनुरोध भी किया था वह 'स्वाधीनता पार्टी' से उसका परिचय करा दे। जब नकली विदेशी दरिन्दा वापस लौटा तो उसने काउंटी परीक्षा में सफल उम्मीदवार से चार डालर लेकर उसकी छाती पर चांदी के आड़ू वाला एक बिल्ला टाँक दिया। वेइच्वांग गाँव के सभी निवासियों पर धाक जम गई। उन्होंने बताया कि यह 'परमिसन-तेल पार्टी' ('स्वाधीनता पार्टी' का चीनी नाम 'च ओ तांग' है। लेकिन गाँववालों को 'स्वाधीनता' शब्द की जानकारी न होने के कारण उन्होंने 'च यओ' को 'शि यओ' में बदल दिया, जिसका मतलब परसिमन-तेल होता है) का बिल्ला है, जिसका दर्जा हान लिन (छिंग राजवंश (1644-1911 की सर्वोच्च साहित्यिक उपाधि) के बराबर है। इसके परिणामस्वरूप चाओ साहब का सम्मान अचानक उस जमाने के मुकाबले कहीं ज्यादा बढ़ गया जब उनके लड़के ने पहली बार लोगों को हिकारत की नजर से देखना शुरू कर दिया और जब कभी उसकी नजर आ क्यू पर पड़ती तो जरा उपेक्षा का रुख अपना लेते।

आ क्यू भी इस निरंतर उपेक्षा के कारण बेहद असंतुष्ट था, लेकिन

ज्यों ही उसने चाँदी के आड़ू वाले बिल्ले की बात सुनी तो फौरन समझ गया कि उसे उपेक्षित क्यों किया जा रहा है। किसी के यह कहने मात्र से कि वह क्रांति के पक्ष में चला गया है, वह क्रांतिकारी नहीं बन सकता; और न अपनी चुटिया लपेटकर सिर पर बाँध लेना मात्र ही क्रांतिकारी पार्टी से संपर्क कायम करना। अपनी पूरी जिंदगी में उसका सिर्फ दो ही क्रांतिकारियों से साक्षात्कार हुआ था। उनमें से एक शहर में अपना सिर कटवा चुका था। सिर्फ दूसरा, यानी नकली विदेशी दरिन्दा, ही बाकी रह गया था। जब तक आ क्यू तुरंत नकली विदेशी दरिन्दा से बात कर लेता, तब तक उसके लिए कोई रास्ता नहीं खुल सकेगा।

छूयेन परिवार के मकान का फाटक खुला था। आ क्यू डरता-डरता अंदर जा पहुँचा। अंदर घुसते ही वह चौंक पड़ा, क्योंकि उसने देखा नकली विदेशी दरिन्दा आँगन के बीचोबीच ऊपर से नीचे तक काले कपड़े पहने, जो निस्संदेह विदेशी कपड़े थे, और चाँदी के आड़ू बाला बिल्ला लगाए खड़ा है। वह अपने हाथ में छड़ी थामे हुए था, जिसका मजा आ क्यू पहले ही चख चुका था। लगभग एक फुट लंबे बाल, जो उसके सिर से बढ़ा लिए थे, कँधों पर संत ल्यू (चीन की लोककथाओं का एक अमर चरित्र, जिसका वर्णन हमेशा लंबे बालों वाले व्यक्ति के रूप में किया जाता है) के बालों की तरह लटक रहे थे। उसके सामने चाओ पाए-येन और अन्य तीन व्यक्ति सीधे तन कर खड़े थे और नकली विदेशी दरिन्दे की बात बड़े आदर-भाव के साथ सुन रहे थे।

आ क्यू पंजे के बल चलता हुआ अंदर पहुँच गया और चाओ पाए-येन के पीछे जा खड़ा हुआ। वह नकली विदेशी दरिन्दे का अभिवादन करना चाहता था, किंतु समझ में नहीं आ रहा था कि उसे किस नाम से पुकारे। जाहिर है कि वह उसे 'नकली विदेशी दरिन्दा' कह कर नहीं पुकार सकता था, और न 'विदेशी' अथवा 'क्रांतिकारी' शब्द ही उपयुक्त जान पड़ता था। शायद संबोधन का सबसे अच्छा तरीका यह होगा कि उसे 'मिस्टर विदेशी' कहा जाए।

लेकिन मिस्टर विदेशी की नजर अभी उस पर नहीं पड़ी थी। अपनी आँखें चढ़ाकर वह बड़े आवेश के साथ कह रहा था—

"मैं इतना ज्यादा भावुक हूँ कि जब हमारी मुलाकात हुई तो मैंने उनसे बार-बार कहा, "हुंग साहब, हमें काम की बात तय करनी चाहिए।" लेकिन उन्होंने हर बार जवाब दिया—"नो।"—यह एक विदेशी शब्द है जिसका अर्थ तुम लोग नहीं समझ सकते। वरना हमें काफी पहले ही सफलता मिल चुकी होती। यह इस बात का मिसाल है कि वे कितना फूँक-फूँक कर कदम रखते हैं।

उन्होंने मुझसे बार-बार हूपेइ जाने को कहा, लेकिन मैं नहीं माना। जिले के छोटे से कस्बे में कौन काम करना चाहता है ?....

"अ र् र् र्–" आ क्यू ने कुछ देर तक उसके रुकने का इंतजार किया और तब बोलने के लिए साहस बटोरने की कोशिश की। लेकिन किसी वजह से वह अब भी उसे मिस्टर विदेशी के नाम से नहीं पुकार सका।

जो चार आदमी उसकी बात सुन रहे थे, वे चौंक पड़े और आ क्यू की तरफ घूरने लगे। मिस्टर विदेशी ने भी पहली बार उसकी तरफ देखा।

"क्या है ?"

"मैं..."

"निकल जाओ यहाँ से।"

"मैं शामिल होना चाहता हूँ..."

"निकल जाओ यहाँ से।" मिस्टर विदेशी ने 'मातमपुर्सी करने वाले की छड़ी' उठाते हुए कहा।

तब चाओ पाए-येन और दूसरे लोग भी चिल्लाकर बोल पड़े, "छ्येन साहब तुम्हें बाहर निकलने को कह रहे हैं। तुमने सुना नहीं ?"

आ क्यू ने अपना सिर बचाने के लिए दोनों हाथ उठाकर उस पर रख लिए और बिना यह जाने कि वह क्या कर रहा है, फाटक खोलकर निकल गया। इस बार मिस्टर विदेशी ने उसका पीछा नहीं किया। कोई पचास-साठ कदम दौड़ने के बाद आ क्यू धीरे-धीरे चलने लगा। वह बेहद परेशान था, क्योंकि अगर मिस्टर विदेशी ने उसे क्रांतिकारी न बनने दिया तो उसके सामने और कोई रास्ता नहीं रह जाएगा। भविष्य में वह हरगिज उम्मीद नहीं कर सकता था कि लोहे के सफेद टोप और सफेद कवच पहने सैनिक उसे बुलाने आएँगे। उसकी सारी आकांक्षा, उद्देश्य, आशा और भविष्य एक झटके मात्र से तहस-नहस हो गए थे। इस बात से कि यह खबर कहीं लोगों में न फैल जाए और वह नौजवान डी और मुंछन्दर वांग जैसे लोगों के लिए उपहास का विषय न बन जाए केवल गौण बातें थीं।

इतना अधिक हतोत्साह वह पहले कभी नहीं हुआ था। चुटिया लपेट कर सिर पर बाँधना भी अब उसे व्यर्थ और हास्यास्पद मालूम हो रहा था। बदला लेने के लिए उसके मन में तेजी से विचार आया कि वह अपनी चुटिया तुरंत खोल दे, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। शाम तक वह इधर-उधर घूमता रहा और जब उधारखाते में दो प्याली शराब पी तब कहीं उसका मन कुछ हल्का

हुआ और वह एक बार फिर लोहे के सफेद टोपों और सफेद कवचों की झलक अपने कल्पना-चक्षु से देखने लगा।

एक दिन वह काफी रात गए तक घूमता रहा। जब मदिरालय बंद होने का समय हो गया, सिर्फ तभी संरक्षक-देवता के मंदिर की तरफ लौटने लगा।

"धाँय! धाँय!"

अचानक उसने एक अजीब-सी आवाज सुनी, जो निश्चित रूप से पटाखों की आवाज नहीं थी। आ क्यू, जो हमेशा हलचल पसंद करता था और जिसे दूसरों के मामलों में दखल देने में मजा आता था, अँधकार में उसा आवाज को खोजने निकल पड़ा। उसे लगा उसके सामने किसी के पैरों की आहट आ रही है। वह सावधानी से कान लगाकर सुन रहा था कि एक आदमी उसके सामने से तेजी से भाग निकला। ज्यों ही आ क्यू ने उसे देखा, उसके पीछे भरपूर तेजी से दौड़ पड़ा। जब वह आदमी मुड़ा तो आ क्यू भी मूड़ गया और जब वह मुड़ने के बाद रुका तो आ क्यू भी रुक गया। उसने देखा पीछे कोई नहीं है और उस आदमी को पहचान लिया। वह नौजवान डी था।

"बात क्या है ?" आ क्यू ने गुस्से से पूछा।

"चाओ...चाओ परिवार के घर चोरी हो गई," नौजवान डी ने हाँफते हुए कहा।

आ क्यू का दिल तेजी से धड़कने लगा। नौजवान डी इतना कहकर चला गया। आ क्यू दौड़ पड़ा। रास्ते में वह दो या तीन बार रुका, फिर आगे बढ़ गया। लेकिन चूँकि वह किसी समय इस धंधे में रह चुका था, इसलिए उसमें एक अद्‌भुत साहस पैदा हो गया था। एक गली के नुक्कड़ से गुजरते हुए उसने कान लगाकर सुनने की कोशिश की। कल्पना में उसे जोर-जोर से चिल्लाने की आवाज सुनाई दी। ध्यान से देखा तो उसे लगा कि बहुत-से सैनिक लोहे का सफेद टोप और सफेद कवच पहने संदूक ले जा रहे हैं, फर्नीचर ले जा रहे हैं, यहाँ तक कि काउंटी परीक्षा में सफल उम्मीदार की पत्नी का निगपो प्लंग ले जा रहे हैं। लेकिन वे लोग उसे ज्यादा साफ-साफ नजर नहीं आ रहे थे। वह नजदीक जाना चाहता था, लेकिन उसे लगा जैसे उसके पाँव धरती में गड़ गए हों।

उस रात आकाश में चाँद नहीं उगा था। वेइच्वांग में गहन अंधकार था, चारों ओर निस्तब्धता थी, सम्राट फू शी (चीन की प्राचीनतम दंतकथाओं में वर्णित एक सम्राट) के शांतिपूर्ण शासन-काल की तरह। आ क्यू वहाँ तब तक खड़ा रहा जब तक वह उकता नहीं गया। फिर भी उसे चीजें पहले की ही तरह

मालूम हो रही थीं। दूर कहीं लोग तरह-तरह का सामान ले जाते हुए, संदूक ले जाते हुए, फर्नीचर ले जाते हुए, काउंटी परीक्षा में सफल उम्मीदवार की पत्नी का पलंग ले जाते हुए.... ऐसा-ऐसा सामान ले जाते हुए, जिसे देखकर उसे खुद अपनी आँखों पर यकीन नहीं हो रहा था। लेकिन आ क्यू ने उसके नजदीक न जाने का फैसला कर लिया और मंदिर में लौट गया।

संरक्षक-देवता के मंदिर में और भी ज्यादा अँधेरा था। बड़ा फाटक बंद करने के बाद वह टटोलता हुआ अपने कमरे में जा पहुँचा। कुछ देर लेटने के बाद ही उसका मन शांत हुआ और वह सोच सका कि इस घटना का उस पर क्या असर पड़ सकता है। लोहे का साफेद टोप और सफेद कवच धारण किए सैनिक आ चुके थे, लेकिन वे लोग उससे मिलने नहीं आए थे। वे लोग बहुत-सी चीजें ले गए थे, लेकिन उसे अपना हिस्सा नहीं मिला था—यह सब उस नकली विदेशी दरिन्दे का ही कसूर था, जिसने उसे विद्रोह में शामिल नहीं होने दिया था। अन्यथा यह कैसे हो सकता था कि इस बार उसे अपना हिस्सा न मिलता?

आ क्यू इसके बारे में जितना ज्यादा सोचता जाता, उसका गुस्सा भी उतना ही ज्यादा बढ़ता गया। सोचते-सोचते उसका पारा सातवें आसमान पर पहुँच गया। "तो यह विद्रोह मेरे लिए नहीं, सिर्फ तुम लोगों के लिए है ?" बड़ी कुढ़न के साथ सिर हिलाते हुए वह बुदबुदाया। "सत्यानाश हो तेरा ओ नकली विदेशी दरिन्दे के बच्चे—अच्छा, तो तू बना रह विद्रोही। जानता है विद्रोह की कीमत सिर कटाकर चुनानी पड़ती है। मुखबिर बन जाऊँगा और तेरा सिर कटवाने के लिए—तेरा और तेरे पूरे कुनबे का सिर कटवाने के लिए—तुझे शहर भिजवा कर रहूँगा।... भाड़ में जाओ तुम।"

अध्याय : नौ
शानदार पटाक्षेप

चाओ परिवार के घर चोरी होने पर वेइच्वांग के ज्यादातर लोग बड़े खुश हुए, मगर वे सहम भी गए। आ क्यू इसका अपवाद न था। लेकिन चार दिन बाद अचानक आधी रात के वक्त आ क्यू को घसीट कर शहर ले जाया गया। वह एक अँधेरी रात थी। एक सैनिक दस्ता, एक मिलिशिया दस्ता, एक पुलिस दस्ता और गुप्तचर विभाग के पांच आदमी चुपचाप वेइच्वांग पहुँचे और संरक्षक-देवता के मंदिर के फाटक के सामने मशीनगन लगाकर, उन्होंने अँधेरे में मंदिर को घेर लिया। आ क्यू बाहर नहीं भागा। काफी समय तक मंदिर में

तिनका भी नहीं हिला। कप्तान बेचैन हो उठा और उसने बीस हजार ताँबे के सिक्कों के इनाम का ऐलान कर दिया। सिर्फ तभी दो मिलिशयामैनों ने साहस बटोर कर दीवार फाँदी और अंदर घुस गए। उनके सहयोग से बाकी लोग भी तेजी से अंदर घुस गए और क्यू को बाहर घसीट लाए। लेकिन जब तक उसे मंदिर के बाहर मशीनगन के नजदीक नहीं लाया गया, तब तक वह होश में नही आया कि हो क्या रहा है।

शहर पहुँचने तक दोपहर हो चुकी थी। वे लोग आ क्यू को एक टूटे-फूटे सरकारी दफ्तर में ले गए जहाँ पाँच-छह मोड़ पार करने के बाद उसे एक छोटे से कमरे में धकेल दिया गया। जैसे ही वह गिरता-पड़ता कमरे में पहुँचा, काठ के सींखचों का दरवाजा, जो कठघरे के दरवाजे जैसा प्रतीत हो रहा था, पीछे से फौरन बंद हो गया। कमरे में बाकी तीन तरफ तीन नंगी दीवारें थीं और जब उसने सावधानी से देखा तो कमरे के एक कोने में उसे अन्य व्यक्ति नजर आए।

हालाँकि आ क्यू को जरा बेचैनी महसूस हो रही थी, फिर भी वह निराश बिलकुल नहीं हुआ, क्योंकि संरक्षक-देवता के मंदिर वाला उसका कमरा, जहाँ वह सोता था, इस कमरे के मुकाबले किसी भी मायने में बेहतर नहीं था। अन्य दो व्यक्ति भी देहाती जान पड़ते थे। धीरे-धीरे उन्होंने आ क्यू से बातचीत शुरू कर दी। उनमें से एक ने बताया कि प्रांतीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार उसके दादा के जमाने का लगान वसूल करने के लिए उसे परेशान कर रहा है। दूसरा व्यक्ति यह नहीं जानता था कि उसे यहाँ क्यों लाया गया है। जब उन्होंने आ क्यू से उसके बारे में पूछा तो उसने दो टूक कह डाला, "क्योंकि मैं विद्रोह करना चाहता था।"

उस दिन तीसरे पहर उसे काठ के सींखचों वाले दरवाजे से बाहर घसीट कर एक बड़े कमरे में ले जाया गया। कमरे के दूसरे किनारे पर एक बूढ़ा आदमी बैठा था जिसकी चाँद घुटी हुई थी। आ क्यू ने पहले तो उसे कोई भिक्षु समझा, लेकिन जब देखा कि सैनिक उसकी रक्षा कर रहे हैं और लंबे कोट वाले कोई एक दर्जन व्यक्ति उसके दोनों तरफ खड़े हैं, जिनमें से कुछ लोगों की चाँद उसी बूढ़े आदमी की तरह घुटी हुई है, और कुछ लोग नकली विदेशी दरिन्दे की ही तरह अपने बाल लगभग एक फुट लंबे बढ़ाकर उन्हें अपने कंधों तक लटकाए हुए हैं, और सब-के-सब गुस्से से लाल पीले होकर अत्यंत गंभीर मुद्रा में उसकी ओर घूर रहे हैं, तो वह समझ गया कि अवश्य ही यह कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति है।

उसके घुटने खुद-ब-खुद मुड़ते गए और वह सिकुड़कर जमीन पर घुटनों के बल बैठ गया।

"खड़े होकर बोलो। घुटने टेकने की जरूरत नहीं।" लंबे कोट वाले सभी व्यक्ति जोर से बोल पड़े।

हालाँकि आ क्यू उनकी बात समझ गया था, फिर भी वह खड़ा होने में असमर्थ अनुभव कर रहा था, उसका शरीर अनायास ही सिकुड़ गया और अंत में वह अच्छी तरह घुटनों के बल बैठ गया।

"गुलाम कहीं का!..." लंबे कोट वाले व्यक्तियों ने तिरस्कार के साथ कहा। लेकिन उन्होंने आ क्यू से उठने का आग्रह नहीं किया।

"अगर सच-सच बता दोगे तो हल्की सजा मिलेगी," घुटे सिर वाले बूढ़े आदमी ने आ क्यू की आँखों में आँखें डालकर धीर किंत स्पष्ट स्वर में कहा। "हमें सब कुछ मालूम हो चुका है। अगर कबूल कर लोगे तो छोड़ दिए जाओगे।"

"कबूल कर लो।" लंबे कोट वाले व्यक्तियों ने जोर से कहा।

"बात यह है कि मैं.... खुद ही शामिल होना... चाहता था..." आ क्यू ने एक क्षण के लिए अवाक् रहने के बाद लड़खड़ाती जबान से उत्तर दिया।

"अगर ऐसी बात थी तो तुमने ऐसा क्यों नहीं किया?" बूढ़े आदमी ने बड़ी नरमी से कहा।

"नकली विदेशी दरिन्दे ने नहीं करने दिया।"

"बकवास बंद करो। यह सब चर्चा अब फिजूल है। तुम्हारे साथी कहाँ हैं ?"

"क्या कहा ?"

"जिन लोगों ने उस रात चाओ परिवार के घर चोरी की, वे लोग कहाँ हैं?"

"वे लोग मुझे अपने साथ नहीं ले गए थे। उन्होंने चोरी खुद ही की थी।" यह कहते-कहते आ क्यू कुछ क्रोधित हो उठा।

"वे लोग कहाँ हैं ? अगर बता दोगे तो तुम्हें छोड़ दिया जाएगा", बूढ़े आदमी ने और अधिक नरमी से दोहराया।

"मुझे नहीं मालूम... वे लोग मुझे अपने साथ नहीं ले गए थे।"

इसके बाद बूढ़े आदमी के इशारे पर आ क्यू को घसीट कर काठ के सींखचों वाले दरवाजे के भीतर धकेल दिया गया। अगले दिन सुबह उसे एक

बार फिर घसीट कर बाहर निकाला गया।

बड़े कमरे में हर चीज पहले जैसी ही थी। घुटे सिर वाला बूढ़ा आदमी अब भी वहीं बैठा था और आ क्यू एक बार फिर पहले की ही तरह घुटनों के बल बैठ गया।

"तुम्हें कुछ और कहना है ?" बूढ़े आदमी ने बड़ी नरमी से पूछा। आ क्यू ने सोचा और फैसला कर लिया कि उसे कुछ नहीं कहना। इसलिए उसने उत्तर दिया, "कुछ नहीं।"

इसके बाद लंबे कोट वाला एक आदमी कागज और कूँची लेकर आ पहुँचा। उसने कूँची आ क्यू के हाथ में थमाने की कोशिश की। आ क्यू डर के मारे लगभग काँपने लगा, क्योंकि उसकी जिंदगी में यह पहला मौका था जबकि उसे लिखने के काम आनेवाली कूँची हाथ में उठानी पड़ रही थी। अभी वह सोच ही रहा था कि कूँची कैसे थामी जाए, उस आदमी ने कागज पर एक जगह उँगली रखते हुए उससे दस्तखत करने को कहा।

"मैं...मैं.... लिखना नहीं जानता", आ क्यू ने कहा। वह शर्म से गड़ा जा रहा था। कूँची थामे उसका हाथ काँप रहा था।

"अगर ऐसी बात है तो एक गोल दायरा बना दो। यह तो तुम्हारे लिए आसान है।"

आ क्यू ने एक गोल दायरा बनाने की कोशिश की लेकिन जिस हाथ से उसने कूँची थामी हुई थी, वह काँप रहा था, इसलिए उस आदमी ने आ क्यू के लिए कागज जमीन पर फैला दिया। आ क्यू झुका और उसने बड़े जतन से, मानो उस पर उसके जीवन का अस्तित्व ही निर्भर हो, एक दायरा बना दिया। इस डर से कि कहीं लोग उसकी हँसी न उड़ाएँ, उसने दायरे को गोल बनाने की कोशिश की, लेकिन वह जालिम कूँच न सिर्फ बहुत भारी थी, बल्कि उसके आदेश का पालन भी नहीं कर रही थी। इसके विपरीत वह इधर-उधर डगमगाती हुई चल रही थी और जब दायरा पूरा होने ही जा रहा था तो वह फिर एक बार डगमगा गई, जिससे तरबूज के बीज जैसा आकार बन गया।

आ क्यू इस असफलता पर शर्म के मारे गड़ा जा रहा था कि उस आदमी के बिना कुछ कहे कागज और कूँची को उसके हाथ से ले लिया। इसके बाद कई लोगों ने उसे तीसरी बार घसीट कर काठ के सींखचों वाले दरवाजे के भीतर धकेल दिया।

इस बार उसे ज्यादा परेशानी नहीं हुई। उसने सोचा कि इस दुनिया में

हर आदमी को किसी-न-किसी समय कैदखाने के अंदर या बाहर अवश्य जाना पड़ता है और कागज पर दायरे अवश्य बनाने पड़ते हैं; चूँकि उसका बनाया हुआ दायरा गोल नहीं था, इसलिए आ क्यू को ऐसा लग रहा था मानो उसकी प्रतिष्ठा पर धब्बा लग गया हो। लेकिन तभी उसने यह सोचकर अपने मन को तसल्ली दी कि, "केवल मूर्ख लोग ही मुकम्मिल दायरा बना सकते हैं।" मन में यही विचार लिए वह सो गया।

मगर उस रात प्रातीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार सो नहीं सका, क्योंकि कप्तान से उसका झगड़ा हो गया था। सफल उम्मीदवार इस बात पर जोर दे रहा था कि सबसे ज्यादा महत्व की बात है चुराए गए माल को बरामद करना, जबकि कप्तान कह रहा था कि सबसे ज्यादा महत्व की बात है लोगों के सामने मिसाल पेश करना। कुछ समय से कप्तान प्रांतीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार के साथ बड़ा तिरस्कापूर्ण बरताव कर रहा था। इसलिए मेज पर जोर से मुक्का मारते हुए उसने कहा, "एक को सजा दो और सौ को डराओ। मालूम है तुम्हें, मुझे क्रांतिकारी पार्टी का सदस्य बने अभी बीस दिन भी नहीं हुए कि लूटमार की एक दर्जन से ज्यादा वारदातें हो चुकी हैं और इनमें से एक भी मामले का सुराग नहीं लग पाया। जरा सोचो तो, इसका मेरी प्रतिष्ठा पर कितना बुरा असर पड़ रहा है बड़ी मुश्किल से यह मामला सुलझ सका है, लेकिन तुम टाँग अड़ाने चले आए हो। इससे काम नहीं चलेगा। यह मेरा मामला है।"

प्रांतीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार बेहद क्षुब्ध हो उठा। लेकिन अपनी बात पर अडिग रहते हुए उसने कहा कि अगर चोरी का माल बरामद नहीं हुआ तो वह सहायक नागरिक प्रशासन के पद से तुरंत इस्तीफा दे देगा।

"जो जी में आए करो।" कप्तान ने उत्तर दिया।

इस घटना के परिणास्वरूप प्रांतीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार उस रात सो नहीं सका। लेकिन मजे की बात यह है कि अगले दिन सुबह उसने इस्तीफा नहीं दिया।

जिस रात प्रांतीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार सो नहीं सका था, उसके अगले दिन सुबह आ क्यू को घसीट कर काठ के सींखचों वाले दरवाजे के बाहर फिर लाया गया। जब उसे बड़े कमरे में ले जाया गया तो घुटे हुए सिर वाला बूढ़ा आदमी पहले की ही तरह वहाँ बैठा था। आ क्यू भी पहले की ही तरह घुटनों के बल बैठ गया।

बूढ़े आदमी ने बड़ी नरमी के साथ उससे पूछा, "तुम्हें कुछ और कहना

है ?"

आ क्यू ने सोचा और फैसला लिया कि उसे कुछ नहीं कहना इसलिए उसने उत्तर दिया, "कुछ नहीं।"

लंबे कोट और छोटी जाकिट वाले कई लोगों ने विदेशी कपड़े की बनी एक सफेद बनियान उसे पहना दी जिस पर काले रंग के अक्षर अंकित थे। आ क्यू को कुछ घबराहट महसूस हुई, क्योंकि यह पोशाक बहुत कुछ शोक मनानेवालों की सी जान पड़ती थी, और शोक मनाने वालों की पोशाक पहनना अपशकुन माना जाता है। साथ ही उसके दोनों हाथ पीठ पर बाँधे हुए थे। वे लोग उसे सरकारी दफ्तर से बाहर घसीट ले गए।

आ क्यू को एक खुले छकड़े में बैठा दिया गया और छोटी जाकिट वाले कई लोग उसके साथ बैठ गए। छकड़ा तुरंत चल पड़ा। धक्के के सामने बहुत से सैनिक व मिलिशियामैन चल रहे थे, जिनके कंधों पर विदेशी राइफलें लटक रहीं थीं, दोनों तरफ स्तब्ध तमाशबीन की भीड़ चल रही थी। पीछे की तरफ क्या था, यह आ क्यू नहीं देख पाया। अचानक उसे ख्याल आया, "कहीं ये लोग मेरी गर्दन उड़ाने तो नहीं ले जा रहे ?" उसका दिल दहल उठा, आँखों के सामने अँधेरा छा गया, कानों में घूँ-घूँ की आवाज गूँजने लगी और उसे लगा मानो बेहोश हो जाएगा। मगर वह बेहोश नहीं हुआ। हालाँकि वह कुछ देर तक भयभीत रहा, लेकिन बाद में शांत हो गया। उसने सोचा कि इस दुनिया में शायद हर आदमी को किसी-न-किसी समय अपना सिर अवश्य कटवाना पड़ता है।

इस सड़क से वह अच्छी तरह परिचित था। मगर उसे बड़ा ताज्जुब हो रहा था, ये लोग उसे कत्लगाह की तरफ क्यों नहीं ले जा रहे हैं ? यह बात वह नहीं जानता था कि लोगों के सामने मिसाल पेश करने के लिए उसे पूरे शहर में घुमाया जा रहा है। अगर उसे मालूम भी हो जाता तो भी स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं होने वाला था, सिर्फ यही विचार उठता कि इस दुनिया में शायद हर आमदी को किसी-न-किसी दिन लोगों के सामने अवश्य मिसाल बनकर पेश होना पड़ता है।

और जब वे लोग कत्लगाह की तरफ मुड़े, तब कहीं उसे मालूम हुआ कि उसका सिर कटने वाला है। जो लोग चींटियों की तरह उसके इर्द-गिर्द जमा हो गए थे, उनकी तरफ आ क्यू ने बड़ी दुःखभरी नजरों से देखा। सड़क के किनारे जमा लोगों की भीड़ में सहसा उनकी नजर आमा ऊ पर पड़ी। अच्छा,

तो इसलिए इतने दिनों तक वह नहीं दिखाई दी, वह शहर में काम करने लगी थी।

अचानक आ क्यू को अपने बुझे हुए उत्साह पर लज्जा अनुभव होने लगी, क्योंकि उसने आपेरा की एक भी पंक्ति नहीं गाई थी। उसके मन में अनेक विचार घूम गए, 'नौजवान विधवा अपने पति की कब्र पर' ज्यादा वीररसपूर्ण नहीं है। 'नाग और बाघ की लड़ाई' के ये शब्द कि 'है अफसोस मुझे मैंने हत्या कर डाली' बिलकुल निर्जीव से हैं। 'हड्डी पसली चूर तुम्हारी, लोहे की छड़ से कर दूँगा' सबसे अच्छा रहेगा। लेकिन जब उसने अपने हाथ ऊपर उठाने की कोशिश की तो याद आया कि उसके दोनों हाथ तो बँधे हुए हैं। इसलिए उसने 'हड्डी-पसली चूर तुम्हारी....' भी नहीं गाया।

"बस वर्ष बाद मैं एक अन्य...." ('बीस वर्ष बाद में एक अन्य हट्टा-कट्टा नौजवान बन जाऊँगा"—ये पंक्तियाँ अक्सर अपराधी मौत की सजा पाने के पहले मृत्यु को तुच्छ समझने के लिए कहा करते थे) क्षुब्ध आ क्यू के मुँह से इस कथन की आधी ही पंक्ति निकली, जिसे उसने कभी पहले याद कर लिया था, किंतु इस्तेमाल कभी नहीं किया था। "बहुत अच्छे!!" भीड़ की आवाज भेड़िये की गुर्राहट के समान गूँज उठी।

छकड़ा लगातार आगे बढ़ता जा रहा था। इस शोरगुल के बीच आ क्यू की आँखें आमा ऊ को खोज रही थीं, लेकिन मालूम होता था कि उसने आ क्यू को नहीं देखा, क्योंकि वह सैनिकों के कँधों पर लटकी विदेशी राइफलों पर नजर गड़ाए हुए थी।

आ क्यू ने शोरगुल मचाते जन-समूह पर फिर एक बार नजर डाली।

उस समय उसके मन में फिर एक बार अनेक विचार घूम गए। आज से चार वर्ष पहले, पहाड़ की तलहटी में उसका सामाना एक भूखे भेड़िये से हो गया था। भेड़िया उसके पीछे लग गया था और उसे खा जाना चाहता था। आ क्यू को लगा कि डर के मारे उसके प्राण ही निकल जाएँगे। लेकिन भाग्यवश उसके हाथ में एक छुरा था, जिससे उसके अंदर वेइच्वांग लौटने की हिम्मत आ गई थी। मगर उस भेड़िये की आँखों को वह कभी नहीं भूल सका था—खूँखार होते हुए भी वे डरी-सहमी हुईं, प्रकाश-पुंजों की तरह चमक रही थीं, मानो दूर से ही उसे बेध डालेंगी। आज उसे उस भेड़िये से भी ज्यादा खूँखार आँखें नजर आ रही हैं, बुझी हुई किंतु मर्मभेदी आँखें, जो उसके शब्दों को निगल जाने के बाद उसके हांड़-माँस से भी कुछ अधिक चीजें निगल जाने को तत्पर थीं और

ये आँखें एक निश्चित फासले पर बराबर उसका पीछा कर रही थीं।

लगता था कि ये आँखें एक ही बिंदु पर केन्द्रित होकर उसकी आत्मा को बेध रही हैं।

"बचाओ! बचाओ!"

लेकिन ये शब्द आ क्यू के मुँह से हर्गिज नहीं निकले। उसकी आँखों के सामने अँधेरा छा गया, कानों में धूँ-धूँ की आवाज गूँजने लगी और उसे लगा मानो उसका सारा शरीर खाक की तरह बिखर गया हो।

उस चोरी के बाद सबसे ज्यादा असर प्रांतीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार पर पड़ा, क्योंकि चोरी का माल बरामद नहीं हो पाया। उसका पूरा परिवार दुःख के सागर में डूब गया। दूसरे नंबर पर सबसे ज्यादा असर चाओ परिवार पर पड़ा क्योंकि जब काउंटी परीक्षा में सफल उम्मीदवार चोरी की रपट लिखाने शहर गया तो कुछ बुरे क्रांतिकारियों ने न सिर्फ उसकी चुटिया ही काट डाली बल्कि उससे बीस हजार ताँबे के सिक्के भी वसूल कर लिए। परिणामस्वरूप पूरा चाओ परिवार भी दुःख के सागर में डूब गयां उस दिन के बाद से उन लोगों में महज एक सत्ताच्युत राजवंश के उत्तराधिकारियों की सी शान बाकी रह गई।

इस घटना की चर्चा करते समय वेइच्यांग में किसी ने कोई सवाल नहीं उठाया। आम तौर पर सभी लोग इस बात के बारे में एकमत थे कि आ क्यू एक बुरा आदमी था, इसका सबूत यह था कि उसे गोली मार दी गई थी। अगर वह एक बुरा आदमी न होता तो भला उसे गोली क्यों मार दी जाती ? लेकिन शहर के लोगों की राय उसके पक्ष में नहीं थी। ज्यादातर लोग इसलिए असंतुष्ट थे क्योंकि मारने का दृश्य उतना शानदार नहीं होता जितना कि सिर काटने का और वह कितना हास्यायस्पद अपराधी था जो आपेरा की एक भी पंक्ति गाए बिना ही इतने गली-कूचों से गुजर गया था। वे लोग व्यर्थ ही उसके पीछे-पीछे गए थे।

❐

नववर्ष की बलि

पुराने पंचांग के अनुसार नववर्ष की पूर्वसंध्या वास्तव में ही नये वर्ष के अंत का आभास देती है। गाँवों और नगरों की बात जाने दीजिए, समस्त वायुमंडल नये साल के आने की उद्घोषणा करता जान पड़ता है। शाम के मटमैले, उदास, कोहरे के बोझ से झुके बादलों में थोड़ी-थोड़ी देर बाद चमकने वाली बिजलियाँ, फिर पटाखों की गर्जन-तर्जन से अग्निदेव (बारहवें चंद्र महीने के तेईसवें दिन अग्निदेवता स्वर्ग जाकर अपनी रिपोर्ट देता है, ऐसा विश्वास था) की विदाई और उसके बाद कान के पर्दे फाड़ने वाले पटाखों के धमाके समाप्त होते-होते वायु में बारूद की गंध भर जाती है। ऐसी ही उत्सव की एक रात में मैं अपने जन्म-स्थान लूचन लौटा था। लूचन मेरा जन्म-स्थान जरूर था, लेकिन वहाँ अपना कोई घर न होने से अपने संबंधी लू साहब के यहाँ ठहरा। लू और हमारे लकड़दादा एक ही थे और वे मेरे पिता की पीढ़ी के थे, अतः चौथे स्थान के चाचा थे। वे शाही अकादमी के पुराने छात्र और नव-कन्फ्यूशियसवाद (सुंग राजवंश (970-1279) में कन्फ्यूशियस संस्थान जिसकी मान्यता थी कि दुनिया में सभी चीजें और सामंतशाही 'तर्क' पर आधारित है और कभी बदल नहीं सकतीं।) के समर्थक थे। दाढ़ी अभी तक नहीं उगी थी। मुकाबला हुई तो भ्रष्टाचार और राम-जुहार के बाद कहने लगे कि मैं पहले के मुकाबले मोटा हो गया हूँ और ऐसा कहते ही फौरन सुधारवादियों पर अपना क्रोध प्रकट करने लगे। जानता था, उनका क्रोध मुझ पर नहीं, बल्कि खांग युवो वेइ (खाग यवो वेई (1858-1927) एक प्रसिद्ध सुधरवादी था, जिसने वैधानिक राजतंत्र का पक्षपोषण किया) पर था। खैर, इस हालत में बातचीत क्या होती। कुछ ही क्षणों मे वे चले गए और मैं अध्यनकक्ष में अकेला रह गया।

दूसरे दिन काफी देर से नींद टूटी। दोपहर में खा-पीकर पुराने मित्रों और नातेदारों से मिलने चला गया। अगला दिन भी ऐसे ही बीता। उन लोगों में कोई विशेष परिवर्तन मालूम नहीं दे रहा था बस, आयु में जरा बढ़ गए थे।

सभी परिवार नववर्ष की बलि-पूजा की तैयारियों में जुटे थे। लूचन में बीते वर्ष को बड़ी धूमधाम से विदाई दी जाती है। लोग बहुत श्रद्धा और उत्साह से नए वर्ष के आरंभ में भाग्य के देवता का स्वागत-सत्कार करके नए वर्ष में सुख-सैभाग्य के लिए प्रार्थना करते हैं। मुर्गियाँ और कलहँस मारे जाते हैं, शूकर का मांस खरीदा जाता है, फिर उन्हें पानी में बड़ी सावधानी से धोया जाता है जब तक स्त्रियों के कंगन भरे हाथ सर्दी में पानी से लाल नहीं हो जाते। मांस को पकाकर उसमें तीन-चार जगह चापस्टिकें खोंस दी जाती हैं और पूजा के इस भोग को प्रातः मुँह अँधोरे ही धूप-दीप से लगाकर बहुत श्रद्धा से भाग्य-देवता से भोग स्वीकार करने की प्रार्थना की जाती है। पूजा का भोग केवल पुरुष ही लगा सकते हैं ओर पूजा के बाद भी पहले की तरह कुछ देर तक पटाखे चलते हैं। सभी परिवार प्रतिवर्ष इसी प्रकार पूजा करते हैं। लोग अपनी औकात-बिसात के अनुसार भोग लगाते हैं और पटाखों से उत्सव मना लेते हैं। जैसे सदा से होता आया था, वैसे ही उस वर्ष भी हो रहा था।

उस दिन सुबह ही बादल चढ़ आए, दोपहर में तो बर्फ भी गिरने लगी। बर्फ आलूचे के फूलों की पंखुड़ियों की तरह आकाश में से थिकरती तैरती चली आ रही थी और पटाखों के धुएँ और कोलाहल से मिल लूचन में विचित्र समा बँध गया था। मैं चाचा के यहाँ लौटा तो मकान की छत बर्फ से ढककर श्वेत हो चुकी थी। चारों ओर की शुभ्रता से कमरे के भीतर भी चमक बढ़ गई थी। दीवार पर लटकी लाल रंग की शिला पर आतोपंथी संत छन त्वान (दसवीं शताब्दी का एक साधु) द्वारा लिखा हुआ 'चिरायु' शब्द खूब बड़ा और उजला दिखाई दे रहा था। सुभाषित से अंकित दो लंबी कुंडलीनुमा पट्टियों में से एक पट्टी दीवार से मेज पर गिरकर ढीली-ढीली लिपट गई थी। लटकी हुई दूसरी पट्टी पर लिखा था 'सिद्धान्तों की समझ से चित्त को शांति प्राप्त होती है।' कहने को कुछ था नहीं। खिड़की के समीप पड़ी मेज पर रखी पुस्तकों को उलट-पलट कर देखने लगा। खांग शी के शब्दकोष के कुछ खंडों, नव-कन्फ्यूशियसवादी दार्शनिकों की पुस्तकों और चार पुस्तकों की टीकाओं के अलावा वहाँ कुछ नहीं था। जो हो, मैंने निश्चय कर लिया कि कल लौट जाऊँगा।

कल श्यांग लिन की पत्नी से हुई मुलाकात से भी मन बेचैन था। यह घटना दोपहर के बाद घटी। नगर के पूर्वी मुहल्ले में एक मित्र के यहाँ से लौट रहा था तो नदी किनारे श्यांग लिन की पत्नी से सामना हो गया। उसकी निगाहों में ही मैं समझ गया था कि कुछ कहना चाहती है। लूचन में जिन लोगों

से मैं मिला उनमें सबसे ज्यादा बदली हुई वही दिखाई दी। पाँच वर्ष पूर्व उसके सिर में कहीं कोई एक-आध केश सफेद था लेकिन अब पूरा सिर सफेद था जिससे वह चालीस से काफी बूढ़ी लग रही थी। उसका पीला, सिकुड़ा, काठ की मूर्ति सा चेहरा बिलकुल भावशून्य लग रहा था और उस पर से पहले की उदासी भी खत्म हो गई थी। आँखों में कभी-कभी पुतलियाँ नाच जाती थीं जो जीवन का एकमात्र चिह्न था। बुढ़िया एक हाथ में सींकों की बुनी टोकरी लिए थी जिसमें टूटा-सा खाली कटोरा था। दूसरे हाथ में बाँस की, सिर से ऊँची छड़ी लिए थी जिसका नीचे का सिरा फटा हुआ था। स्पष्ट था कि वह भीख माँगने लगी थी।

उसने देखा तो मैं यह सोच मौन खड़ा रह गया कि समीप आकर शायद कुछ माँगे।

"तुम लौट आए?" समीप आकर उसने पूछा लिया।

"हाँ।"

"बहुत अच्छा हुआ। तुम पढ़े-लिखे आदमी हो, देश-विदेश घूमे हो, दुनिया देखे हो। मैं तुमसे एक बात पूछना चाहती हूँ।" उसकी बुझी-बुझे आँखें चमक उठीं।

उसकी बात इतना अप्रत्याशित थी कि मैं विस्मय से खड़ा रहा।

"यह तो बताओ", वह दो कदम समीप सरक आई और स्वर धीमा कर रहस्य के स्वर में फुसफुसाकर बोली, "आदमी मर जाता है तो क्या सचमुच प्रेत बन जाता है ?"

क्या उत्तर देता ? वह मेरी और जिस तरह टकटकी लगाए थी कि शरीर में सिहरन-सी दौड़ गई, रोमांच हो आया और परीक्षक विद्यार्थी से कोई अप्रत्याशित, बहुत कठिन प्रश्न पूछ ले और सामने खड़ा होकर तुरंत उत्तर माँगे। मृत्यु के बाद जीव के भूत या प्रेत बन जाने के संबंध में मैंने कभी विचार नहीं किया था। बहुत संकट में था, क्या उत्तर देता। कुछ क्षण अवाक् होकर सोचता रहा कि गाँव-देहात में लोग मृत्यु के बाद आत्मा के भूत-प्रेत बन जाने में विश्वास करते हैं। जान पड़ता है, उसके मन में किसी कारण कुछ संदेह हो गया है या शायद आशा-मृत्यु के बाद जीवन की आशा, जिससे घृणा भी थी। दुखिया को और दुःख देने से क्या लाभ ? उसे कुछ आशा, सांत्वना मिले, यही अच्छा है। यही कहना उचित है कि आत्मा नहीं मरती।

"खयाल तो है आत्मा रहती है", मैंने झिझकते हुए हामी भर ली।

"तो फिर नरक भी जरूर होता होगा ?"

"कैसा नरक ?" उसके प्रश्न से मैं घबरा गया था। टालने के लिए बोला, तर्क के अनुसार तो नरक होता है—पर कौन जाने। खैर, इन बातों में क्या रखा है...।"

"तब क्या मरने के बाद कुनबे के सब लोग फिर से आपस में मिलते होंगे ?"

"कौन जाने, मृत्यु के बाद कुनबे के सब लोग फिर से आपस में मिलते होंगे ?" अब मुझे समझ में आया कि मैं एकदम मूर्ख था। मेरा सारा सोच-विचार और चालाबाजी उसके तीन प्रश्नों के सामने निरस्त थे। डर के मारे मैंने सीधे कह दिया—"उस हालत में... वास्तव में मुझे स्वयं नहीं मालूम... वस्तुतः मैं नहीं कह सकता कि भूत होते भी हैं या नहीं।"

वह न जाने और क्या पूछ ले, इस डर से तेज चाल से चाचा के मकान की ओर चल पड़ा। उसके प्रश्न से मन में बड़ी बेचैनी थी। सोच रहा था कि मेरी बात से बेचारी और अधिक दुःखी और निराश न हो गई हो। हो सकता है वह अकेली महसूस कर रही हो क्योंकि दूसरे लोग उत्सव मनाने में व्यस्त हैं, या इसके मन में कोई और बात हो, कोई पूर्वानुमान ? यदि मेरी बात से निराश होकर वह कुछ कर बैठी तो वह मेरे ही उत्तर के कारण होगा। फिर मुझे स्वयं पर ही हँसी आने लगी कि इतनी छोटी-स बात पर सोच-समझकर मैं बेकार पेरशान हो रहा हूँ। तभी तो कई शिक्षा-शास्त्री मुझे स्नायु-रोग का शिकार बताते हैं। साथ ही मैंने उसे स्पष्ट कह दिया कि मुझे निश्चित कुछ नहीं मालूम और इस प्रकार पहले जो बात कही थी, उसे बाद में काट दिया था। अब अगर कुछ हो भी जाए तो उसकी जिम्मेदारी मेरी नहीं हो सकती।

"मैं निश्चित नहीं कह सकता"—यह एक अत्यंत उपयोगी वाक्यांश है।

अल्हड़ साहसी नौजवान प्रायः दूसरों के झमेले अपने सिर पर ले लेने के लिए उतावले रहते हैं और झमेला दूर करने का तरीका बता देते हैं। यदि बदकिस्मती से कुछ ऐसा-वैसा हो जाए, होनी-अनहोली हो जाए, तो संभवतः कलंक उसके ही सिर मढ़ दिया जाएगा। पर अपनी बात को इस टरकाऊ वाक्यांश से समाप्त कर दें, तो वे हर तरह की जवाबदेही से छुटकारा पा लेंगे। उस समय यह शब्दावली मुझे और भी अधिक उपयोगी जान पड़ी। यह भिखारिन को भी इससे उचित कोई दूसरा उत्तर नहीं दिया जा सकता था।

फिर भी मैं परेशान रहा और रात के विश्राम के बाद भी मेरा मन एक पूर्वशंसा से इस बारे में उलझ रहा। बर्फीले मौसम और मनहूस अध्ययन-कक्ष ने

मेरे मन की बेचैनी को और बढ़ा दिया। सोचा कल सुबह ही शहर लौट जाऊँगा। फू-शिंग रेस्तरां में पहले शार्क मछली के पंख की प्लेट एक डालर में मिल जाती थी। न मालूम अब इसका दाम बढ़ गया है कि नहीं। पुराने मित्र, जिनके साथ फू-शिंग रेस्तराँ में जाया करता था, जहाँ-तहाँ बिखर चुके थे। परन्तु शार्क मछली के पंख खाने के लिए तो जा ही सकता था। कुछ भी क्यों न हो दूसरे दिन सुबह लौट जाने का निश्चय तो कर ही लिया था।

कई बार अनुभव कर चुका हूँ कि जिस बात के न घटने की उम्मीद करता हूँ और जिससे बचना चाहता हूँ, वह जरूर होकर रहती है। मन में भय समा गया था कि इस बार भी कुछ-न-कुछ अनिष्ट होकर ही रहेगा। सचमुच ही अजीब-अजीब सी बातें हो रही थीं। संध्या समय घर के भीतर से बातचीत के स्वर सुनाई देने लगे, जैसे किसी बात पर बहस हो रही हो। कुछ समय बाद बातचीत बंद हो गई और फिर सुनाई दिया कि चाचा घर से बाहर जाते हुए कह रहे हैं, "आगे न पीछे, यह इसी समय होना था क्या ? क्या यह उसके कुलच्छनी होने का प्रमाण नहीं है ?"

सुनकर पहले धक्का लगा और फिर गहरी बेचैनी। सोचा, इसका मुझसे कुछ संबंध है। दरवाजे से बाहर झाँका, परंतु वहाँ कोई नहीं था। बड़ी कठिनाई से अपने आपको वश में किए था कि नौकर संध्या के भोज से पहले चाय लेकर आ गया। अवसर पाकर उससे पूछताछ की।

"लू साहब अभी किस पर बिगड़ रहे थे ?" मैंने पूछा।

"वही श्यांग लिन की पत्नी पर।" नौकर ने संक्षिप्त सा उत्तर दिया।

"श्यांग लिन की पत्नी ? क्या हुआ उसे ?" मैंने फिर पूछा।

"मर गई।"

"कैसे मर गई ? भूख से, और क्या।" नौकर ने निर्विकार भाव से उत्तर दे दिया और मेरी ओर नजर उठाए बिना कमरे से चला गया।

कुछ देर बाद मेरी बेचैनी मिट गई। आशंका तो थी ही, सो घटना भी घट गई थी। अब 'कौन जाने' कहकर उत्तरदायित्व टालने की चिंता का कुछ प्रयोजन नहीं था। या नौकर के अनुसार उसके भूख से मर जाने की बात से उत्तरदायित्व से बचने का आश्वासन पा लेने की भी आवश्यकता न थी। समय-समय पर वह घटना मेरे मन को कचोटती रहती थी। शाम का खाना मेज पर लगा दिया गया और चाचा भी मेरे साथ बैठे। मन में आया, श्यांग लिन की पत्नी की बात पूछ लूँ। जानता था कि चाचा ने पढ़ा होगा, 'भूत-प्रेत और रूहें प्राकृति की दो शक्तियों के फलरूप हैं।' (एक कन्फ्यूशियसवादी उक्ति)। फिर

भी पुराने अंधश्विासों में, उनकी इतनी आस्था थी कि नववर्ष के उत्सव की पूर्व संध्या समय मृत्यु या बीमारी की चर्चा नहीं की जा सकती थी। अगर अनिवार्य ही हो जाए तो ऐसी बात केवल व्यंजना या संकेत से ही की जानी चाहिए। दुर्भाग्य से मैं इस प्रकार के व्यवहार में अनाड़ी हूँ। इसलिए होंठों पर बार-बार आने पर भी बात को दबा लेना पड़ा। चाचा के गंभीर चेहरे को देख मुझे संदेह होने लगा, कहीं वे मुझे भी तो कुलच्छना नहीं समझ रहे थे जिसने उन्हें परेशान करने के लिए आने का यही अवसर चुना। अपने संबंध में चाचा के मन से किसी भी संदेह को दूर कर देने के लिए मैंने कहा कि मैं सुबह ही लूचन से शहर लौटना चाहता हूँ। चाचा ने मुझसे रुकने का अधिक आग्रह नहीं किया। किसी तरह यह मौन भोजन समाप्त हुआ।

जाड़े के दिन यों भी छोटे होते हैं और क्योंकि बर्फ भी पड़ रही थी सो पूरे कस्बे पर जल्दी ही अँधेरा छा गया था। घर में रोशनियाँ जल गईं थीं और सभी लोग किसी-न-किसी काम में लगे थे। परन्तु घरों के बाहर अंधेरा और सन्नाटा था। ढेरों बर्फ पड़ चुकी थी और लगातार पड़ती जा रही थी जिससे सन्नाटा और सूनापन और भी गहरा हो रहा था। मैं वनस्पति-तेल के दिये के पीले, मध्यम प्रकाश में अकेला बैठा सोच रहा था—इन गरीब औरत को सब लोगों ने ठुकरा दिया था, जैसे टूटे बेकार हो गए खिलौने से मन ऊबने लगता है, तो उसे धूल में डाल दिया जाता है। कभी धरती की धूल में उसका भी कोई स्थान होगा कि यह स्त्री भी अपना अस्तित्व बनाए रखना चाहती है। जो हो, अब मृत्यु ने उसका अस्तित्व मिटा दिया है। नहीं जानता प्रेत-आत्माओं का अस्तित्व है या नहीं, परन्तु ऐसे निरर्थक लोग, जिनके अस्तित्व से दूसरे लोग ऊब चुके हैं, जब इस संसार में मिट जाते हैं तो उनका या शेष रहे दूसरे लोगों की इसी में भलाई है। इसी खयाल में खोया मौन बैठा सोचने लगा और बाहर गिरती बर्फ की आहट सुनता रहा और धीरे-धीरे मन की बेचैनी मिटती जा रही थी।

'श्यांग लिन की पत्नी के संबंध में जो कुछ देखा था या लोगों से सुना था, सब एक साथ सामने आने लगा।

श्यांग लिन की पत्नी लूचन की नहीं थी। बहुत वर्ष पहले, जाड़े के आरंभ में जब चाचा अपनी नौकरानी बदलना चाहते थे तब वेइ की बुढ़िया उसे लेकर आई थी। श्यांग लिन की पत्नी सिर पर मातमी सफेद फीता बांधे थी, काला लहँगा, नीला जाकिट और हल्का हरा ब्लाउज पहने थी। तब उसकी आयु लगभग छब्बीस की रही होगी। चेहरे का रंग पीला था, परंतु गालों पर सुर्खी थी।

वेइ की बुढ़िया उसे श्यांग लिन की पत्नी के नाम से पुकारती थी। बुढ़िया ने बताया कि श्यांग लिन की पत्नी उसके मायके वालों की पड़ोसिन है। चूँकि उसका पति मर चुका था, वह चाहती थी कि दूसरों के यहाँ चाकरी कर ले। मेरे चाचा ने सुना तो उनके माथे पर बल पड़ गए। चाची समझ गई कि चाचा विधवा को नहीं रखना चाहते। परंतु श्यांग लिन की पत्नी के मजबूत-चुस्त हाथ-पैरों, उसके चेहरे पर नम्रतापूर्ण मौन को देखने से ही चाची समझ गई कि वह परिश्रमी और शांत स्वभाव वाली है। चाची ने चाचा की त्यौरियों की परवाह न कर उसे रख लिया। कामि परखने की अवधि के दौरान श्यांग लिन की पत्नी सुबह से रात तक काम में लगी रहती थी, जैसे विश्राम से उसका मन घबराता हो। उसके शरीर में पूरे आदमी की ताकत थी। तीसरे दिन चाची ने उसकी तनखाह बाँध दी—हर महीने पाँच सौ ताँबे के सिक्के।

उसे सब लोग श्यांग लिन की पत्नी के नाम से ही पुकारने लगे। किसी ने उसका अपना नाम नहीं पूछा। वेई की बुढ़िया उसे लेकर आई थी और बता गई थी कि वह उन्हीं के मायके वालों के पड़ोस की थी, सो अनुमान हो गया कि उसका कुलनाम भी वेइ ही होगा। वह स्वभाव से चुप रहती थी, कोई कुछ पूछता तभी बोलती और तब भी दो-चार शब्द से अधिक नहीं। दस-बारह दिन बाद पता चला कि घर में उसकी रौबीली सास और कोई दस वर्ष का एक देवर है जो लकड़ी काट लेता था। पति की पिछले बसंत में मृत्यु हो गई थी। वह भी लकड़हारा ही था। उम्र में अपनी पत्नी से दस वर्ष छोटा था और अधिक उसने कुछ नहीं बताया।

समय तेजी से बीतता गया। श्यांग लिन की पत्नी पहले की ही तरह कड़ी मेहनत करती जा रही थी। मोटा-बुसी जो कुछ मिल जाता खा लेती, पर काम में कोई कोर-कसर नहीं रहती थी। लोग-बाग कहते थे कि लू साबह की नौकरानी किसी अच्छे मेहनती जवान मर्द से क्या कम है! पुराने वर्ष की विदाई की पूजा के समय उसने अकेले ही घर भर की झाड़-पोंछ की, मुर्गियाँ और कलहँस मारे, भोग का माँस पकने के लिए चढ़ा दिया। चाची तो खुश थी ही साथ ही वह भी संतुष्ट और प्रसन्न थी। उसके होंठों पर हल्की-हल्की मुस्कान झलकने लगी थी, गाल भर आए थे और रंग भी उजला हो गया था।

नववर्ष के बाद एक दिन वह नदी किनारे चावल धोकर लौटी तो उसका चेहरा उतरा हुआ था क्योंकि उसे नदी के उस पार एक आदमी घूमता दिखाई दिया जो उसके पति के बड़े चचेरे भाई जैसा लगा रहा था। शायद वह उसी की खोज में आया था। चाची ने अधिक जानकारी लेनी चाही लेकिन उसने

और कुछ नहीं बताया। चाचा ने सुना तो उनके माथे पर बल पड़ गए, बोले "मामला गड़बड़ है, यह अपनी ससुराल से भाग कर आई होगी।"

जल्दी ही बात पक्की हो गई कि श्यांग लिन की पत्नी ससुराल से भाग कर आई थी।

एक और पखवाड़ा बीत गया और लोग उस घटना को भूलने लगे थे कि वेइ की बुढ़िया एक दिन अचानक पैंतीस-चालीस वर्ष की एक औरत को लेकर आ पहुँची। बुढ़िया ने बताया कि यह श्यांग लिन की पत्नी की सास है। सास रूप-रंग से पहाड़ी देहातिन ही लगती थी, परन्तु बातचीत खूब आत्मविश्वास और फर्राटे से कर रही थी। उसने शिष्टता प्रदर्शन करके इस बात के लिए क्षमा-याचना की कि वह अपनी बहू को लिवा ले जाने के लिए आई है क्योंकि बसंत के शुरू में खेती-बाड़ी का काम बहुत है और घर में बुढ़िया-बच्चे के सिवाय और कोई नहीं।

चाचा बोले, "उसकी सास बुलाने आई है, तो हम कैसे रोक सकते हैं।"

तत्पश्चात् उसका हिसाब कर दिया गया। उसने अपनी पूरी तनख्वाह चाची के पास जमा रहने दी थी, कभी एक पैसा भी नहीं लिया था। हिसाब से एक हजार सात सौ पचास ताँबे के सिक्के बनते थे। चाची ने सब पैसा उस की सास के हाथ में रख दिया। सास ने धन्यवाद दिया और बहू के कपड़े भी साथ ले गई। इस समय तक दोपहर हो चुकी थी।

"भात का क्या हुआ ? श्यांग लिन की पत्नी क्या चावल धोने नहीं गई थी ?" चाची पुकार बैठीं। उन्हें भूख लग आई थी, इसलिए भात याद आ रहा था।

चावल की डलिया की खोज होने लगी। चाची रसोई में देखने गई, इस कमरे में देखा, उस कमरे में ढूंढ़ा, परंतु चावल की डलिया कहीं दिखाई नहीं दी। चाचा ने आंगन में और घर के आसपास नजर डाली वहाँ भी कुछ नहीं था। वे खोजते हुए नदी की ओर चल पड़े। देखा कि नदी किनारे चावल की डलिया सही-सलामत रखी हुई है और डलिया के साथ कुछ तरकारी भी पड़ी हुई है।

नदी किनारे पर खड़े कई लोगों ने चाचा को बताया कि नदी में सुबह से सफेद पाल वाली एक नाव खड़ी थी। कौन जाने पाल के पीछे कौन था। किसी ने उधर विशेष ध्यान भी नहीं दिया था। जब श्यांग लिन की पत्नी चावल धोने आई थी चावल की डलिया उसने नदी किनारे रखी ही थी कि नाव से दो पहाड़ी कूद आए और उसे जबरदस्ती उठाकर नाव पर ले गए। वह रोई और

चिल्लाकर पुकारा, फिर उसकी पुकार सुनाई नही दी। शायद उसका मुँह दबा लिया होगा। उसके बाद नाव से दो औरतें आईं। उनमें एक अनजबी थी, मगर दूसरी वेइ की बुढ़िया थी। नाव में झाँककर देखना तो मुश्किल था लेकिन लगता था कि उन्होंने उसे बाँध-बूँध कर नाव में नीचे डाल रखा था।

"कितनी घृणित बात है, खैर..." चाचा चुप रह गए।

उस दिन दोपहर में चाची ने स्वयं रसोई बनाई। मेरे चेचेरे भाई आ न्यू ने चूल्हा सुलगाया।

दोपहर का खाना हो चुका तो बुजुर्ग वेई की बुढ़िया आ पहुँची।

"कितनी घृणित बात है।" चाचा बोले।

चाची रसोई में बर्तन धो रही थीं। बर्तनों में उलझी हुई गरज पड़ी, "खूब मजाक किया तूने। अब और क्या करने आई है ? तू खुद ही उसे रखवाकर गई थी और फिर बेचारी को क्या इस तरह से उड़वा दिया। अच्छा-खासा बखेड़ा खड़ा कर दिया तूने। लोग क्या कहेंगे ? हमारी भी खिल्ली उड़वाएगी क्या ?"

"हाय रे दैया, मैं किस झगड़े में फँस गई। मैं तो आपको पूरी बात बताने आई हूँ। मुझे क्या मालूम था कि सास से बिना पूछे वह भाग कर चली आई है। श्रीमान ली, मुझे माफ कर दीजिए मैं बेवकूफ ठहरी, मैं इन बातों को क्या जानूँ। मुझे माफी मिले, मुझसे खता हुई। मुझे तो आपकी ही दया का भरोसा है। मालिक तो सदा गरीबों पर दया करते हैं। मैं ढूँढ़कर हुजूर के लिए ऐसी अच्छी नौकरानी लाऊँगी कि मालकिन खुश हो जाएँ।"

"खैर..." चाचा ने कहा।

"श्यांग लिन की पत्नी का मामला समाप्त हो गया और कुछ दिनों में लोग यह बात भूल भी गए।

श्यांग लिन की पत्नी को और सब लोग तो भूल गए, पर चाची उसे नहीं भूलीं। भूलती भी कैसे ? फिर उन्हें ढंग की नौकरानी मिली ही नहीं। जो नौकरानी आती, कामचोर होती या रसोई की अथवा दूसरी चीजों की चोरी करती, अथवा कामचोर भी होती और चोर भी। चाची नौकरानियों से परेशान हो जातीं, तो श्यांग लिन की पत्नी को याद करने लगतीं—" न जाने यह गरीब कहाँ होगा।" स्पष्ट था कि वह लौट आती तो चाची उसे रख लेतीं। परन्तु अगले नववर्ष की पूजा आते-आते उन्हें उसके लौटने की आशा न रही।

नववर्ष का पहला महीना खत्म हो रहा था। जब वेई की बुढ़िया एक दिन डगमगाती हुई चाची को नववर्ष की बधाई देने आ पहुँची। क्षमा माँग कर

बोली कि वह अपने मायके चली गई थी। वहाँ कई दिन लग गए, इसलिए पहले नहीं आ सकी। बातचीत में श्यांग लिन की पत्नी की चर्चा भी होने लगी।

"वह बड़े मजे में है," वेइ की बुढ़िया ने किलक कर कहा। "उसकी सास जब उसे यहाँ से उठाकर ले गई तो पहले ही एक गाँव में हो परिवार के छठे लड़के से शादी की बात पक्की कर आई थी। उसे यहाँ से लिवा ले जाने के कुछ दिन बाद ही डोली में डालकर चलता कर दिया।"

"हे भगवान, ऐसी सास भी क्या।" चाची ने विस्मय प्रकट किया।

"अरे मालकिन, आप तो बड़े लोग ठहरे इसलिए वैसी ही बातें करती हैं। हम गरीब देहाती औरतों के लिए इसमें क्या है ? हमारे यहाँ तो सब ऐसे ही चलता है। सास बेचारी क्या करती ? उसे छोटे लड़के का भी तो ब्याह करना था। उसे घर में ही रोके रखती तो लड़के के ब्याह के लिए पैसा कहाँ से आतां पर उसकी सास है बड़ी माहिर और चालाक। दूर पहाड़ में ब्याह दिया है उसे। आसपास के किसी देहात में ब्याहती तो इतना दाम कहाँ मिलता ? लेकिन धुर पहाड़ में जाने के लिए कोई औरत तैयार नहीं होती, इसलिए वहाँ से अस्सी हजार ताँबे के सिक्के मिल गए। छोटे लड़के के लिए लड़की पचास हजार में मिली, बीस हजार बारात-ज्योनार में लग गया, दस हजार फिर भी बचा लिया। देख लो मालकिन, कैसी चालक औरत है ?"

"क्या श्यांग लिन की पत्नी राजी थी?" चाची ने पूछा।

"औरत की राजी-नाराजी कौन पूछता है। हर कोई कुछ विरोध तो करती ही है। उसके हाथ-पाँव बाँध डोली में डाल दिया, दुलहिन का मुकुट सिर पर बाँध कर ब्याह की रीति पूरी कर ली, दोनों को कोठरी में बंद कर दिया। बस काम पूरा हो गया। पर वह भी बड़ी अड़ियल निकली। सुना है उसने काफी झंझट खड़ा कर दिया। लोग कह रहे थे कि बड़े लोगों के यहाँ रह आई है, इसीलिए कुछ नखरे तो दिखाएगी ही। मालकिन मुझ जैसी बिचौलियों ने जिंदगी देखी है। जानती हूँ विधवाओं का ब्याह होता है तो चीखती-चिल्लाती हैं, कोई-कोई तो जहर खा लेने को तैयार हो जाती है। डोली में डाल कर मर्द के यहाँ पहुँचा दो तो भी कोई-कोई अड़ जाती है कि ब्याह की रीति नहीं करेंगी। कोई ब्याह की रीति के लिए जलाए धूप-दीप उठाकर पटक देती हैं। लेकिन याग लिन की पत्नी की तो पूछो मत। उसे डोली में डालकर ले गए तो रास्ते भर चीखती-चिघाड़ती रही। ससुराल पहुँची तो गला बैठ गया था। डोली से उसे खींच कर निकाला तो दो डोली वाले और उसका जवान देवर भी उससे ब्याह की रस्में पूरी नहीं करा पाए। जरा ढील पाई तो—बुद्ध भवगान रक्षा करें—जाकर

मेज के कोने से माथा टकरा लिया, सिर फोड़ लिया। इतना खून बहा कि दो मुट्ठी धूप की राख डाल कर दो लाल अंगोछे लपेट दिए तो भी खून बहता रहा। अंत में बहुत से लोगों ने मिलकर उसे दूल्हे के साथ कोठरी में बंद कर दिया तो भी वह चिखती-चिल्लाती रही। हे भगवान, कैसी औरत है।" बुढ़िया ने सिर हिलाते हुए कहा और गर्दन झुका चुप हो गई।

"फिर क्या हुआ ?" चाची ने पूछा।

"फिर? वह उठी। साल भर में लड़का हो गया जो इस बार नए साल के मौके पर दो वर्ष का हो गया है। अभी मैं मायके गई थी तो कुछ लोग पहाड़ में हो परिवार के गाँव जाकर लौहे और वे बता रहे थे कि भली-चंगी है, लड़का भी खूब तगड़ा है। अब उसके ऊपर सास थोड़े है। अच्छा तगड़ा-कमाऊ मर्द है, घर अपना है। उसके तो भाग जग गए हैं।"

इस घटना के बाद चाची ने फिर श्यांग लिन की पत्नी की चर्चा नहीं की।

श्यांग लिन की पत्नी की सुख-समृद्धि का समाचार मिले दो वर्ष बीत चुके थे कि शरद में एक दिन अचानक वह चाचा के द्वार पर आ पहुँची। एक छोटी-सी गोल टोकरी लिए थी और बगल में कपड़े-लत्ते की गठरी थी। सिर पर अब भी सफेद मातमी फीता बँधा था, वही काला लहँगा, नीली जकिट, हल्का हरा ब्लाउज। चेहरे पर स्याही फिर गई थी, गालों की सुर्ख उड़ गई थी। झुकी हुई पलकों पर आँसू सूखे हुए थे और आँखें बुझी हुई थीं। वेइ की बुढ़िया अब भी उसके साथ थी। वही उसे चाची के यहाँ लिवा लाई थी। भरे गले से उसने कहा—

"बेचारी गरीब पर बिजली गिर पड़ी। बेचारी बरबाद हो गई। क्या तगड़ा मर्द था। कौन जानता था कि ऐसा मियादी बुखार आएगा कि जान ले लेगा। बुखार तो टूट गया था पर उसने ठंडा भात खा लिया और हालत फिर खराब हो गई। तब भी बेचारी का भाग अच्छा था, लड़का तो था। काम से घबराती नहीं थी, जरूरत हो तो लकड़ी भी फाड़ ले, चाय की पत्ती चुन लाए, रेशम के कीड़े पाल ले। अकेले घर सँभाल रही थी, पर कौन जानता था कि लड़के को भेड़िया उठा ले जाएगा ? भेड़िये के आने का कोई मौसम भी नहीं था। बसंत बीत गया था, किसे ख्याल था कि ऐसे समय भेड़िया आ जाएगा ? फिर बेचारी अकेली रह गई। इसके जेठ ने इसे घर से निकाल दिया और सारा घर व खेत समेट लिए। मालकिन अब इसे आपके सिवा और किसका सहारा है। अब इस पर किसी का जोर तो है नहीं और सरकार को भी नौकरानी की

जरूरत है। इसीलिए इसे यहाँ लिवा लाई हूँ। आपके यहाँ वही नौकरानी ठीक से काम कर सकती है जो यहाँ के तौर-तरीके जानती हो।"

"मेरी तो अक्ल ही मारी गई थी, सचमुच..." श्यांग लिन की पत्नी ने अपनी उदासीन आँखें उठाईं और सुनाने लगी, "मैं तो यही जानती थी कि जब बर्फ पड़ी रहती है तो जंगली जानवर खाइयों-खेतों में खाने को कुछ नहीं पाते और गाँव में घुस आते हैं। मैं क्या जानती थी कि बसंत में भी जानवर गाँव में आ घुसेंगे। मुँह अंधेरे उठी, किवाड़ खोले, टोकरी में फलियाँ भर अपने आ माओ को पुकारा, "बेटा देहरी पर बैठकर इन्हें छील दे।" लड़का बहुत कहना मानता था। मैं पिछवाड़े चली गई। ईंधन काटा, चावल धोकर चूल्हे पर रख दिए और आ माओ को पुकारा कि फलियाँ दे जा। कोई जवाब नहीं मिला। मैं दरवाजे पर देखने आई तो क्या देखती हूँ कि फलियाँ धरती पर बिखरी पड़ी हैं और आ माओ का कुछ पता नहीं। बच्चा खेलने के लिए पड़ोसियों के घर कभी नहीं जाता था। मैं सब जगह ढूँढ़ती फिरी, कुछ पता नहीं चला। मैं घबरा गई और उसे ढूँढ़ने के लिए लोगों को पुकारा। दोपहर तक इधर-उधर सब जगह ढूँढ़ने के बाद वे लोग घाटी में पहुँचे। वहाँ बच्चे का एक जूता कंटीली झाड़ी में उलझा टँगा मिला। लोगों ने कहा, "बेचारा लड़का गया। उसे भेड़िया ले गया।" वही बात थी। लोग और आगे बढ़े तो लड़का भेड़िये की मांद में पड़ा हुआ था। भेड़िये ने उसका पेट खा लिया था। नन्हीं-सी मुट्ठी में वह अब भी टोकरी पकड़े हुए था।..." इतना कहने पर श्यांग लिन की पत्नी रोने लगी और फिर उसका गला रुँध गया।

चाची पहले कुछ असमंजस में थीं लेकिन उसकी कहानी सुनते ही उनकी आँखें डबडबा आईं। उन्होंने एक क्षण के लिए सोचा और श्यांग लिन की पत्नी से कहा कि वह अपनी चीजें नौकरानी के कमरे में रख दे। वेइ की बुढ़िया ने राहत की साँस ली, मानो किसी बड़े बोझ से मुक्त हो गई हो। श्यांग लिन की पत्नी को भी पहले से ज्यादा तसल्ली हुई और रास्ता पूछे बिना ही चुपचाप अपना सामान उठाकर चल दी। तब से वह लूचन में फिर नौकरानी का काम करने लगी।

लोग अब भी उसे श्यांग लिन की पत्नी के नाम से ही पुकारते थे।

लेकिन अब वह बिलकुल बदल गई थी। तीन ही दिन में मालकिन ने समझ लिया कि नौकरानी में अब पुरानी चुस्ती-फुर्ती नहीं रहीं अब उसे बात भी भूल जाती थी। चेहरे पर ऐसी मुर्दनी छा गई थी कि स्फूर्ति और मुस्कान का वहाँ कोई आभास ही न रहा था। चाची अपना असंतोष प्रकट कर रही थीं। श्यांग

लिन की पत्नी आई तो चाचा के माथे पर फिर वही पुराना बल उभर आए। लेकिन अच्छी नौकरानी न मिल सकने की कठिनाई देखते हुए विशेष आपत्ति नहीं की। परंतु अकेले में उन्होंने चाची को समझा दिया कि ये लोग दयनीय तो दिखाई पड़ते हैं, 'परंतु घर के लिए सुलच्छने नहीं होते। इधर-उधर के मामूली काम यह बेशक करे, परंतु पूजा-बलि की सामग्री इसे मत छूने देना। पूजा का भोग अपने हाथों ही बनाना होगा। पवित्र काम में इन लोगों का स्पर्श ठीक नहीं होता। इन लोगों का छुआ भोग पितर और देवता कैसे स्वीकार करेंगे।"

चाचा के यहाँ पितरों के श्राद्ध-बलि का आयोजन बहुत समारोह से होता था और पहले यह सब तैयारी श्यांग लिन की पत्नी ही करती थी। अब उसे कुछ करने को ही न था। जैसे ही बड़ी मेज कमरे के बीचों-बीच रख दी जाती है और पर्दा लगा दिया जाता तो श्यांग लिन की पत्नी मदिरा की प्यालियाँ और चापस्टिक पुरानी रीति के अनुसार पहले की तरह सजाने लगती।

"श्यांग लिन की पत्नी, तू रहने दे। यह मैं कर लूँगी।" चाची जल्दी से बोल उठीं।

श्यांग लिन की पत्नी ने घबराकर हाथ खींच लिया और धूप-दीप की साग्री उठाने लगी।

"श्यांग लिन की पत्नी, तू रहने दे, मैं कर लूँगी।" चाची तुरंत बोल उठीं।

श्यांग लिन की पत्नी के पास करने को कुछ नहीं रहा तो बेचारी खोई-खाई-सी कभी इधर जाती कभी उधर। दिन भर रसोई में बैठी रही और चुल्हा सुलगाती रही।

सब लोग पुकारते तो अब भी उसे श्यांग लिन की पत्नी के नाम से ही थे, पर ध्वनि कुछ बदल गई थी। लोग उससे बोलते-चालते तो अब भी थे, पर ढंग बदल गया था। श्यांग लिन की पत्नी इससे बेखबर, सामने घूरती हुई, सबको अपनी कहानी सुनाती रही, दिन हो या रात, उसकी कहानी का तार कभी न टूटता—

"मेरी तो अक्ल ही मारी गई थी, सचमुच..." श्यांग लिन की पत्नी सुनाने लगती, "मैं तो यही जानती थी कि जब बर्फ पड़ी रहती है तो जंगली जानवर खाइयों-खेतों में खाने को कुछ नहीं पाते और गाँव में घुस आते हैं। मैं क्या जानती थी कि बसंत में भी जानवर गाँव में आ घुसेंगे। मुँह अँधेरे उठी, किवाड़ खोले, टोकरी में फलियाँ भर अपने आ माओ को पुकारा, "बेटा देहरी पर बैठकर इन्हें छील दे।" लड़का बहुत कहना मानता था। मैं पिछवाड़े चली

गई। ईंधन काटा, चावल धोकर चूल्हे पर रख दिए और आ माओ को पुकारा कि फलियाँ दे जा। कोई जवाब नहीं मिला। मैं दरवाजे पर देखने आई तो क्या देखती हूँ कि फलियाँ धरती पर बिखरी पड़ी हैं। और आ माओ का कुछ पता नहीं। बच्चा खेलने के लिए पड़ोसियों के घर कभी नहीं जाता था। मैं सब जगह ढूँढ़ती फिरी, कुछ पता नहीं चला। मैं घबरा गई और उसे ढूँढ़ने के लिए लोगों को पुकारा दोपहर तक इधर-उधर सब जगह ढूँढ़ने के बाद वे लोग घाटी में जा पहुँचे। वहाँ बच्चे का एक जूता कंटीली झाड़ी में उलझा टँगा मिला। लोगों ने कहा, "बेचारा लड़का गया। उसे भेड़िया ले गया।" वही बात थी। लोग और आगे बढ़े तो लड़का भेड़िये की माँद में पड़ा हुआ था। भेड़िये ने उसका पेट खा लिया था। नन्हीं-सी मुट्ठी में वह अब भी टोकरी पकड़ हुए था।..." इतना कहते-कहते श्यांग लिन की पत्नी रोने लगती और फिर उसका गला रुँध जाता।

श्यांग लिन की पत्नी की कहानी में इतना दर्द था कि पुरुष सुनते तो हँसना छोड़ उदास हो जाते और स्त्रियाँ सुनतीं तो उस स्त्री के प्रति उनकी हिकारत की भावना घुल जाती और सहानुभूति में उनके भी आँसू बह जाते। जो बूढ़ी स्त्रियाँ गली में उससे यह बात नहीं सुन पाईं वे पूरी बात सुन पाने के लिए ढूंढ़ती उसके यहाँ आतीं। श्यांग लिन की पत्नी अपनी कहानी सुनाकर रो पड़ती तो बूढ़ियाँ भी रुलाई न रोक पातीं। फिर संतोष से आहें भरती आपस में चर्चा करती हुई अपने-अपने घर लौट जातीं।

श्यांग लिन की पत्नी किसी से कुछ नहीं चाहती थी बस यही कि जहाँ भी तीन-चार लोग मिलें वह अपनी दर्दभरी कहानी बार-बार सुना देना चाहती थी। कुछ ही दिनों में आसपास के सभी लोगों ने वह कहानी इतनी बार सुनी कि अब बहुत दयालु, ईश्वरभक्त स्त्रियाँ भी उसकी कहानी सुनतीं तो उनकी आँखों में आँसू न आते। अंत में यह कहानी लोगों को अक्षरशः याद हो गई और लोग वह कहानी सुनने से ऊबने और बचने लगे।

"मेरी तो अक्ल ही मारी गई थी, सचमुच..." श्यांग लिन की पत्नी शुरू करती।

"हाँ, हाँ, तुम तो यही जानती थी कि जब बर्फ पड़ी रहती हे तो जंगली जानवर खाइयों-खेतों में खाने को कुछ न हीं पाते और गाँव में घुस आते हैं।" यह कहकर लोग तुरंत उसे टोक देते और मुँह फेर कर चल देते।

श्यांग लिन की पत्नी मुँह खोले, सूनी-सूनी आँखें फाड़े उनको जाते देख खड़ी रह जाती, फिर चल देती, जैसे अपनी कहानी से स्वयं ही ऊब गई हो। फिर भी वह इसी कोशिश में रहती कि किसी भी प्रसंग में चाहे डलिया की बात

उठे अथवा बच्चों की चर्चा हो, वह उसे अपने आ माओ की कहानी पर ले आए। अगर किसी दो-तीन वर्ष के बच्चे पर नजर पड़ जाती तो बोल उठती, "हाय, मेरा आ माओ होता तो ठीक इतना ही बड़ा होता...।"

श्यांग लिन की पत्नी की आँखें और चेहरा ऐसा हो गया था कि बच्चे देखकर डर जाते और माँ का आँचल पकड़ उसे आगे खींच ले जाते। बेचारी अकेली रह जाती तो उदास होकर दूसरी तरफ चल देती। उसकी मानसिक अवस्था से सभी लोग परिचित हो गए थे। लोग स्वंय ही किसी बच्चे की ओर संकेत कर मुस्कान दबाकर कह देते, "श्यांग लिन की पत्नी, क्या कहती हो, तुम्हारा आ माओ होता तो क्या ठीक इतना बड़ा न हो गया होता ?"

श्यांग लिन की पत्नी शायद यह बात नहीं समझ सकी कि उसकी कहानी लोगों के बीच अब पुरानी पड़ चुकी है और उनके दिलों में इस कहानी के प्रति एक ऊब व तिरस्कार की भावना पैदा हो चुकी हैं वह यह बात जान गयी थी कि लोगों की मुस्कान में ठंडा विद्रूप छिपा है और कि उसे अपनी कहानी अब नहीं सुनानी चाहिए। चुपचाप उनकी तरफ देखती रह जाती।

लूचन में नववर्ष के उत्सव की तैयारियाँ 12वें महीने की 20वीं तारीख से ही शुरू हो जाती हैं। उस वर्ष चाचा के यहाँ अस्थाई नौकर रखना जरूरी हो गया। एक नौकर से भी काम नहीं चल सकता था, इसलिए एक नौकरानी भी रख लेनी पड़ी। नौकरानी का नाम आमा ल्यू था। पूजा के लिए मुर्गियाँ और कलहसं मारना जरूरी था, परन्तु आमा ल्यू शुद्ध शाकाहारी थी जो जीव हत्या नहीं कर सकती थी और पूजा के बर्तन-भाँडे ही माँज सकती थी। श्यांग लिन की पत्नी के लिए चूल्हा सुलगा देने के अतिरिक्त और कोई काम न था इसलिए एक कोने में बैठी चुपचाप आमा ल्यू को पूजा के बर्तन-भाँड़े माँजते देखती रहती। हल्की-हल्की बर्फ पड़ने लगी थी।

श्यांग लिन की पत्नी आकाश की ओर देखती हुई आह भर जैसे अपने आपसे ही बोल उठी, "मेरी तो अक्ल ही मारी गई थी।..."

"श्यांग लिन की पत्नी, तुम फिर शुरू हो गईं..." आमा ल्यू ने परेशान होकर उसे टोक दिया। बोली, "यह तो बता, तेरे माथे पर जो चोट का निशान है, वह तभी लगा था न ?"

"हूँ" श्यांग लिन की पत्नी ने अस्पष्ट-सी हामी भरी।

"यह बता, तू राजी कैसे हो गई ?"

"राजी?"

"और नहीं तो क्या ? राजी कैसे नहीं थी? नहीं थी तो..."

"अरे, तू क्या जाने उसमें कितना जोर था ?"

"मैं नहीं मानती। उसमें कितना भी जोर रहा हो, तू राजी नहीं होती तो क्या कर लेता ? तू खुद राजी थी, अब बहाना बना रही है कि उसमें बहुत जोर था।

"क्यों... तू ही आजमाकर देख लेती तो जान जाती।" श्यांग लिन की पत्नी मुस्करा दी।

आमा ल्यू के झुर्रीदार चेहरे पर भी मुस्कान खेलने लगी और वह अखरोट की तरह सिकुड़ गया। काले मनकों जैसी उसकी आँखें श्यांग लिन की पत्नी के माथे पर गईं और फिर उसकी आँखें में गड़कर टिकी रह गईं। श्यांग लिन की पत्नी को सहसा झेंप आ गई, उसकी मुस्कान मिट गई। वह आकश में गिरती बर्फ को देखने लगी।

"श्यांग लिन की पत्नी, यह भला काम नहीं हुआ।" आमा ल्यू रहस्यपूर्ण स्वर में बोली, "इससे तो अच्छा था, तू कुछ और अड़ी रहती या सिर फोड़ कर मर जाती। हालाँकि दूसरे मर्द के साथ तू दो वर्ष भी नहीं रही, लेकिन यह बहुत बड़ा पातक तो हो गया। जानती है तू मरकर जब नरक में जाएगी तो दोनों मर्दों के प्रेत तेरे लिए आपस में लड़ेंगे। तू किसकी मानेगी ? यमराज मुझे चीर कर दो टुकड़े कर देंगे, दोनों में आधी-आधी बाँट देंगे। ऐसा ही होगा...।"

श्यांग लिन की पत्नी ने सुना तो आतंक से स्तब्ध रह गई। पहाड़ी इलाके में किसी ने उससे ऐसी बात कभी नहीं की थी।

"मैं कहती हूँ तू अभी से इसका उपाय कर ले। संरक्षक-देवता के मंदिर में अपने नाम की एक देहरी खरीदकर रखवा ले जिस पर हजारों आदमी पाँव रखेंगे। यदि इसी जीवन में तेरा पातक धुल जाएगा तो उस लोक में दुख उठाने से बच जाएग।"

श्यांग लिन की पत्नी उस समय तो कुछ नहीं बोली पर आमा ल्यू की बात उसके मन में लग गई और सुबह उठी तो आँखों के नीचे बड़ी-बड़ी झाइयाँ पड़ गई थीं। सुबह का खाना खाकर गाँव के पश्चिम में संरक्षक-देवता के मंदिर में गई और पुजारी से एक देहरी माँगी। पुजारी ने पहले तो उसे दुत्कार दिया लेकिन बहुत रोई-धाई तब कहीं पुजारी मुश्किल से बारह हजार ताँबे के सक्कों के बदले देहरी देने के लिए तैयार हुआ।

श्यांग लिन की पत्नी अपनी कहानी के प्रति लोगों की उपेक्षा देख बहुत दिन पहले से ही किसी से बोलती नहीं थी। परन्तु आमा ल्यू से हुई उसकी बात की खबर गाँव में फैली तो लोगों को फिर खिलवाड़ करने की सामग्री मिल

गई और लोग उसे छेड़कर बुलवाने के लिए आने लगे। अब प्रसंग श्यांग लिन की पत्नी के माथे पर बना चोट का दाग बन गया।

"श्यांग लिन की पत्नी, सच बता, ऐसी बात के लिए तू राजी कैसे हो गई?" कोई पूछ बैठता।

"बड़े अफसोस की बात है; तूने व्यर्थ में अपना सिर क्यों फोड़ लिया था?" कोई और उसके चोट के निशान पर नजर डालते हुए पूछ बैठता।

श्यांग लिन की पत्नी लोगों के लहजे और मुस्कान से जान गई थी कि लोग उससे मसखरी करने के लिए आ रहे हैं इसलिए वह किसी को उत्तर न देती और चुपचाप बिना सिर उठाए सामने देखती रह जाती। माथे पर चोट के निशान को, जो लोगों की दृष्टि में कलंक का चिह्न बन गया था, ले सारा दिन चुप रहती और भाग-दौड़ करने, झाड़ू-बुहारी करने, साग-तरकारी काटने, चावल धो लाने में लगी रहती। लगभग एक वर्ष और बीत गया तो उसने चाची से अपना हिसाब करा, पूरी रकम को चाँदी के बारह डालरों में बदलवा कर मालकिन से कस्बे के पश्चिम में जाकर रहने की इजाजत माँगी। लेकिन तुरंत ही लौट भी आई और लौटी तो बहुत संतुष्ट लग रही थी। आकर प्रसन्नता से चाची को बताया कि वह देहरी के लिए दक्षिणा दे आई हैं

शीतकाल में पूर्वजों की बलि का समय आ गया तो श्यांग लिन की पत्नी अब खूब उत्साह और लगन से काम में जुट गई उसने चाची को पूजा के बर्तन लाते और आ न्यू के साथ मेज उठाकर लाते देखा तो स्वयं मदिरा की प्यालियाँ और चापस्टिकें उठा लाने के लिए जाने लगी।

"रहने दे, रहने दे, श्यांग लिन की पत्नी।" चाची ने तुरंत पुकारकर टोक दिया।

श्यांग लिन की पत्नी ने अपने हाथ पीछे खींच लिए, जैसे तपता हुआ लाल लोहा हाथों को छू गया हो। चेहरा एकदम फक्क पड़ गया और धूप-दीप का सामान उठा लाने की बजाय सन्न खड़ी रह गई। जब चाचा धूप-दीप करने के लिए अंदर आए तो उन्होंने उसे वहाँ से चली जाने के लिए कहा। श्यांग लिन की पत्नी एक ही दिन में कितनी बदल गई थी। उसकी आँखें धँस गईं, लगता कि शरीर की सब शक्ति खो बैठी है। वह बेबात ही घबरा जाती और न सिर्फ अँधेरे से या किसी की छाया से डरने लगी बल्कि आदमी की सूरत देखते ही भयभीत हो जाती। मालिक या मालिकन का सामना होते ही वह ऐसे सिमट जाती जैसे चुहिया बिल से निकल आए और उजाला देखकर डर जाए। दिन भर कोने में काठ के कुन्दे की तरह चुप बैठी रहती। छह महीने में सिर के बाल

सफेद हो गए और उसकी स्मृति इतनी कमजोर हो गई कि भात धोने के लिए जाना भी भूल जाती।

"श्यांग लिन की पत्नी को न जाने क्या हो गया है ? इस बार तो उसे रखकर ही पछताए।" चाची उसके सामने ही कह देतीं कि सुनकर शायद कुछ संभल जाएं

श्यांग लिन की पत्नी की अवस्था सुधरी नहीं, सुधरने की कोई आशा भी नहीं दिखाई देती थी। चाचा-चाची ने उसे वेइ की बुढ़िया के यहाँ भेजे देने का फैसला किया। मैं लूचेन में था तो अभी यह बात चल ही रही थी, परंतु बाद की घटनाओं से जान पड़ता है कि उसे निकाल ही दिया होगा। यह कह सकना कठिन है कि श्यांग लिन की पत्नी को जब चाचा ने काम से हटा दिया, तभी वह भीख माँगने लगी या पहले वेइ की बुढ़िया के यहाँ गई और बाद में भीख माँगने लगी।

समीप ही छूटे पटाखों की आवाज से सहसा मेरी नींद टूट गई। लैंप के मद्धिम प्रकाश और पटाखों की गूँज से समझा कि चाचा के यहाँ पूजा की बलि दी जा रही थी और कि पौ फटने ही वाली थी। अधनींदे में मैंने सुदूर में अनवरत पटाखों की आवाज सुनी। सारा शहर आकाश में शोर के घने बादलों से घिर गया था जिसमें गिर रही बर्फ की पंखुड़ियाँ भी मिल गईं थीं। शोर के इस घटाटोप में मन कुछ हल्का जान पड़ रहा था। पिछले दिन से मेरे मस्तिष्क पर चिंता और आशंका का जो बोझ बना हुआ था, उत्सव की धूमधाम उसे न जाने कहाँ उड़ा ले गई। विश्वास हो गया कि आकाश और पृथ्वी के देवताओं ने पूजा की बलि और धूप-दीप को स्वीकार कर लिया है और वे आकाश में मुग्ध होकर लूचन निवासियों को चिर सुख-सौभाग्य का आशीर्वाद देने के लिए तत्पर हो रहे हैं।

□□□

अतीत के लिए पछतावा

(च्वान शंग की टिप्पणियों से)

मैं चाहता हूँ, जैसे भी बन पड़े, त्ज़ च्विन के लिए और अपने लिए अपने अवसाद और दुःख-दर्द की कहानी लिख डालूँ।

छात्रावास के उपेक्षित कोने में यह गंदी कोठरी कितनी सूनी और वीरान है। समय जैसे उड़ता जाता है। ठीक एक वर्ष पहले मेरा त्ज च्विन से प्रेम हुआ जो इस वीराने और सूनेपन में मेरा एकमात्र अवलंब बना। लौटककर आया तो दुर्भाग्य से फिर वही कमरा खाली मिला। वही टूटी खिड़की, खिड़की के बाहर लोकस्ट का सूखा-सा पेड़ और उसके बाहर वहीं विस्तारिया की बेल, कमरे में वही चौकोर मेज। सीलन से गिरे पलस्तर वाली दीवारों और उसके साथ लगे लकड़ी के तख़्त में भी कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। त्ज़ च्विन से पहले जिस तरह रहता था आज भी रात में अकेला घड़ियाँ गिनता हूँ। पिछला साल स्मृति से इस तरह पूँछ गया है मानो था ही नहीं। लगता है मैं इस गंदे कमरे को छोड़कर कहीं गया ही न होऊँ, जैसे मैंने प्रेम की गली में ऊँची आशाएँ लेकर अपना छोटा-सा नीड़ बसाया ही न हो।

इतना ही नहीं। एक वर्ष पूर्व की और अब की इस खामोशी और खालीपन में एक अंतर है। तब यह आशा और प्रतीक्षा का सहारा था, त्ज़ चिन्न के आने की प्रतीक्षा। ईंट के फर्श पर ऊँची एड़ी की टक-टक सुनकर मेरे रक्त में बिजली-सी दौड़ जाती थी। त्ज़ च्विन का प्यारा पीतवर्ण गोल चेहरा सामने आ जाता। उसके कपोलों पर मुस्कान के चुमचे पड़े रहते, गोरी-गोरी दुबली बाहें, धारीदार सूती कपड़े का ब्लाउज़ और काली छोटी-स्कर्ट। त्ज़ च्विन लोकस्ट के सूखे से पेड़ से कोई नया पत्ता या विस्तारिया की बेल से जामुनी फूलों का गुच्दा लाकर मुझे दिखाती।

परंतु अब तो वही पुराना सन्नाटा और वीरानी है। त्ज़ च्विन अब लौटककर नहीं आएगी--कभी नहीं आएगी।

जब त्ज च्विन न रहती तो उस गंदी कोठरी में मेरे लिए अँधेरा हो जाता। ऊब से बचने के लिए मैं कोई पुस्तक उठा लेता--साहित्य की ही या विज्ञान की और उसे पढ़ता रहता जब तक यह अहसास नहीं होता कि दर्जनों पृष्ठ उलट जाने पर भी एक शब्द तक अंदर नहीं गया। मेरी सारी सुध कानों में ही समाई रहती और सड़क पर आते-जाते लोगों के कदमों की आहट कानों में गूँजती रहती, मैं त्ज़ च्विन के कदमों की आहट पहचान लेने की प्रतीक्षा में रहता। प्रायः मैं त्ज च्विन के कदमों की आहट पहचान लेने की प्रतीक्षा में रहता। प्रायः मैं त्ज च्विन कदमों की आहट पहचान लेता। जान पड़ता, उसके कदमों की आहट समीप आ रही है और वह पहले तो अधिक स्पष्ट सुनाई देती, फिर क्षीण होते-होते अनेक कदमों की आहटों में विलीन हो जाती। होस्टल के नौकर के लड़के के कदमों की आहट से मुझे बहुत परेशानी होती थी क्योंकि वह कपड़े के तल्ले वाला जूता पहनता था और उसके कदमों की आहट त्ज़ च्विन से बिलकुल भिन्न थी। साथ ही कोठरी में, चेहरे पर क्रीम-पाउडर पोते रहने वाले छोकरे से भी मुझे बहुत घृणा थी क्योंकि वह त्ज़ च्विन जैसे ही चमड़े के जूते पहनता था और उसके कदमों की आहट से जिजुन के कदमों का धोखा हो जाता।

कहीं उसके रिक्शा को तो कुछ नहीं हो गया ? या रास्ते में किसी मोटर-लारी से टकरा तो नहीं गई ?....

अधीर होकर उसे ढूँढ़ने के लिए मैं टोप पहनकर चल देने को तैयार हो जाता। परंतु उसके चाचा के श्राप का ख्याल आ जाता तो ठिठक जाता।

सहसा त्ज़ च्विन के कदमों की आहट समीप आती सुनाई पड़ जाती और उसके स्वागत के लिए कोठरी से बाहर निकल ही रहा होता कि त्ज़ च्विन मुस्कराती हुई विस्तारिया की झाड़ी के नीचे पहुँच जाती। चाचा के घर में शायद उससे बदसलूकी नहीं की गई। मेरा उद्वेग शांत हो जाता और कई पल हम दोनों मौन एक दूसरे को अपलक देखते रहते। फिर वह गंदी कोठरी मेरी उद्घोषणाओं से गूँजने लगती, पारिवारिक बंधनों के अत्याचार, रूढ़ियों और परंपराओं को तोड़ डालने की आवश्यकता नर-नारी की समानता, इब्सन, टैगोर और शैली...। त्ज़ च्विन गर्दन झुकाकर हामी भरती जाती और उसके चेहरे पर मुस्कान आ जाती, नेत्रों में शैशव का विस्मय चमकने लगता। कोठरी की दीवार पर मैंने एक पत्रिका से काट कर शैली का चित्र लटका दिया था। चित्र बहुत ही अच्छा था लेकिन जब मैंने चित्र की ओर उसका ध्यान दिलाया तो उड़ती-सी

नजर चित्र पर डाल कर उसने शर्म से गर्दन झुका ली। कुछ पुराने संस्कार अभी तक त्ज़ च्विन के मन में जमे हुए थे। खयाल आया, उस चित्र के बजाय शैली का दूसरा चित्र—जल में डूबे शैली की मृत्यु का चित्र या इब्सन का चित्र वहाँ लटका दूँ। परन्तु चित्र को बदल नहीं पाया। अब तो वह चित्र भी नहीं रह गया।

"मैं खुद अपनी स्वामिन हूँ। उन्हें मेरे मामले में बोलने का कोई अधिकार नहीं है।"

त्ज़ च्विन ने कुछ देर तक विचारमग्न, मौन रहकर स्पष्टता और दृढ़ता से कहा। फिर हम लोग उसके चाचा और पिता के विषय में बातें करने लगे। पिता दूर गाँव में थे और चाचा यहीं शहर में। हम दोनों एक-दूसरे को छह महीने से जानते थे। त्ज़ च्विन से मैंने कोई बात छिपाकर नहीं रखी थी और वह मेरे बारे में सब कुछ जानती थी। उसके इन शब्दों ने मुझे ऊपर से नीचे तक झकझोर दिया, वे शब्द कई दिनों तक मेरे कानों में गूँजते रहे। यह सोचकर मेरे उल्लास की सीमा नहीं थी कि चीन की नारी अब उतनी असहाय और अबला नहीं रही जैसा निराशावादियों ने उसे मान रखा था। विश्वास हो गया कि चीन की नारी निकट भविष्य में समाज की अपनी शक्ति का पूरा चमत्कार दिखा देगी।

त्ज़ च्विन को विदा करने जाता तो सदा ही उससे कुछ कदम पीछे चलता था। जब भी हम लोग बाहर जाते, पड़ोस की खिड़की में एक बूढ़े का चेहरा काँच के पीछे इस कदर चिपका दिखाई दे जाता कि बूढ़े की नाक काँच पर दबकर चपटी हो जाती और दोनों ओर दबी मूछें फैल कर चिपक जातीं जैसे कोई मछली काँच पर चिपका दी गई हों। दूसरे आँगन में पहुँचते तो खिड़की के पीछे उस छोकरे का क्रीम-पाउडर से पुता चेहरा दिखाई दे जाता। त्ज़ च्विन को इनकी रत्तीभर परवाह नहीं थी, वह निर्भय होकर गर्दन उठाए चली जाती। मैं भी गर्व के साथ लौट आता।

"मैं खुद अपनी स्वामिन हूँ। उन्हें मेरे मामले में बोलने का कोई अधिकार नहीं है।" त्ज़ च्विन का निश्चय स्पष्ट और दृढ़ था। उसे न चेहरे पर क्रीम-पाउडर पोते छोकरे का और न काँच पर चिपकी नाक का कोई भय था।

मैंने किन शब्दों में उसके प्रति अपनी हृदय का सच्चा भावुक प्रेम अभिव्यक्त किया, याद नहीं। अब तो क्या घटना के कुछ समय बाद ही यह बता सकना कठिन था कि मैंने किन शब्दों में अपने भावों को उसके सामने प्रकट

किया था। उसी रात जब मैं दिन की घटना याद कर रहा था तो मुझे कुछ टुकड़े ही याद आए। दोनों को साथ रहते महीना भर या दो ही मास बीते होंगे कि हमारी वे बातें पुराने मधुर स्वप्न की भाँति बिलकुल विस्मृत हो गईं। हाँ, यह मुझे अब भी याद है कि त्ज़ च्विन से स्वीकृति पाने के लगभग दो सप्ताह पूर्व मैं निरंतर यही सोचता रहा था कि क्या करना होगा, क्या कहना होगा, और यदि मेरा प्रणय-निवेदन अस्वीकार कर दिया गया तो कैसा व्यवहार उचित होगा। परंतु समय आने पर वह सब विचार व्यर्थ ही रहा। उस समय उत्तेजना में, बिना सोचे वही कर बैठा जो प्रायः सिनेमा के पर्दे पर दिखाई देता है। बाद में अपने उस व्यवहार की याद से झेंप भी लगती, परंतु उसकी स्मृति अब भी स्पष्ट है। आज भी वह स्मृति मेरे अंधकारमय जीवन की कोठरी में एकमात्र प्रकाश है—त्ज़ च्विन का हाथ मेरे हाथ में था, मेरी आँखों में आँसू... मैंने एक घुटना टेक दिया था।....

त्ज़ च्विन ने क्या कहा या किया था उस समय मैं नहीं देख पाया। बस इतना याद है कि उसने मेरा प्रणय-निवेदन स्वीकार कर लिया था। त्ज़ च्विन का चेहरा पहले तो पीला पड़ गया, फिर शनै-शनै उस पर गुलाबी झलक आने लगी और थोड़ी देर में उसका चेहरा लाली से दमक उठा—ऐसी आभा जो मैंने उससे पहले या बाद में कभी नहीं देखी। उसके शिशु के समान सरल नेत्रों में अवसाद, उल्लास और भय एक साथ प्रकट हुए और हालाँकि वह मुझसे आँखें चुराए थी लेकिन जान पड़ता था, मधुर बेचैनी की गूढ़ता में वह खिड़की से उड़ जाना चाहती है। तब अनुभव किया कि उसने मेरा निवेदन स्वीकार कर लिया है, नहीं जानता किन शब्दों में, कुछ बोली भी थी या नहीं

परंतु त्यत्र च्विन को उस दिन की बात एक का एक-एक शब्द जबानी याद था। वह मेरे मुँह से निकला एक-एक शब्द मुझे सुना देती। मेरी प्रत्येक भावभंगिमा का ब्यौरेवार बखान करती मानो उसने वह सब सिनेमा के पर्दे पर देखा हो। उसमें वह फड़काऊ दृश्य भी था जो किसी भी चलचित्र में होता है और जिसे मैं भूल जाना चाहता था। रात्रि के एकान्त में हम वे बातें याद करने लगते। त्ज़ च्विन कुछ पूछ बैठती—बताओ तब तुमने क्या-क्या कहा था ? वह छूटी हुई बातों की याद दिलाती जाती मानो मैं एक अयोग्य विद्यार्थी था जो कितनी ही बातें भूल जाता था या गलत कह जाता।

शनै-शनै उन स्मृतियों की चर्चा कम होने लगी। परन्तु जब भी त्ज़

च्विन अपनी कल्पना में डूबी, शून्य में दृष्टि लगाए रहती, उसक गालों पर दबी मुस्कान से चुमचे-से बन जाते। मैं समझ लेता, वह मन-ही-मन वही पुराना पाठ दुहरा रही है। मुझे झेंप अनुभव होने लगती कि वह स्मृति के चित्रपट पर मेरे उसी हास्यास्पद व्यवहार को देख रही है। निश्चय ही वही देख रही है, बार-बार उसे ही देखना चाहती है।

लेकिन उसे उसमें कुछ लज्जास्पद नहीं लगता था। मुझे वह व्यवहार हास्यास्पद यहाँ तक कि लज्जास्पद जान पड़ता था, परन्तु उसके लिए मजाक है। मैं निश्चित जानता था कि इसका कारण त्ज़ च्विन का मेरे प्रति सच्चा और आवेगपूर्ण अनुराग था।

पिछले वर्ष बसंत के आखिरी दिन हमारे सबसे सुखद और व्यस्त दिन थे। मेरा मन भी तब उतना उद्विग्न नहीं था, अलबत्ता कभी-कभी कुछ आशंकाएँ सिर उठाने लगतीं। उन्हें दिनों दोनों सड़क पर साथ-साथ घूमने भी लगे। कई बार घूमने के लिए पार्क की ओर चले जाते, परन्तु जयादार घूमना मकान की खोज में ही होता था। सड़क पर कौतूहलपूर्ण निगाहों, व्यंग्यभरी मुस्कानों और अशिष्ट कटाक्षों के प्रति मैं सचेत रहता। मैं बेहद सावधान रहता और कदम-कदम पर आत्माभिमान और साहस को जगाता रहता। वह उस सबसे बेखबर नितांत निर्भय थी। वह सर्वथा निर्द्वन्द्व व शांत होकर चलती रहती, जैसे सड़क पर और किसी का अस्तित्व ही न हो।

मकान मिल जाना साधारण बात नहीं थी। लोग प्रायः किसी-न-किसी बहाने टाल देते। कई मकान हमें ही पसंद नहीं आए। शुरू में मकान को लेकर हमारी अपनी कल्पना थी, लेकिन दरअसल अधिकांश मकान रहने लायक थे ही नहीं। आखिरकार थककर तैयार हो गया कि जैसी-तैसी जो भी जगह मिल जाए ले लेंगे। बीस-बाईस मकान देख लेने के बाद गुजारे लायक जगह मिल सकी। लकी गली में एक छोटे से मकान में दो कमरे मिल गए जिसका दरबाजा उतर की ओर था। मकान मालिक छोटा-मोटा सरकारी कर्मचारी था। आदमी समझदार था। बीच के और दूसरी ओर के कमरे में उसका परिवार रहता था। परिवार में उसकी पत्नी, चंद महीने ही एक बच्ची और एक देहातिन नौकरानी थी। यदि बच्ची न रोए तो शांति ही शांति व्याप्त रहती थी।

मैंने जो पैसे बटोरे थे वे मामूली फर्नीचर जुटान में ही निकल गए इसलिए त्ज़ च्विन ने अपनी सोने की अंगूठी और कान के बूंदे बेच दिए। मैंने

उसे बहुत रोका लेकिन वह जिद करने लगी तो मुझे मान लेना पड़ा। मैं समझता था कि नए घर में अपना हिस्सा डाले बिना उसे संतोष न होता।

अपने चाचा से त्ज़ चिन्न ने झगड़ा कर उसे इतना नाराज कर दिया कि उसने उससे सारे संबंध तोड़ लिए। मेरे भी कई मित्र इस बात से नाराज हो गए थे कि मैंने उनकी सलाह नहीं मानी। उनका ख्याल था कि मैं पछताऊँगा, या उनके मन में ईर्ष्या थी। इससे हमारे घर में और अधिक शांति व्याप गयी दफ्तर से काफी देर में सूर्यास्त के बाद ही छुट्टी मिलती थी और रिक्शावाला भी धीरे-धीरे चलता था, फिर भी मिलन की घड़ी आ ही जाती थी। दोनों कई पल तक मौन आँखें मिलाए एक-दूसरे को निहारते रहते, कुछ देर आत्मीयता से बातचीत होती और फिर मौन बैठे रहते। हम चुपचाप गर्दन झुकाए बैठे रहते ओर मन में कोई बात नहीं होती। धीरे-धीरे वह मेरे लिए एक खुली किताब की तरह थी जिसे मैं पूरी तरह जान गया था। तीन ही सप्ताह के दौरान हमारे बीच शेष आदृश्य अंतर और व्यवधान भी मिट गए। पहले इन अंतरों व व्यवधानों का कोई आभास नहीं था, पनरंतु अनुभव से जान गया कि ये अंतर व व्यवधान मामूली नहीं हैं।

कुछ ही दिनों में त्ज़ च्विन ओर भी अधिक प्रफुल्लित दिखलाई देने लगी। उसे फूलों का शौक नहीं था क्योंकि मैं बाजार से फूलों के जो दो गमले ले आया था वे चार दिन तक एक कोने में पड़े-पड़े ही सूख गए। सारे कामों की तरफ ध्यान दे सकता, इतना समय मुझे भी नहीं था। अलबत्ता उसे पशु-पक्षी पालने का बड़ा शौक था जो हो सकता है, उसने मकान मालकिन से लिया हो। अभी एक महीना भी नहीं बीता था कि वह चार चूजे ले आई जो मालकिन के एक दर्जन चूजों में मिलकर आँगन में दाना चुगते रहते। लेकिन दोनों को अपने-अपने चूजे पहचान लेने में कोई दुविधा नहीं होती थी। फिर एक छोटा-सा चितकबरा पिल्ला भी ले आई। पिल्ले का कोई नाम तो पहले भी रहा होगा लेकिन त्ज़ चिवन ने उसका नया नाम रख दिया—आ स्वेइ। मुझे नाम विशेष जँचा नहीं, पर मैं भी उसे इसी नाम से पुकारने लगा। यह आवश्यक है कि प्रेम का नवीकरण, विकास और प्रतिफलन होता रहे। यह बात मैंने त्ज़ च्विन से कही तो उसने सोचकर सहमति में गर्दन हिला ली।

ओह! हमारी वे संध्याएँ कितनी सुखद व शांतिपूर्ण थीं।

सुख-शांति को चिरस्थाई बना सकने के लिए उनका संवर्द्धन और

पोषण होता रहना चाहिए। जिन दिनों हम लोग होस्टल में थे तो कभी-कभी आपस में मतभेद या गलतफहमी हो जाती थी। लेकिन लकी गली में आने पर वे भी खत्म हो गये। हम दोनों लैम्प के प्रकाश में पास-पास बैठे रहते, पुरानी बातों की चर्चा कर लेते ओर आपस में छोटे-मोटे झगड़ों के समाप्त हो जाने के बाद अटूट ऐक्य के सुख का रस लेते रहते।

त्ज़ च्विन का जिस्म भरने लगा और गालों पर सुर्खी आ गई। परंतु दुख की बात यह थी कि वह सदा ही गृहस्थी के काम में उलझी रहती। उसे कुछ देर बैठ कर बातचीत के लिए, बैठकर कुछ पढ़ने या सैर-सपाटे के लिए बाहर जा सकने तक की फुरसत नहीं थी। सोचने लगे, नौकरानी रख ली जाए तभी ठीक होगा।

एक और बात से मेरा मन खिन्न हो जाता जब मैं संध्या समय दफ्तर से घर लौटकर देखता त्ज़ च्विन अपनी थकावट और उदासी छिपाने का यत्न कर रही है। मेरा दिल रखने के लिए वह मुस्कराने का यत्न करने लगती तो मेरे लिए और भी असह्य हो जाता। गनीमत थी कि मैं उसकी उदासी का कारण जान गया। मकान मालकिन से उसकी कुछ कहा-सुनी हो जाया करती थी और झगड़े का कारण थे चूजे। परंतु मुझसे यह बात छिपाने की क्या आवश्यकता थी ? सोचा, अपना अलग मकान हो तभी चैन मिल सकता है। ऐसे स्थान में गुजारा संभव नहीं।

मेरी दिनचर्या निश्चित थी। सप्ताह में छह दिन नियमित रूप से दफ्तर जाता और संध्या समय लौटता। दफ्तर में अपनी मेज पर बैठकर अंतहीन सरकारी कामकाज और पत्रों की प्रतिलिपियाँ बनाता रहता। घर लौटकर गृहस्थी के काम में भी कुछ सहायता देता। चूल्हा सुलगाने, भात राँधने या रोटी सेंक लेने में हाथ बटाता। उस तरह रसोई बनाने का काम मैं सीख गया था।

यहाँ मुझे होस्टल से अच्छा खाना मिल रहा था। त्ज़ च्विन में रसोई बनाने की विशेष योग्यता नहीं थी, पर अपनी ओर से वह अच्छा खाना बनाने में कुछ भी उठा न रखती थी। उसको लेकर उसकी अतिरिक्त चिंता से मैं भी परेशान हो जाता। गृहस्थी के काम में वह इस तरह जुटी रहती कि पसीने से माथे पर बिखर आए केश चिपके रहते। दिन भर काम में लगे रहने से हाथ सख्त होने लगे थे।

इसके अतिरिक्त उसे चूजों और पिल्ले को चुगाने-खिलाने की भी

चिंता लगी रहती थी। .... इस विषय में उसे किसी दूसरे का भरोसा नहीं था।

एक दिन मैंने कह ही दिया—गृहस्थी और रसोई के बोझ में तुम अपने आपको पीसे डाल रही हो। इससे तो बिना खाए रह जाना बेहतर है। वह मेरी ओर मौन देखती रह गई। उसके नेत्रों में कातरता का भाव था। मुझे हार मान लेनी पड़ी। त्ज़ च्विन गृहस्थी के बोझ में उसी प्रकार पिसती रही।

आखिर एक दिन बिजली गिर ही पड़ी। बहुत समय से उसकी आशंका थी। दसवें मास की दसवीं तिथि के उत्सव से पूर्व की संध्या में त्ज़ च्विन साँझ के व्यालू के बाद बर्तन धो रही थी और मैं निठल्ला बैठा था कि किवाड़ों की सांकल खटकी। बाहर जाकर देखा, हमारे दफ्तर का चपरासी मेरे लिए एक टाइप किया हुआ कागज लेकर आया है। मैं जानता था कि उसमें क्या होगा। रोशनी के समीप जाकर पढ़ा—"कमिश्नर साहब के आदेशानुसार शी च्यान शंग को नौकरी से बर्खास्त किया जाता है।

सचिवालय,

9 अक्टूबर

जब हम लोग अभी होस्टल में ही थे तभी से इस बात की आशंका हो गई थी। क्रीम-पाउडर पोतने वाला लड़का कमिश्नर के साहबजादे की ताश की महफिल का यार था इसलिए निश्चित था कि वह अफवाहें उड़ाएगा और कुछ-न-कुछ मुसीबत खड़ी कर देगा। ताज्जुब यही था कि इतने दिनों तक टली रही। मैं तो पहले से ही तैयार था और उपाय भी सोच लिया था कि कहीं और क्लर्क की नौकरी कर लूँगा या कहीं ट्यूशन कर लूँगा या मुश्किल होने पर भी अनुवाद का काम ही कर लूँगा। 'स्वतंत्रता प्रेमी' के संपादक से परिचय था और दो मास पूर्व उससे पत्र-व्यवहार भी हुआ था। फिर भी घबराहट तो हुई। सबसे दुख तो मुझे इस बात से हुआ कि त्ज़ च्विन जो बहुत साहसी थी, इसे सुन पीली पड़ गई। वह कुछ दिनों से दुर्बल कमजोर दिल भी होती जा रही थी।

"क्या चिंता है," उसने कहा, "कोई दूसरा काम ढूँढ़ लेंगे। हम..."

त्ज़ च्विन की बात आधी ही रह गई और मुझे उसमें विश्वास का अभाव लगा। जान पड़ा, कोठरी में प्रकाश बहुत कम हो गया है। आदमी भी क्या अजीब प्राणी है, जरा-जरा-सी बात से कातर हो जाता है। कुछ देर हम दोनों एक-दूसरे को देखते मौन बैठे रहे, फिर आगे की योजनाओं पर बात करने लगे। निश्चय कर लिया कि जेब के पैसों को बहुत संभाल कर खर्च करेंगे, अखबार

में क्लर्क या अध्यापक की नौकरी के लिए विज्ञापन दे देंगे, 'स्वतंत्रता प्रेमी' के संपादक को भी एक पत्र लिखेंगे, जिससे उसे अपनी कठिनाई बताकर सहायता के लिए अनुवाद स्वीकार करने के लिए अनुरोध करेंगे।

"काल करे सो आज कर। यह अभी ही क्यों न आरंभ कर दिया जाए।"

मैं सीधे मेज पर गया और वहाँ रखीं अचार, सिरके और तेल की बोतलें सरकाकर एक ओर कर दीं। त्ज़ च्विन ने टिमटिमाता लैम्प लाकर मेरे सामने रख दिया। पहले अखबार में देने के लिए एक विज्ञापन लिख डाला। फिर सोचने लगा, अनुवाद के लिए कौन-सी पुस्तक अच्छी रहेगी। जब से मकान बदला था, पुस्तकों की ओर ध्यान ही नहीं गया था इसलिए उन पर खूब गर्द चढ़ी हुई थी। अंत में पत्र लिखा।

बहुत देर सोचना पड़ा, पत्र को किस प्रकार आरंभ करूँ। कुछ पंक्तियाँ लिखकर हाथ रुका और नजर त्ज़ च्विन की ओर गई तो लैम्प के मद्धिम प्रकाश में उसका चेहरा बहुत कातर जान पड़ा। कभी कल्पना भी नहीं की थी कि इतनी निर्भय और साहसी लड़की इस मामूली-सी घटना से इतना डर जाएगी। सचमुच ही वह इधर दुर्बल होती जा रही थी—एक ही क्षण में इतना परितर्वन नहीं आ सकता था। मन में बहुत व्याकुलता अनुभव हुई और कल्पना अपने निश्चिंततापूर्ण अतीत की ओर दौड़ गई। आँखों के सामने पुराने होस्टल की गंदी कोठरी आ गई। उस कोठरी को ठीक से देख भी नहीं पाया था कि ध्यान लैम्प के हल्के प्रकाश में सामने अधलिखे पत्र की ओर चला गया।

पत्र लिखने में काफी समय लग गया। वह लंबा भी काफी हो गया। पत्र लिखने में हुई थकावट से लगा कि पिछले दिनों मैं भी काफी कमजोर हो गया था। पत्र और विज्ञापन को सुबह डाक में छोड़ने के लिए एक ओर रख दिया। हम दोनों की आँखें मिलीं तो सहसा बल और साहस का अनुभव हुआ और मन में आशा और धैर्य लिए हम दोनों नए भविष्य के लिए तैयार हो गए।

वास्तव में इस आघात ने हमारे अंदर एक नई उमंग भर दी। दफ्तर की नौकरी जंगल से पकड़कर पिंजरे में बंद कर दिए गए पक्षी की भाँति थी जिसे मरने न देने के लिए कुछ दाना-दुनका डाल दिया जाता है, उसे पुष्ट रखने की चिंता नहीं की जाती। पिंजरे की निरंतर कैद में रहते-रहते वह पंखों का उपयोग भी भूल जाए और छोड़ दिए जाने पर भी वह उड़ नहीं पाए। अब मुझे पिंजरे

के बाहर आने का अवसर मिला था। सोचा, इससे पहले कि मेरे पंख बेकार हो जाएँ, मैं एक बार फिर मुक्त आकाश में अपने पंखों की शक्ति से उड़ूँगा।

अखबार में दिए गए विज्ञापन से तुरंत ही नौकरी पा जाने की आशा नहीं थी। अनुवाद कर सकना भी इतना आसान नहीं था। आप एक चीज पढ़ते हैं तो विश्वास होता है कि उसे समझ लिया, परंतु वही बात दूसरी भाषा में कहते समय कठिनाई अनुभव होने लगती है और रफ्तार काफी धीमी हो जाती है। परंतु निश्चय कर लिया कि इस कार्य को यथासामर्थ्य निबाहूँगा। दो सप्ताह में ही मेरी उँगलियों के स्पर्श से शब्दकोश के पन्नों के किनारे काले पड़ गए, समझ लीजिए कितनी तत्परता से काम में लगा हुआ था। 'स्वतंत्रता प्रेमी' के संपादक ने आश्वासन दिया था कि उनकी पत्रिका अच्छी पांडुलिपि को साभार स्वीकार करेगी।

मुसीबत यह थी कि निर्विघ्न काम कर सकने के लिए मकान में कोई स्थान नहीं था और त्ज़ च्विन अब पहले जैसी शांत और सहनशील नहीं रही थी। कमरे में सब ओर बर्तन-भाँडे फैले रहते, धुआँ भरा रहता कि वहाँ जम कर काम कर सकना संभव नहीं था। पर दोष किसे देता ? मैं किराया नहीं दे सकता था तो अच्छी जगह कहाँ मिल पाती ? तिस पर घर में मौजूद पिल्ला और बड़ी मुर्गियाँ बन गए चूजे, जिनकी वजह से दोनों परिवारों में नित्य ही विवाद खड़ा हो जाता।

खाने-पकाने के चक्कर का भी अंत नहीं था। त्ज़ च्विन को उससे कभी फुर्सत न होती। मनुष्य खाने के लिए कमाता है और कमा सकने के लिए खाता है। परंतु पिल्ले और मुर्गियों के पेट भरने का भी तो सवाल था। त्ज़ च्विन को पढ़ने-लिखने से कोई सरोकार नहीं रह गया था और जान पड़ता था कि पिछला पढ़ा-लिखा सब भुला चुकी है। जब-तब खाने के लिए पुकार बैठती और उसे इतना भी ख्याल न आता कि मेरी एकाग्रता में खलल पड़ जाएगा। मैं कभी-कभी बैठते हुए अपनी खीज जाहिर करता लेकिन वह बिना ध्यान दिए चपड़-चपड़ खुद खाए चली जाती।

यह बात समझने में उसे सवा मास लग गया कि काम के समय खाने का आग्रह करके मेरे काम में विघ्न डालना उचित नहीं हैं यह जानकर शायद उसे कुछ बुरा भी लगा, पर चुप रह गई। इसके बाद काम की गति बढ़ गई और शीघ्र ही पचास हजार शब्दों के अनुवाद की पांडुलिपि पूरी कर डाली। अनुवाद

को माँजना बाकी था और दो और छोटे-छोटे निबंधों के साथ 'स्वतंत्रता प्रेमी' को भेज देने का विचार था। फिर भी खाने की समस्या तो थी ही। ठंडेबासी की तो उतनी परवाह नहीं थी, कम से कम पेट भर सकने योग्य तो होना ही चाहिए था। वैसे तो पूरे दिन बैठे-बैठे दिमागी काम में लगे रहने से भूख भी कम हो जाती थी, फिर भी जो भात मिलता, उससे पेट नहीं भर पाता था। भात में से पिल्ले का भाग भी निकालना आवश्यक था। माँस तो कभी ही मयस्सर होता था, परंतु होने पर पिल्ले के लिए दे दिया जाता। "देखो तो बेचारा कितना कमजोर है", त्ज़ च्विन करुणा से द्रवित स्वर में कहती—"मकान मालकिन देख लेती तो हँसे बिना न रहती।" अपने ऊपर किसी का हँस देना त्ज़ च्विन नहीं सह सकती थी।

मैं जो कुछ जूठन छोड़ देता था, वह सिर्फ मुर्गियों के ही काम आती थी। मुझे हक्सले के कथन की याद आई कि 'संसार में मेरा स्थान' पिल्ले और मुर्गियों के बीच में कहीं हैं।

मेरे बहुत आग्रह और तर्क का फल यह हुआ कि मुर्गियों का उपयोग रसोई में होने लगा और दस-बारह दिन हम दोनों और हमारा पिल्ला भी उनका स्वाद पाते रहे। मुर्गियों में अधिक माँस क्या निकलता, कई दिनों से बेचारियों का बाजरे का दाना भी नाममात्र को ही डाला जा सकता था। उसके बाद मकान में शांति को काफी हो गई, परन्तु मुर्गियों के वियोग में त्ज़ च्विन बहुत उदास रहने लगी। उसे अब किसी भी बात में रुचि और उत्साह नहीं रहा। मनुष्य कितनी आसानी से बदल जाता है।

पिल्ले को पालना भी कठिन हो गया था। नौकरी मिल जाने की सभी आशाएँ मिटती जा रही थीं। पिल्ले के लिए ग्रास भर भात या रोटी बचा लेना कठिन हो रहा था। त्ज़ च्विन बेचारी क्या दिखाकर पिल्ले को हाथ उठाकर माँगने या दो टाँगों पर खड़े हो जाने को कहती ? जाड़ा सिर पर आ गया था और आग की अंगीठी तक का प्रबंध नहीं था। पिल्ले को बड़ी भूख लगती थी जिससे हम पहले से ही परेशान थे। उसे पाल सकना हमारे लिए संभव नहीं था।

पिल्ले को मेले में ले जाकर बिक्री के लिए खड़ा कर देता तो कुछ-न-कुछ तो मिल ही जाता। परंतु हम दोनों में से किसी का भी ऐसा जिगरा न था। आखिर एक दिन पिल्ले की आँखों पर पट्टी बाँध कर पश्चिमी दरवाजे से शहर की फसील के बाहर ले गया और उसे वहाँ छोड़ आया। लौट रहा था तो पिल्ला मेरे पीछे-पीछे दौड़ कर आने लगा और उसे एक गड्ढे में ढकेल कर

पीछा छुड़ाया। गड्ढा गहरा नहीं था।

घर लौटकर अनुभव किया कि पहले की अपेक्षा शांति थी, परंतु त्ज़ च्विन को देखकर हैरान रह गया। उसके चेहरे पर व्यथा की ऐसी गहरी छाप कभी नहीं देखी थी। कारण पिल्ले के वियोग का ही था। परंतु इसमें इतनी गहरी व्यथा की क्या बात थी ? पिल्ले को गड्ढे में ढकेलकर पीछा छुड़ाने की बात मैंने उसे नहीं बताई।

संध्या तक त्ज़ च्विन के दुखी चेहरे पर एक सर्द जड़ता छा गई।

"त्ज़ च्विन सच बताओ, तुम्हें क्या हो रहा है ?" मुझे पूछना ही पड़ा।

"क्या?" त्ज़ च्विन ने मेरी ओर आँख भी नहीं उठाई।

"तुम जिस तरह हो गई हो ..."

"कोई बात नहीं, कुछ नहीं है।"

सोचा, त्ज़ च्विन समझती है कि मैं हृदयहीन हूँ। जब मैं अकेला था, तो मेरा गुजारा मजे में होता था और मैं संबंधियों से मिलना-जुलना तक पसंद नहीं करता था। निवासस्थान बदलने के बाद बहुत से पुराने दोस्तों से भी संबंध टूट चुका था। फिर भी यदि मैं इस झंझट से छुट्टी पा जाऊँ तो मेरे लिए बीसियों रास्ते खुले हैं। यह सब परेशानियाँ त्ज़ च्विन के कारण हैं—पिल्ले को भी उसी की वजह से हटाना पड़ा था। परंतु वह अब कुछ भी समझने से ऊपर थी।

जब मैंने उसे यह सब बताने की कोशिश की तो उसने हामी में ऐसे सिर हिलाया मानो समझ रही हो। परंतु समझ लेने का कोई प्रभाव उस पर नजर नहीं आया। या तो मेरी बात ही उसे समझ में नहीं आई, या उस पर भरोसा नहीं हुआ।

सर्दी और तिस पर त्ज़ च्विन के सर्द बरताव से मेरे लिए घर में चैन से रह सकना असंभव हो गया। परंतु जाता भी कहाँ? त्ज़ च्विन की उस शोकातुर विरक्ति से भाग कर गली या पार्क में ही जा सकता था, पर वहाँ सर्द हवा सनसनाते तीरों से शरीर को बेध देती थी। आखिरकार, शरण के लिए एक बहिश्त मिल गया—नगर के पुस्तकालय में जा बैठता।

पुस्तकालय में प्रवेश निःशुल्क था और वाचनालय में दो अँगीठियाँ भी थीं। अँगीठियों में आग कम ही रहती थी, परंतु अँगीठियाँ सामने रहने से ही सहारा हो जाता था। पुस्तकालय में पढ़ने लायक कुछ भी नहीं था। पुस्तकें बहुत

पुरानी थीं, नई प्रकाशित पुस्तकें बिलकुल नहीं थी।

पर मैं पुसतकालय पढ़ने के लिए नहीं जाता था। वहाँ बहुत कम लोग रहते थे, कभी-कभी दस-बारह तक हो जाते थे। सबकी अवस्था मेरे जैसी ही थी। पर्याप्त गर्म कपड़े किसी के पास नहीं थे। सर्दी से बचने के लिए पढ़ने का बहाना किए बैठे रहते। मुझे और क्या चाहिए था ? सड़क-बाजार में परिचितों से सामना हो जाने की आशंका रहती जो आपको देख अपमानजनक दृष्टि डालते। पुस्तकालय में छिपे बैठे रहकर ऐसे अवसर से तो बचा जा सकता था। मेरे परिचित लोग अपने-अपने घरों में या मित्रों के यहाँ अँगीठियों के चारों ओर आग सुलगाए बैठे रहते होंगे।

पुस्तकालय में पढ़ने लायक पुस्तकें नहीं थीं लेकिन चुपचाप बैठे विचारों में डूबे रहने की सुविधा तो थी। वहाँ मौन बैठे अतीत के बारे में सोचता--इन छह महीनों में प्रेम के मोह में, अंधप्रेम के मोह में फँसकर जीवन के सभी महत्वपूर्ण कामों को छोड़ बैठा हूँ। सबसे पहले तो जीविका की ओर ध्यान देना चाहिए। जीविका के आधार के बिना प्रेम करने का अर्थ ही क्या है? आदमी पूरी तरह यत्न करे तो असफल रह जाने का कोई कारण नहीं और अभी मैं इतना निर्जीव और असमर्थ नहीं हो गया हूँ। हाँ, इस झंझट ने मुझे कुछ निर्बल अवश्य बना दिया है।....

पुस्तकालय में बैठे-बैठे कल्पना में खो जाता। आँखों के सामने से पुस्तकों की अलमारियाँ और समीप बैठे पाठक विलीन हो जाते और क्षुब्ध समुद्र की तरंगों पर मछुआरों, खाइयों में शस्त्र उठाए सैनिकों, मोटर गाड़ियों में जाते अधिकारीगणों, सट्टा बाजार में व्यस्त सटोरियों, पर्वत पर बीहड़ जंगलों में छिपे वीरों, विद्यार्थियों को पढ़ाते अध्यापकों, रात्रि के अंधकार में अवसर ढूँढ़ते लोगों, अंधकार में छिपे चोरों को आंखों के सामने देखता।... त्ज़ च्विन कहीं बहुत दूर रह जाती। उसने श्वेई के वियोग और रसोई में अपना सारा साहस गँवा दिया था। आश्चर्य की बात थी कि उसके शरीर में कोई ह्रास या परिवर्तन दिखाई नहीं देता था।....

सर्दी बढ़ने लगी थी। अँगीठी में बाकी रह गए पत्थर के कोयले के दो-चार टुकड़े भी राख बन गए थे और पुस्तकालय बंद होने का समय हो गया था। अपने घर लौट जाने के अलावा और कोई रास्ता न था जहाँ त्ज़ च्विन की सर्द निगाहों का सामना करना पड़ता था। पिछले कुछ दिनों में दो-एक बार

उसकी पुरानी स्फूर्ति का आभास जरा-जरा दिखाई दिया था। उस परिवर्तन से मैं और भी खिन्न हो गया। एक दिन शाम के वक्त त्ज़ च्विन की आँखों में वही बच्चे जैसी चमक दिखाई दी जिसे अरसे से न हीं देखा था और हँसकर उसने होस्टल की एक घटना याद दिलाई। परंतु उस सरलता के नीचे निरंतर आतंक की छाया उसकी आँखों में तब भी मौजूद थी। मैं समझ गया, उसके डर के पीछे उसके प्रति इधर मेरी उपेक्षा थी। इसलिए कई बार त्ज़ च्विन को कुछ सांत्वना दे सकने के लिए, अनिच्छा से भी हँसने-बोलने का यत्न किया। परंतु अपनी हँसी और अपने स्वर की कृत्रिमता मेरे अपने कानों को ही असह्य जान पड़ी। अपने प्रति बहुत ग्लानि अनुभव हुई जिसे सह सकना संभव नहीं था।

त्ज़ च्विन भी शायद समझ गई थी क्योंकि अब वह अपनी जड़ खामोशी दूर कर देने का यत्न करती या अपनी व्यथा को मन की गहराइयों में छिपाए रखना चाहती। फिर भी उसके चेहरे पर आतंक का भाव समय-समय पर झलक जाता था। लेकिन मेरे प्रति वह कोमलता से पेश आती।

कई बार सोचा कि त्ज़ च्विन से स्पष्ट बात कर लेना उचित है, परंतु इतना साहस नहीं जुटा पाया। जब भी साहस बटोर कर तैयार होता, उसकी शैशव की सी सरल दृष्टि से परास्त हो जाता और मुस्करा देता। होंठों पर मुस्कान प्रकट करने की विवशता मन के भीतर अपने ही प्रति रोष में बदल जाती और मैं स्वंय अपने पर बौखला उठता।

त्ज़ च्विन फिर अपने पुराने तौर-तरीकों पर आ गई। वह प्रणय के पुराने प्रश्न दोहराती, परीक्षा लेती और उसके प्रति प्रेम जताने के लिए बनावटी उत्तर देने पर मजबूर करती। हृदय पर झूठ, छलना और पाखंड का इतना बोझ आ जाता कि मेरा दम घुटने लगता। निराशा में सोचता, सच कह देने के लिए कितने साहस की जरूरत है। कायरता से छलना को स्वीकार करने वाला, साहसहीन भीरू व्यक्ति कभी नया पथ खोजने की उम्मीद नहीं कर सकता। यही नहीं, ऐसे भीरू व्यक्ति का अस्तित्व ही मिट जाएगा।

त्ज़ च्विन फिर खिन्न दिखने लगा। एक दिन प्रातःकाल ही यह परिवर्तन आरंभ हुआ--कम-से-कम मैंने उसी दिन अनुभव किया। उस दिन भयंकर जाड़ा था। उसके नये व्यवहार पर मन-ही-मन खिन्न होकर मुस्करा दिया। उसका निर्भय, उदार और समझदार बनना महज एक आडंबर था जिसके खोखलेपन का उसे कतई आभास नहीं था। पढ़ना उसने काफी पहले ही छोड़ दिया था इसलिए उसे यह भी नहीं मालूम था कि जीवन के संघर्ष में सबसे

पहला कर्तव्य जीविका की चिंता और उसका प्रत्यन होना चाहिए। इस संघर्ष में पति-पत्नी को कंधे-से-कंधा मिलाकर या अकेले ही कदम उठाना चाहिए। वह तो निर्वाह के लिए किसी से चिपट भर जाना जानती थी, ताकि तैर सकने वाले के गले का बोझ बन जाए—उसे डुबो दे, स्वयं भी डूब जाए।

अपने और त्ज़ च्विन दोनों के कल्याण के लिए मुझे एक ही मार्ग दिखाई देता था—वह था कि दोनों अलग-अलग, अपना-अपना रास्ता चुन लें। अचानक त्ज़ च्विन की मृत्यु का विचार आया—तो अपने प्रति बहुत लज्जा और ग्लानि अनुभव हुई। अभी सुबह ही थी कि त्ज़ च्विन को ढंग से समझा-बुझा सकने के लिए शाम तक बहुत समय था। हम दोनों नई राह बना सकेंगे या नहीं, यह इसी पर निर्भर करता था।

मैंने जान-बूझकर अतीत से ही बात आरंभ की। कुछ साहित्य की, विदेशी लेखकों और उनकी पुस्तकों की बातें कहीं, इब्सन के नाटक 'गुड़िया का घर' और 'समुद्र की नारी' की चर्चा की। नोरा के साहस और दृढ़ निश्चय की सराहना की।.... पिछले वर्ष होस्टल की गंदी कोठरी में बैठकर भी मैं यह सब चर्चा कर चुका था, परंतु अब मुझे अपनी बात का खोखलापन स्वयं खटक रहा था। बोलते समय जान पड़ रहा था कि कोई नटखट छोकरा मुझे चिढ़ाने के लिए मेरी बातों को प्रतिध्वनित करता जा रहा है।

त्ज च्विन ने सुनकर गर्दन हिला हामी भरी और मौन हो गई। मैंने अपनी बात अचानक समाप्त कर दी और मेरी आवाज की अंतिम प्रतिध्वनि खालीपन में खो गई।

"ठीक है," त्ज़ च्विन कुछ पल मौन रहकर बोली, "परंतु च्वान शंग तुम आजकल बिलकुल ही बदल गए हो। क्या बात है ? सच-सच बताओ।"

त्ज़ च्विन की बात से मुझे भारी धक्का लगा, परंतु किसी प्रकार अपने आपको संभालकर उसे अपने विचार और सुझाव बताए, जीवन को नए सिरे से नए जीवन की शुरुआत करके ही हम दोनों, अपने जीवन को बरबाद होने से बचा सकते हैं।

अपना निश्चय स्पष्ट कर देने के लिए मैंने दृढ़ता से कहा दिया, "इसके अलावा तभी तुम निर्बाध अपने रास्ते पर चल सकती हो। तुम स्वयं चाहती हो कि मैं सच-सच कह दूँ। सच्चाई यही है कि अब मेरे मन में तुम्हारे प्रति प्रेम नहीं है। यह वास्तव में तुम्हारे लिए भी अच्छा है, तुम पर भी कोई बंधन नहीं रहेगा। तुम बिना किसी खेद और संकोच के अपना रास्ता बना

सकोगी।"

आशंका थी कि त्ज़ च्विन यह सब सुनकर न जाने क्या कोहराम मचा देगी। परंतु वह मौन रहीं उसका चेहरा बिलकुल पीला पड़ गया, जैसे शरीर का संपूर्ण रक्त खिंच गया हो। लेकिन पल भर में वह संभल गई। चेहरे पर सुर्खी लौट आई और आँखों में वही शैशव की सी सरलता चमक उठी। उसकी भोली दृष्टि इधर-उधर भटकने लगी, जैसे, बच्चा भूख से व्याकुल होकर माँ को खोज रहा हो। देर तक वह शून्य में ही देखती रह गई, मुझसे निगाह बचाती हुई।

उस समय त्ज़ च्विन के सामने रहना मेरे लिए संभव नहीं था। सौभाग्य से अभी सुबह ही थी। शरीर को बेधती सनसनाती हवा की परवाह न कर मैं घर से निकल पुस्तकालय की ओर चला गया।

पुस्तकालय में 'स्वतंत्रता प्रेमी' का अंक दिखाई दे गया जिसमें मेरी भेजे छोटे-छोटे निबंध प्रकाशित हो गए थे। मुझे एक साथ विस्मय और हर्ष का अनुभव हुआ। "मेरे लिए बीसियों रास्ते खुले हैं," मन में आया। "अपनी हालत को बदलने का, उपाय करना ही होगा।"

पिछले काफी अरसे से जिन मित्रों से संपर्क तोड़ चुका था उनसे मिलने गया, परंतु एक-दो बार से अधिक किसी के यहाँ नहीं गया। उन लोगों के कमरे गर्म थे परंतु उनके यहाँ भी सर्दी से मेरी हड्डियाँ सिहर-सिहर उठती थीं। रातें घर में गुजारनी पड़ती थीं जहाँ बर्फ की गुफा से भी अधिक सर्दी थी।

जान पड़ता था कि बर्फ की बर्छियाँ हृदय में बिंधी जा रही है। अवसाद की बर्फ मुझे सुन्न किए दे रही थी। "मेरे लिए बीसियों रास्ते खुले हैं", मन को विश्वास दिलाता। "मैं उड़ सकने में असमर्थ नहीं हो गया हूँ।" अचानक मुझे त्ज़ च्विन की मौत का ख्याल आया और इस विचार से आत्मग्लानि और लज्जा का अनुभव हुआ।

पुस्तकालय में बैठे-बैठे जीवन के नए-नए मार्गों की कल्पना करने लगता। त्ज़ च्विन साहस से वास्तविक स्थिति का सामना करने के लिए तैयार है, वह हमारी बर्फीली कोठरी को छोड़कर चली गई है। वह चली गई है और मेरे प्रति किसी भी दुर्भावना के बिना मेरे मन और मस्तिष्क पर से बोझ उतर गया है। जान पड़ा कि मैं निर्बाध और निर्द्वन्द्व होकर असीम नीले आकाश में हल्के मेघ की भाँति उड़ा जा रहा हूँ, ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों, महासागरों, गगनचुंबी प्रासादों, युद्ध-क्षेत्रों, मोटर कारों की पंक्तियों, सट्टे के बाजारों, रईसों की हवेलियों, जगमगाते नहरों के ऊपर से उड़ा जा रहा हूँ और घटाटोप अँधेरी रात।

मुझे लग रहा था कि मैं जीवन के नए मोड़ पर आ पहुँचा हूँ। यहाँ से नया जीवन आरंभ होने को है।

पेइचिंग के हड्डियाँ कँपा देने वाले जाड़े के पूरे मौसम में हम दोनों उसी मकान में रहे। हमारा साथ भी अजीब था, जैसे दो लखौरियाँ निर्दय नटखट बच्चों के हाथ पड़ गई हों, बच्चे दोनों लखौरियों को धागे से एक साथ बांध कर, उड़ा-उड़ा कर, उन्हें सताकर अपना खेल कर रहे हों। हम बचे तो रह गए थे लेकिन अंतिम साँसें लेते हुए और लगता था कि अब अंत किसी भी समय आ सकता है।

'स्वतंत्रता प्रेमी' के संपादक को तीन पत्र लिख चुकने के बाद उसका उत्तर आया। लिफाफे में केवल पुस्तकें खरीदने वाले में तीस और बीस सेंट के दो कूपन निकले। पारिश्रमिक के लिए भेजे गए पत्रों पत्रों पर नौ सेंट खर्च कर चुका था और उसके लिए एक दिन भूखे रह जाना पड़ा था। उसका यह परिणाम सामने आया।

और फिर जिसकी आशंका थी अंततः हो गया।

सर्दी के बाद बसंत आ गया और ठंडी वायु अब उतनी पैनी नहीं रही थी। दिन में प्रायः बाहर ही घूमता रहता और सूर्यास्त के समय घर लौटता। एक दिन साँझ का अँधेरा पड़े नित्य की भाँति शिथिल कदमों से घर की ओर लौट रहा था और मकान का दरवाजा देख कदम और भी शिथिल हो गए। फिर भी मकान में पहुँच ही गया। भीतर अँधेरे में टटोल कर माचिस उठाई, तीली जलाई तो कमरा और भी अधिक सूना और वीरान लगा।

मैं असमंजस में वहाँ खड़ा था कि खिड़की से मकान मालकिन की आवाज सुनाई दी—

"आज त्ज़ च्विन का पिता आया था, और उसे साथ ले गया है।" मकान मालकिन ने सहज रूप में कहा।

मेरा मस्तिष्क जैसे एक भारी पत्थर की चोट से सुन्न हो गया। कई पल निश्चल, अवाक् खड़ा रहा—यह क्या हो गया!

"चली गई ?" किसी तरह पूछ लिया।

"हूँ।"

"कुछ कुछ कह गई है ?"

"ऊ हूँ! बस यही कि तुम आओ तो कह दूँ कि चली गई है।"

कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था, परन्तु आँखों के सामने कमरा

खाली और सुनसान था। आँखें फाड़-फाड़ कर कमरे में चारों ओर त्ज च्विन को ढूँढ़ने लगा। लेकिन बदरंग, टूटी-फूटी मेज, कुर्सी, खाट के अलावा कुछ नहीं दिखा। उनके पीछे किसी को छिपा देने या छिपे रहने के लिए स्थान नहीं था। सोचा, शायद कुछ लिखकर छोड़ गई हो। चारों ओर आँखें दौड़ाई, कुछ नहीं था। मेज पर नमक का डिब्बा, कुछ सूखी मिर्चे, थोड़ा-सा आटा और आधी पातगोभी और चालीस-पचास ताँबे के सिक्के रखे थे। संसार में यही हमारी संपत्ति थी और इसे वह सावधानी से मेरे लिए सहेज गई थी। बिना बोले संकेत से कह गई थी—जब तक संभव हो मैं अपना निर्वाह कर लूँ।

कमरे के वातावरण की घुटन से घबराकर मैं बाहर आँगन में जा खड़ा हुआ जहाँ चारों ओर अँधियारा था। बीच के कमरे की खिड़की में प्रकाश था जहाँ मकान मालिक और मालकिन अपने बच्चे को हँसाने के लिए गुदगुदा रहे थे। मन कुछ हल्का हुआ तो मुझे अँधेरे में आशा की किरण दिखाई देने लगी, ऊँचे पर्वत, दलदली मैदान, चकाचौंध प्रकाश में दावतें, खंदकें, घटाटोप अँधकार, पैनी कटार का एक बार, दबे पाँवों की चाप।

मस्तिष्क जरा साफ हुआ तो यात्रा के खर्चों के बारे मे सोचने लगा फिर एक गहरी साँस ली।

कोठरी में अकेला आँखें मूँदें खाट पर पड़ा था तो अर्धचेतन अवस्था में भावी जीवन की रूपरेखा की कलपना कर ली, परंतु आधी रात होते-होते वह टिक न सकी। कोठरी में फैले घटाटोप अंधकार में व्यंजनो में का एक बड़ा सा ढेर दिखाई देने लगा फिर त्ज च्विन का रक्तहीन चेहरा, शैशव की सभी भोली-भाली आँखों में कातर याचना का भाव लिए मेरी आँखों के सामने आ गया। अपने आप को सँभाल कर उठने का यत्न किया तो सब कुछ विलीन हो गया।

आत्मग्लानि का वह बोझ असह्य था। वह 'सच' कहकर त्ज़ च्विन को आघात पहुँचाने की मुझे क्या उतावली थी ? कुछ दिन और धीरज नहीं रख सकता था ? अब उस बेचारी के लिए जीवन में क्या सहारा है ? केवल पिता का निर्दय व्यवहार, जो अपने बच्चों के साथ भी कसाई का सा व्यवहार करता है, और दूसरे लोगों की कठोर उपेक्षा। कितना डरावना है खालीपन का भारी बोझ उठाए संसार की निर्मम उपेक्षा के बियाबान में अकेले भटकते रहना। इतना भी भरोसा नहीं कि मर जाने पर कोई शव पर साफ कफन का टुकड़ा भी डालेगा।

बेचारी त्ज़ च्विन के मुँह पर वह 'सच;' मैंने क्यों कह डाला? अपने प्रेम के लिए क्या मैं इतना-सा झूठ भी नहीं बनाए रख सकता था? यदि सच की इतनी महिमा है तो उस 'सच' ने निरीह त्ज़ च्विन के जीवन को इतना कंगाल क्यों बना दिया ? मानता हूँ, झूठ निस्सार होता है परन्तु वह झूठ त्ज़ च्विन पर निराशा की छत को गिरे जाने से तो बचाए हुए था।

मेरा ख्याल था कि त्ज़ च्विन से वह सच कह दूँगा तो वह झूठे बंधन से मुक्त होकर साहस से अपना मार्ग बना सकने के लिए स्वतंत्र हो जाएगी, ठीक उसी तरह जैसे उसने मुझे प्रेम कर एक नए जीवन की शुरुआत की थी। परंतु वह कितनी बड़ी भूल थी। वास्तव में त्ज़ च्विन की उस निर्भयता और साहस का स्रोत तो प्रेम ही था।

मैं झूठ और छलना का बोझ उठा सकने में असमर्थ था, इसलिए मैंने उसके सिर पर 'सच' का बोझ लाद दिया। क्योंकि उसने मुझसे प्रेम किया इसलिए जीवन के अंत तक उस बोझ के नीचे पिसती रहेगी, इस उपेक्षाभरे निर्मम संसार के बियावान में अकेली भटकती रहेगी।

मैंने त्ज़ च्विन की मृत्यु की कल्पना कर ली थी, मैं कितना नीच हूँ। मुझे उसका दंड मिलना चाहिए, जिनके हाथ में सामर्थ्य है, वह मुझे दंड दें, चाहे वे लोग स्वयं ईमानदार हों या न हों। लेकिन त्ज़ च्विन तो सदा मेरे कल्याण की ही कामना करती रही।....

लकी गली के मकान का सूनापन मुझे काटने को दौड़ता था। सोचा यदि यहाँ से निकल सकूँ तो कल्पना में त्ज़ च्विन को अपने समीप अनुभव कर सकूँगा। या कम-से-कम यही कल्पना कर सकूँगा कि वह इसी शहर में है ओर किसी दिन हम दोनों का उसी प्रकार मिलन हो सकता है, जैसे होस्टल में रहते समय हो गया था।

नौकरी के लिए दी हुई मेरी दरख्वास्तो और पत्रों का कोई भी उत्तर नही आया। अब एक ही सहारा था। मेरे चाचा के पेइ चिंग में एक पुराने सहपाठी थे, बहुत बड़े विद्वान। उनका बहुत नाम और प्रभाव था। वर्षों से उनके यहाँ नहीं गया था। सोचा, जाकर उनसे ही प्रार्थना करूँ।

चौकीदार ने सीधे मुँह बात नहीं की—मेरे कपड़ों की अवस्था ही ऐसी थी। बहुत कठिनाई से घर के भीतर जा पाया तो चाचा के मित्र ने मुझे पहचान लिया, परंतु बोले बहुत रुखाई से। हम लोगों के विषय में उन्हें सब कुछ मालूम हो चुका था!

"यहाँ तो जगह मिल सकना मुश्किल है।" उन्होंने कह दिया। मैंने अनुरोध किया, "आपकी बहुत कृपा होगी, कोई भी काम दिला दीजिए।" उत्तर मिला—"बहुत मुश्किल है। फिर तुम रहोगे कहाँ?" उन्होंने पूछ लिया। "तुम्हें तो मालूम ही होगा, तुम्हारी वह त्ज़ च्विन मर चुकी है।"

मैं अवाक् रह गया।

"सच ?" अपने आप को सँभाल कर मैंने पूछा।

बुजुर्ग को हँसी आ गई—"शक की बात क्या है, वह लड़की हमारे नौकर वांग शंग के गाँव की ही तो थी।"

"कैसे मर गई?"

"कौन जाने। इतना मालूम है कि मर गई।"

मालूम नहीं, उनके यहाँ से घर तक कैसे पहुँचा। वह आखिर झूठी बात क्यों कहते। त्ज़ च्विन सदा के लिए चली गई थी। अब गत वर्ष की तरह वह फिर कभी नहीं आएगी। हालाँकि वह अपने सूने-निराश जीवन का बोझ उठाए संसार की उपेक्षा के वीराने में भटकने के लिए भी तैयार थी लेकिन बोझ शायद असह्य हो गया। भाग्य ने उसे कठोर सच का बोझ उठाकर मर जाने का ही अभिशाप दिया था—प्रेम खोकर मरने का!

घर पर रह सकना अब संभव नहीं था, परंतु कहाँ जाता ?

सभी ओर अभाव और शून्य था, मृत्यु का सन्नाटा। कल्पना में एक ही बात समा रही थी, प्रेम में ठुकराया गया व्यक्ति मृत्यु के समय कैसी निबिड़ निराशा का अँधकार देखता होगा। ऐसी अवस्था में मरने वालों की आर्त चीत्कारों से मेरा दिल दहलने लगता।

एक दबी हुई आशा अब भी बनी हुई थी कि जीवन में कोई अप्रत्याशित नया प्रकाश या मार्ग दिखाई दे जाएगा। लेकिन मृत्यु के सन्नाटे में दिन-पर-दिन बीतते जा रहे थे।

घर के बाहर बहुत कम जा पाता था। कोठरी के उस शून्य में ही बैठा या पड़ा रहता और प्रतीक्षा करता कि मुझे घेरे मृत्यु के सन्नाटे में मेरी चेतना भी डूब जाएगी। कभी-कभी तो ऐसा जान पड़ता था कि यह सन्नाटा स्वयं भी सहम रहा है, और डरकर भाग जाएगा। फिर लगता कि दूर, बहुत दूर, अदृश्य में अनजानी-अपरिचित आशा का कुछ आभास-सा मिल रहा है।

एक दिन प्रातः बहुत ही घने बादल छाए हुए थे, सूर्य बादलों को चीर नहीं पा रहा था, वायु भी थकी-थकी सी जान पड़ती थी कि कमरे में छोटे-छोटे

पैरों की आहट और साँस लेने की आवाज से मेरी आँखें खुल गईं। कमरे मे चारों ओर नजर दौड़ाई पर कुछ दिखाई नहीं दिया। अधिक ध्यान से फर्श पर देखा तो एक छोटा-सा जीव, दुबला-पतला, कंकालमात्र, धूल से भरा, कमरे में चक्कर लगा रहा था।...

ध्यान से देखा तो साँस रुक गई। खाट में कूद पड़ा। पिल्ला लौट आया था।

मैंने लकी गली का मकान छोड़ दिया। मकान मालिक और उसकी नौकरानी की नाराजगी के कारण नहीं, बल्कि पिल्ले के कारण। बड़ी भारी समस्या थी, जाऊँ तो कहाँ? यों तो जाने के लिए बीसियों जगहें हो सकतीं थीं और कभी ऐसा लगता कि आँखों के सामने कई रास्ते खुले हैं। लेकिन यह पता नहीं था कि पहला कदम कैसे उठाया जाए।

बहुत सोच-विचार करके और सभी बातों का ख्याल करके मैं इस परिणाम पर पहुँचा कि मेरे लिए हॉस्टल ही उपयुक्त स्थान हो सकता है। अब फिर होस्टल की उसी खाली कोठरी में आ गया हूँ, वही काठ का तख्त, खिड़की के बाहर वही लोकस्ट का अधसूखा पेड़ और विस्तारिया की वही पुरानी बेल मौजूद है। परन्तु अब पहले के स्नेह और जीवन, संतोष और आशा की किरण लुप्त हो गई है। अब केवल अभाव ओर निष्प्रयोजन जिंदगी ही है जिसे मैंने सच के बदले में पाया है।

निर्वाह के लिए कई उपाय संभव हैं, जिंदा हूँ तो कोई उपाय तो अपनाना ही होगा। यही निश्चय नहीं कर पा रहा हूँ कि कहाँ से आरंभ करूँ। कभी तो भावी जीवन का मार्ग बहुत बड़े अजगर की भाँति बलखाता हुआ अपनी ओर झपटता चला आता दिखाई देने लगता है। प्रतीक्षा करता हूँ, उसे आता हुआ देखता हूँ परंतु सहसा सब कुछ अंधकार में विलीन हो जाता है।

बसंत के आरंभ की ये रातें अब भी उतनी ही लंबी है। बेकार बैठे-बैठे बहुत देर से सोच रहा हूँ। याद आया सुबह सड़क पर से किसी आदमी का जनाजा गुजरा था। जनाजे के आगे-आगे कई लोग आदमियों और घोड़ों की कागज की बनी मूर्तियाँ लेकर चल रहे थे और विलाप करते लोग गाने के स्वर में रो रहे थे। अब समझा कैसे चतुर हैं लोग, सहज में सब कुछ निपटा दिया।

फिर त्ज़ च्विन की शवयात्रा का दृश्य मन में उभरा—सूने जीवन का भारी बोझ उठाए अनंत अँधियारे, भयावने मार्ग पर अकेली चली जा रही थी लोगों के कठोर तिरस्कार द्वारा निगले जाने के लिए।

मृत्यु के पश्चात् यदि भूत-प्रेतों या नरक का अस्तित्व होता तो भी अच्छा था। नरक के रौरव चीत्कारों के प्रबल झंझावात में भी मैं त्ज़ च्विन को ढूँढ़ लेता और अपना खेद और अवसाद उसके सामने स्वीकार कर उससे क्षमा माँग लेता। यदि ऐसा न कर पाता तो नरक की विषैली ज्वालाओं में मेरा खेद और अवसाद भस्म हो जाता।

नरक की ज्वालाओं और भँदसें में ज्य च्विन को अपनी बाहों में भरकर मैं उससे क्षमा-याचना करता, या उससे बदला लेने को कहता।

हालाँकि यह कल्पना मेरे नए जीवन की कल्पना से भी अधिक खोखली है। शुरू बसंत की यह रात लंबी है। शरीर में प्राण है तो जीवन का आरंभ फिर करना ही होगा। पहला कदम है त्ज़ च्विन और अपने लिए अपने अवसाद और दुःख को लिख डालूँ।

मैं रोने के सिवाय क्या कर सकता हूँ—त्ज़ च्विन के शोक में गाते हुए रोऊँ और उसे विस्मृति में दफना दूँ।

मैं उसे भूल जाना चाहता हूँ। यातना से बचने के लिए त्ज़ च्विन के लिए बनाई विस्मृति की समाधि को अपने स्मृति-पटल से मिटा देना चाहता हूँ।

जीवन के लिए नया कदम उठाना अनिवार्य है। उस सच को अपने घायल हृदय की गहराई में छिपाकर चुपचाप कदम बढ़ाना होगा। विस्मृति और आत्मप्रवंचना ही मेरा मार्गदर्शन करेंगी।....

❐

चंद्रलोक की ओर उड़ान

(1)

यह सच है कि बुद्धिमान पशु मनुष्य की इच्छाओं को आसानी से भाँप लेता है। ज्यों ही उनका फाटक दिखाई दिया, घोड़े ने चाल धीमी कर दी और सवार की तरह ही अपना सिर झुकाकर उसे हर कदम के साथ ऐसे उठाने-गिराने लगा जैसे मूसल से चावल कूट रहा हो।

हवेली संध्या के कुहरे में लिपटी हुई थी जबकि पड़ोस की चिमनी से काला धुआँ उठ रहा था। यह शाम के ब्यालू का समय था। घोड़े की टाप सुनकर सईस बाहर आ गए थे और दोनों बाजू बदन से चिपकाकर फाटक के सामने सीधे खड़े हो गए। ज्यों ही ई (ई अथवा हूवो ई चीन की प्राचीन दंतकथाओं में वर्णित धनुर्विद्या में पारंगत एक वीर था) कचरे के ढेर के पास सुस्ती से उतरा, सईसों ने आगे बढ़कर लगाम और चाबुक ले लीं। देहरी पार करते समय जब उसने कमर में लगे तरकश में रखे बिलकुल नये तीरों और थैले में पड़े हुए तीन मृत कौवों व एक क्षतिविक्षत गौरैया पर नजर डाली तो उसका दिल बैठ गया। लेकिन वह चेहरे पर कोई भाव लाए बिना लंबे डग भरता हुआ भीतर चला गया। तरकश में रखे तीर खनखना उठे।

भीतर के आँगन में पहुँचते ही उसकी नजर छांग अ (चीन की पौराणिक कथाओं में वर्णित एक देवी जिसे ई की पत्नी माना जाता है। अमृत-रसायन पीने के बाद वह उड़कर चंद्रलोक चली गई थी वहाँ जाकर एक देवी बन गई थी।) पर पड़ी, जो गोल खिड़की से बाहर झाँक रही थी। यह जाना था कि छांग अ की पैनी नजर कौवों पर पड़ चुकी हैं। घबराहट में वह क्षण भर के लिए रुका—लेकिन अंदर तो उसे जाना ही था। दासियों ने उसकी अगवानी की, धनुष-बाण और तरकश उतारे और शिकार का झोला उठा लिया। उसे लगा दासियों के चेहरे पर कृत्रिम मुस्कान झलक रही हैं

हाथ-मुँह धोने के बाद वह भीतर के कमरे में पहुँचा और बोला—"श्रीमती जी..."

छांग अ गोल खिड़की से सूर्यास्त देख रही थी। वह धीरे से मुड़ी और अभिवादन का उत्तर दिए बगैर उपेक्षापूर्ण दृष्टि से ई की तरफ देखने लगी।

कुछ समय से, कम-से-कम एक साल से ज्यादा समय से, ई ऐसे बरताव का आदी हो चुका था। सदा के समान वह सामने की तरफ लकड़ी के तख्त पर बिछी चीते की पुरानी खाल पर जा बैठा। सिर खुजाते हुए बुदबुदाया

"आज भाग्य ने फिर मेरा साथ नहीं दिया। कौवे के सिवाय और कुछ नहीं..."

"छिः छिः।"

छांग अ की कमानीदार भौंहें तन गईं और वह फुर्ती से कमरे के बाहर जाती हुई बोली, "फिर वही कौवे की चटनी और सेवैयाँ। मैं जानना चाहती हूँ कि कौन है ऐसा जो वर्षों तक कौवे की चटनी और सेवैया खा सकता है ? मैं बड़ी अभागिन हूँ जो तुमसे ब्याह कर बैठी। बारहों महीने कौवे की चटनी और सेवैयाँ खानी पड़ती है।।"

"श्रीमती जी।" ई उठ खड़ा हुआ और उसके पीछे हो लिया।

"आज का दिन ज्यादा बुरा नहीं रहा," वह बड़े कोमल स्वर में बोला, "आज मैंने एक गौरैया का शिकार भी किया है। इसे तुम्हारे लिए खास तौर से पकाया जाएगा।.... न्वी-शिव, ओ न्वी-शिन।" ई ने दासी को पुकारा। "मालकिन को दिखाने के लिए जरा वह गौरैया तो ले आओ।"

परिन्दों को रसोईघर में पहुँचा दिया गया था। न्वी-शिन दौड़कर गौरैया को ले आई और दोनों हाथों से उठाकर उसे छांग अ के सामने पेश कर दिया।

"यह ?" बड़े तिरस्कार से देखते हुए उसने गौरैया को धीरे-से छुआ। "कैसी हालत बना दी है इसकी।" उसने नराज होकर कहा। "तुमने इसकी बोटी-बोटी अलग कर दी है। गोश्त बचा ही कहाँ है ?"

"मुझे मालूम है," ई ने पराजय के स्वर में स्वीकार किया। "मेरा धनुष बड़ा शक्तिशाली है, मेरे बाणों की नोक बहुत चौड़ी है।"

"छोटे बाण नहीं इस्तेमाल कर सकते थे क्या ?"

"मेरे पास छोटे बाण नहीं हैं। जब मैंने विशाल शूकर और विशाल अजगर को मारा था..."

"तो क्या यह विशाल शूकर या विशाल अजगर है ?" वह न्वी-शिव

की ओर मुड़ी और उसे आदेश दिया, "इसका सूप बना दो।" इसके बाद अपने कमरे में चली गई।

ई अकेला रह गया। उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था। पीठ दीवार से लगाकर बैठ गया और रसोईघर में लकड़ी की ईंधन की चट-चट की आवाज सुनता रहा। उसे याद आया, वह विशाल शूकर दूर से एक मिट्टी के टीले की तरह नजर आ रहा था। अगर शूकर को उसने तब न मारा होता और अब तक रहने दिया होता तो कम-से-कम आधे साल तक तो गोश्त की समस्या हल हो सकती थी और रोजमर्रा के भोजन की समस्या न खड़ी होती। और वह विशाल अजगर का क्या कहना ! कितना बढ़िया सूप बनता उसका!

न्वी-ई ने चिराग जला दिया। सिंदरी धनुष-बाण, काला धनुष-बाण, कलदार धनुष, तलवार, कटार--ये सभी चिराग की धीमी रोशनी में सामने की दीवार पर चमक उठे। एक नजर इन पर डाल कर ई ने गर्दन झुका ली और एक आह भरी। न्वी-शिन साँझ का ब्यालू ले आई और उसे मेज पर रख दिया, बाईं तरफ पाँच बड़े-बड़े कटोरों में सेवैयाँ, दाईं तरफ दो बड़े-बड़े कटोरों में सेवैयाँ और एक कटोरे में सूप तथा बीच में कौवे की चटनी रख दी गई।

खाते समय ई को स्वीकार करना पड़ा कि खाना बिल्कुल स्वादिष्ट नहीं था। उसने कनखियों से छांग अ की तरफ देखा। छांग अ ने कौवो की चटनी की तरफ आँख उठाए बगैर ही अपनी सेवैयों को सूप में डाल लिया था और आधे कटोरा खतम करके कटोरा मेज पर रख दिया था। ई ने देखा उसका चेहरा पहले से ज्यादा पीला और पतला लगने लगा है--अगर बीमार पड़ गई तो क्या होगा ?

रात के दूसरे पहर तक छांग अ की उदासीनता कुछ कम हो गई। यह बिल्कुल मौन अपने बिस्तर पर बैठी पानी पी रही थी। ई बगल में लकड़ी के तख्त पर बैठा-बैठा चीते की पुरानी खाल को, जिसके बाल उखड़ते जा रहे थे, सहला रहा था।

"अहा!" उसने समझौते वाली भावना से कहा। "इस चितकबरे चीते का मैंने शादी से पहले पश्चिमी पहाड़ी पर शिकार किया था। यह निहायत खूबसूरत था--सोने के चमकदार पिण्ड की तरह।"

सहसा उसके मस्तिष्क में अतीत जीवन की स्मृति सजीव हो उठी। उन दिनों भालू का शिकार करने पर सिर्फ उसके पंजे खाए जाते थे, ऊँट का शिकार करने पर सिर्फ उसका कूबड़ खाया जाता था, बाकी सारा गोश्त दासियों और

सईसों में बाँट दिया जाता था। जब बड़े-बड़े जानवर खत्म हो गए और जंगली शूकर, खरगोश और तीतर खाने खुरू कर दिए। ई इतना अच्छा शिकारी था कि जितने चाहे पशु-पक्षियों को मार सकता था।

उसने एक आह भरी।

"बात यह है कि मेरा निशाना जरूरत से ज्यादा अच्छा है," वह बोला। "यही वजह है कि यहाँ के सारे पशु-पक्षियों का सफाया हो गया है। किसे मालूम था कि हमारे खाने के लिए कौवों के सिवाए और कुछ बाकी नहीं रहेगा ?"

छांग के चेहरे पर एक बनावटी मुस्कान खेल गई।

"आज और दिनों के मुकाबले मेरी किस्मत ज्यादा अच्छी रही।" ई का हौंसला बढ़ रहा था। "कम-से-कम एक गौरैया तो मिली। इसकी खोज में मुझे तीस ली का फासला और तय करना पड़ा।"

"क्या इससे भी और थोड़ा आगे नहीं जा सकते थे ?"

"हाँ श्रीमती जी, यही तो मैं भी सोच रहा हूँ। कल सुबह और जल्दी उठूँगा। अगर तुम्हारी नींद पहले खुल जाए तो उठा देना। पचास ली और आगे जाकर देखना चाहता हूँ कि कोई हिरन या खरगोश मिलता है कि नहीं।.... वैसे इन जानवरों का मिलना है जरा मुश्किल। याद है, जब मैंने विशाल शिकार शूकर और विशाल अजगर का शिकार किया था तब यहाँ सभी तरह के पशु-पक्षी मौजूद थे? काले-काले भालू तुम्हारी माँ के दरवाजे के सामने से आते-जाते रहते थे और उन्होंने मुझसे कई बार उन्हें मारने का आग्रह किया था।..."

"सचमुच?" मालूम होता था यह बात छांग अ को याद नहीं रही थी।

"कौन जानता था कि ये सब पशु-पक्षी इस तरह लापता हो जाएँगे? जरा सोचा तो अब हमारा गुजारा न मालूम कैसे होगा। मेरी तो कोई बात नहीं। मैं तो पुजारी का दिया अमृत-रसायन पीते ही उड़कर चंद्रलोक पहुँच सकता हूँ। लेकिन मुझे तुम्हारी फिक्र है!... यही वजह है कि शिकार की खोज में कल और दूर तक जाने की सोच रहा हूँ।...."

"हूँ।"

छांग अ ने सारा पानी पी लिया। इसके बाद धीरे-धीरे से लेट गई और आँखें मूँद लीं।

उसके चेहरे के फीके पड़ गए सौंदर्य-प्रसाधन चिराग के धीमे प्रकाश में स्पष्ट दिखाई देने लगे। बहुत-सा पाउडर पुँछ गया था। आँखों के नीचे

गोलाकार काले गड्ढे पड़ गए थे और एक भौंह दूसरी के मुकाबले ज्यादा काली लग रही थी। लेकिन होंठ अग्निशिखा की भाँति लाल थे और हालाँकि वह मुस्करा नहीं रही थी, फिर भी गालों में दो हल्के गड्ढे स्पष्ट दिखाई दे रहे थे।

"नहीं, हरगिज नहीं। सिर्फ सेवैयों और कौवों की चटनी के सहारे मैं ऐसी स्त्री का पालन कैसे कर सकता हूँ।"

ई शर्म के मारे गड़ गया। उसका चेहरा कान तक लाल हो गया।

(2)

रात बीत चुकी थी, एक नया सेवरा हो चुका था।

ई चौंक कर उठ बैठा। आँखें खोलीं तो उसकी नजर पश्चिमी दीवार को प्रकाशित करती सूरज की तिरछी किरणों पर पड़ी। उसे मालूम हो गया कि काफी देर हो चुकी है। उसने छांग अ को देखा। वह गहरी नींद में बेसुध पड़ी थी। कोई आहट किए बिना उसने चुपचाप कपड़े बदले, चीते की खाल वाले तख्त से नीचे उतरा और पंजे के बल चलता हुआ बड़े कमरे में जा पहुँचा। हाथ-मुँह धोते हुए उसने न्वी-कंग को आदेश दिया कि वह वांग शंग को घोड़ा तैयार करने के लिए कहे।

फुर्सत न होने के कारण वह काफी दिनों से सुबह का नाश्ता नहीं कर पा रहा था। न्वी-ई ने पाँच खमीरी रोटियाँ, पाँच हरे प्याज की गाँठें और एक पुड़िया में लाल मिर्च की चटनी उसके झोले में रख दी और धनुष-बाण के साथ झोले को मजबूती से कमर में बाँध दिया। कमरबंद कसने के बाद वह लंबे डग बढ़ाता हुआ कमरे से बाहर निकल गया। रास्ते में न्वी-कंग मिल गई। उसने बोला—

"आज मैं शिकार की तलाश में जरा दूर जाने वाला हूँ। लौटने में शायद कुछ देर हो जाए। तुम्हारी मालकिन जब सुबह का नाश्ता कर चुकें और उनका मिजाज अच्छा हो तो मेरी तरफ से माफी माँग कर उनसे कह देना कि साँझ में ब्यालू तक मेरा इंतजार करें। मेरी तरफ से माफी माँगना न भूलना।"

वह तेजी से बाहर निकला और फुर्ती से काठी पर सवार हो गया। सईसों के बीच से गुजरता हुआ उसका घोड़ा सरपट दौड़ पड़ा। जल्दी ही वह गाँव की सीमा को लाँघ गया। सामने काओल्यांग (बाजरे के समान एक मोटा अनाज।) के खेत फैले हुए थे, जिनके बीच से वह रोजाना निकलता था। इस जगह के बारे में उसे पहले से मालूम था कि यहाँ कुछ नहीं है। इसलिए ध्यान

दिए बगैर आगे बढ़ता गया। दो बार चाबुक घुमाया तो घोड़ा हवा से बात करने लगा और बिना रुके साठ ली फासला पार कर गया। सामने घना जंगल था और चूँकि घोड़ा लगातार हाँफ रहा था और पसीने से तरबतर हो रहा था, इसलिए उसकी चाल कुछ धीमी पड़ना स्वाभाविक था। दस ली और चलने के बाद वह एक घने लंगल में पहुँच गया। मगर वहाँ भी ई को बर्रों, तितलियों, मक्खियों, चीटियों और टिड्डियों के सिवाय और कुछ न दिखाई दिया—पशु-पक्षियों का तो कहीं नाम-निशान तक न था। नए इलाके की पहली झलक से उसे आशा बँध गई थी कि यहाँ कम-से-कम दो-एक लोमड़ियाँ और खरगोश तो मिल ही जाएँगे, मगर यह उसकी खामख्याली थी। निराश हो वह और आगे बढ़ गया। कोंओल्यांग के हरे-भरे खेत फिर दिखाई दिए। दूर एक-दो मिट्टी के घरौंदे भी बने हुए थे। हवा बड़ी सुहानी थी और धूप प्यारी लग रही थी पर वहाँ न कोई कौवा दिखाई दिया न गौरैया।

"कैसी मुसीबत आ गई है।" अपने दिल का बोझ हल्का करने की कोशिश करते हुए वह चिल्लाया।

कोई दस-बारह कदम आगे गया होगा कि वह खुशी से झूम उठा। दूर एक मिट्टी के घरौंदे के बाहर सपाट धरती पर सचमुच एक पक्षी था जो चाल से एक बड़ा कबूतर मालूम होता था। उसने धनुष-बाण निकाला और निशाना साधकर पूरे जोर से बाण छोड़ा। बाण टूटे तार की तरह हवा को चीरता हुआ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ गया।

ई आज तक कभी निशाना नहीं चूका था इसलिए बिना किसी संदेह के शिकार के पीछे दौड़ पड़ा। पर ज्यों ही करीब पहुँचा तो एक बुढ़िया उसके घोड़े की तरफ दौड़ी आई। ई के बाण से बिंधा विशाल कबूतहर हाथ में उठाए वह चिल्ला रही थी—

"तुम कौन हो? रोज अण्डे देने वाली मेरी बेहतरीन काली मुर्गी को तुमने क्यों मार डाला ? क्या तुम्हारे पास और कोई काम नहीं है ?..."

ई का दिल बैठ गया। मगर उसने फौरन उत्तर दिया।

"क्या कहा ? यह मुर्गी है?" उसने घबराकर कहा। "मैं तो इसे जंगली कबूतर समझा था।"

"क्या तुम अंधे हो ? उम्र तो तुहारी चालीस से कुछ ज्यादा ही लग रही है।

"हाँ, माँ जी, पिछले साल पैंतालीस पूरे किए हैं।"

"कहावत है, बूढ़े मूर्ख से बड़ा मूर्ख कोई नहीं होता। मुर्गी को तुमने जंगली कबूतर कैसे समझ लिया ? आखिर तुम हो कौन ?"

"मेरा नाम ई है।" कहते-कहते उसकी नजर मुर्गी पर पड़ गई। बाण उसके दिल के आर-पार हो चुका था और उसके प्राण ले चुका था। इसलिए घोड़े से उतरते समय अपना नाम बताने में वह कुछ हिचकिचाया।

"ई... यह कैसा नाम है ? पहले कभी नहीं सुना।" बुढ़िया ने बड़े गौर से उसके चेहरे को देखा।

"मेरा नाम जानने वालों की कमी नहीं। गुणवान राजा जाओ के जमाने में मैंने जंगली शूअरों और अजगरों का शिकार किया था।....

"यह सफेद झूठ है। इन्हें तो सामंत फंग मंग (धनुर्विद्या में पारंगत एक अन्य वीर जो ई का शिष्य था। यहाँ चाओ छांग चुंग नामक एक नौजवान लेखक पर व्यंग्य है, जो लू शुन का शिष्य था और जिसने बाद में अपने लेखों के जरिए उन पर प्रहार किए। फंग मंग द्वारा ई पर किए गए प्रहार की कहानी के जरिए चाओ द्वारा लू शुन पर किए गए प्रहार की ओर इशारा किया गया है।) और कुछ अन्य लोगों ने मारा था। हो सकता है तुमने उनकी मदद की हो। लेकिन तुम इतनी बड़ी डींग कैसे मार सकते हो कि यह सब तुमने अकेले ही किया? बड़ी शर्म की बात है।"

"नहीं माँ जी, फंग मंग तो मुझसे मिलने पिछले कुछ ही वर्षों से आ रहा है। हमने एक साथ कभी काम नहीं किया। उसका इसमें कोई योगदान नहीं है।"

"तुम झूठ बोल रहे हो। सभी ऐसा कहते हैं। महीने में चार-पाँच बार तो सुनने को मिल ही जाता है।"

"अच्छा माँ जी, अच्छा। जो कुछ तुम कहती हो वही ठीक है। अब काम की बात करो। इस मुर्गी के बारे में क्या विचार है ?"

"तुम्हें हर्जाना देना होगा। यह मेरी बेहतरीन मुर्गी थी। रोजाना एक अंडा देती थी। इसके बदले मुझे दो कुदालियाँ और तीन तकलियाँ देनी होंगी।"

"लेकिन मेरी तरफ तो देखो, माँ जी। मैं न तो खेतीबाड़ करता हूँ और न कताई। तुम्हारे लिए कुदालियाँ और तकलियाँ कहाँ से लाऊँगा? मेरे पास पैसे भी नहीं हैं। सफेद आटे की सिर्फ पाँच खमीरी रोटियाँ हैं। तुम्हारी मुर्गी के बदले इन पाँच खमीरी रोटियों के साथ हरे प्याज की पाँच गाँठें और एक पुड़िया में लाल मीर्च की चटनी भी दे सकता हूँ। बोलो, मंजूर है?..."

एक हाथ से झोले से खमीरी रोटियाँ निकाल कर उसने दूसरे हाथ से मुर्गी उठा ली।

बुढ़िया को लगा मुर्गी के बदले सफेद आटे की खमीरी रोटियाँ लाने का विचार बुरा नहीं है। लेकिन उसने पाँच की जगह पंद्रह रोटियाँ की माँग पेश कर दी। कुछ समय तक खींच-तान करने के बाद दस खमीरी रोटियों पर समझौता हो गया। ई ने वायदा किया कि अगले दिन दोपहर होने से पहले बाकी पाँच रोटियाँ पहुँचा देना और जमानत के तौर पर अपना बाण उसके पास छोड़ने को तैयार हो गया। इसके बाद उसने बड़े इत्मीनान से मृत मुर्गी को अपने झोले में डाल दिया, उचक कर काठी पर सवार हो गया और घर की तरफ लौट पड़ा। वह भूखा था, मगर फिर भी खुश था। मुर्गी का सूप चखे उन्हें एक वर्ष से भी ज्यादा समय हो गया था।

जंगल से बाहर निकलते-निकलते तीसरा पहर हो गया। वह घर पहुँचने को बेचैन हो उठा। घोड़े को कस कर चाबुक लगाया। लेकिन घोड़ा थककर चूर हो चुका था इसलिए साँझ होने से पहले कांओल्यांग के खेतों तक नहीं पहुँच पाया। सहसा कुछ दूर पर उसे एक धुँधली-सी आकृति दिखाई दी और तभी एक बाण हवा को चीरता हुआ उसकी तरफ बढ़ा।

दुलकी चाल से चल रहे घोड़े की लगाम खींचे बिना ही, ई ने धनुष उठाया और बाण छोड़ दिया। दोनों बाण आसमान में एकदूसरे से जा टकराए। जोर की आवाज हुई। चिनगारियाँ फूट निकलीं। दोनों बाणों ने एक-दूसरे में गुँथ कर अंग्रेजी अक्षर वी का आकार बनाया और जमीन पर गिर पड़े। पहले दो बाणों के आपस में टकराते ही दोनों तरफ से एक-एक बाण और छोड़ दिया गया। वे भी आपस में टकराकर जमीन पर गिरे। इस तरह नौ बार बाण छोड़े गए और नो के नौ बार वे एक-दूसरे से टकरा कर गिरे। ई के पास अब को ई बाण नहीं बचा था। उसे अपने सामने फंग मंग खड़ा दिखाई दिया, जो उसकी गर्दन पर धनुष से निशाना साध रहा था।

"अच्छा, तो तुम हो।' ई ने मन-ही-मन सोचा। "मैं तो समझा था कि तुम आजकल सागर के किनारे मछलियाँ पकड़ रहे होगे। मुझे क्या मालूम कि यहाँ काली करतूतों में लगे हो। अब समझा कि वह बुढ़िया ऐसी बातें क्यों कर रही थी।..."

पल भर में फंग मंग का धनुष पूर्ण चंद्रमा की तरह खिंच गया और सनसनता हुआ बाण ई की गर्दन की तरफ बढ़ने लगा। पर निशाना चूक गया

और तीर गर्दन के बदले मुँह में जा लगा। ई ने कलाबाजी खाई, बाण को मुँह में दबा लिया और जमीन पर गिर पड़ा। उसका घोड़ा निश्चल खड़ा रहा।

यह सोचकर कि ई मर चुका है, फंग मंग पंजे के बल पर चलता हुआ धीरे-धीरे उसके करीब जा पहुँचा। विजय के उन्माद में मुस्काते हुए उसने ई की लाश पर नजर डाली।

फंग मंग अभी उसे गौर से देख ही रहा था कि ई ने आँखें खोल दीं और उठ बैठा।

"सैकड़ों बार मेरे पास आकर शिक्षा लेने के बाद भी तुम कुछ नहीं सीख पाए।" उसने बाण मुँह से निकाल लिया और हँस पड़ा। "क्या तुम नहीं जानते कि मैं 'बाण को चबा जाने' की कला में कितना माहिर हूँ? बड़े अफसोस की बात हैं ये चालें तुम्हें कहीं नहीं ले जाएँगी। भला अपने ही उस्ताद के बताए दांवपेचों से तुम उसी को कैसे पछाड़ सकते हो ? कुछ अपने दाँवपेंच भी तो दिखाओ।"

"मैं तो 'मियाँ की जूती मियाँ के सिर" वाली कहावत चरितार्थ कर रहा था।..." विजेता धनुर्धारी बुदबुदाया।

ई उठ खड़ा हुआ और जोर से हँस पड़ा। "तुम हमेशा किसी-न-किसी कहावत का सहारा ले लेते हो। इससे कुछ बूढ़ियाँ भले ही प्रभावित हो जाएँ, किंतु मैं हर्गिज नहीं हो सकता। मैं हमेशा शिकार खेलता हूँ, तुम्हारी तरह राहजनी कभी नहीं करता।...."

झोले में पड़ी मुर्गी को सही-सलामत देखकर उसे संतोष हुआ और वह घोड़े पर सवार हो घर की तरफ चल पड़ा।

"तेरा नाश हो जाए।...." पीछे से गाली सुनाई दी।

"मैं नहीं समझता था कि यह इतनी नीचता दिखाएगा।... जरा-सी उम्र है, लेकिन अभी से गाली-गजौज सीख गया है। शायद इसीलिए वह बुढ़िया उसके चक्कर में आ गई।"

ई ने उदास होकर सिर हिलाया और आगे बढ़ गया।

(3)

कांओल्यांग के खेतों को पार करने तक रात हो चुकी थी। गहरे नीले आसमान में तारे छिटक आए थे और पश्चिम दिशा में शुक्रतारा अपूर्व चमक-दमक के साथ शोभायमान था। ई का घोड़ा खेतों के बीच मेड़ों से गुजर

रहा था। वह बेहद थक गया था, उसकी रफ्तार बहुत धीमी हो गई थी। भाग्यवश क्षितिज पर चंद्रमा ने अपना रुपहला प्रकाश बिखेर दिया।

"क्या मुसीबत है।" भूख के मोर ई पेट में चूहे कूद रहे थे ओर सब्र का बाँध टूट चुका था। "पेट पालने के लिए मैं जितना ज्यादा कठोर परश्रिम करता हूँ उतनी ही ज्यादा मुसीबतों का सामना मुझे करना पड़ता है। इस तरह मेरा कितना समय बरबाद होता है।" उसने रफ्तार तेज करने के लिए घोड़े को एड़ लगाई लेकिन घोड़ा ने सिर्फ पूँछ हिलाई और पहले की तरह धीरे-धीरे चलता रहा।

"इतनी देर हो गई है। छांग अ जरूर नाराज़ हो जाएगी," उसने सोचा। "वह गुस्से से लाल-पीली भी हो सकती है। शुक्र है, मैं उसे खुश करने के लिए एक मुर्गी ले जा रहा हूँ। उससे कह दूँगा, "श्रीमती जी, दो सौ ली का चक्कर लगाकर आया हूँ, तब कहीं यह मुर्गी मिली।" नहीं यह ठीक नहीं है, यह बहुत बढ़ा-चढ़ा कर कही बात मालूम होती है।"

शीघ्र ही सामने रोशनियाँ देख वह खुश हुआ और चिंता दूर हुई। घोड़ा बिना हाँके तेज दौड़ने लगा। हिम के समान श्वेत गोलाकार चंद्रमा उसके मार्ग को प्रकाशित कर रहा था और ठंडी-ठंछी हवा का स्पर्श चेहरे में एक नई ताजगी भर रहा था—उसे किसी बड़े आखेट से लौटने से भी ज्यादा आनंद अनुभव होने लगा।

कचरे के ढेर के पास पहुँचकर घोड़ा अपने आप रुक गया। ई ने एक नजर में समझ लिया कि कोई गड़बड़ है। पूरे घर में हंगामा मचा हुआ था। सिर्फ चाओ फू उसकी अनुवानी करने बाहर आया।

"क्या हुआ ? वांग शंग कहाँ है?" उसने पूछा।

"याओ परिवार के घर मालकिन को देखने गया है।"

"क्या कहा ? मालकिन याओ परिवार के यहाँ गई हैं ?" ई भौंचक्का रह गया और घोड़े से उतरना तक भूल गया।

"हाँ, मालिक।" चाओ ने लगाम और चाबुक संभाल ली।

ई घोड़े से उतर पड़ा और देहरी पार करके भीतर चला गया। एक क्षण सोचकर उसने फिर पूछा—

"कहीं मालकिन इंतजार करते-करते थक कर किसी रेस्तरां में तो नहीं चली गईं?"

"नहीं मालिक। मैंने तीनों रेस्तराँ देख लिए हैं। वहाँ नहीं हैं।"

ई विचारों में डूब गया। अंदर गया तो देखा तीनों दासियाँ बड़े कमरे के सामने घबराई खड़ी हैं। वह परेशान होकर चिल्लाया—

"यह क्या है ? तुम तीनों यहीं हो ? तुम्हारी मालकिन अकेली तो याओ परिवार के घर जाती नहीं।"

वे चुपचाप उसकी तरफ देखती रहीं। उन्होंने ई का धनुष, तरकश और मुर्गी वाला झोला उतार लिया। ई एक क्षण के लिए सशंकित हो उठा। कहीं गुस्से में आकर छांग अ ने आत्महत्या तो नहीं कर ली ? उसने न्वी-कंग को भेजकर चाओ फू को बुलवा लिया जिससे उसे पिछवाड़े के तालाब पर और पेड़ों में तलाश करने भेज सके। लेकिन जब अपने कमरे में पहुँचा तो मालूम हो गया कि उसका अनुमान गलत था। सारा कमरा अस्तव्यस्त पड़ा था। सन्दूक खुले हुए थे। पलंग के पीछे नजर डालते ही मालूम हो गया कि जेवरदान गायब है। उस पर जैसे घड़ों पानी पड़ गया। सोन-चाँदी, हीरे-मोती को उसे परवाह नहीं थी मगर पुजारी का दिया अमृत-रसायन भी तो उसी में था।

ई कमरे में दो बार इधर-उधर चक्कर लगा चुका तो दरवाजे पर वांग शंग दिखाई दिया।

"हुजूर, मालकिन याओ परिवार के यहाँ नहीं हैं। आज वहाँ माच्यांग का खेल नहीं हो रहा।"

ई ने उसकी तरफ देखा, मगर बोला कुछ नहीं। वांग शंग चला गया।

"हुजूर, क्या आपने मुझे याद किया है ?" चाओ फू ने अंदर आकर पूछा।

ई ने सिर हिलाकर मना कर दिया और इशारे से उसे बाहर भेज दिया।

वह लगातार कमरे में चक्कर लगाता रहा। कुछ देर बाद बड़े कमरे में जाकर वहाँ बैठ गया। सामने की दीवार पर नजर गई तो सिंदूरी धुनष-वाण, काला धनुष-बाण, कलदार धनुष, तलवार, कटार सभी शस्त्र दिखाई दिए। कुछ देर सोचने के बाद वह काठ की मूरत की तरह खड़ी दासियों से बोला—

"तुम्हारी मालकिन कब से लापता है ?"

"जब मैं चिराग लेकर अंदर आई तो यहाँ नहीं थीं," न्वी-ई बोली। "लेकिन उन्हें बाहर जाते किसी ने नहीं देखा।"

"क्या तुमने उन्हें उस संदूक से कोई औषधि निकालते देखा था?"

"नहीं मालिक। हाँ, आज तीसरे पहर उन्होंने मुझसे पानी जरूर माँगा था।"

ई व्याकुल होकर उठ खड़ा हुआ। उसे संदेह हुआ हो-न-हो छांग अ उसे इस दुनिया में अकेला छोड़कर चली गई है।

"क्या तुमने कोई चीज आसमान की तरफ उड़ती देखी ?" उसने पूछा।

"हाँ, हाँ।" न्वी-शिन जैसे कुछ याद करने लगी हो। "जब मैं चिराग जलाकर बाहर आ रही थी तो देखा एक काली-सी छाया यहाँ से ऊपर की तरफ उड़ रही है। मैं सोच भी नहीं सकती थी कि मालकिन होंगी।...." उसका चेहरा पीला पड़ गया।

"जरूर वही होंगी।" ई ने जोर से घुटने पर हाथ मारा और उछल पड़ा। कमरे से बाहर निकल कर न्वी-शिन से बोला, "छाया किस तरफ गई थी?"

न्वी-शिन ने उँगली के इशारे से दिशा बताई। लेकिन उस ओर के आकाश में तो हिम के समान श्वेत गोलाकार चन्द्रमा लटक रहा था, उसके अंदर धुँधले मंडपों व वृक्षों के सिवाय कहीं कुछ नहीं दिखाई दे रहा था। जब ई छोटा था तो दादी ने चंद्रमा के अनुपम प्राकृतिक सौन्दर्य के बारे में उसे बहुत-सी बातें बताई थीं। उनकी धुँधली-सी याद मस्तिष्क में आज भी बनी हुई थी। नीले सागर में तैरते चंद्रमा का सौन्दर्य देखकर उसे अपने हाथ-पाँव बोझिल महसूस होने लगे।

उसका चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। क्रोध में किसी को मार गिराने के लिए बेचैन हो उठा। सिर से बाहर निकलती आँखों से गरज कर दासियों को आदेश दिया—

"मेरा धनुष लाओ। वह धनुष जिसने मैंने अनेक सूर्यों को मार गिराया था। साथ में तीन बाण भी।"

न्वी-ई और न्वी-कंग ने बड़े कमरे के बीच की दीवार से एक विशाल धनुष उतार लिया, उसकी धूल झाड़ी और तीन लंबे बाणों के साथ उसे ई के हाथ में दे दिया।

एक हाथ में धनुष उठाकर उसने दूसरे हाथ से तीनों बाण प्रत्यंचा पर चढ़ा लिया और चंद्रमा की तरफ निशाना साधकर भरपूर शक्ति से डोर खींची। वह चट्टान की तरह मजबूती से खड़ा था, आँखों से अंगारे बरस रहे थे, सिर और दाढ़ी के बाल आग की लपटों के समान हवा में उड़ रहे थे। एक क्षण के लिए वह फिर वही धनुर्विद्या में पारंगत वीर लगने लगा जिसने आज से काफी

पहले अनेक सूर्यों को मार गिराया था।

केवल एक सरसराहट हुई। एक-एक करके तीनों बाण छूटे। रफ्तार इतनी तेज थी कि उन्हें देखना या उनकी आवाज सुनना असंभव था। वैसे तीनों बाणों को चंद्रमा के एक ही स्थल पर घुसना चाहिए था क्योंकि तीनों ठीक एक-दूसरे के पीछे छोड़े गए थे और उनमें बाल भर का भी अंतर नहीं था। लेकिन बाण निशाने पर शर्तिया वार करें इस ख्याल से उसने तीनों बाणों की दिशा में मामूली-सी फर्क कर दिया था, ताकि तीनों बाण चंद्रमा के तीन अलग-अलग स्थलों पर लगकर तीन घाव कर दें।

सहसा दासियाँ चीख पड़ीं। उन्होंने देखा चंद्रमा लड़खड़ा रहा है, उन्हें लगा वह जरूर नीचे गिर जाएगा—लेकिन चंद्रमा बिलकुल सही सलामत शांति से आसमान में टिका रहा और पहले से भी ज्यादा शीतल और उज्ज्वल प्रकाश बिखेरता रहा।

ई ने अपना सिर उठाकर आसमान की तरफ देखा और चंद्रमा को ललकारा। कुछ देर प्रतीक्षा करता रहा। लेकिन चंद्रमा पर कोई असर न हुआ। ई ने तीन कदम आगे बढ़ाए, तो चंद्रमा तीन कदम पीछे हट गया। ई तीन कदम पीछे हटा तो चंद्रमा तीन कदम आगे बढ़ गया।

दोनों चुपचाप एक-दूसरे को देखते रहे।

हताश होकर ई ने अपना धनुष बड़े कमरे की दीवार के सहारे खड़ा कर दिया और स्वयं अंदर चला गया। दासियाँ उसके पीछे-पीछे अंदर जा पहुँचीं।

वह बैठ गया। मुँह से एक आह निकली। "तुम्हारी मालकिन अकेली ही हमेशा-हमेशा के लिए चली गई हैं। वह सुख-चैन से रहेंगी। मुझे यहाँ छोड़कर वह अकेली ही क्यों चली गई ? क्यों मुझे बहुत बूढ़ा समझती थीं? लेकिन अभी पिछले ही महीने तो उन्होंने कहा था, "तुम बूढ़े नहीं हो। खुद को बूढ़ा समझना मानसिक कमजोरी की निशानी है।..."

"कारण यह नहीं है," न्वी-ई बोली। "लोग आपको अब भी वीर योद्धा समझते हैं, सरकार।"

"कभी-कभी आप सचमुच एक कलाकार की तरह लगते हैं," न्वी-शिव बोल पड़ी।

"यह सब फिजूल की बात है। असलियत यह है कि सेवैयाँ और कौवे की चटनी उनसे खाई नहीं गई। इसके लिए मैं उन्हें दोषी नहीं समझता।..."

"चीते की खाल एक तरफ से बिलकुल घिस गई है। दीवार की तरफ

वाली टाँग का हिस्सा काटकर इसे ठीक कर दूँगी। फिर यह अच्छी लगने लगेगी।" यह कहती हुई न्वी-शिन अंदर की तरफ जाने लगी।

"ठहरो।" ई ने कुछ सोचकर कहा। "इसकी अभी क्या जल्दी है। मैं भूखा हूँ। पहले मेरे लिए फौरन मुर्गी का माँस, मिर्च की चटनी और काफी सारी रोटियाँ बना लाओ। इसके बाद मैं सोऊँआ। कल पुजारी के पास जाकर एक और अमृत-रसायन माँग लाऊँगा ताकि छांग अ के पीछे-पीछे मैं भी चन्द्रलोक में पहुँच जाऊँ। न्वी-कंग, तुम वांग शंग से कह दो कि घोड़े के सामने चार बाल्टी दाना डाल दे।"

❐

अनोखी तलवार

(1)

मेइ च्येन छी सो जाने के लिए माँ की बगल में लेटा ही था कि चूहे आकर नाँद पर रखे लकड़ी के ढक्कन को कुतरने लगे। उस आवाज से वह परेशान हो गया। उसने चूहों को भगाने के लिए जो धीमी आवाजें निकालीं, पहले तो उनका कुछ असर हुआ, लेकिन बाद में वे उन्हें अनसुना करके ढक्कन को मजे में काटने-कुतरने लगे। वह उन्हें डराने के लिए जोर से आहट भी नहीं करना चाहता था क्योंकि माँ जग सकती थी। माँ दिन भर की मेहनत से निढाल हो तकिये पर सिर रखते ही गहरी नींद में सो गयी थी।

काफी देर की खटपट के बाद सन्नाटा छा गया। उसे झपकी आ रही थी कि जोर के छपाके से अचानक उसकी आँखें खुल गयीं। उसे मिट्टी के बर्तनों पर पंजों की खरोंच का शब्द सुनायी दिया।

"अच्छा! तुझे अभी देखता हूँ।" वह मन-ही-मन खुश हो चुपचाप उठ बैठा।

वह चारपाई से उतरा और चाँदनी में रास्ता खोजता दरवाजे तक गया। किवाड़ों के पीछे रखी माचिस उठाकर चीड़ की लकड़ी जलाकर उसने नाँद पर रोशनी डाली। उसका शक ठीक निकला। एक मोटा चूहा नाँद में गिर पड़ा था। नाँद में पानी कम था, इसलिए चूहा निकल नहीं पा रहा था। नाँद के साथ-साथ पानी में चक्कर लगा-लगा कर पंजों से ऊपर चढ़ने का यत्न कर रहा था।

"अब मजा करो!" मेई बहुत प्रसन्न था। हर रात कमबख्त चूहे घर की चीजें कुतर-कुतर कर, खटपट कर उसकी नींद खराब किया करते थे। मेई ने मशाल कोठरी की कच्ची दीवार पर एक छेद में अड़ा दी और नाँद में पड़े चूहे का तमाशा देखने लगा। चूहे की काले मनकों जैसी आँखें देख उसे बहुत झुँझलाहट हुई, उसने एक लकड़ी से चूहे को दबाकर पानी में डुबो दिया। मेइ

ने लकड़ी हटाई तो चूहा फिर किनारे-किनारे तैर कर ऊपर चढ़ सकने के लिए पंजों से नाँद खुरचने लगा लेकिन अब उसकी शक्ति क्षीण हो चुकी थी। उसका सिर पानी में डूबा हुआ था और पानी के ऊपर उसकी लाल थथुनी ही दिखाई दे रही थी। दम घुटने के कारण वह बार-बार छींक रहा था।

मेइ को कुछ दिनों से लाल नाक वाले आदमियों से चिढ़ हो गई थी परंतु चूहे की नन्हीं-सी तीखी लाल नाक देखकर उसे दया आ गई। उसने लकड़ी चूहे के पेट के नीचे कर दी। चूहे ने लकड़ी पकड़ ली, पल भर साँस ली और फिर लकड़ी पर चढ़ आया। लेकिन उसके शरीर, उसके काले भींगे रोंये, पानी से फूला पेट केंचुए-सी पूँछ देखकर मेइ को बहुत घिन लगी। उसने लकड़ी को जोर से झटका दिया। चूहा छप से फिर पानी में गिर पड़ा। मेइ ने लकड़ी को बार-बार चूहे के सिर पर मारा कि वह डूबकर मर जाए।

मेइ और चूहे का संघर्ष बहुत देर तक चलता रहा। रोशनी के लिए उसने छह बार चीड़ की लकड़ी की नई मशाल जलाई। थका हुआ चूहा अधडूबा-सा नाँद के बीचो-बीच तैर रहा था और कभी-कभी उसका शरीर ऊपर आने को जोर मारता था। मेइ को फिर दया आ गई। उसने लकड़ी को तोड़कर दो टुकड़े कर लिए और बहुत यत्न से चूहे को पानी में से निकाल कर धरती पर रख दिया। चूहा कुछ देर निश्चल पड़ा रहा, फिर साँस लेने के लिए हिलता-सा जान पड़ा। बहुत देर वैसे ही रहा, फिर उसने चारों पैर हिले और वह पाँवों पर खड़ा हो गया, मानो उठकर भाग जाना चाहता हो। मेइ का मन फिर बदल गया उसने सहसा अपना पाँव उठाकर जोर से चूहे पर पटक दिया। 'पच्च' की सी आवाज हुई। मेइ ने बैठ कर देखा तो चूहे के मुँह से खून निकल आया था—शायद मर गया होगा।

मेइ को दुख और ग्लानि अनुभव हुई, जैसे कोई पाप कर बैठा हो। वह चूहे की ओर देखता वैसे ही बैठा रहा, उठ नहीं पा रहा था।

माँ की आँख खुल गई थी।

"क्या कर रहा है बेटा।" माँ ने लेटे-लेटे पूछा।

"चूहा..." मेई झटके से उठकर खड़ा हो गया और माँ की तरफ मुँह करके कहा।

"हाँ, हाँ चूहा तो है। लेकिन तू वहाँ क्या कर रहा है ? उसे मार रहा है कि बचा रहा है ?"

मेइ चुप रहा। चीड़ की मशाल बुझ गई थी। लड़का अँधेरे में चुप खड़ा

था और चाँदनी में कमरे के भीतर आँखें फाड़-फाड़ कर देख पाने की कोशिश कर रहा था।

माँ ने एक आह भरी और बोली—

"आधी रात के बाद तू सोलह साल का हो जाएगा। लेकिन अब भी तेरा दिल कितना कमजोर है। तुम बदले नहीं। ऐसे में तेरे पिता का बदला कौन लेगा ?"

चाँदनी के धुँधले प्रकाश में खाट पर बैठी माँ का शरीर काँपता-सा जान पड़ रहा था। बुढ़िया के धीमे स्वर की अनंत पीड़ा से मेई सिहर उठा। क्षण भर में उसका रक्त खौल उठा।

"पिता का बदला ? किस बात के लिए बदला ?" मेइ ने माँ के नजदीक आकर विस्मय से पूछा।

"हाँ, बदला लेना होगा। और तुझे ही लेना होगा। बहुत दिनों से तुझे बताना चाहती थी पर तू अभी बच्चा था, इसलिए कुछ नहीं कहा। अब तू बच्चा थोड़े ही है, फिर भी बच्चों जैसी बातें करता है। मैं क्या करूँ? तेरे जैसा लड़का क्या जवान मर्द का काम कर पाएगा ?"

"क्यों नहीं करूँगा, माँ। तुम बताओ तो। मैं सब कुछ कर सकता हूँ।"

"मैं तो मुझे सिर्फ बता ही सकती हूँ। करना तो तुझे ही होगा।... अच्छा, यहाँ आकर बैठ।"

मेइ माँ के पास चला गया। खाट पर माँ सीधी बैठी थी, बाहर की चाँदनी के प्रकाश के प्रतिबिम्ब में उसकी आँखें चमक रही थीं।

"सुन," माँ का स्वर गंभीर हो गया। "तेरे पिता तलवार गढ़ने के लिए प्रसिद्ध थे, सारे मुल्क में बेजोड़। अपना पेट पालने के लिए मैंने तेरे पिता द्वारा छोड़े हुए औजार बेच डाले। अब तुझे क्या दिखाऊँ? दुनिया में उनके बराबर का तलवार गढ़नेवाला कोई नहीं था। बीस साल पहले की बात है। राजा की रखैल ने लोहे का टुकड़ा जना। लोग कहते थे कि रखैल ने लोहे के खंभे का आलिंगन किया था, उसी से उसे गर्भ हो गया था। लोहा क्या था, बिलकुल पारदर्शी। महाराज उस लोहे की कदर जानते थे और उन्होंने ठान लिया कि उस लोहे की तलवार बनवाएँगे—ऐसी तलवार जिससे राजा अपने राज्य की रक्षा कर सके, शत्रुओं का खात्मा कर सके और स्वयं अपनी रक्षा कर सके। बदकिस्मती की बात, महाराज ने तेरे पिता को लोहे की तलवार गढ़ने का काम सौंपा। तेरे पिता लोहा घर ले गए। तीन बरस तक उस लोहे को तपा-तपा कर गढ़ते रहे और दो

तलवारें तैयार कर लीं।"

"जिस दिन तेरे पिता ने तलवारों को आखिरी बार तपाने के लिए भट्ठी सुलगाई तो बड़े अचरज की बात हुई। भट्ठी से सफेद-सफेद भाप बहुत जोर से उठकर आसमान तक पहुँच गई और धरती डोल गई। सफेद भाप का एक बादल बन गया और थोड़ी ही देर में वह बादल लाल-सुर्ख हो गया जिसके लाल-लाल प्रकाश में सब चीजें लाल-गुलाबी हो गई। कोयलों से भरी काली भट्ठी में दोनों तलवारें भी तप कर लाल-सुर्ख हो गयी थीं। तेरे पिता कुएँ से शुद्ध जल लाकर तलवारों पर हल्के-हल्के छींटे देने लगे तो तलवारें जोर-जोर से फुँफकारने लगीं और धीरे-धीरे नीली पड़ गईं। तेरे पिता सात दिन और सात रात तलवारों पर पानी चढ़ाते रहे। सात दिन बाद भट्ठी में धरी तलवार लुप्त हो गई। कोई बहुत ध्यान से भट्ठी में नजर टिकाकर देखता तो दो लंबे-लंबे महीने काँच के फलक से दिखाई देते थे।"

"तेरे पिता की आँखें प्रसन्नता और संतोष से दमक रही रही थीं। उस दिन तलवारें भट्टी से निकाल लीं और उनकी गढ़ाई करने लगे। जाने क्यों तेरे पिता के माथे पर चिंता झलक आती थी। उन्होंने दोनों तलवारें दो पेटियों में रख कर बंद कर दीं।"

"तेरे पिता ने मेरे कान में धीमे से कहा, "तू जानती है, दुनिया जान गई है कि तलवारें बन गई हैं। कल महाराज के यहाँ एक तलवार देने जाऊँगा। महाराज को तलवार देने का दिन ही मेरा अंतिम दिन होगा। मुझे डर है कि मैं शायद लौटकर नहीं आ पाऊँगा।"

"मैं तो बहुत डर गई। तेरे पिता की बात कुछ समझ में नहीं आ पाई सो क्या जवाब देती। केवल इतना कह पाई, "तलवारें तो ऐसी बनी हैं कि कोई क्या बनाएगा।"

"अरे, तू बहुत भोली है, कुछ नहीं समझती" तेरे पिता ने कहा। "तू जानती है, राजा कैसा शक्की और निर्दयी है ? उसे सदा दुश्मनों का डर रहता है। उसके लिए मैंने ऐसी तलवार गढ़ दी है कि जिसका दुनिया में जवाब नहीं। वह जरूर मेरी गर्दन कटवा देगा जिससे उसकी तलवार के मुकाबले की दूसरी तलवार मैं और किसी के लिए न गढ़ सकूँ।"

"मैं रोने लगी।"

"तू काहे को रोती है। तेरे रोने से क्या होगा ?" तेरे पिता ने कहा, "जो भाग्य में लिखा है, वही होगा। होनी को कोई टाल नहीं सकता। मैं तो

जानता था, यह होने को है। सो उपाय भी कर लिया है।" तेरे पिता की आँखों से चिनगारी फूट निकली जैसे ही उन्होंने पेटी में रखी दूसरी तलवार मेरी गोद में रखी। बोले, "एक नर-तलवार तुझे दे रहा हूँ। इसे संभाल कर रखना। कल मादा-तलवार राजा के यहाँ देने जाऊँगा। मैं लौट कर नहीं आया तो जान लेना कि मैं मार दिया गया हूँ। चार-पाँच महीने में तेरे पेट से बाल-बच्चा होगा। तू मेरे लिए रोती मत रहना। बच्चे को होशियारी से पालना। जब बेटा जवान हो जाय, तो यह नर-तलवार उसे देकर कहना कि जा और राजा का सिर काट कर मेरा बदला ले।"

"क्या पिता उस दिन वापस लौटे ?" मेइ ने उत्सुकता से पूछा।

"नहीं, कभी नहीं लौटे, " माँ ने धैर्य से उत्तर दिया। "तेरे पिता को सब जगह खोजती फिरी, कहीं कुछ पता नहीं लगा। फिर खबर मिली कि तेरे पिता की गढ़ी तलवार ने सबसे पहले तेरे पिता का ही खून पिया। राजा को भय था कि तेरे पिता प्रेत बनकर महलों में उत्पात न मचाएँ इसलिए हुक्म दे दिया कि उनका धड़ सामने के फाटक पर दफनाया जाए और सिर महलों के पिछलवाड़े बाग में गाड़ा जाय।"

मेइ च्येन छी की रगों में बिजली-सी दौड़ गई। उसे लगा उसके रोएँ-रोएँ से चिनागरियाँ उड़ रही हैं। अँधेरे में लड़के ने इतनी जोर से मुट्ठियाँ भींचीं मानो अपनी उँगलियों को चूर-चूर कर लेगा।

माँ खाट से उठी और उसने खाट के सिरहाने पड़ा तख्ता खींच कर हटा दिया। एक मशाल जला दी। फिर किवाड़ों के पीछे से कुदाली उठा कर लड़के के हाथ में दे दी ओर बोली, "यहाँ खोद डाल।"

मेइ का दिल धड़क रहा था फिर भी वह धैर्य से लगातार खोदता गया। गड्ढे से पीली मिट्टी निकाल कर एक ओर डालता जा रहा था। कोई पाँच फुट गहरा खोद चुका तो मिट्टी का रंग बदल गया। उसमें गले हुए काठ के टुकड़े भी थे।

"देखकर, अब होशियारी से खोदना," माँ ने जोर से कहा।

मेइ गड्ढे में झुक कर बहुत सावधानी से सड़ी-गली लकड़ी निकालता जा रहा था कि सहसा उँगलियों में किसी बहुत ठंडी बर्फ जैसी चीज़ का स्पर्श अनुभव हुआ। यही स्फटिक की तरह चमचमाती तलवार थी। मेइ ने तलवार की मूठ पकड़ कर उसे उठा लिया।

तलवार के बाहर आते ही अचानक आकाश में चमकते चाँद-सितारों

और कोठरी में जलती मशाल की रोशनी फीकी पड़ गई। चारों ओर चमचमाते फौलाद का नीला प्रकाश फैल गया। इस नीले प्रकाश में देखते-देखते तलवार पिघल कर लुप्त हो गई। नौजवान ने आँखें मल कर ध्यान से देखा तो साढ़े तीन फुट लंबी कोई चीज उसके हाथ में थी। तलवार की तेज धार नहीं दिखाई दे रही थी, मानो धार मुड़ कर छड़ी बन गई हो।

"तब तू अपना दयाभाव छोड़ दे," माँ बोली। "तलवार उठा और जाकर अपने पिता का बदला ले।"

"मेरे अंदर अब दयाभाव कहाँ है माँ? इस तलवार से पिता का बदला अवश्य लूँगा।"

"तुमसे यही आशा थी। तू नीले रंग का कोट पहन ले और तलवार पीठ पर बाँध ले। तेरा कोट उसी रंग का रहेगा तो तलवार छिपी रहेगी। तेरे लिए नीला कोट पहले से ही सिला रखा है। संदूक में से निकाल ले।" माँ ने खटिया के सिरहाने पड़े टूटे संदूक की ओर इशारा किया, "सुबह तू अपने रास्ते चल देना। मेरी चिंता मत करना।"

मेइ ने संदूक से कोट निकाला और पहनकर देखा। वह उसके बदन पर खूब सज रहा था। फिर उसने कोट उतारकर उसमें तलवार लपेटकर सिरहाने रख ली और चुपचाप लेट गया। उसे जान पड़ा कि उसके शरीर में अद्भुत शक्ति समा गई है। सोचा, अभी मन की सब चिंता दूर कर सो जाऊँ, सुबह स्वस्थ तरोताजा उठकर बदला देने के लिए पिता के हत्यारे की खोज में चल दूँगा।

मेइ को नींद नहीं आ सकी। बार-बार करवटें लेता रहा। मन चाहता था कि उठकर बैठ जाय। माँ की गहरी लंबी साँसें और आहें बार-बार सुनाई दे जाती थीं। मुर्गे की पहली बाँग सुनाई दी तो मेइ ने समझ लिया कि दिन चढ़नेवाला है और वह सोलह वर्ष का जवान हो गया है।

(2)

रतजगे से सुर्ख सूजी आँखों से वह बिना पीछे देखे घर से निकला। शरीर पर नीले रंग का लंबा कोट पहने और पीठ पर तलवार बाँधे मेइ तेज चाल से नगर की ओर चला जा रहा था। अभी तक पूरब में रोशनी नहीं हुई थी। निशा की वायु अभी वनों में देवदार की पत्तियों पर टिकी ओस के नीचे विश्राम कर रही थी। मेइ जब वन के दूसरे छोर पर पहुँचा तो पूर्व में उषा झाँकने लगी

थी और पेड़-पौधों पर अटकी ओस सूर्य की किरणों के स्पर्श से उज्ज्वल हो चमकने लगी थी। दूर, बहुत दूर उसके सामने नगर की काली-भूरी ऊँची-ऊँची दीवारें कुहासे में लिपटी दिखाई देने लगी थीं।

नगर के द्वार पर मेइ ने साग-तरकारी बेचने आनेवालों की भीड़ में मिल कर नगर में प्रवेश किया। बाजारों में कारोबार की चहल-पहल और शोर था। जहाँ-तहाँ निठल्ले लोग गोल बाँधे बातचीत भी कर रहे थे। जब-तब किवाड़ों के पीछे से स्त्रियाँ झाँक लेती थीं। उनकी आँखों में अभी नींद भरी थी, केश बिखरे हुए थे, सिंगार न कर पाने से उनके चेहरे पाउडर-सुर्खी के बिना बिलकुल पीले, मुरझाए हुए लग रहे थे।

मेइ च्येन छी को लग रहा था कि कोई बहुत बड़ी घटना घटने वाली है और लोग उत्सुकता और धैर्य से उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

मेइ कदम बढ़ता चला जा रहा था कि एक बच्चा भागता हुआ उसके कपड़ों में छिपी तलवार की नोक से बाल-बाल बच गया। मेइ का शरीर पसीना-पसीना हो गया। महल के समीप उत्तर की ओर घूमा तो बाजार में लोगों की भीड़ दिखाई दी जो गर्दनें उठा-उठाकर सड़क की ओर निगाहें लगाए थी। भीड़ में स्त्रियों और बच्चों की चीख पुकार सुनाई दे रही थी। मेइ भीड़ में जाने से कतरा रहा था कि कोई उसकी तलवार से न बिंध जाए, परंतु उसके पीछे से लोग धक्का देते बढ़ते चले आ रहे थे। मेइ बच-बच कर उन्हें रास्ता देता जा रहा था। उसके सामने लोगों की पीठें ही पीठें थीं। लोग उचक-उचक कर, गर्दनें उठा-उठाकर सड़क की ओर निगाहें लगाए थे।

मेइ ने देखा, उसके सामने खड़े लोग एक के बाद एक अपने घुटनों के बल बैठ गए हैं। सड़क पर दूर दिखाई दिया, दो घुड़सवार सरपट चले आ रहे हैं घुड़सवारों के पीछे बर्छे, भाले, तलवारें और तीर-कमान लिए सिपाही झंडे उठाए आ रहे थे। सिपाहियों के कदमों से उड़ती धूल आकाश में चढ़ती जा रही थी। सिपाहियों के पीछे चार घोड़े वाली बहुत बड़ी गाड़ी थी जिसमें बाजा बजाने वाले लोग थे जो घंटे-घड़ियाल, ढोल-नगाड़े, शहनाइयाँ और तुरहियाँ बजाते चल रहे थे। बाजे वालों के पीछे भड़कीले कपड़े पहने दरबारियों की सवारियाँ चली आ ही थीं। वे या तो बूढ़े थे या मोटी तोंद वाले लोग थे और उनके चेहरे पसीने से चमक रहे थे। दरबारियों के पीछे फिर नेजों, तलवारों और फरसों से लैस सवारो का दल था। अभिवादन के लिए झुके लोग धरती पर लेट-लेट कर दंडवत करने लगे तो मेइ च्येन छी ने देखा कि एक बहुत बड़ा रथ, पीले सयावान से

ढका हुआ चला आ रहा था। रथ के बीचों बीच चमचमाती पोशाक पहने एक मोटा आदमी बैठा था जिसका सिर छोटा था और मूँछों के बाल खिचड़ी थे। कमर में तलवार थी, ठीक वैसी ही जैसी मेइ अपने कपड़ों में पीठ पर छिपाए था।

मेइ का शरीर सिहरन से काँप उठा, फिर उसके हृदय में भयंकर ज्वाला भभक उठी। उसका हाथ कपड़ों में छिपी तलवार की मूठ पर चला गया और वह अभिवादन में झुके लोगों की भीड़ को चीर कर आगे बढ़ने लगा।

मेइ सड़क की ओर पाँच-छह कदम ही बढ़ पाया था कि किसी ने उसे लँगड़ी लगाकर गिरा दिया और वह एक कमजोर सिकुड़े से नौजवान के ऊपर गिर पड़ा। मेइ घबराकर उठने की कोशिश कर रहा था कि उसके नीचे दबने वाला नौजवान कहीं तलवार की नोक से छिद न गया हो, कि दो घूँसे उसकी पसलियों पर पड़े। चोटों की परवाह न कर मेइ ने फिर सड़क की ओर आँखें उठाईं। परंतु तब तक पीले सायवान वाला रथ और रथ के पीछे सवारों का दल आगे जा चुके थे।

सड़क के दोनों ओर दंडवत करते लोग उठकर खड़े हो गए। मेइ के नीचे दबने वाले दुबले, बीमार-से नौजवान ने मेइ का गिरेबान पकड़ लिया और छोड़ नहीं रहा था। वह चीख-चीख कर दुहाई दे रहा था कि उसके कंधे में जरब आ गई है और अस्सी बरस की उम्र से पहले अगर उसकी मृत्यु हो गई तो मेइ को हर्जाना देना होगा। निठल्ले लोगों ने उन्हें घेर लिया और खड़े तमाशा देख रहे थे ओर कुछ लोग चोट खाए नौजवान की हिमाकत में मेइ को धमकाने और गालियाँ देने लगे। मेइ विचित्र परिस्थिति में उलझा समझ नहीं पा रहा था कि उनकी बातों पर हँस दे या जवाब में दो हाथ लगा दे। उनसे पिण्ड छुड़ाने का कोई उपाय सूझ नहीं रहा था। काफी देर तक यह सब चलता रहा। अब मेइ के लिए धीरज रखना संभव न रहा, परंतु तमाशाई उसे अब भी घेरे हुए थे।

मेइ को घेर पर खड़ी भीड़ में से रास्ता बनाकर एक साँवला-सा आदमी आया, जिसकी दाढ़ी के बाल काले थे, वैसी काली आँखें और लोहे जैसा सुता शरीर था। वह बोले बिना मेइ की ओर देखकर जरा मुस्कराया और फिर उसने दुबले, बीमार-से नौजवान के जबड़े पर एक हल्का-सा प्रहार किया और उसकी आँखों में घूर कर देखा। नौजवान ने भी घूर कर देखा, पल भर आँखें मिलाए रहा, फिर उसने मेइ का गिरेबान छोड़ दिया और चुपचाप भीड़ से निकल कर भाग गया। साँवला आदमी भी उसके पीछे-पीछे चला गया तो भीड़ तमाशा

समाप्त हो जाने से निराश हो बिखरने लगी। कुछ लोग मेइ से उसकी आयु और घरबार का पता पूछने लगे और यह भी पूछने लगे कि उसके घर में बहनें हैं कि नहीं। मेइ ने उनकी बातों पर कान नहीं दिया।

मेइ यह सोचकर दक्षिण की ओर चल पड़ा कि इतनी भीड़भाड़ और चहल-पहल में कोई आदमी उसकी तलवार से बिंध गया तो व्यर्थ में फँस जाएगा। बेहतर है कि वह नगर के दक्षिणी द्वार के बाहर राजा के लौटने की प्रतीक्षा करे। तभी पिता का बदला ले सकने का अवसर होगा। दक्षिणी द्वार के बाहर खुली जगह, भीड़भाड़ न होना मेइ के प्रयोजन के लिए उपयुक्त स्थान था। नगर में सभी ओर राजा की पर्वत-विहार यात्रा की चर्चा थी। लोग राजा की शान-शौकत और महाराज के सम्मान में किसने कितना लंबा दंडवत किया, कौन कितना अधिक राजभक्त और सभ्य नागरिक है। नगर इसी प्रकार के कोलाहल से गूँज रहा था। नगर के दक्षिणी द्वार पर ही कुछ शांति थी।

मेइ नगर से बाहर जाकर शहतूत के एक पेड़ के नीचे बैठ गया। वहाँ बैठे-बैठे उसने दो रोटियाँ खाईं। रोटी खा रहा था कि माँ की याद आ गई और उसका दिल भर आया। परंतु उसने अपने आप को सँभाल लिया। चारों ओर सन्नाटा बढ़ता जा रहा था। जिसमें मेइ को अपनी साँस की आवाज भी स्पष्ट सुनाई देने लगी।

सूर्यास्त हो गया तो मेइ की बेचैनी और बढ़ती गई। वह मार्ग पर दूर तक टकटकी बाँधे देख रहा था, परंतु राजा के लौटने का कोई चिह्न दिखाई नहीं दिया। साग-सब्जी बेचने के लिए शहर आने वाले देहाती लोग अपनी खाली टोकरियाँ लिए एक-एक कर लौटते दिखाई दे रहे थे।

जब गाँव के सब लोग लौट चुके, उसके काफी देर बाद वही साँवला-सा आदमी शहर से जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाता हुआ आया।

"भागो....भागो, मेइ च्येन छी भागो। राजा तुम्हें पकड़ना चाहता है, तुम्हें खोज रहा है।" उसका स्वर वन में बोलते उल्लू की तरह था।

मेइ एड़ी से चोटी तक काँप उठा। फिर मानो जादू के प्रभाव में साँवले आदमी के पीछे-पीछे सरपट भागा मानो पंख लग गए हों। मेइ जरा दम लेने को रुका तो देखा कि दोनों देवदार का जंगल लाँघ आए हैं। पीछे दूर क्षितिज पर उदय होते चंद्रमा की सुनहरी किरणें फैल रही थीं, परन्तु सामने मेइ को अपने साथी की छलावे जैसी चमकती आँखें ही दिखाई दे रही थीं।

"तुम मुझे कैसे जानते हो ?" मेइ ने आशंका और विस्मय से पूछा।

"मैं तुम्हें हमेशा से जानता हूँ," साँवला आदमी हँस दिया। "यह भी मालूम है कि तुम अपने कपड़ों में नर-तलवार छिपाए हो और अपने पिता का बदला लेने आए हो। यह भी जानता हूँ कि तुम्हें सफलता नहीं मिलेगी। इतना ही नहीं, आज किसी ने तुम्हारा भेद राजा को दे दिया है। तुम्हारा शत्रु बहुत देर पहले ही पूर्वी द्वार से महल पहुँच गया है और राजा ने तुम्हें पकड़कर लाने का हुक्म दे दिया है।"

मेइ च्येन छी का दिल डूबने लगा।

" ओह! माँ ने इसीलिए ठंढी साँस ली थी।" मेइ के मुँह से निकल गया।

"तुम्हारी माँ सब बातें नहीं जानती। उसे क्या मालूम कि मैं तुम्हारा बदला लूँगा।"

"आप ? आप मेरा बदला लेंगे? क्या आप दीनबंधु हैं?"

"नहीं, नहीं, ऐसा कहकर मेरा अपमान मत करो।"

"तो फिर आप अनाथों और विधवाओं से सहानुभूति से ऐसा करते हैं?"

"बेटा, इस निस्सार बना दिए गए शब्दों का प्रयोग मत करो।"

साँवला आदमी कठोर स्वर में बोला, "न्याय, सहानुभूति जैसे शब्दों में अब कोई सार नहीं रहा। अब अन्याय और लूटमार करने वालों ने इन शब्दों को अपना लिया है। ऐसे शब्दों के लिए मेरे दिल में कोई जगह नहीं। मुझे तो तुम्हारा बदला लेना है।"

"कृपा है आपकी, पर यह कैसे कर पाएँगे?"

"तुम्हें दो चीजें देनी होंगी," साँवले आदमी की आवाज आँखों की चिनगारियों के नीचे से निकल रही थी। "वे दो चीजें हैं, पहले तुम्हारी तलवार और दूसरे तुम्हारा सिर।"

मेइ को यह माँग कुछ अजीब-सी लगी। वह झिझका पर डरा नहीं। कुछ क्षण तक वह बोल नहीं पाया।

"यह मत समझना कि मैं तुम्हारी तलवार और तुम्हारे प्राण लेने के लिए तुम्हें धोखा दे रहा हूँ, "अँधेरे में साँवले आदमी का कठोर स्वर सुनाई दिया। "तुम सोच-विचार लो। तुम्हें मेरा विश्वास हो तो मैं आगे बढ़ूँगा। और विश्वास न हो तो रहने दो।"

"पर आप मेरा बदला क्यों क्यों लेना चाहते हैं ? क्या आप मेरे पिता

को जानते थे ?"

"तुहारे पिता को मैं शुरू से जानता था जैसे तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ। परन्तु कारण यह नहीं है। बेटा, तुम मेरी बदला लेने की शक्ति नहीं जानते। तुम्हार सुख-दुख मेरा सुख-दुख है। मेरी आत्मा ने दूसरों से और स्वयं अपने आप से इतने दुख पाए हैं कि अब मैं अपने से घृणा करने लगा हूँ।"

घने जंगल के अंधकार में इन शब्दों की गूँज समाप्त होते ही मेइ च्येन छी का हाथ अपने कपड़ों में छिपी तलवार की मूठ पर चला गया। एक ही हाथ के झटके में मेइ का सिर कट कर उसके पाँव के समीप गिर पड़ा और तलवार लिए मेइ का हाथ साँवले आदमी की ओर बढ़ गया।

"ओह!" साँवले आदमी के मुख से निकल गया। उसने एक हाथ में तलवार ले ली और दूसरे हाथ से केश पकड़ कर मेइ का सिर धरती से उठा लिया। उसने मेइ के मृत गर्म होठों को दो बार चूमा और ठंडे निर्मम स्वर में अट्टहास कर उठा।

उसके अट्टहास से पूरा वन गूँज उठा। तभी घने वन के घटाटोप अंधकार में अनेक आँखें अंगारों की भाँत चमक उठीं और इतनी समीप आ गईं कि भूखे भेड़ियों की गुर्राहट और फुँफकार सुनाई देने लगी। एक झपाटे में मेइ के शरीर पर से कपड़े उड़ गए, दूसरे ही क्षण उसका शरीर गायब हो गया और घास पर उसके रक्त का चिह्न भी नहीं रह गया। केवल दाँतों से हड्डियाँ चबाए जाने की धीमी-धीमी कुरकुराहट सुनाई दे रही थी।

भेड़ियों के झुण्ड का सरदार साँवले आदमी पर झपटा, परंतु नीली तलवार के एक ही वार में उसका सिर हरी घास पर उसके पैरों के पास गिर पड़ा। दूसरे भेड़िये अपने सरदार के धराशायी शरीर पर टूट पड़े और उन्होंने पल भर में उसकी खाल उधेड़ दी। दूसरे पल में उसके शरीर की बोटी-बोटी चट कर गए और उसके खून की एक-एक बूँद घास पर से चाट डाली। केवल दाँतों से हड्डियाँ चबाने का कुरमुर-कुरमुर शब्द सुनाई देता रहा।

साँवले आदमी ने घास पर पड़ा नीला कोट उठा लिया और मेइ च्येन छी का सिर उसमें लपेट लिया। तलवार पीठ पर बाँध कर वह वन में व्याप्त घने अंधकार को चीरता हुआ राजधानी की ओर चल पड़ा।

भेड़िये स्तब्ध खड़े थे। वे लाल-लाल जीभें लटकाए हाँफ रहे थे। अँधेरे में चमकती उनकी हरी आँखें तेजी से जीते साँवले आदमी की ओर लगी हुई थीं।

साँवला आदमी अँधेरे में राजधानी की ओर चला जा रहा था। वह ऊँचे

स्वर में गाने लगा—

गीत गाओ हैया हो, गीत गाओ हैया हो !
एक धनी तलवार का बाँका,
हँसते-हँसते सीस दे गया।
जो चलते हैं सदा अकेले
उनकी जग में नहीं कमी है।
आन खड्ग की निभा सकें जो,
एकाकी वे कभी न रहते।
बैरी के बदले बैरी, सिर के बदले सिर।
दो वीरों ने अपने हाथों भेट किया अपना सिर।

(5)

महाराज का पर्वत-विहार में कोई रस न आया। समाचार मिल गया था कि एक हत्यारा उनकी घात में घूम रहा है। इसलिए खिन्न मन वे महल की ओर लौट पड़े। उस रात उन्हें कुछ भी नहीं सुहा रहा था। उन्हें शिकायत थी कि नौवीं रखैल के बाल भी कल की तरह काले और चमकीले नहीं रहे। सौभाग्य से रखैल चतुर थी। साहस से महाराज की जाँघ पर बैठ गई और सत्तर से भी अधिक भंगिमाएँ दिखाकर अंततः उसने महाराज को रिझा ही लिया। शनै-शनै महाराज के महिमामय मस्तक पर तनी हुई भौंहें शिथिल हो गईं।

दूसरे दिन तीसरे पहर महाराज की नींद टूटी तो उसका चित्त और भी उद्विग्न था। भोजन कर चुकने पर उनकी खिन्नता और भी अधिक बढ़ गई।

महाराज बहुत जोर से जम्हाई लेकर गरज उठे, "हमारा मन बहुत उचाट है।"

महाराज का रंग-ढंग देखकर महारानी से लेकर दरबार के विदूषक तक सभी काँप उठे। कुछ समय से महाराज का मन बहुत खिन्न था। उन्हें अपने बूढ़े मंत्रियों का परामर्श, गोल-मटोल बौनों का हास-परिहास कुछ भी नहीं सुहाता था। डोरी पर नृत्य, बाँस के खेल, जादू के चमत्कार, नटों की उछल-कूद, तलवार निगलते और मुख से आग की लपटें उगलने के कौतुक से भी उनका विनोद नहीं हो पाया। बात-बात पर क्रोध में आपे से बाहर हो जाते और बहुत मामूली-सी बात पर भी दस-पाँच के सिर काट लेने की ख्वाहिश में तलवार खींच लेते।

राजमहल के दो कंचुकी सैर-सपाटे के लिए नगर में निकल गए थे। वे

लौटककर आए तो महल में चारों ओर छाये आतंक को देख समझ गए कि भारी विपदा आने वाली है। एक कंचुकी तो भय के मारे पीला हो गया। परंतु दूसरा साहसी था और कोई चिंता या भय प्रकट किए बिना वह धैर्य से महाराज के सामने चला गया और दंडवत् कर निवेदन किया :

"अन्नदाता, दास निवेदन करना चाहता है कि नगर में बहुत चमत्कारिक पुरुष आया है। अन्नदाता उसका कौशल देखकर प्रसन्न होंगे।"

"क्या ?" महाराज शब्दों के अपव्यय करना नहीं जानते थे।

"वह एक साँवला दुबला-पतला आदमी है, भिखमंगा-सा लगता है। नीले कपड़े पहने है, पीठ पर नीले रंग की छोटी-सी गठरी लिए है और हरदम बेतुके-से गीत गाता रहता है। कहता है बहुत चमत्कारी जादू जानता है। दुनिया में उसके जोड़ का खेल कोई दूसरा नहीं दिखा सकता है। कहता है कि जो उसका खेल देख लेगा जिंदगी में उसे कभी चिंता और उदासी नहीं सताएगी। खेल दिखाने की उसकी शर्त है : दो चीजें हों, एक सोने का ड्रैगन (चीन के सम्राट अपना बड़प्पन दिखाने के लिए अक्सर अपने आप को सोने का ड्रैगन कहते थे। चीन की पौराणिक कथाओं में ड्रैगन को पवित्र माना जाता है) और दूसरी सोने की बड़ी देग।..."

"सोने का ड्रैगन तो हम स्वयं हैं! और सोने की देग हमारे पास मौजूद है।"

"यही दास ने भी सोचा था।...."

"उसे लाया जाय।"

महाराज के मुख से आदेश सुनते ही चार सवार कंचुकी के साथ महल से दौड़ पड़े। महारानी से लेकर दरबार के विदूषक तक सभी की चिंता दूर हुई। सभी को आशा थी कि जादूगर महाराज की खिन्नता दूर कर संसार को निर्भय कर देगा। यदि जादूगर के चमत्कार से महाराज का मनोविनोद न भी हुआ तो दुबले-पतले भिखमंगे पर ही महाराज के क्रोध की बिजली गिरेगी। जादूगर के आने तक किसी तरह रक्षा हो जाय तो फिर चिंता नहीं।

अधिक समय नहीं लगा। दरबार में छह आदमी चले आते दिखाई दिए। सबसे आगे कंचुकी था, बीच में साँवले आदमी को लिए चार सवार। समीप आ जाने पर दिखाई दिया कि साँवला आदमी नीले रंग का कोट पहने था, उसके सिर, भौंहों और दाड़ी के बाल काले थे। चेहरा बहुत दुबला, आँखें धँसी हुई, गालों की हड्डियाँ निकली हुईं। उसने महाराज के सम्मुख साष्टांग दंडवत्

किया तो उसकी पीठ पर नीले रंग के कपड़े में बँधी गठरी दिखाई दे गई। गठरी के कपड़े पर लाल रंग का डिजाइन बना हुआ था।

"खेल दिखाओ।" महाराज ने उतावली में पुकारा। जादूगर के पास साज-सामान इतना मामूली था कि महाराज ने सोचा—वह क्या करतब दिखलाएगा।

"अन्नदाता, दास का नाम येन-ची-चाओ-च है। वनवन गाँव से आया हूँ। दास अजान-अपढ़ आदमी है लेकिन जवानी में एक पहुँचे हुए साधु-महात्मा ने बच्चे की खोपड़ी का जादू मुझे सिखा दिया। यह अकेले नहीं हो सकता, जादू तक हो सकता है जब सोने का ड्रैगन सामने रहे और सोने की बड़ी देग में कोयले की आँच पर गरम किया स्वच्छ जल हो। जब बच्चे का सिर देग में डालकर उबाला जाएगा तो सिर पानी में नाच दिखाएगा, भाँति-भाँति से नृत्य करेगा। वह सुरीले स्वर में हँसेगा और गाएगा। जो यह करतब देखेगा और यह गाना-बजाना सुनेगा, उसकी सारी चिंता मिट जाएगी। दुनिया के लोग यह देखेंगे-सुनेंगे तो जहान में अमन-चैन हो जाएगा।"

"शुरू करो।" महाराज ने कड़कती आवाज में हुक्म दिया।

पलक मारते ही सोने की एक बहुत देग सिंहासन के सामने आ गई, इतनी बड़ कि उसमें भैंसा समा जाए। देग पानी से भर दी गई और देग के नीचे कोयले में आग दे दी गई। साँवले जादूगर देग के समीप खड़ा था। जब कोयला दहक उठा तो जादूगर ने अपनी गठरी खोली और एक बच्चे का सिर निकाला। बच्चे का सिर दोनों हाथों में लेकर उसने ऊपर उठाकर दिखाया। बच्चे के माथे पर महीन-महीन भौहें थीं, बड़ी-बड़ी आँखें, मोती-से सफेद दाँत, लाल-लाल होंठ और चेहरे पर मुस्कान झलक रही थी। सिर पर भरे-सुनहरे घुँघराले केश। साँवले जादूगर ने बाँह ऊँची उठाकर चारो ओर बैठे लोगों को बच्चे का सिर दिखा दिया। उसने सिर का देग के ऊपर थामकर फुसफुसाकर कुछ कहा और छप्प से सिर को पानी में छोड़ दिया। देग के मुँह से पाँच फुट ऊँची फेन उठी और फिर पानी शांत हो गया।

बहुत देर तक कोई चमत्कार दिखाई नहीं दिया। महाराज प्रतीक्षा में ऊबने लगे। महारानी, हाराज की रखैलें, मंत्री और कंचुकी सब डरने लगे और गोल-मटोल बौने साँवले जादूगर की ओर देखकर तिरस्कार से मुस्कुराने लगे। महाराज ने यह देखा तो उन्हें जादूगर की गुस्ताखी पर क्रोध आ गया। अंगरक्षकों को आदेश देना चाहते थे कि महाराज के सामने ऐसी घृष्टता करने वाले मूर्ख आदमी को उठाकर देग में डाल दिया जाए और उबाल कर मार दिया जाय।

उसी समय देग के पानी में बुलबुले फूटने लगे। देग के नीचे चटक-चटक कर दहकते कोयलों का लाल प्रकाश चारों ओर फैलने लगा जिससे समीप खड़ा साँवला जादूगर लोग की ताजा ढली मूर्ति जैसा लगने लगा। महाराज की दृष्टि उस ओर गई। साँवे जादूगर ने दोनों बाहें उठाकर आकाश की ओर देखा और सहसा नाचते हुए ऊँचे स्वर में गाने लगा—

गाओ रे गाओ, प्रेम के गीत,
गाओ रे प्रेम के गीत !
हाय प्रेम की प्यास! हाय रक्त की प्यास!
किसे नहीं यह प्यास ?
जन-गन भटके अँधियारे में, राजा करता अट्टहास।
दस हजार सिर यहाँ कट चुके, जग में फैला त्रास।
मैं फिरता हूँ एक सिर लिए,
लूँगा बदला खून बहाकर।
छूटने को खून के फव्वारे,
गाओ गाओ अरे मतवारे।

जब वह गा रहा था तो देग में उबलती पानी उभरी पहाड़ियों की तरह देग के अंदर ऊपर-पीचे उछलता गिरता रहा। बच्चे का पानी में उबलता सिर पानी के उबालों में ऊपर-नीचे चक्कर काट रहा था, जैसे कलाबाजियाँ खा रहा हो। बच्चे के पानी में उबलते चेहरे पर मुस्कान झलक रही थी। कुछ समय बाद अचानक सिर उबलते पानी की भँवरों और उबालों से उलटे चक्कर काटने लगा। उबलते पानी के छपाके और छींटे उड़-उड़कर दरबार में सब ओर फैलने लगे। एक बौना बड़ी जोर से चीख उठा और अपनी नाक मलने लगा। चीख रोक लेना उसके बस का न रहा।

साँवले आदमी ने गीत बंद किया और उबलते पानी में नाचता सिर स्थिर हो गया और उसके चेहरे पर पीड़ा के भाव आ गए। सिर कुछ पल तक बिलकुल स्थिर रहा, फिर शनै-शनै फिर पानी में तैर कर तरह-तरह के हाव-भाव दिखाकर नाचने लगा। सिर देग के किनारे-किनारे तीन बार तैरा और उसके तीन डुबकियाँ लगाईं। फिर वह पूरी खुली आँखों और कालीं-काली चमकती पुतलियों से गाने लगा—

सभी दिशा में दूर-दूर तक फैला नरपति राज,
सभी देश अब जीत लिए हैं रहा न बैरी आज।

चाँद टरै, सूरज टरै न उसका राज।
आज खुशी से आया हूँ मैं, बने सफल सब बाज
खड्ग चमचमा उठी—मगर मुझको न भुलाना!
वैभव चारो ओर किंतु मैं दुखी अभागा।
गीत खुशी के गाओ वैभव गान सुनाओ।
चमकले नीले प्रकाश में वापस आओ।

सिर उछल कर पानी के उबाल की चोटी पर बैठ गया। फिर और कलाबाजियाँ दिखाईं और नाचने लगा। नाचते-नाचते उसकी आँखें दाएँ-बाएँ मार्मिक कटाक्ष करतीं फिर गानें लगीं—

हाय रे हाय, एक प्यार की खातिर
सिर काटा अपना, सिर कुर्बान किया।
एक शीश बस मैं चाहता हूँ, ज्यादा की नहीं चाह
तुमने तो कितने सिरों का बलिदान लिया।

गीत की अंतिम पंक्ति के साथ ही सिर पानी में डूब गया, फिर ऊपर नहीं आया। इसलिए उसके गीत के शब्द समझ में नहीं आ रहे थे। शनै-शनै गीत का स्वर विलीन हो गया और उबलता पानी भी स्थिर हो गया। अब देग में दूर से कुछ भी दिखाई नहीं पड़ रहा था।

"अरे आगे ?" महाराज प्रतीक्षा से उकताकर बोले।

"महाराज," जादूगर ने एक घुटना टेक सिर झुकाकर विनती की। "महाराज अब दास सिर को ऊपर नहीं बुला सकता। यह तले पर मिलन का बहुत चमत्कारी नृत्य कर रहा है। यह नाच समीप आकर ही देखा जा सकता है। मैं इसे ऊपर नहीं ला सकता क्योंकि इस नाच की मुद्रा तले पर ही पेश की जा सकती है।"

महाराज सिंहासन से उतर कर देग के समीप चले गए। धधकती आँच के ताप की परवाह न कर देग के ऊपर झुककर भीतर देखने लगे। देग के भीतर जल दर्पण की तरह शांत था। तले में बच्चे का सिर शांत भाव से पड़ा था, उसकी आँखें महाराज को घूर रही थीं। महाराज से आँखें चार होने पर कटे हुए सिर के चेहरे पर बहुत प्यारी मुस्कान आ गई। महाराज को लगा कि वह चेहरा परिचित है। आखिर यह कौन हो सकता है ? महाराज सोच ही रहे थे कि साँवले जादूगर ने अपनी पीठ से नीली तलवार खींची, बिजली सी चमकी और तलवार महाराज की गर्दन के पार हो गई। महाराज का सिर छप्प से देग में गिर पड़ा।

जब शत्रु मिलते हैं तो एक नजर में ही पहचान जाते हैं और खासकर तब जब दूरी अधिक न हो। राजा का सिर पानी में गिरते ही मेइ च्येन छी का सिर उछल कर ऊपर आ गया और उसने राजा का कान काट लिया। देग का पानी फिर उफन पड़ा, बहुत जोर से मथने लगा। पानी में पड़े दोनों सिर बहुत जोर से भिड़ गए। कोई बीस बार दोनों सिरों की टक्करें हुईं, जिनमें राजा के सिर को पाँच घाव लगे और मेइ के सिर को सात। राजा का सिर पैंतरे बदल कर असावधान मेइ के सिर के पीछे हो गया और उसने मेइ की गर्दन पर दाँत गड़ दिए। राजा ने मेइ की गर्दन छोड़ी नहीं, दाँतों को खूब गहरे गड़ाता चला गया। बच्चे की पीड़ा भरी चीत्कार देग के बाहर सुनाई देने लगी।

महारानी से लेकर विदूषक तक सब दरबारी जो अब तक भयभीत होकर मूर्तिवत स्तब्ध थे इस आवाज को सुनकर होश मे आए। उन्हें लगा जैसे अंधकार ने सूरज को ग्रस लिया था। भय में भी उन्हें छिपी खुशी का अहसास हुआ। गोल आँखें करके वे प्रतीक्षा करने लगे।

साँवले आदमी के चेहरे पर भी कुछ विस्मय दिखाई दिया, पर वह विचलित नहीं हुआ। बिना प्रयास के उसके सूखे पेड़ की डाल की तरह अपनी बाँहें उठाई जिसमें अदृश्य तलवार थी। वह आगे झुका मानो देग के भीतर झाँकना चाहता हो। सहसा उसकी बाँह गिरी और तलवार उसकी गर्दन पर पड़ी। जादूगर का सिर कट कर देग में गिर पड़ा और बर्फ-सी सफेद फेन उड़-उड़कर चारों ओर फैलने लगी।

उसका सिर पानी में गिरते ही राजा के सिर पर झपटा और उसने राजा की नाक पर दाँत गड़ा दिए। राजा की नाक जड़ से कटते-कटते बची। राजा पीड़ा से चिल्ला उठा और मेइ की गर्दन उसके दाँतों से छूट गई और छूटते ही पैंतरा बदल कर उसने अपने दाँत राजा के जबड़े पर गड़ा दिए। साँवला जादूगर राजा की नाक पर दाँत गड़ाए उसे अपनी ओर खींच रहा था। राजा के मुँह बंद कर सकना संभव नहीं रहा। दोनों सिर राजा पर भयंकर वार करने लगे। राजा का सिर अब सब ओर से जख्मी होकर ऐसा लहूलुहान हो गया कि उसे पहचान लेना संभव नहीं था। कुछ देर तक वह सिर देग में इधर-उधर दौड़ता-भागता रहा। फिर थककर निश्चल हो गया और उसने दम तोड़ दिया।

साँवले जादूगर और मेइ के सिर ने अब प्रहार करना बंद कर दिया। दोनों सिर देग में चारों ओर तैरकर राजा के सिर को ध्यान से देखते रहे कि राजा का सिर धोखा देकर बच निकलने के लिए बहाना किए पड़ा है या सचमुच मर

गया है। जब उन्हें विश्वास हो गया कि राजा सचमुच मर गया है तो दोनों की आँखें मिलीं और एक दूसरे की ओर देखकर मुस्कराए। फिर दोनों ने आँखें मूँद आकाश की ओर देखा और फिर दोनों डूबकर देग की तह में जा टिके।

(4)

देग के नीचे आग बुझ गई थी। अब पानी उबल नहीं रहा था। भयानक सन्नाटे के बाद सब लोग होश में आने लगे। कोई एक आदमी चिल्लाया, फिर सभी एक-दूसरे को भयभीत हो पुकारने लगे। एक आदमी सोने की देग की ओर बढ़ा तो सभी लोग देग के चारों ओर घिर आए। घेरे में पीछे खड़े लोग पंजों पर उचक-उचक कर आगे खड़े लोगों की गर्दनों के बीच से झाँककर देखने का यत्न कर रहे थे।

आग की ताप से अब भी लोगों के चेहरे झुलस रहे थे, परंतु देग में जल दर्पण की भाँति स्थिर हो गया था। जल के ऊपर चिकनाई की एक तह जम आई थी जिसमें लोगों को अपने चेहरे दिखाई दे रहे थे : महारानी, रखैलें, अंगरक्षक, बूढ़े मंत्री, बौने, कंचुकी, सबके चेहरे देग में दिखाई दे रहे थे।

"हाय राम! महाराज का सिर अभी देग में ही पड़ा है। दैया रे दैया!" राजा की छठी रखैल फफक कर रो पड़ी।

महारानी से लेकर विदूषक तक सभी किंकर्तव्यविमूढ़ थे। सब लोग घबराकर देग के चारों ओर चक्कर लगाते जा रहे थे। सबसे बूढ़ा आदमी बुद्धिमान मंत्री आगे बढ़ा और उसने हाथ बढ़ाकर देग को छूकर देखा। उसकी पूरी देह काँप उठी, उसने हाथ पीछे खींच लिया और उँगलियों को छिटक-छिटक कर बार-बार फूँक मारने लगा।

अंत में सब अपने आपको सँभाल कर महल के द्वार के बाहर खड़े हो विचार करने लगे कि देग से राजा का सिर किस प्रकार बाहर निकाला जाए। पूरी तीन घड़ी तक यह विचार चलता रहा। आखिर निर्णय हुआ कि महल के भंडारे संड़ासियाँ, चिमटे मँगवाए जाएँ और महाराजा के अंगरक्षक देग से उसका सिर निकालने का यत्न करें।

शीघ्र ही सब साधन प्रस्तुत हो गए, करछे, चिमटे, संड़ासियाँ और छलनियाँ, सोने के थाल और अँगोछे लाकर देग के समीप रख दिए गए। अंगरक्षकों ने अपनी आस्तीनें चढ़ा लीं। कुछ करछे उठाए, कुछ ने संड़ासियाँ और कुछ ने छलनियाँ थाम लीं और बहुत समादर और सावधानी से देग में महाराज

का सिर खोजा जाने लगा। करछे-संड़ासियों के आपस में बजने की झनकार और देग से लगने की रगड़ सुनाई देती रही। देग में पानी भँवरे की तरह घूम रहा था। कुछ समय बाद एक अंगरक्षक ने गंभीर चेहरा बना बहुत सावधानी से दोनों हाथों से संड़ासी को ऊपर उठाया। वह संड़ासी बर्फ की तरह सफेद एक खोपड़ी का कंकाल थामे हुए थी। खोपड़ी से मोतियों की भाँति जल की बूँदें टपक रही थी। लोगों के विस्मयभरे चीत्कार के बीच उसने खापेड़ी को एक सोने के थाल में रख दिया।

"दैया रे दैया! हाय रे महाराज!" महारानी, महाराज की रखैलें, मंत्री और कंचुकी सभी फूट-फूट कर रोने लगे। कुछ समय बाद अंगरक्षकों ने उसी जैसी एक और सफेद खोपड़ी देग से खोज कर निकाली तो वे चुप हो गए।

दरबारी आँसू भरी चकित आँखों से अंगरक्षकों को परिश्रम से खोपड़ी निकालते देग की ओर देख रहे थे। उनके शरीर पसीना-पसीना हो रहे थे। कुछ समय और प्रयत्न करने के बाद उन्होंने बालों का गुच्छा निकाला, जिसमें सफेद बाल भी थे और काले भी। कुछ छोटे-छोटे सफेद और काले बाल भी निकले, मूँछों के बाल जैसे। फिर एक और खोपड़ी निकली, फिर केशों में सोंखने वाली तीन सुइयाँ निकलीं।

जब देग में केवल जल ही जल रह गया तो उन्होंने खोज बंद कर दी। देग से निकाली गई सभी वस्तुओं को तीन सोने के थालों में रख दिया गया—एक थाल में खोपड़ियाँ, दूसरे थाल में बाल और तीसरे थाल में केशों की सुइयाँ।

"हमारे महाराज के तो एक ही सिर थे। महाराज का सिर कौन-सा है?" महाराज की नवीं रखैल ने व्यग्रता से पूछा।

"सच है, सच है...।" मंत्री लोग एक-दूसरे की ओर देखकर कातरता से बोल पड़े।

एक बौने ने आदर से सिर झुककार उत्तर दिया—"माँस और चमड़ी उबल कर पानी में न मिल गए होते तो दास जरूर पहचान लेता।"

सभी लोग हैरान धैर्य और सावधानी से खोपड़ियों की जाँच करने लगे लेकिन खोपड़ियों के आकार और रंग में कोई भेद दिखाई नहीं दे रहा था। बच्चे की खोपड़ी भी अलग पहचान लेना संभव नहीं था। रानी ने याद दिलाया—महाराज के माथे पर बायीं ओर चोट के निशान था जो, जब वे राजकुमार थे, तब एक बार गिरने से बना था। संभव है, खोपड़ी की हड्डी पर भी वह निशान मिल जाए। एक बौने ने खोपड़ी में माथे की दाईं ओर सचमुच एक चिह्न ढूँढ़

निकाला और सभी लोग बहुत प्रसन्न हुए। तभी दूसरे बौने ने जरा पीले रंग की एक दूसरी खोपड़ी में भी ठीक उसी स्थान पर वैसा ही चिह्न दिखा दिया।

"मैं बताऊँ?" महाराज की तीसरी रखैल बड़े विश्वास के साथ पुकार उठी। "महाराज की नाम ज्यादा ऊँची थी।"

कंचुकी तीनों खोपड़ियों की नाम बहुत सावधानी से नापने लगे। बहुत जाँच-पड़ताल के बाद पता लगा कि एक खोपड़ी में नाक कुछ ऊँची मानी जा सकती थी, लेकिन मामूली, परंतु कठिनाई यह थी कि इस खोपड़े के माथे पर दाईं और चिह्न नहीं था।

"यह भी तो देखो," मंत्रियों ने कंचुकियों का सुझाया। "इस खोपड़ी के पीछे की हड्डी बहुत उठी हुई है। महाराज का सिर क्या ऐसा था ?"

"हमने महाराज के सिर के पिछले भाग को कभी देखा ही नहीं।..."

रानी और रखैलों में विवाद खड़ा हो गया। कोई कहती थी, महाराज का सिर पीछे से उठा हुआ था और कोई कहती थी नहीं, महाराज का सिर बिलकुल बराबर था। महाराज के केशों में कंघी करने वाले कंचुकी को पुकारकर पूछा गया तो उसने निश्चित उत्तर नहीं दिया।

संध्या समय मंत्रियों और राजकुमारों की सभा में विचार हुआ कि तीनों खोपड़ियों में से महाराज की खोपड़ी कैसे पहचानी जाए, परंतु जैसे दिन भर के विचार से कोई परिणाम नहीं निकल सका था, अब भी कुछ निर्णय नहीं हो पाया। यही समस्या देग से निकाले गए केशों और मूँछों के बालों के बारे में भी थी। यह तो निश्चित था कि श्वेत बाल महाराज के थे, परंतु महाराज के बाल आधे पक चुके थे इसलिए काले बालों के बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता था। आधी रात तक विचार करने के बाद कुछ लाल बाल चुनकर निकाले गए। इस पर नवीं रखैल ने बहुत विरोध किया। उसने कसम खाकर कहा कि मैंने महाराज की मूँछों में भूरे बाल देखे थे, फिर यह कैसे कहा जा सकता है कि एक भी बाल लाल न होगा। इसलिए फिर से सब बालों को मिला देना पड़ा और मामला अनिर्णीत रह गया।

सुबह होने वाली थी, परंतु सभा कुछ भी निर्णय नहीं कर पाई। बहस इतनी खिंची कि सब लोग जम्हाइयाँ ले रहे थे कि मुर्गों ने दूसरी आँगें दे रात्रि के अंत की सूचना दी। आखिर एक बात पर सब लोग सहमत हो गए; तीनों ही खोपड़ियों को एक सोने के ताबूत में रखकर महाराज के शरीर के साथ मकबरे में दफना दिया जाय।

सात दिन के बाद महाराज की शवयात्रा निकली। राजधानी में बहुत चहल-पहल थी। राजधानी के और देश के दूर-दूर के भागों के लोग महाराज की अंतिम संस्कार देखने के लिए आए थे। उषाकाल से ही नर-नारी राजमार्ग के दोनों ओर इकट्ठे हो गए थे। भीड़ में स्थान-स्थान पर चौकियों पर पूजा और चढ़ावे की सामग्री सजी हुई थी। दोपहर से पहले सड़क खाली कराने के लिए कुछ घुड़सवार तैनात किए गए। कुछ समय बाद एक बहुत बड़ा जुलूस आया। लोग झंडे-झंड़ियाँ, नेजे-भोले, तीर-कमान, फरसे और तलवारें उठाए चल रहे थे। जुलूस के पीछे चार बड़ी-बड़ी गाड़ियों पर गाने-बजाने वाले चल रहे थे। भीड़ के समुद्र में बहुत दूर पीला सायवान लगा रथ ऊँची-नीचे भूमि पर जगमगाता हुआ दिखाई दिया। रथ पर बहुत बड़ा सोने का ताबूत रखा था जिसमें महाराज के शरीर के साथ तीन खोपड़ियाँ थीं।

राजमार्ग के दोनों ओर खड़ी प्रजा सम्मान में झुकी तो चढ़ावे के सामान से लदी हुई चौकियाँ दिखाई दीं। अनेक राजभक्त लोग आँसू रोककर गुस्से में सोच रहे थे कि महाराज के साथ दो राजहंताओं के प्रेत भी राजभक्तों की पूजा और चढ़ावे का भोग कर रहे हैं। परंतु इस समस्या का कोई हल नहीं हो सकता था। राजभक्तों को अपने क्रोध और दुख के आँसू चुपचाप निगल लेने पड़े।

महाराज के ताबूत के रथ के पीछे रानी और महाराज की रखैलों के रथ आ रहे थे। भीड़ कौतुक से उनकी ओर देख रही थी और वे निरंतर विलाप करती हुई भीड़ की ओर देख रही थीं। उसके पश्चात् मंत्रियों, कंचुकियों और बौनों की सवारियाँ आने लगीं। सभी के चेहरों पर गंभीर विषाद की छाया थी, परंतु भीड़ को उनके प्रति कोई कौतुहल नहीं था। उसके बाद जुलूस भीड़ में मिल कर भीड़ का ही भाग बनता जा रहा था।

❐

शरत की रात

मेरे पिछले अहाते की दीवार के पीछे आप दो पेड़ देख सकते हैं—एक खजूर का पेड़ है और दूसरा भी खजूर का पेड़ है।

उनके ऊपर रात्रि का आकाश बहुत विचित्र और ऊँचा है। मैंने कभी ऐसा विचित्र ऊँचा आकाश नहीं देखा। लगता है वह मनुष्यों की दुनिया को छोड़ना चाहता है जिससे कि लोग जब ऊपर देखें तो उसे देख न पायें। फिलहाल यह एकदम नीला है लेकिन उसकी अनेकानेक घूरती आँखें ठंडी झपझपा रही है। उसके होंठों पर एक उड़ती-सी मुस्कान खेल रही है, मुस्कान जिसे वह काफी महत्वपूर्ण समझता है और वह मेरे अहाते के जंगली पौधों को गहरे कोहरे से ढक देता है।

मुझे नहीं मालूम इन पौधों को क्या कहते हैं, उन्हें सामान्यतः किन नामों से जाना जाता है। मुझे याद है, उनमें से एक पर छोटे गुलाबी फूल लगे थे और उसके फूल अभी तक खिले हैं, हालांकि पहले से भी अधिक छोटे। ठंडी रात की हवा में ठिठुरते वे आने वाले बसंत का, पतझड़ आने का, स्वप्न देखते हैं। वे स्वप्न देखे हैं कि उनके अंतिम पत्तों पर एक कृशकाय कवि द्वारा आँसू पोंछने का, जो उन्हें बताता है कि शरत आएगी और शीत ऋतु आएगी, लेकिन फिर बसंत आएगा, जब तितलियाँ इधर-से-उधर नाचेंगी और सारी मधुमक्खियाँ बसंत का गीत गुनगुनाएँगी। तब छोटे गुलाबी फूल हँसेंगे, हालाँकि वे ठंड से कुछ उदास किरमिजी हो गए हैं और अभी भी काँप रहे हैं।

जहाँ तक खजूर के पेड़ों का सवाल है, उनके सारे पत्ते झड़ गए हैं। पहले एक या दो लड़के खजूर तोड़ने आते रहे जो दूसरे लोगों से बच गए थे। लेकिन अब एक भी खजूर नहीं बचा और पेड़ों के सब पत्ते भी झड़ गए। वे छोट गुलाबी फूलों के शरत के बाद वसंत के स्वप्न के बारे में जानते हैं और वे बसंत के बाद पतझड़ में टूटे पत्तों के स्वप्न के बारे में भी जानते हैं। हालाँकि उनके

सब पत्ते झड़ गए हैं और केवल तने बाकी हैं, लेकिन वे फलों और पत्तों से रहित वैभव में तन गए हैं। कुछ शाखाएँ अभी भी झुकी हैं, खजूर तोड़नेवाली डंडियों से तने में हुए घाव को सहलाती हुई, जबकि सबसे लंबी और सीधी शाखाएँ सलाख जैसी सख़्त चुपचाप विचित्र और ऊँचे आकाश की ओर चीर रही हैं, आश्चर्य में पलक झपकते हुए। वे आकाश में पूर्ण चंद्रमा को भी भेद रही है, उसे पीला और परेशान बनाते हुए।

आश्चर्य में पलक झपझपाता आकाश अधिकाधिक नीला होता जा रहा है, अधिकाधिक परेशान होता जा रहा है, मानो मनुष्यों की दुनिया से भागने को उद्यत और खजूर के पेड़ों से बचता हुआ, चन्द्रमा को पीछे छोड़कर। लेकिन चन्द्रमा भी अपने को पूर्व दिशा में छिपा रहा है, जबकि अभी भी चुप और सलाखों जैसी सख़्त नंगी शाखाएँ विचित्र, ऊँचे आकाश को भेद रही है, उस पर घातक घाव दागने को, चाहे वह कितने ही रूपों में अपनी सारी जादुई आँखों को झपझपाए।

एक चीख के साथ एक तेज रात्रि पक्षी गुजरता है।

अचानक मैं अर्द्ध-रात्रि की हँसी सुनता हूँ। उसकी आवाज अवगुंठित है मानो सोने वालों को न जगाना चाहती हुई, लेकिन चहुँ ओर हवा इस हँसी को प्रतिध्वनित करती है। आधी रात और दूसरा कोई नहीं। एकदम मैं महसूसता हूँ कि हँसने वाला मैं हूँ और एकदम यह हँसी मुझे अपने कमरे में ढकेलती है। एकदम मैं अपने लैंप की बत्ती ऊँची करता हूँ।

पिछली खिड़की के शीशे के पट-पट की आवाज आ रही है, जहाँ मच्छरों के झुंड शीशे से बेहताशा टकरा रहे हैं। कुछ खिड़की के कागज के सुराख के अंदर घुस आए हैं। अंदर आते ही वे लैंप के शीशे के पट-पट टकराते हैं। एक ऊपर से लैंप के शीशे के अंदर लौ पर गिरता है और मैं समझता हूँ वो वास्तविक है। कागज के ढक्कन पर दो या तीन दूसरे बैठते हैं, हाँफते हुए। पिछली रात के बाद यह नया कागज का ढक्कन है। उसके बर्फीले सफेद कागज में झालरें लगी हैं और वह एक किनारे से रक्तवर्णी लाल पाफर रंग से पुता है।

रक्तवर्णी लाल पाफर जब खिलेंगे, खजूर के पेड़ सुंदर पत्तों से झुकेंगे, तब वे छोटे गुलाब के फूलों के स्वप्न का एक बार फिर स्वप्न लेंगे... और मैं एक बार फिर अर्द्धरात्रि की हँसी सुनूँगा। मैं जल्दी से विचार के इस प्रवाह को तोड़ अभी भी कागज पर बैठे ठोटे हरे कीटों को देखता हूँ। सूरजमुखी के बीजों की तरह अपने बड़े सिरों और छोटी पूछों से गेहूँ के दाने के आधे आकार वाले वे

सब आकर्षक, दुखद हरे हैं।

मैं जमुहाई लेता हूँ, सिगरेट सुलगाता हूँ और धुआँ छोड़ता हूँ, लैंप के सामने इन हरे और संवेदनशील नायकों को मौन श्रद्धांजलि देता हुआ।

❐

मुसाफिर

समय : कोई शाम।
स्थान : किसी जगह।
चरित्र :

बूढ़ा व्यक्ति : सत्तर के लगभग, सफेद दाढ़ी और बाल, एक काला चोगा।
लड़की : दस के लगभग, सुनहरे बाल, काली आँखें, सफेद के ऊप काले चौखानों वाला चोगा।
मुसाफिर : तीस और चालीस के बीच, थका हुआ और चिड़चिड़ा, कोपभरी दृष्टि, काली मूँछें, अस्त-व्यस्त बाल, पुरानी काली जाकेट और पैंट, फटे जूतों में नंगे पैर। कँधे पर पोटली और अपने बराबर बाँस के डंडे पर झुका।

(पूर्व दिशा में कुछ पेड़ और खण्डहर, पश्चिम में एक परित्यक्त कब्रिस्तान, उनके बीच में एक धुँधली-सी पगडंडी। इस पगडंडी की तरफ मिट्टी के छोटे घर का दरवाजा खुला है। दरवाजे की बगल में एक सूखे पेड़ का ठूँठ।)

(लड़की बूढ़े आदमी को ठूँठ से उठाने में मदद करने ही वाली है जिस पर वह बैठा है।)

बूढ़ा आदमी : अरे बच्ची। तुम रुक क्यों गई ?
लड़की : (पूर्व दिशा की ओर देखते हुए) कोई आ रहा है। देखो।
बूढ़ा आदमी : चिंता न करो। मुझे अंदर ले चलो। सूर्य छिप रहा है।
लड़की : एक बार देखना चाहती हूँ
बूढ़ा आदमी : तुम कैसी लड़की हो। तुम रोज स्वर्ग, पृथ्वी और हवा देख सकती हो। क्या वह तुम्हारे लिए काफी नहीं है ? इनके अलावा देखने के लिए है क्या ? फिर भी तुम देखना चाहती हो कि कौन

आ रहा है ? कोई भी जो सूर्यास्त के समय आता है किसी काम का नहीं है .... चलो अंदर चलें।
लड़की : पर वह काफी नजदीक आ चुका है। अरे, वह तो भिखारी है।
बूढ़ा आदमी : भिखारी ? यह कैसे हो सकता है।

(मुसाफिर पूर्व की झाड़ियों से लँगड़ाता आता है और एक क्षण झिझकने के बाद बूढ़े आदमी के पास चला जाता है।)

मुसाफिर : नमस्कार श्रीमान।
बूढ़ा : धन्यवाद। नमस्कार।
मुसाफिर : श्रीमान क्या मैं एक प्याला पानी माँगने की घृष्टता कर सकता हूँ? मैं चलते-चलते काफी थक गया हूँ और यहाँ कहीं भी तालाब या कुआँ नहीं मिला।
बूढ़ा : ठीक है। कृपया बैठिए। (लड़की से) बच्ची, कुछ पानी लेकर आओ। देखना प्याला साफ हो।

(लड़की चुपचाप झोंपड़ी में जाती है।)

बूढ़ा : बैठिये अजनबी। तुम्हारा नाम क्या है ?
मुसाफिर : मेरा नाम? वह मैं नहीं जानता। जहाँ तक मैं याद कर सकता हूँ, मैं स्वनिर्भर ही रहा हूँ, इसलिए मुझे अपना असली नाम नहीं मालूम। जब मैं रास्ते में चलता हूँ तो लोग मुझे अपनी पसंद के इस या उस नाम से पुकारते हैं मुझे यह भी याद नहीं और मुझे एक नाम से दो बार नहीं पुकारा गया।
बूढ़ा : हूँ। तुम कहाँ के रहने वाले हो ?
मुसाफिर : (संकोच से) मुझे नहीं मालूम। जहाँ तक मुझे याद है मैं इसी प्रकार चलता रहा हूँ।
बूढ़ा : जरूर। ठीक है। क्या मैं पूछ सकता हूँ तुम कहाँ जा रहे हो ?
मुसाफिर : जरूर। मगर मैं यह भी नहीं जानता। जहाँ तक मुझे याद है, मैं इसी तरह चलता रहता हूँ, किसी अगले स्थान के लिए। मुझे बस इतना याद है कि मैंने काफी लम्बा सफर तय कर लिया है और अब मैं यहाँ पहुँचा हूँ। इसके बाद मैं उस रास्ते (वह पश्चिम की ओर संकेत करता है) पर बढ़ूँगा।

(लड़की सावधानी से लकड़ी के प्याले में पानी लाती है और उसे देती है।)

मुसाफिर : (प्याला देते हुए) धन्यवाद लड़की। (वह दो घूँटों में पानी पीकर प्याला लौटा देता है।) धन्यवाद लड़की। ऐसी दयालुता कम ही देखने को मिलती है। मैं कैसे आपका धन्यवाद करूँ।

बूढ़ा : इतना कृतज्ञ होने की कोई आवश्यकता नहीं है। इससे तुम्हें क्या मिलेगा ?

मुसाफिर : नहीं, इससे मुझे कुछ नहीं मिलेगा। लेकिन अब मैं अच्छा महसूस कर रहा हूँ। अब मैं चलूँगा। श्रीमान् आप यहाँ शायद काफी समय से रह रहे हैं। क्या आप जानते हैं आगे कैसा स्थान है?

बूढ़ा : आगे? आगे तो कब्रें हैं।

मुसाफिर : (अचंभे में) कब्रें ?

लड़की : नहीं, नहीं, नहीं। वहाँ हमेशा इतने सारे जंगली गुलाब और लिली होते हैं। मैं अक्सर वहाँ खेलने और उन्हें देखने जाती हूँ।

मुसाफिर : (पश्चिम में देखते हुए, हँसता-सा) हाँ, वहाँ जंगली गुलाब और लिली के फूल हैं। मैं स्वयं कई बार उन्हें वहाँ देखकर आनंद लेने गया हूँ। लेकिन ये कब्रें हैं। (बूढ़े से) श्रीमन्, कब्रिस्तान के परे क्या है ?

बूढ़ा : कब्रिस्तान के परे ? वह मैं नहीं जानता। मैं कभी उसके पार नहीं गया।

मुसाफिर : तुम नहीं जानते ?

लड़की : मैं भी नहीं जानती।

बूढ़ा : मैं केवल दक्षिण, उत्तर और पूर्व जहाँ से तुम आए हो, को जानता हूँ। मैं उन स्थानों को अच्छी तरह जानता हूँ और तुम जैसों के लिए वे सर्वोत्तम स्थान हो सकते हैं। मेरी बात का बुरा न मानना, लेकिन तुम पहले ही इतने अधिक थके हो कि मेरे विचार से वापस चले जाने में ही तुम्हारा हित है। यदि तुम इसी तरह आगे की तरफ चलते रहे तो तुम अपनी यात्रा के अंत तक नहीं पहुँच पाओगे।

मुसाफिर : मैं अंत तक नहीं पहुँच सकता!... (वह इस पर सोचता है, फिर बोलता है) असंभव। मुझे आगे जाना चाहिए। यदि मैं वापस जाऊँगा तो वहाँ सब जगह महान पुरुष हैं, सभी जगह भूस्वामी

हैं, सभी जगह देशनिकाले और पिंजड़े हैं, सभी जगह बनावटी हँसी और दिखावे के आँसू हैं। मैं उनसे घृणा करता हूँ। मैं वापस नहीं जाऊँगा।

बूढ़ा : तुम गलत भी हो सकते हो। तुम्हें ऐसे आँसू भी मिल सकते हैं जो सीधे हृदय से निकलते हैं, कुछ सच्ची भावनाएँ भी हो सकती हैं।

मुसाफिर : नहीं। मुझे दिल से निकलने वाले आँसुओं को देखने की कोई इच्छा नहीं है। मुझे उनकी सच्ची भावनाएँ नहीं चाहिए।

बूढ़ा : उस हालत में (वह अपना सिर झटकता है) तुम्हें चलते रहना पड़ेगा।

मुसाफिर : हाँ, मुझे चलते रहना है। इसके साथ ही आगे एक आवाज है, जो मुझे बुलाती है। और मैं विश्राम नहीं कर सकता। परेशानी यह है कि मेरे पैर चलने से कट और छिल गए हैं और उनसे काफी खून बह चुका है। (वह बूढ़े को दिखाने के लिए एक पैर उठाता है।) मुझमें पर्याप्त खून नहीं बचा है, इसलिए मेरे लिए कुछ पीना आवश्यक है। लेकिन वह मुझे कहाँ मिलेगा ? साथ ही मैं किसी का भी खून पीना नहीं चाहता। इसलिए पूर्ति के लिए मुझे पानी पीना पड़ता है। रास्ते में हर जगह पानी मिल जाता है, इसकी कभी मुझे कमी नहीं हुई। लेकिन मेरी शक्ति क्षीण हो रही है क्योंकि मेरे खून में पानी की मात्रा बहुत अधिक हो गई है और आज यदि मैं कम दूर ही चल पाया तो उसका कारण है कि मुझे कहीं पानी नहीं मिला।

बूढ़ा : शायद यह कारण न हो। सूर्य अस्त हो गया है। मेरे विचार से मेरी तरह तुम भी थोड़ी देर आराम कर लो।

मुसाफिर : लेकिन आगे की आवाज मुझे चलने के लिए कह रही है।

बूढ़ा : मैं जानता हूँ।

मुसाफिर : तुम जानते हो ? तुम उस आवाज को जानते हो ?

बूढ़ा : हाँ। उसने किसी समय मुझे भी पुकारा था।

मुसाफिर : उसी आवाज में जो मुझे अब पुकार रही है ?

बूढ़ा : यह मैं नहीं कह सकता। उसने मुझे कई बार पुकारा, लेकिन मैंने उसकी उपेक्षा की और फिर वह बंद हो गई। बस इतना ही

मुझे याद है।

मुसाफिर : आह, तुमने उसकी उपेक्षा की... (वह इस पर सोचता है, फिर चलने को तैयार हो जाता है और सुनता है।) नहीं। मुझे चलते रहना हैं मैं विश्राम नहीं कर सकता। अफसोस की बात है कि मेरे पैरों की हालत अच्छी नहीं है। (वह जाने को उद्यत होता है।)

लड़की : यह लो। (वह उसे कपड़े का एक टुकड़ा देती है) अपने पैरों पर पट्टी बाँध लो।

मुसाफिर : धन्यवाद लड़की। (वह कपड़ा लेता है) वास्तव में—वास्तव में ही ऐसी दयालुता दुर्लभ है। इसके साथ मैं और आगे चल सकता हूँ। (वह एक कबाड़ के ढेर पर बैठकर टखनों पर पट्टी बाँधने को होता है) नहीं, इससे नहीं होगा। (वह जबदरस्ती पैरों पर खड़ा होता है) इसे वापस ले लो लड़की। यह पट्टी के लिए काफी नहीं है। फिर भी यह तुम्हारी बड़ी दयालुता है ओर मैं नहीं जानता कि तुम्हारा धन्यवाद कैसे करूँ।

बूढ़ा : उसे धन्यवाद देने की जरूरत नहीं है, इससे तुम्हें क्या मिलेगा?

मुसाफिर : नहीं, इससे मुझे कुछ नहीं मिलेगा। लेकिन मेरे लिए यह सबसे बढ़कर दान है। देखो, क्या तुम्हें मेरे ऊपर इसकी तुलना की कोई वस्तु दिखाई पड़ती है ?

बूढ़ा : इसे इतनी गंभीरता से न लो।

मुसाफिर : मैं जानता हूँ। लेकिन मजबूर हूँ। यही मेरा तरीका है। यदि मुझे भीख मिलती तो मैं उस गिद्ध की तरह हो जाता जो शव देखते ही उस पर मँडराने लगे, अपनी आँखों से उसका अंत देखने को उत्सुक। या मैं उसके सिवा हर चीज को नष्ट करना चाहता क्योंकि मैं उसका अधिकारी हूँ। लेकिन मैं अभी उसके लिए तैयार नहीं हूँ। यदि मैं होता भी तो मैं उसका यह अंत नहीं चाहता क्योंकि यह ऐसा अंत है, जिसे वे पसंद नहीं करते। मैं समझता हूँ यह तरीका सबसे अच्छा है (लड़की से) यह कपड़े का टुकड़ा एकदम सही है। बस कुछ छोटा है। इसलिए मैं तुम्हें वापस दे रहा हूँ।

लड़की : (डर से पीछे हटती हुई) मुझे नहीं चाहिए। इसे ले लो।

मुसाफिर : (हँसी की तरह की चीज) आह... क्योंकि मैंने उसे ले लिया है?

लड़की : (उसकी पोटली की ओर देखकर सिर हिलाती हुई) इसे मजाक के लिए ही उसके अंदर रखो।

मुसाफिर : (आश्चर्य से पीछे हटकर) लेकिन पीठ पर इसे लादकर मैं चलूँगा कैसे ?

बूढ़ा : क्योंकि तुम विश्राम नहीं करते, इसलिए तुम कुछ भी नहीं ढो सकते। थोड़ा विश्राम करो तो तुम बिलकुल ठीक हों जाओगे।

मुसाफिर : यह ठीक है, विश्राम.... (वह चलने को होता है और सुनता है) नहीं, मैं विश्राम नहीं कर सकता। मुझे चले जाना चाहिए था।

बूढ़ा : तुम विश्राम करना नहीं चाहते ?

मुसाफिर : मैं चाहता हूँ।

बूढ़ा : तब, कुछ देर आराम करो।

मुसाफिर : लेकिन मैं नहीं कर सकता ....

बूढ़ा : तुम अब भी सोचते हो चलते रहने की।

मुसाफिर : हाँ, मुझे चलना होगा।

बूढ़ा : ठीक है, तब तुम जाओ।

मुसाफिर : (सीधा होते हुए) अच्छा, अब मैं विदा लेता हूँ। मैं तुम्हारा बहुत कृतज्ञ हूँ। (लड़की से) मैं यह तुम्हें वापस दूँगा। कृपया इसे वापस ले लो।

(डरी हुई लड़की अपना हाथ पीछे हटाती है और घर में छिप जाना चाहती है।)

बूढ़ा : इसे ले लो। यदि यह बहुत भारी है तो तुम किसी भी समय इसे कब्रिस्तान में फेंक सकते हो ?

लड़की : (आगे आकर) नहीं, यह नहीं होगा।

मुसाफिर : नहीं, यह नहीं होगा।

बूढ़ा : ठीक है, तब इसे किसी जंगली गुलाब या लिली पर टाँग देना।

लड़की : (ताली बजाकर हँसती हुई) बहुत अच्छा।

मुसाफिर : आह ....

(एक क्षण मौन रहता है।)

बूढ़ा : तब नमस्कार। शांति तुम्हारे साथ रहे। (वह खड़ा होकर लड़की की ओर घूमता है) बेटी, मुझे अंदर ले चलो। देखो सूर्य कब का

अस्त हो गया। (वह दरवाजे की ओर मुड़ता है।)

मुसाफिर : आप दोनों को धन्यवाद। शांति तुम दोनों के साथ रहे। (वह कुछ कदम बढ़ाता है, सोच में डूबा, फिर चलता है।)
मैं नहीं सकता। मुझे जाना चाहिए। मुझे चला जाना चाहिए था. ... (सिर उठाकर वह पश्चिम की ओर निश्चयात्मक कदम उठाता है।)

(लड़की बूढ़े को झौंपड़ी के अंदर ले जाती है और दरवाजा बंद कर लेती है। मुसाफिर उजाड़ की ओर लँगड़ाता बढ़ता है और उसके पीछे रात घिर आती है।)

❐

स्वर्ग की मरम्मत

1

न्वी वा[1] चौंककर जगी।

वह सपने से डर गई थी, किन्तु उसे सपना याद नहीं आ रहा था। वह खीझी हुई थी। उसे सपने की कुछ बातें ही याद थीं। कुछ खोने का अहसास था तो एक प्रकार की परितृप्ति भी थी। उत्तेजक समीर ने उसकी ऊर्जस्विता उत्कट रूप में ब्रह्माण्ड में बिखेर दी।

उसने अपनी आंखें मलीं।

गुलाबी आकाश में काई के रंग के बादलों के टुकड़े तिर रहे थे, उनके पीछे तारे टिमटिमा रहे थे। क्षितिज पर रक्तिम बादलों के बीच प्रतापी सूर्य था, लगता था प्राचीन लावा के अवशेष में लिपटा सोने का तेरल वृत्त हो और उदास चांद लोहे का बना प्रतीत हो रहा था। पर उसने ध्यान नहीं दिया कि कौन अस्त और कौन उदित हो रहा है।

संपूर्ण पृथ्वी पर सौम्य हरियाली छाई थी। यहां तक कि चीड़ और देवदार के पेड़ों पर भी, जिनके पत्ते बिरले ही गिरते हैं, अद्‌भुत ताजगी थी। पास में खिले हल्के गुलाबी और नीले सुंदर फूल स्पष्ट दिखाई पड़ रहे थे, सुंदर फूलों की क्यारी थोड़ी दूर जाकर रंग-बिरंगे कोहरे में विलीन हो गई थी।

"मुझे इतनी ऊब कभी नहीं हुई!"

यह सोचते ही वह उठ खड़ी हुई। उसने अपनी शक्तिशाली और पूर्णतः गोल बांहों को फैलाया और आकाश की तरफ सिर उठाकर जम्हाई ली। अचानक आकाश ने रंग बदला और अद्‌भुत सिंदूरी रंग का हो गया। थोड़ी देर के लिए तो न्वी वा भी अवाक् रह गई।

वह सिंदूरी ब्रह्मांड में चलती हुई समुद्र के पास पहुंची, उसके शरीर की

1. प्राचीन काल की एक सम्राज्ञीय या देवी। चीनी मिथक के अनुसार न्वी वा ने मिट्टी से प्रथम मनुष्य बनाया।

रेखाएं गुलाबी रंग से प्रदीप्त समुद्र से एकाकार हो गईं, केवल कमर पर शुद्ध श्वेत मेखला मात्र दृश्यमान थी। समुद्र की विस्मित फेनिल लहरों का शालीन ज्वार- भाटा न्वी वा पर फेन छिड़क रहा था। शुद्ध श्वेत मांस का प्रतिबिंब मानो समस्त दिशाओं में प्रकीर्णित होने के उद्देश्य से पानी में झिलमिला रहा था। पर इस पर ध्यान दिए बिना अपनी क्रियाओं से अनभिज्ञ वह एक घुटना टेककर झुकी और उसने अंजलि भर नर्म कीचड़ उठाया। वह कीचड़ के लौंदे को अपने प्रतिरूप जीव का आकार देने तक हाथों में लिए गूंदती रही।

"आह!...आहा!....."

हालांकि इसे उसने खुद बनाया था, फिर भी उसे संदेह हो रहा था कि क्या यह आलू की फांक की तरह हमेशा से कीचड़ में पड़ा था। वह आश्चर्य के साथ चौंकी।

फिर भी यह सुखद आश्चर्य था। वह अब तक अनभिज्ञ बड़े चाव और उत्साह से अपना पसीना मिलाकर उन आकृतियों में प्राण डालती गई।

"ऊं!.... ऊं!..... " छोटे जीव चिल्ला रहे थे।

"आह! आह!" एक टीस-सी उठी और उसे लगा कि उसके रोम-रोम से कुछ निःसृत हो रहा है। छाती पर श्वेत दूधिया वाष्प का कोहरा छा गया था। उसने अपने संत्रास को वश में किया और छोटे जीवों ने चिल्लाना बंद कर दिया।

उनमें से कुछ ने उससे कहा, "आं.....ऊं!...आं...ऊं.....!"

"ओ, सुन्दर और प्रिय!" उन्हें एकटक निहारते हुए न्वी वा ने अपनी कीचड़ सनी उंगलियों से उनके गोल सफेद गालों को थपथपाया।

"उ.... उ.... हा....हा!" वे हंस रहे थे। इस ब्रह्मांड में उसने पहली बार हंसी सुनी थी। पहली बार वह स्वयं हंसी थी, हंसते-हंसते पेट में बल पड़ गए थे।

उन्हें पुचकारती हुई वह अपना काम करती रही। तैयार आकृतियां उसके इर्द-गिर्द चक्कर लगाने लगीं, अपनी अवस्था के अनुसार वे दूर होती हुईं और अधिक धाराप्रवाह बोलती जा रही थीं। उनकी अवस्था के अनुसार ही उनकी बात अस्पष्ट होती गई। वह कुछ भी नहीं समझ पा रही थी। सिर चकराने के पहले उसे केवल उनके क्रंदन का मिश्रित स्वर सुनाई पड़ रहा था।

उसके प्रदीर्घ आनंद पर चुपके से क्लांति छा गई। उसकी सांस लगभग निःशक्त थी, उसका पसीना लगभग समाप्त हो गया था। इसके अतिरिक्त

उसका सिर चकरा रहा था, उसकी आंखें मन्द थीं और गाल जल रहे थे। उसका सारा उत्साह समाप्त हो गया था, वह धैर्य खोती जा रही थी। फिर भी अपने कार्य की वास्तविकता से अनभिज्ञ वह जी-जान से लगी रही।

आखिरकार पीठ और पांव के दर्द ने उसे खड़े होने पर बाध्य कर दिया। एक ऊंचे मुलायम पहाड़ का सहारा लेते हुए उसने सिर उठाकर अपने आस-पास देखा। आकाश में मछली के शल्कों जैसे सफेद बादल छाए थे, जबकि नीचे गहरी हरियाली थी। बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के इस दृश्य ने उसे अप्रसन्न कर दिया। उदास मन से उसने पहाड़ और आकाश के बीच फैली एक विस्टेरिया तोड़ी। उस पर बैंगनी रंग के बड़े फूलों के गुच्छे थे। उसने उसे धरती पर फेंक दिया और पृथ्वी आधी बैंगनी तथा आधी सफेद पंखुड़ियों से ढक गई।

उसने उसे झटका, झटकने से विस्टेरिया कीचड़ भरे पानी की सतह पर लहराई और कीचड़ की फुहारें उड़ीं। फुहारें धरती पर गिरकर उसके बनाए छोटे जीवों के रूप में परिवर्तित हो गईं। किंतु उनमें से अधिकांश घृणास्पद और जड़बुद्धि दिखे, उनका सिर हिरण जैसा और आंखें चूहे जैसी थीं। वह अपनी धुन में इतनी लीन थी कि उसे ध्यान देने का भी होश नहीं था और जैसे दिल्लगी कर रही हो, उसी उत्सुकता और आतुरता से वह पंकित विस्टेरिया की लता को तेज बहुत तेज तब तक झटकती रही, जब तक कि वह उबले पानी से साफ किये प्रवाल सर्प की तरह धरती से न टकरा गई। लता से उड़े कीचड़ के छींटे हवा में ही चीखने-चिल्लाने वाले जीवों में परिवर्तित हो गए और सभी दिशाओं में रेंगने लगे।

वह अनभिज्ञ-सी विस्टेरिया की लता को अंधाधुंध झुलाती रही। उसकी पीठ और पैर तो दर्द कर ही रहे थे। उसकी बाहें भी थक गई थीं। पहाड़ पर सिर टिकाने के लिए उसे झुककर जाना पड़ा। उसके घने काले बाल पहाड़ के शिखर पर लहराने लगे। दम लौटने के बाद उसने एक गहरी सांस ली और आंखें बंद कीं। विस्टेरिया उसकी उंगलियों से छुटकर गिर पड़ी और धरती पर निर्जीव और निढाल पड़ गई है।

2

फड़ाक!!!

स्वर्ग के दो टुकड़े हो गए और पृथ्वी फूटकर निकली, न्वी वा चौंककर जगी तो उसने स्वयं को दक्षिणपूर्व दिशा में फिसलते पाया। उसने पांव टेककर स्वयं

को रोकना चाहा, पर वहां कुछ भी नहीं था। उसने अपनी बांह से पहाड़ की चोटी पकड़ी और स्वयं को गिरने से रोका।

उसके सिर पर पीछे से पानी, रेत और चट्टानों की बौछार हो रही थी। उसने जब सिर उठाकर अपने कंधे के ऊपर देखा तो उसके मुंह और दोनों कानों में पानी भरने लगे। उसने जल्दी से अपना सिर झुकाया—पृथ्वी हांफ और कांप हरी थी। संयोग से शीघ्र ही सब शांत हो गया, वह पीछे हटकर ठोस भूमि पर बैठ गई। ललाट और आंखों से पानी पोंछकर उसने चारों तरफ देखा, वह देखना चाहती थी कि वास्तव में क्या हुआ था।

निपट संभ्रांतिपूर्ण दृश्य था। पूरी पृथ्वी पर वेगमयी प्रचंड धाराएं लहरा रही थीं जिसे उसने समुद्र समझा था, उसमें भी इधर-उधर प्रचण्ड और उग्र लहरों की उछाल थी। वह अवाक होकर प्रतीक्षा करती रही।

अंततः सब कुछ शांत हो गया था। बड़ी लहरें पुरानी चोटियों से ऊंची नहीं थीं और जहां भूमि होनी चाहिए थी, वहां नोकदार चट्टानों की श्रेणियां थीं। समुद्र की तरफ घूमने पर उसने देखा कि अनेक पर्वत भंवरदार लहरों में चक्कर खाते और बहते हुए समुद्र में जा रहे हैं। इस डर से कि वे कहीं उसके पैर से न टकरा जाएं, उसने हाथ बढ़ाकर उन्हें रोका। इसी समय उसने पहाड़ी दर्रों में कुछ अनदेखे जीवों को देखा।

उसने पास से देखने के लिए एक पर्वत को अपनी तरफ खींचा। उन जीवों के पास ही चीड़ के चबाए पत्तों और गूदों से मिश्रित स्वर्णधूलि और जेडकण जैसा कोई पदार्थ उगला पड़ा था। धीरे-धीरे एक-एक करके उन्होंने अपना सिर उठाया, अपने बनाए जीवों को पहचानकर न्वी वा की आंखें खुली की खुली रह गईं। उन्होंने विलक्षण किस्म से अपने वदन ढक रखे थे और कुछ के चेहरे के निचले हिस्से से बर्फ जैसी सफेद दाढ़ियां निकल आई थीं। उनकी दाढ़ियां पानी से उलझकर पापलर की नोकदार पत्तियों जैसी हो गई थीं।

"आह!... आह!...." वह आश्चर्य और आतंक से चीखी। वह सिहर उठी, उसे ऐसा लगा कि उसके बदन पर इल्ली रेंग गई हो।

"हमें बचाओ, देवी...." सफेद दाढ़ी वाले ने सिर उठाया था। ओकाई के बीच उसने संतप्त स्वर में कहा, "हमें बचाओ..... तुम्हारी दीन-हीन प्रजा.... अमरता की तलाश में है। हममें से किसी ने ऐसी महाविपदा का अनुमान नहीं किया था। स्वर्ग और पृथ्वी पृथक हो गई... संयोग से तुम हमें मिल गई, देवी. ... हमारे अकारथ जीवन की रक्षा करो.... हमें अमृत दो..... हमें अमरता प्रदान

करो।" उसने अजीब ढंग से सिर उठा और झुकाकर प्रार्थना की।

"क्या कह रहे हो?" न्वी वा ने घबराकर पूछा।

उनमें से कई ने एक साथ बोलना शुरू कर दिया। देवी की प्रार्थना करने के साथ वे उबक रहे थे और सारे के सारे एक जैसी अजीब चेष्टाएं दोहरा रहे थे। इससे उसे क्षोभ और चिढ़ हुई। उसे अपने किए काम पर गहरा पछतावा हुआ, उसने स्वयं ही कैसी मुसीबत मोल ले ली। किंकर्तव्यविमूढ़ और असहाय भाव से उसने चारों तरफ देखा। विशाल कछुओं[1] का एक झुण्ड समुद्र में जलक्रीड़ा कर रहा था। चकित और खुश होकर उसने पलक झपकते ही उनकी पीठों पर पर्वत रखे और आदेश दिया, "इन्हें किसी शांत जगह पर ले जाओ।"

विशाल कछुओं ने हामी भरी और झुण्ड में दूर निकल गए। उसने पर्वत को इतनी जोर से खींचा था कि सफेद दाढ़ी का एक जीव गिर पड़ा.... वह तैर भी नहीं सकता था, दूसरों के बराबर पहुंचने की कोशिश में वह निस्सहाय-सा किनारे से जा लगा। वह अपना सिर पीट रहा था। न्वी वा को उस पर दया आई, पर उसने कोई ध्यान नहीं दिया। ऐसी बातों पर ध्यान देने के लिए उसके पास समय भी तो नहीं था।

उसने उसांस ली। वह अब हल्का महसूस कर रही थी। उसने चारों तरफ देखा। उसके चारों तरफ छपछपाता पानी काफी घट गया था और धरती एवं चट्टानों का चौड़ा वितान उभर आया था। चट्टान की दरारों में बहुसंख्य छोटे जीव थे, कुछ स्तंभित और स्थिर पड़े थे और कुछ घूम रहे थे। उनमें से एक स्थिर खड़ा उसे घूर रहा था। धातु की पट्टी से उसका बदन ढका था, जबकि उसके चेहरे से भय और हताशा प्रकट हो रही थी।

"क्या हुआ?" उसने यों ही पूछा।

"हाय! स्वर्ग ने हम पर विपत्ति ढा दी!" उसने दयनीय स्वर में उत्तर दिया। "च्यान श्वी ने धर्म की अवज्ञा कर हमारे राजा पर आक्रमण किया। स्वर्ग की इच्छा के अनुसार हमारे राजा ने भी उससे लड़ने का निर्णय लिया और हमारे बीच घनघोर युद्ध हुआ। किन्तु स्वर्ग ने न्याय की रक्षा नहीं की.... हमारी सेना को पीछे लौटना पड़ा....."[2]

1. प्राचीन मिथक में समुद्र के विशाल कछुए दिव्य जीव माने जाते थे।
2. प्राचीन मिथक के अनुसार पीत सम्राट के वंशज और खाङह्वेइ नाम से विख्यात राक्षस कुङ कुङ के बीच युद्ध हुआ था। हारने पर क्रोधित होकर उसने अपना सिर पहाड़ से टकराया था, जिस पर स्वर्ग की मेहराब टिकी थी। इससे स्वर्ग में दरार पड़ गई थी और पृथ्वी दक्षिणपूर्व दिशा में ढलककर गिर पड़ी थी।

"क्या कह रहे हो?" न्वी वा ने इस किस्म की बात पहले कभी नहीं सुनी थी। वह भौंचक्क थी।

"हमारी सेना को पीछे लौटना पड़ा। हमारे राजा ने भग्न पर्वत से सिर टकराया और स्वर्ग के खंभों तथा पृथ्वी के टेक को चकनाचूर कर दिया और स्वयं मर गया। आह!....यह सचमुच....."

"बहुत हो गया! एक शब्द भी मेरी समझ में नहीं आया।" सिर घुमाने पर उसकी नजर एक गर्वीले और आनंदित चेहरे पर पड़ी.... पर वह धातु के कवच से ढका था।

"क्या हुआ?" अब उसे स्पष्ट हुआ कि इन छोटे जीवों की अभिव्यक्ति में भिन्नता हो सकती है। उसने समझ में आने लायक भिन्न उत्तर की आशा की।

"मनुष्य का हृदय शैतान का अड्डा है। वास्तव में सूअर का दिल रखने वाला खाङह्वेइ राजमुकुट पहनना चाहता था। हमारे राजा ने स्वर्ग की इच्छा के अनुसार उससे लड़ाई की। हम खुले इलाके में लड़े और स्वर्ग ने न्याय की रक्षा की। हमारी सेना जीती और खाङह्वेइ भग्न पर्वत पर मार डाला गया।"

"क्या कह रहे हो?" वह अभी भी भौंचक्क थी।

"मनुष्य का हृदय शैतान का अड्डा है....."

"बहुत हो गया... वही बकवास!" उसने डपटकर कहा। क्रोध से उसका चेहरा लाल हो गया। उसने चारों तरफ नजर दौड़ाई। उसे एक छोटा-सा जीव दिखा, जिसने धातु कवच नहीं पहन रखा था। वह नंगा था और उसका पूरा शरीर जख्मों से भरा था। उसके जख्मों से अभी भी खून निकल रहा था। अपने साथी का उतारा कपड़ा जल्दी से उसने अपनी कमर में लपेटा। वह डरा और स्तंभित था। शुरू से अंत तक उसने अपना आत्मसंयम बनाए रखा।

न्वी वा ने सोचा कि संभव है यह उनसे भिन्न जाति का हो और उसे कुछ बता सके। न्वी वा ने पूछा।

"क्या हुआ?"

"क्या हुआ?" उसने धीरे से अपना सिर उठाया।

"अभी-अभी जो दुर्घटना....."

"अभी-अभी जो दुर्घटना?....."

"क्या वह युद्ध था?" उसने अटकल लगाई।

"युद्ध?" उसने उसका सवाल दोहराया।

न्वी वा ने ठंडी सांस ली और आकाश को देखा। आकाश के आर-पार एक

गहरी और चौड़ी दरार पड़ गई थी। न्वी वा ने खड़े होकर आकाश को अपनी उंगलियों से बजाकर देखा। टन्न की आवाज के बजाय ऐसा लगा कि कोई टूटा कटोरा बजा हो। वह उद्विग्न थी, उसने फिर से चारों तरफ देखा और अपने बाल से पानी झटकते समय उसने अचानक कुछ सोचा। उसने अपने बालों को कंधों पर झटका और नये उत्साह के साथ नरकुल एकत्र करने लगी। कुछ और करने से पहले उसने स्वर्ग की मरम्मत करने की बात सोची।

उसने दिन-रात एक करके नरकुल एकत्र किए। ढेर जैसे-जैसे ऊंचा होता गया, न्वी वा का वजन कम होता गया, सारी स्थितियां बदल चुकी थीं। ऊपर फटा आकाश था तथा नीचे दर्रों से भरी कीचड़दार धरती थी—ऐसा कुछ भी नहीं था, जो उसकी आंखों या दिल को खुशी दे सके।

जब नरकुल का ढेर दरार तक पहुंच गया तो उसने नीले पत्थर की खोज की। उसकी मूल योजना आकाश जैसे नीले पत्थर का उपयोग करने की थी, पर पर्याप्त नीले पत्थर नहीं थे। वह पहाड़ के पत्थरों का उपयोग नहीं करना चाहती थी। जीवन से गुंजायमान जगहों में उसने जब टुकड़ों की तलाश की तो उसे ताने और अपशब्द सुनने को मिले। उसे कुछ टुकड़े मिले थे, मगर उसे कुछ छोटे जीव घसीट ले गए और उन्होंने उससकी उंगलियां काट खाईं। उंगलियां जख्मी हो गई। लाचार होकर उसे कुछ सफेद पत्थरों का उपयोग करना पड़ा। जब सफेद पत्थर भी खत्म हो गए तो उसने लाल, पीले और भूरे पत्थरों से काम चलाया। अंततः दरार भर गई। अब उसे केवल आग जलाकर पत्थरों को पिघलाना था। इसके बाद उसका काम समाप्त हो जाता। पर उसकी आंखों के आगे तारे नाच रहे थे और थकान से उसके कान भिनभिना रहे थे। उसकी शक्ति समाप्त हो रही थी।

"ओह, मैंने जीवन में कभी इतनी कमजोरी महसूस नहीं की।" वह एक पहाड़ की चोटी पर हाथों के सहारे सिर टिकाकर आराम करने के लिए बैठ गई। वह हांफ रही थी।

खुनलुन पर्वत के आदिम जंगल के दावानल से पश्चिम क्षितिज सुर्ख लाल हो रहा था। उस दिशा में देखने के बाद वहां से एक जलता पेड़ लाकर उसने अपने ढेर में आग लगाने का निर्णय लिया। अभी वह वहां पहुंचती कि उसके पांव में कुछ चुभा।

उसने नीचे देखा तो उसे अपना बनाया दूसरों से बिल्कुल अलग और अजीब एक छोटा-सा जीव दिखाई पड़ा। सिर से पांव तक वह वस्त्र की मोटी

तहों से ढका था और उसकी कमर पर दर्जन या उससे अधिक फीते बंधे थे। उसका सिर एक छोटे काले आयताकार फलक के मुकुट से ढका था। उसके हाथों में एक पट्ट भी था। यही न्वी वा के पांव में चुभा था।

मुकुटधारी जीव न्वी वा की टांगों के बीच खड़ा ऊपर की ओर देख रहा था। न्वी वा ने नीचे देखा तो उसने जल्दी से अपने हाथों का पट्ट भेंट किया। उसने उसे ले लिया। वह हरे बांस का बहुत ही चमकीला पट्ट था। उस पर बलूत के पत्तों के धब्बों से भी छोटे काले धब्बों के दो कालम थे। न्वी वा ने कुशल शिल्पकारी की सराहना की।

"यह क्या है?" उसने जिज्ञासा भरे स्वर में पूछा।

आयताकार फलकनुमा मुकुट पहने जीव ने बांस पट्ट की तरफ इशारा कर उस पर लिखे शब्दों का धाराप्रवाह पाठ किया।

"तुम्हारी कामुक नग्नता अश्लील है। यह शिष्टाचार का अतिक्रमण है और पशुओं के उपयुक्त नियम और आचरण का उल्लंघन है। धरती के नियम के अनुसार यह निषिद्ध है।"

न्वी वा ने आयताकार फलक को घूरकर देखा। उसे अपनी मूर्खता पर हंसी आ रही थी कि उसने ऐसा सवाल क्यों किया? उसे अब तक समझ लेना चाहिए था कि इन जीवों के साथ उसका सही संवाद नहीं हो सकता। कुछ बोले बिना उसने बांस पट्ट आयताकार फलक पर रख दिया। फिर नरकुल के ढेर में आग लगाने के लिए उसने जंगल से एक जलता हुआ विशाल वृक्ष उखाड़ा।

अचानक उसे सिसकिया सुनाई पड़ीं। सिसकियों की आवाज उसके लिए नई थी। उसने नीचे देखा। फलक के नीचे की छोटी आंखों में सरसों के दाने से भी छोटे आंसू की दो बूंदे थीं। उसने "ऊं.... ऊं" की आवाज पहले सुनी थी। यह आवाज उससे बिल्कुल अलग थी। वह नहीं समझ पाई कि यह भी रोने का एक तरीका है।

उसने ढेर में कई जगहों पर आग लगाई।

नरकुल अभी भी गीले थे, इसलिए शुरू में आग धीरे-धीरे जली। थोड़ी देर में आग तेज हो गई और असंख्य लपटें लपलपाती हुई उठने लगीं, ऐसा लगा कि लपटें ऊपर की सभी चीजें निगल जाएंगी। कुछ समय के बाद आग की लपटें दोहरी हो गईं। बैंगनी लपटें खुनलुन पर्वत की लाल दीप्ति से अधिक तीव्र थीं तेज हवा चलने लगी, आग की लपटें गरजती हुई लहराने लगीं। नीले और दूसरे रंगों के पत्थर मिलकर किरमिजी रंग के हो गए। पिघले शक्कर या बुझी

सौदामिनी की तरह उनका तेज प्रवाह दरार को भरने लगा।

हवा और आग की ताप ने उसके बाल सभी दिशाओं में बिखेर दिए। झरने की तरह उसके शरीर से पसीना चू रहा था। लपलपाती लपटों ने उसके शरीर को प्रज्ज्वलित कर दिया। आखिरी बार ब्रह्माण्ड सिंदूरी हो गया।

एक-एक करके आग की लपटें उठीं और राख का ढेर छोड़ गई। जब आकाश नीला हो गया तो उसने उंगलियों से छूकर देखा, उसे अनेक विषमताएं महसूस हुईं।

"फिर से शक्तिमान होने पर मैं दोबारा कोशिश करूंगी...." उसने सोचा।

उसने झुककर नरकुल की राख उठाई और उन्हें पृथ्वी के जलमग्न हिस्सों में डाल दिया। राख अभी भी गर्म थी। उसने जब पानी में राख फेंकी तो पानी खौलने लगा और उसके ऊपर राख और पानी के छींटे पड़े। हवा भी नहीं रुकी। हवा के साथ उड़ती राख ने उसे अपने रंग में रंग डाला।

उसने आह भरते हुए अंतिम सांसें लीं।

क्षितिज पर रक्तिम बादलों के बीच प्रतापी सूर्य प्राचीन लावा के अवशेष में लिपटे सोने के लाल वृत्त के समान लग रहा था और उदास श्वेत चांद लोहे का बना प्रतीत हो रहा था। यह कहना कठिन था कि कौन उदित और कौन अस्त हो रहा है? क्षण भर में न्वी वा उनके बीच जा गिरी। उसकी सांसें बंद हो गई थीं।

ऊपर-नीचे चारों तरफ मृत्यु से भी अधिक गहरा सन्नाटा छाया था।

3

कड़ाके की सर्दी में एक दिन अस्पष्ट शोरगुल सुनाई पड़ी। शाही सेना लड़ती हुई उस जगह पर पहुंची। वे देर से आए, आग की लपटों और राख के ठंडे होने तक प्रतीक्षा कर रहे थे। बाईं तरफ पीली कुल्हाड़ी, दाईं तरफ काली कुल्हाड़ी। पीछे विशाल और प्राचीन पताका। पलटकर भागने की सावधानी के साथ ये वहां तक बढ़े, जहां न्वी वा का शव पड़ा था। सैनिकों ने उसके पेट पर शिविर लगाया, क्योंकि वह उर्वर स्थान था—ऐसे चयन में वे बहुत चतुर थे। अचानक अपना राग बदलकर उन्होंने घोषणा की कि वे ही न्वी वा के सच्चे वंशज हैं। इसके साथ उन्होंने अपनी पताका के बेंगचीनुमा रेखाक्षरों को भी बदला: "न्वी वा की अंतड़ियां।"

समुद्र तट पर रहने वाले वृद्ध पुजारी ने अनेक पीढ़ियों के शिष्यों को शिक्षा

दी। मृत्यु से कुछ समय पूर्व उसने अपने एक शिष्य को यह महत्वपूर्ण बात बताई कि विशाल कछुए देव पर्वत ढोकर समुद्र में लग गए थे। उस शिष्य ने यह बात अपने शिष्य को बताई। अंत में एक कीमियागर ने कृपापात्र बनने की आशा से छिन राजवंश के प्रथम सम्राट[1] को यह बात बताई। सम्राट ने उसे देव पर्वत की तलाश में भेजा।

कीमियागर देव पर्वत नहीं ढूंढ सका। अन्ततोगत्वा छिन राजवंश के प्रथम सम्राट की मृत्यु हो गई। हान राजवंश के सम्राट ऊती[2] ने भी देव पर्वत की तलाश में दल भेजे, पर उन्हें भी सफलता नहीं मिली।

संभव है विशाल कछुओं ने न्ची वा का अर्थ न समझा हो। उनका सिर हिलाना संयोग मात्र रहा हो। थोड़ी देर तक लापरवाही से पर्वत ढोने के बाद, उन्होंने सोने के लिए डुबकी लगाई और पर्वत भी डूब गया। इसी कारण अभी तक देव पर्वत ढूंढने में कोई भी सफल नहीं हुआ। ढूंढने पर उन्हें ऐसे द्वीप मिले, जहां बर्बर निवास करते हैं।

नवम्बर 1922

1. छिन राजवंश के प्रथम सम्राट (246-210 ई. पू.) ने कीमियागर श्वी फू को हजारों व्यक्तियों के साथ देव पर्वत की तलाश में समुद्र में भेजा था।
2. 140-87 ई. पू.।

बाढ़ नियंत्रण

1

यह उस समय की बात है, जब "भयंकर बाढ़ ने सर्वनाश कर दिया था। पर्वत पानी से घिरे थे और पहाड़ियाँ डूब गई थी।"[1] सम्राट शुन की समस्त जनता पानी से अभी भी ऊपर रह गई ऊंची जगहों पर जमा थी, स्थिति ऐसी नहीं थी। उनमें कुछ ने स्वयं को बेड़ों से बांध लिया, कुछ ने बेड़ों पर उन्होंने पटरों से कामचलाऊ झोपड़ियाँ बना ली थीं। कगार से पूरा दृश्य काव्यात्मक प्रतीत होता था।

दूर के इलाकों के समाचार बेड़ों से आते थे। आखिरकार सभी को मालूम हुआ कि बाढ़ नियंत्रण के नौ वर्षों के असफल प्रयास के बाद सामंत कुन[2] को राजभवन का कोपभाजन बनना पड़ा और उन्हें पंख पर्वत का निर्वासन मिला। उनके स्थान पर उनके पुत्र युवा सामंत वनमिङ की नियुक्ति हुई। वनमिङ के पुकार का नाम आ यूवी[3] था।

जब तक बाढ़ का पानी जमा रहा, सभी विश्वविद्यालय बंद रहे। यहां तक कि बालविहार के लिए भी जगह नहीं थी। फलस्वरूप आम जनता और अधिक मूढ़ हो गई, बहुत से विद्वान संस्कृति पर्वत[4] पर एकत्रित थे। चूंकि उनका भोजन

1. आरंभिक राजवंशों के संग्रह 'इतिहास ग्रंथ' का एक उद्धरण।
2. सामंत शुन बाढ़ नियंत्रण में विफल रहे थे और पंख पर्वत पर उनकी हत्या कर दी गई थी।
3. यूवी शुन के पुत्र माने जाते हैं। बाढ़ नियंत्रण में सफल होने के कारण शुन की राजगद्दी उन्हें मिली थी।
4. संस्कृति पर्वत पर एकत्रित विद्वानों का प्रहसन द्वितीय क्रांतिकारी गृहयुद्ध के समय के संस्कृति जगत के व्यक्तियों और प्रतिक्रियावादी विद्वानों पर व्यंग्य है। संस्कृति पर्वत अक्टूबर 1932 की एक घटना की तरफ संकेत है। उस समय पेइचिङ में ह्याङ हान, ल्यू फू, श्वी पिङछाङ और मा हङ समेत संस्कृति जगत के तीस व्यक्तियों ने क्वोमिनताङ को 'संस्कृति शहर' घोषित करने का आग्रह किया था। उस समय जापानी साम्राज्यवादियों ने उत्तरपूर्व चीन पर कब्जा कर रखा था और उत्तर चीन की स्थिति भी अनिश्चित थी। आत्मसमर्पण और देश को बेचने की नीति का पालन करते हुए क्वोमिनताङ सरकार उत्तर चीन से निकलने की तैयारी कर रही थी और बेचे जा सकने लायक प्राचीन स्मृति चिह्नों को भी पेइचिङ से नानचिङ ले जाने की सोच रही थी। ह्याङ हान और दूसरे विद्वानों ने

अद्‌भुत शिल्पी राज्य के पुष्पक रथ से आ जाता था, इसलिए उन्हें चिन्ता नहीं थी और वे अपने अध्ययन में लगे रहे। फिर भी उनमें से अधिकांश यूवी के खिलाफ थे या उनके अस्तित्व पर ही प्रश्नचिन्ह लगाते थे।

महीने में एक बार बीच आकाश में चकचक-फरफर की आवाज तेज होती थी और फिर पुष्पक रथ नजर आता था। रथ के झंडे के स्वर्णवृत्त से मंद आभा विकीर्णित होती थी। धरती से पांच फीट ऊपर से इससे कुछ टोकरियां लटकी रहती थीं। टोकरियों में क्या होता था, यह विद्वानों के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता था। ऊपर-नीचे बात होती थी :

"गुड मार्निंग।"

"हाउ डू यू डू?"

"आं.....ऊं!"

"ओ के....."[1]

इसके बाद पुष्पक रथ अद्‌भुत शिल्पी राज्य लौट जाता था। आकाश में और विद्वानों के बीच भी खामोशी छा जाती थी। विद्वान खाने में व्यस्त हो जाते थे। केवल पर्वत के शिलाखंडों से टकराने वाली लहरों की आवाज सुनाई पड़ती। दोपहर के आराम के बाद तरोताजा हुए विद्वानों की बहस लहरों की आवाज को भी दबा देती।

"बाढ़ नियंत्रित करने में यूवी को कभी सफलता नहीं मिलेगी, क्योंकि वह कुन का पुत्र है," बेंत लेकर घूमते हुए विद्वान ने घोषणा की। "मैंने अनेक

प्राचीन सांस्कृतिक खजाने के स्थानान्तरण को रोकने की कोशिश की, किन्तु उन्होंने दावा किया कि पेइचिङ का राजनीतिक या सामरिक महत्व नहीं है। इसके साथ ही उन्होंने अजीब प्रस्ताव भी रखा कि सरकार पेइचिङ को बचाने की कोशिश की को छोड़कर उसे सांस्कृतिक क्षेत्र घोषित करे। इसलिए उन्होंने आग्रह किया कि "सरकार पेइचिङ को संस्कृति शहर घोषित करे और समस्त फौजी संस्थाओं को पाओतिङ ले जाए।" पूर्णतः स्पष्ट है कि प्रस्ताव न केवल भ्रांतिपूर्ण था, बल्कि जापानी साम्राज्यवादियों की योजना के अनुरूप था और इसमें क्योमिनताङ सरकार की आत्मसमर्पण नीति के तर्कों की अनुगूंज थी। हालांकि क्योमिलतांङ सरकार ने पेइचिङ को संस्कृति शहर घोषित नहीं किया, मगर 1933 के आरंभ में वे पेइचिङ को जापानी साम्राज्यवादियों के हवाले कर अधिकांश सांस्कृतिक स्मृतिचिह्नों को पेइचिङ से नानचिङ ले गए। जापानी साम्राज्यवादियों ने 18 सितंबर, 1931 को शनयाङ पर कब्जा कर दिया, तब से लेकर मृत्युपर्यंत लू श्यून राष्ट्र के साथ किए क्योमिनताङ के छल का पर्दाफाश करते रहे और एक निबंध में उन्होंने "संस्कृति शहर" के प्रस्ताव की भी तीखी आलोचना की। यहां वे च्याङ हान और दूसरे विद्वानों की याचिका के भ्रांतिपूर्ण तर्कों का मजाक उड़ा रहे हैं। कहानी में प्रस्तुत कुछ विद्वानों का चरित्र समकालीन प्रतिक्रियावादी विद्वानों पर आधारित है।

1. पश्चिमी छद्‌म विद्वानों पर कटाक्ष करने के लिए मूल में भी कथोपकथन अंग्रेजी में है।

सम्राटों, इयूक, मंत्रियों और समृद्ध परिवारों की वंशावली एकत्र की है। अपने लम्बे और गहन अध्ययन से मैंने यह निष्कर्ष निकाला है : समृद्ध के वंशज समृद्ध और दुष्ट के वंशज दुष्ट होते हैं—इसे ही "आनुवंशिकता" कहते हैं। इसी तर्क के आधार पर यदि कुन असफल रहे तो यूवी का भी असफल होना अवश्यंभावी है; क्योंकि एक मूर्ख बुद्धिमान को जन्म नहीं दे सकता।"

"ठीक कह रहे हैं" बिना बेंत के एक विद्वान ने सहमति व्यक्त की।

"पर महानुभाव के पिता के बारे में सोचें।" बिना बेंत के दूसरे विद्वान ने कहा।

"वह थोड़ा 'मन्दबुद्धि' हो सकता है, पर उसने प्रगति की है। यदि वह मूर्ख है तो कभी प्रगति नहीं कर सकेगा...."

"ठीक कह रहे हैं।"

"क्या...बक....बकवास है।" एक विद्वान ने हकलाते हुए कहा, उनकी नाक लाल हो रही थी। "आप अफवाहों से भटक गए हैं। सच्चाई यह है कि यूवी नाम का कोई व्यक्ति नहीं है। यूवी सरीसृप है। क्या सरीसृप ब...ब... बाढ़ नियंत्रित कर सकता है? कुन नाम का व्यक्ति भी नहीं है। कुन मछली है। क्या मछली ब.... ब.... बाढ़ नियंत्रित कर सकती है?" उन्होंने जोर से दोनों पांव पटके।

"कुन के अस्तित्व का सवाल ही नहीं उठता। सात वर्ष पहले मैंने उन्हें अपनी आंखों से देखा था, जब वे खुनलुन पर्वत की तलहटी में आलूचे के फूलों को खिलता देखने का आनंद लेने गए थे।"

"ऐसी स्थिति में नाम में कोई भूल हो सकती है। उनका नाम कुन नहीं, मानव होना चाहिए। जहां तक यूवी की बात है, मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि वह सरीसृप है। उसका अनस्तित्व सिद्ध करने के लिए मेरे पास प्रचुर प्रमाण हैं। निर्णय आप स्वयं कर सकते हैं.....।"

वह निधड़क उठ खड़े हुए। उन्होंने एक चाकू निकाला और चीड़ के पेड़ों की छाल छीलने लगे। उन्होंने पांच पेड़ों की छाल उतारी। रोटी के बचे टुकड़ों में पानी मिलाकर उन्होंने लेई बनाई और फिर उसमें कोयला मिलाया। वह पेड़ों पर अपना तर्क लिखकर यह प्रमाणित करने जा रहे थे कि यूवी का कभी अस्तित्व ही नहीं था। उन्होंने तीन गुण नौ यानी कुल सत्ताईस दिनों तक लिखा। शोध पढ़ने वालों के लिए चिराबेल के दस गूदेदार पत्ते देना आवश्यक था फिर अगर वह बेड़े पर रखता तो उसे एक ताजा सीपदार कसपत देना पड़ता था।

हर तरफ पानी फैला हुआ था। खेती या शिकार करना असंभव हो गया था। बचे हुए लोगों के पास समय की कमी नहीं थी, इसलिए बहुत सारे लोग पढ़ने के लिए आए। तीन दिनों तक लोग चीड़ के पेड़ों का चक्कर लगाते रहे। चारों दिशा में सराहना और थकान के उच्छ्वास की गूंज थी। पर चौथे दिन दोपहर में जब विद्वान तले नूडल्स खा रहे थे, एक किसान बोला—

"कुछ व्यक्तियों का नाम यूवी होता है और यूवी का अर्थ सरीसृप नहीं होता। अपने देश में वानर के लिए भी 'यूवी' लिखने का रिवाज है।"

"क्या लोगों का न.... नाम वानर होता है?..." आधा चबाया कौर निगलते हुए विद्वान गरजे और खड़े हो गए। उनकी नाक का रंग गहरा बैंगनी हो गया था।

"हां, होता है। इतना ही नहीं, मैंने ऐसे लोगों को भी जानता हूं, जिनके नाम कुत्ता और बिल्ली हैं।"

"उससे बहस न करें पक्षीसिर महोदय।" बेंत वाले विद्वान ने अपनी रोटी रखते हुए हस्तक्षेप किया। "देहात के ये सभी लोग मूर्ख होते हैं। अपनी वंशावली दिखाओ। मैं निस्संदेह प्रमाणित कर सकता हूं कि तुम्हारे पूर्वज मूर्ख थे....." उन्होंने डपटकर कहा।

"मेरे पास कभी कोई वंशावली नहीं रही...."

"ओह, ऐसे घृणास्पद व्यक्ति ही मेरे शोध की परिशुद्धता को असंभव बना देते हैं।"

"पर इसके लिए तुम्हारी वंशावली की आ....आवश्यकता नहीं है। मेरा सिद्धांत गलत नहीं हो सकता।" पक्षीसिर महोदय ने क्रोधित होकर कहा, "अनेक विद्वानों ने मेरे पास समर्थन पत्र भेजे हैं। मेरे पास उनके पत्र रखे हुए हैं...."

"नहीं, नहीं, हमें इसकी वंशावली का उल्लेख करना होगा...."

"पर मेरे पास कोई वंशावली नहीं है," मूर्ख ने कहा। "और ऐसे विपत्ति के समय, जब हम चारों तरफ से कट गए हैं, आपके लिए अपने मित्रों से समर्थन पत्र के रूप में प्रमाण पाना घोंघे की खोल में पूजा करने से भी अधिक कठिन होगा। प्रमाण तो हमारे सामने हैं, आपका नाम पक्षीसिर है। क्या आप वास्तव में मनुष्य का सिर होने के बजाय पक्षी का सिर हैं?"

"तुम्हारा सत्यानाश हो।" गुस्से के कारण पक्षीसिर महोदय के कान तक लाल हो गए। "तुमने मेरा अपमान करने का साहस कैसे किया? तुमने परोक्ष

रूप से कहा कि मैं मनुष्य नहीं हूं। चलो सामंत काओ याओ[1] के पास चलें और अपना विवाद कानून के तहत सुलझाएं। अगर मैं मनुष्य नहीं तो खुशीपूर्वक बड़ी से बड़ी सजा स्वीकार करने को तैयार हूं, दूसरे शब्दों में अपना गला कटवा लूंगा। समझे? यदि ऐसा नहीं हो तो तुम्हें सजा मिलेगी। रुको, यहीं ठहरो, मैं जरा अपने नूडल्स खा लूं।"

"महोदय" देहाती ने निर्विकार भाव से कहा, "आप तो विद्वान व्यक्ति हैं, आपको तो मालूम ही होगा कि यह दोपहर के बाद का समय है और दूसरे लोग भी भूखे हैं। समस्या यह है कि मूर्खों का पेट भी विद्वानों के समान ही होता है—उन्हें भी वैसे ही भूख लगती है। मुझे माफ करें, क्योंकि मुझे कसपत पकड़ने जाना है। आपके अर्जी देने के बाद मैं न्यायालय आ जाऊंगा।" इतना कहकर वह अपने बेड़े पर कूदा। उसने अपना जाल उठाया और सेवार एकत्र करने निकल पड़ा। एक-एक करके वहां जमा लोग भी बिखर गए, केवल नाक और कान लाल किये पक्षीसिर महोदय फिर से नूडल्स खाने के लिए रह गए। बेंत वाले विद्वान भी वहीं बैठे सिर हिला रहे थे।

पर यूवी वास्तव में सरीसृप थे या मनुष्य? यह गंभीर सवाल अनसुलझा रह गया।

2

सब कुछ के बावजूद यूवी सरीसृप ही लगा।

आधे वर्ष से अधिक का समय गुजर गया। अद्भुत शिल्पी राज्य का पुष्पक रथ आठ बार आ चुका था, चीड़ पर लिखे लेख पढ़ने वाले दस में से नौ बेड़ा निवासियों के पांव पानी लगने से सूज गए थे, पर अभी तक बाढ़ नियंत्रण के लिए नियुक्त अधिकारी के संबंध में कुछ पता नहीं चला था। पुष्पक रथ जब दसवीं बार आया, तब जाकर लोगों को मालूम हुआ कि वास्तव में यूवी नाम का एक व्यक्ति है। वह सचमुच कुन का पुत्र है और जल नियंत्रण मंत्री के पद पर उसकी शाही नियुक्ति हुई है। वह तीन वर्ष पहले चीचाओं[2] से निकला है और कभी भी पहुंच सकता है।

इस समाचार से हालांकि वे थोड़े उत्तेजित हुए, पर सभी शांत और

1. किदई के सम्मान का चीन के प्राचीन विवेकशील सम्राट शुन के ख्यात न्यायमंत्री थे।
2. नौ प्राचीन चीनी प्रांतों में से एक। किंवदंती के अनुसार चीचओ से ही बाढ़ नियंत्रण कार्य आरंभ हुआ था।

संशयशील बने रहे। उन्होंने इस तरह की इतनी अविश्वसनीय अफवाहें सुनी थीं कि ऐसी बातों पर उन्होंने विशेष ध्यान नहीं दिया।

फिर भी इस बार का समाचार तथ्यों पर आधारित लग रहा था। पंद्रह दिनों के बाद सभी कहने लगे कि मंत्री महोदय शीघ्र ही आने वाले हैं। बहता सेवार एकत्रित करने वाले एक व्यक्ति ने सरकारी नाव देखी थी। उसने अपने सिर का काला-नीला गूमड़ भी दिखाया और यह बताया कि वह उनके रास्ते से जल्दी नहीं हट पाया तो एक रक्षक ने पत्थर से उसे मारा। अब तो मंत्री के आने का स्पष्ट प्रमाण मिल गया था। वह व्यक्ति शीघ्र ही प्रसिद्ध और व्यस्त हो गया। सभी उसके सिर का गूमड़ देखने आए। इतनी भीड़ हो गई कि बेड़ा डूबते-डूबते बचा। फिर विद्वानों ने उसे बुलाया। गंभीर शोध करने के बाद वे सहमत हुए कि उसका गूमड़ असली है। इससे बाध्य होकर पक्षीसिर महोदय को भी अपना दृष्टिकोण त्यागकर ऐतिहासिक अध्ययन दूसरों को दे देना पड़ा और वे लोक कथाएं संग्रह करने चले गए।

गूमड़ निकलने के बीस दिनों के बाद एक ही पेड़ की लकड़ी से बनी बड़ी नावों का बेड़ा पहुंचा। हर एक नाव पर बीस रक्षक चप्पू चला रहे थे और तीस बल्लम लिए खड़े थे। नाव के दोनों सिरों पर झंडे थे। यह बेड़ा जैसे ही पर्वत की चोटी पर पहुंचा, किनारे खड़े कुलीनों और विद्वानों के झुण्ड ने उसका सादर स्वागत किया। कुछ समय के पश्चात सबसे बड़ी नाव से दो स्थूलकाय और प्रौढ़ अधिकारी निकले। उनके साथ बाघ की छाल पहने रक्षकों की एक टुकड़ी थी। वे स्वागत करने वालों के साथ सबसे ऊंची चोटी पर स्थित प्रस्तर कक्ष में गए।

सूखी भूमि और जल में रहने वाले प्राणियों ने सिर उठाकर सुनने की कोशिश की कि क्या बातें हो रही हैं। उन्हें सुनने को मिला कि यूवी नहीं, बल्कि दो सरकारी निरीक्षक आए हैं।

अधिकारी कक्ष के केन्द्र में बैठे और कुछ रोटियां खाने के बाद उन्होंने अपनी जांच आरंभ की।

"स्थिति उतनी बुरी नहीं है। खाने के लिए पर्याप्त भोजन मिल जाता है।" म्याओ बोली के एक विशेषज्ञ विद्वानों के प्रवक्ता थे। "महीने में एक बार पुष्पक रथ से रोटियां गिराई जाती हैं, मछलियों की कोई कमी नहीं है, मछलियाँ कीचड़ खाकर और भी मोटी हो गई हैं, मान्यवर। जहां तक निचले तबके की बात है, उनके लिए भी पर्याप्त चिराबेल और समुद्री फसलें हैं। वे 'दिमाग को काम में लाए बिना दिन भर खाते रहते हैं'—दूसरे शब्दों में, चूंकि उन्हें दिमाग का प्रयोग

नहीं करना है, इसलिए उनके पास जो है, पर्याप्त है। हमने भी उनका भोजन चखकर देखा है और वह अरुचिकर नहीं है, बल्कि एक विशेष स्वाद है उसमें. ..."

"इसके अलावा", सम्राट शन लुङ के चिकित्सा कोश[1] के विशेषज्ञ विद्वान ने जोर देकर कहा, "चिराबेल में विटामिन डब्ल्यू और सेवार में आयोडिन होता है, जो गंडमाला की दवा है—दोनों ही पौष्टिक भोज्य पदार्थ हैं।"

"निश्चित ही", दूसरे विद्वान ने कहा। अधिकारियों ने चकित होकर उन्हें देखा।

"पीने के लिए उनके इच्छानुसार सब कुछ उपलब्ध है", विशेषज्ञ ने आगे कहा, "पेय पदार्थ तो उनकी अगली दस हजार पीढ़ियों के लिए भी पर्याप्त है। दुर्भाग्यवश उसमें थोड़ा कीचड़ मिला हुआ है, इसलिए पीने से पहले उसका आसवन आवश्यक है। हालांकि यह बात मैंने उन्हें बार-बार बताई, पर वे ऐसे मूढ़ मगज हैं कि निर्देशों का पालन नहीं करते। इसी कारण अनेक बीमार हैं.. .."

"क्या इस भयंकर बाढ़ के लिए भी वही लोग उत्तरदायी नहीं हैं?" गहरे भूरे रंग का गाउन पहने एक भद्र पुरुष ने हस्तक्षेप किया। उनकी दाढ़ी पांच जगहों से कतरी हुई थी।

"बाढ़ आने के पहले उन्होंने आलस्य में बांध की मरम्मत नहीं की। बाढ़ आने के बाद उन्होंने आलस्यवश पानी बहाने का काम नहीं किया....।"

"इसी को आध्यात्मिक मूल्यों का लोप कहते हैं, फूशी[2] काल की शैली वाले एक निबंधकार ने दबी हंसी के साथ कहा। वे पिछली कतार में बैठे थे और उनकी मूंछें नोकदार थीं। "जब मैं पामीर पर चढ़ा तो स्वर्ग की हवा चल रही थी, आलूचे के फूल खिले थे, सफेद बादल आकाश में तैर रहे थे, सोने का भाव चढ़ा हुआ था और चूहे सोए हुए थे। मैंने एक युवक को देखा, उसके मुंह में सिगार था और चेहरे पर छीयओ[3] की धुन्ध थी। ....हा ....हा ....हा!...कोई उपाय नहीं है...।"

"निश्चित ही।"

---

1. जड़ी-बुटियों की अत्यंत प्राचीन चीनी पुस्तक। इसके संग्रह की तिथि अनिश्चित है, पर संभवतः यह हान या वेई राजवंश के समय लिखी गई और इसका श्रेय शनलुङ को मिला।
2. प्राचीन चीन के एक सम्राट। कहा जाता है कि उन्होंने ही अष्ट तत्वों का चित्रण किया था।
3. प्राचीन किंवदंती के अनुसार छीयओ उत्तर चीन की च्यूली जाति के प्रधान थे।

घंटों इस ढंग की बातें होती रहीं। ध्यान से सारी बात सुनने के बाद अधिकारियों ने उनसे पुनर्वास के विस्तृत प्रस्तावों के साथ एक संयुक्त रिपोर्ट लिखने को कहा। इसके बाद अधिकारी अपनी नाव में लौट गए।

अगले दिन यात्रा की थकान का बहाना कर उन्होंने कोई कार्य सम्पादित नहीं किया और न ही आगंतुकों से मिले। तीसरे दिन विद्वान उन्हें सबसे ऊंची चोटी पर स्थित चीड़ का पुराना छतरीनुमा पेड़ दिखाने ले गए। दोपहर में वे पर्वत के पीछे ईल मछलियां पकड़ने गए और शाम तक मजे लेते रहे। चौथे दिन जांच और निरीक्षण की थकान का बहाना कर उन्होंने कोई कार्य संपादित नहीं किया और न ही आगंतुकों से मिले। पांचवें दिन दोपहर में उन्होंने निचले तबके के प्रवक्ता को बुलवाया।

निचले तबके में चार दिन पहले से ही प्रवक्ता की खोज हो रही थी, पर कोई भी इस कार्य के लिए तैयार नहीं हो रहा था। सभी का एक ही बहाना था कि उन्हें अधिकारियों के सम्मुख प्रस्तुत होना नहीं आता। तदनन्तर बहुमत से उस व्यक्ति को प्रवक्ता चुना गया, जिसके सिर पर गूमड़ निकला था। क्योंकि उन्होंने सोचा की उसे अधिकारियों से मिलने का अनुभव है। उसका गूमड़ ठीक हो गया था, मगर प्रवक्ता चुने जाने के बाद फिर से उसमें टीस होने लगी। उसे ऐसे लगा रहा था कि कोई सूइयां चुभो रहा हो। अश्रुपूर्ण नेत्रों के साथ उसने अनुनय किया, "प्रवक्ता होने की अपेक्षा मृत्यु अधिक उत्तम है!" सभी लोग दिन-रात उसके पीछे लगे रहे कि यह उसकी नैतिक जिम्मेदारी है। उस पर जनता के हित की उपेक्षा करने का दोष मढ़ा गया और कहा गया कि वह स्वार्थी और व्यक्तिवादी है, उसे चीन में रहने का अधिकार नहीं है। अधीर लोगों ने इस बाढ़ के लिए उसे जिम्मेदार बताया और उसके चेहरे के आगे मुक्का ताना। आग्रह और ताने सुन-सुनकर वह थक गया, अंततः उसने निर्णय लिया कि बेड़े पर रहकर मृत्यु का शिकार होने से अच्छा जनहित में बलिदान हो जाना होगा। मन मजबूत कर चौथे दिन उसने सहमति दे दी।

भीड़ ने उसकी जय-जयकार की। इससे कुछ धृष्ट आत्माओं को अनुताप हुआ। पांचवें दिन सुबह लोग उसे जल के किनारे ले गए और बुलाहट की प्रतीक्षा में बैठे रहे। अधिकारियों ने उसे बुलवाया। उसके पांव कांप रहे थे, पर उसने अपना मन मजबूत किया और दो जंभाइयां लीं। फिर तो उसे ऐसा महसूस हुआ कि उसने धरती छोड़ दी है और हवा में तैर रहा है। आंखों में दर्प लिए वह अधिकारियों की नाव पर चढ़ा।

अजीब बात हुई, न तो बल्लमधारी रक्षकों ने और न ही बाघ की खाल पहने रक्षकों ने उसकी पिटाई की। वे उस पर डपटे भी नहीं, बल्कि उसे केन्द्रीय केबिन तक जाने दिया। फर्श पर भालू और तेंदुए की खालें बिछी हुई थीं, दीवार पर तीर- धनुष लटके थे, सजे हुए पात्रों और गमलों से उसकी आंखें चौंधियाँ गईं। साहस करके उसने देखा कि सामने दो स्थूलकाय अधिकारी बैठे हैं। उनके चेहरों को गौर से देखने की उसकी हिम्मत नहीं हुई।

"क्या तुम आम जनता के प्रवक्ता हो?" एक अधिकारी ने पूछा।

"उन्होंने मुझे यहां भेज दिया", उसकी आंखें तेंदुए की खाल के मगवार्ट पत्ते जैसे धब्बों पर टिकी थीं।

"तुम लोगों की स्थिति कैसी है?"

उसकी समझ में नहीं आया, इसलिए उसने कोई जवाब नहीं दिया।

"तुम लोग अच्छी तरह से तो हो?"

"हां, मान्यवर की कृपा है...." पलभर सोचने के बाद उसने जोड़ा, "हम लोग कोशिश... हम लोग किसी तरह पार लगा रहे हैं...."

"क्या खाते हो तुम लोग?"

"पत्ते, सेवार..."

"क्या ऐसी चीजें खा लेते हो?"

"हां, हां, हमें सबकी आदत पड़ गई है। हम कुछ भी खा सकते हैं। केवल कुछ बदमाश युवक थोड़ा हो-हल्ला मचाते हैं। मनुष्य के हृदय में शैतान जन्म लेता है, पर हम भी उनकी खूब पिटाई करते हैं!"

अधिकारी हंसे और एक ने दूसरे से कहा, "बेचारा ईमानदार आदमी!"

अपनी प्रशंसा सुनकर वह फूला न समाया। इससे उसकी हिम्मत बढ़ी और उसने धाराप्रवाह बोलना शुरू कर दिया।

"हम हमेशा कोई न कोई रास्ता निकाल लेते हैं। जल वनस्पति से अच्छा चिकना पन्ना सूप बनता है, जबकि चिराबेल प्रथम प्रेमयाचन दलिया के लिए उत्तम है। हम पेड़ों की सारी खाल नहीं उतारते, कुछ छोड़ देते हैं कि अगले वसंत में शाखाओं पर नये पत्ते आएं और हम तोड़ सकें। मान्यवर की कृपा से यदि कभी ईल मछली मिल जाती है तो...."

ऐसा लगा कि अधिकारी उसकी बातों से ऊब गए हैं। उनमें से एक ने लगातार दो लम्बी जंभाइयां लीं। फिर उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा, "पुनर्वास के विस्तृत सुझावों के साथ एक संयुक्त रिपोर्ट तैयार करो।"

"पर हममें किसी को लिखना नहीं आता।" उसने डरते हुए कहा।

"क्या तुम सब अशिक्षित हो? यह तो तुम्हारा पिछड़ापन है। ऐसी स्थिति में तुम लोग जो खाते हो, उसके नमूने ले आओ।"

वह डरा हुआ, मगर अंदर ही अंदर आनंदित वहां से अपना गूमड़ रगड़ता निकला। उसने बिना समय खोए किनारे, पेड़ों और बेड़ों के निवासियों को सरकारी आदेश सुनाया। इसके अतिरिक्त तेज आवाज में उसने उन्हें आदेश भी दिया, "इसे ऊपर वालों के पास भेजना है। सब कुछ सफाई और सावधानी से अच्छी तरह होना चाहिए...."

आम जनता ने एक साथ पत्ते साफ करना, पेड़ की खाल छीलना और जल वनस्पति बटोरना आरंभ कर दिया। हर तरफ हलचल और व्यस्तता थी। उपहार रखकर देने के लिए उसने स्वयं लकड़ी छीलकर एक मंजूषा बनाई। लकड़ी के दो तख्तों को चिकना बना और चमकाकर वह उसी रात पहाड़ की चोटी पर गया और उसने विद्वानों से उन तख्तों पर लिख देने की प्रार्थना की। एक तख्ता मंजूषा के ढक्कन के लिए था। वह उस पर "पर्वत के समान स्थायी दीर्घ जीवन, सागर के समान गहरी खुशी" लिखवाना चाहता था। दूसरा तख्ता उसने अपने बेड़े पर अधिकारियों से प्राप्त सम्मान की याद में लटकाने के लिए बनाया था। उस पर वह "ईमानदार आदमी का घर" लिखवाना चाहता था। पर विद्वानों ने केवल प्रथम वाक्य लिखा।

3

दोनों अधिकारियों के राजधानी लौटने तक दूसरे निरीक्षक भी एक-एक करके लौट आए थे। केवल यूवी अभी तक बाहर थे। कुछ दिनों तक लौटे अधिकारियों ने घर पर आराम किया, फिर जल नियंत्रण विभाग के सहकर्मियों ने उन्हें उनकी वापसी के उपलक्ष्य में आयोजित एक भोज में आमंत्रित किया। भोज के निमित्त किए योगदान को खुशी, प्रतिष्ठा और दीर्घायु तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया। सबसे कम योगदान बीस कौड़ियां[1] थीं। उस दिन बढ़िया घोड़ों और भड़कीली सवारियों का तांता दिखाई पड़ा। झुटपुटा होने के पहले मेजबान और मेहमान सभी इकट्ठे हो गए थे। प्रांगण में मशालें जला दी गईं। पात्र में परोसे बड़े मांस की स्वादिष्ट खुशबू बाहर तक जा रही थी। बाहर तैनात संतरियों के मुंह में पानी आ गया। तीन बार शराब ढालने के बाद अधिकारियों

1. चीन की प्राचीन मुद्रा।

ने निरीक्षित बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों के दृश्यों का वर्णन आरंभ किया। बर्फ जैसे सफेद नरकुल के फूल, सोने सा चमकता कीचड़दार पानी, ईल मछली, चिकनी और फिसलने वाली जल वनस्पतियां....। नशा चढ़ने के बाद उन्होंने वहां से लाए भोजन के नमूने दिखाए। नमूने काठ की एक मंजूषा में रखे थे, जिसके ढक्कन पर फूशी की अष्ट तत्वों के चित्र और छाङ्ची के "सिसकता भूत" रेखाक्षर[1] की शैली में समर्पण शब्द लिखे थे। पहले तो सभी ने लिपि कला की प्रशंसा की, फिर पस्त पड़ने तक उस पर बहस की और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि "राज्य समृद्ध है और जनता सुखी और संतुष्ट है।" समर्पण शब्द को प्रथम स्थान दिया जाना चाहिए। यह फैसला केवल प्राचीन शैली में लिखी लगभग अपाठ्य लिपिकला के कारण ही नहीं लिया गया था, बल्कि उसमें व्यक्त भाव भी समुचित और शाही इतिहासकारों द्वारा दर्ज करने योग्य था।

चीनी विशेषताओं वाली कला का मूल्यांकन करने के बाद सांस्कृतिक समस्याओं की चर्चा समाप्त हो गई। फिर मंजूषा में रखे नमूनों की जांच करने की बारी आई। केक के आकारों की सभी ने प्रशंसा की। किन्तु शायद उन्होंने ज्यादा शराब पी ली थी, इसलिए थोड़ा मतभेद हो गया। एक ने चीड़ की छाल से बना केक और उसके ताजा स्वाद की बहुत प्रशंसा की। उसने घोषणा कर दी कि अगले दिन वह त्यागपत्र देकर सेवानिवृत्ति ले लेगा और इस वास्तविक सुख का आनंद लेगा। दूसरे ने साइप्रस के पत्तों से बनी रोटी चखी। उसने बताया कि रोटी खुरदुरी है और स्वाद भी कड़वा है। रोटी चखने में उसकी जीभ छिल गई थी। इस तरह जनसाधारण के कष्ट में सहभागी होने से यह पता चला कि न केवल राज्य में तंगहाल लोग हैं, बल्कि मंत्री होना भी सहज नहीं है। कुछ अधिकारी उनके हाथों से केक और रोटी छीनने के लिए झपटे, क्योंकि थोड़ी देर में ही चंदा उगाहने की प्रदर्शनी में उन्हें प्रदर्शित किया जाना था। यदि सारे नमूनों में दांत के निशान हों तो खराब लगेगा।

इस बीच बाहर हो-हल्ला बढ़ गया। काले चेहरे और फटे-चिथड़े कपड़ों में रूखे और भिखमंगों जैसे लगने वाले लोगों का एक झुण्ड घेरा तोड़कर विभाग के अंदर आने का प्रयास कर रहा था। संतरियों ने भी शोर मचाते हुए उनका रास्ता रोकने के लिए अपने चमकदार बल्लमों को एक-दूसरों से जोड़कर धक्का दिया।

"यह क्या है? जरा आंखें खोलकर देखो?" क्षणभर के लिए स्तंभित रहने

1. किंवदंती के अनुसार छाङ ची शाही इतिहासकार थे और उन्होंने चीनी लिपि का आविष्कार किया था।

के बाद आगे चल रहे लम्बे हाथ-पांच वाले लंबे और दुबले व्यक्ति ने कहा।

रक्षकों ने धूमिल प्रकाश में आंखें गड़ाकर सामने खड़े व्यक्ति को देखा और फिर सावधान की मुद्रा में खड़े हो गए। उन्होंने बल्लम खड़ाकर झुण्ड को अंदर जाने दिया। संतरियों ने केवल घर का बुना गहरा नीला गाउन पहनी औरत को रोका। उसकी गाद में एक बच्चा भी था। वह हांफती हुई झुण्ड में पीछे चल रही थी।

"अरे! क्या तुम मुझे नहीं पहचानते?" बंधी मुट्ठी से माथे का पसीना पोंछते हुए उस औरत ने चौंककर पूछा।

"निस्संदेह हम आपको पहचानते हैं, श्रीमती यूवी!"

"फिर मुझे अंदर क्यों नहीं जाने देते?"

"मुसीबत की घड़ी है, श्रीमती यूवी। इस वर्ष जननैतिकता को परिशोधित करने और पुरुषों के हृदय को सुधारने के लिए महिलाओं और पुरुषों का पृथक्करण किया गया है। आजकल किसी भी सरकारी विभाग में नारियों का प्रवेश वर्जित है। यह केवल यहां और आप ही के साथ नहीं हो रहा है। ऊपर से ऐसा ही आदेश है, हम कुछ नहीं कर सकते।"

श्रमती यूवी थोड़ी देर के लिए सन्न रह गई, फिर भौंहें चढ़ाकर चिल्लाई, "तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े हो जाएं! किसका श्राद्ध करने जा रहे हो? तुम अपने घर के सामने से गुजरे और तुमने अंदर झांककर भी नहीं देखा, इतनी तेजी से भाग रहे थे कि लगता था तुम्हारे मां-बाप मर गये हों। तुम एक अधिकारी हो, एक अधिकारी। अधिकारी होने का क्या फायदा है? तुम्हें याद नहीं, तुम्हारे पिता को कैसे निर्वासन मिला। वे एक झील में डूबकर मर गए और विशाल कछुआ बन गए। वे तुम्हें टुकड़े-टुकड़े कर दें, निर्दयी नीच!...."

विभाग के बड़े कक्ष में भी हो-हल्ला मचा हुआ था। भीड़ को अंदर आते देखकर भोज में शरीक अधिकारियों ने पहले भागने की बात सोची। पर जब कोई हथियार नहीं भांजा गया तो उन्होंने साहस से काम लिया और पास आने वाले लोगों को देखा। हालांकि सामने खड़ा व्यक्ति काला और मरियल था, पर उसकी चाल-ढाल से उन्होंने उसे पहचान लिया। वे यूवी थे। दूसरे सारे लोगों के बारे में कहने की जरूरत नहीं कि वे उनके समर्थक थे।

इस सदमे से उनका नशा हिरण हो गया। वस्त्र संभालते हुए वे अपनी सीटों से पीछे हटे। यूवी सीधे अंदर गये और मुख्य कुर्सी पर जा बैठे। भद्रता के अभाव के कारण या फिर गाऊट बीमारी के कारण वे पांव पर पांव बढ़ाकर नहीं,

बल्कि पांव पसारकर बैठे। उनके पांव अधिकारियों की तरफ थे। उन्होंने मौजे नहीं पहने थे। उनके तलवों में सिंघाड़े के आकार की गांठें थीं। उनके समर्थक उनकी दोनों तरफ बैठ गए।

"क्या मान्यवर आज ही राजधानी लौटे?" घुटनों के बल झुकते हुए दूसरों की अपेक्षा साहसी एक अधिकारी ने सादर पूछा।

"आप सभी लोग थोड़ा निकट आकर बैठें।" यूवी ने सवाल की उपेक्षा करते हुए कहा। "आप लोगों की जांच कैसी रही?"

घुटनों के बल बैठते हुए अधिकारियों ने एक-दूसरे को परेशान भाव से देखा। वे भोज की गिरी जूठन के बीच बैठे थे। चखे हुए चीड़ की छाल के केक और कुतरकर साफ की गई बैल की हड्डियां पड़ी थीं। अपनी परेशानी के बावजूद उनका साहस नहीं हुआ कि वे रसोइयों को सफाई करने का आदेश दें।

"मान्यवर यह जानकर प्रसन्न होंगे", एक अधिकारी ने साहस कर बताना आरंभ किया कि, "स्थिति इतनी बुरी नहीं है। हमारी राय अच्छी ही बनी है। चीड़ की छाल और जल वनस्पतियां प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं और पीने के लिए पानी भी उनके पास पर्याप्त है। अच्छे सीधे जन साधारण अपने जीवन के आदी हो चुके हैं। मान्यवर को मालूम ही है कि उनकी सहनशक्ति विश्वविख्यात है।"

"आपके विनीत सेवक ने चंदा उगाहने हेतु एक योजना का प्रारूप तैयार किया है", दूसरे ने कहा। "हमने विचित्र भोजन की एक प्रदर्शनी आयोजित करने का विचार किया है, हम सुश्री न्वी वेई को भी पुतला प्रदर्शन के लिए आमंत्रित करेंगे। टिकट बेचे जाएंगे, पर भीड़ जुटाने के लिए यह घोषणा की जाएगी कि प्रदर्शनी में कोई चंदा नहीं लिया जाएगा।"

"बहुत अच्छा।" यूवी ने हामी भरी।

"अत्यंत आवश्यक बात यह है", तीसरे ने कहा कि, "विद्वानों को ऊंची जगह पर पहुंचाने के लिए अविलम्ब एक बड़ा बेड़ा भेजा जाना चाहिए। इसके साथ ही अद्भुत शिल्पी राज्य में भी यह बताने के लिए दूत भेजा जाना चाहिए कि हम संस्कृति का आदर करते हैं और उनकी राहत सामग्री हर महीने भेजी जाती रहेगी। विद्वानों ने बड़ी अच्छी रिपोर्ट भेजी है। रिपोर्ट में बल देकर कहा गया है कि संस्कृति राष्ट्र की जीवन-शक्ति है और विद्वान उसकी आत्मा। जब तक संस्कृति का अस्तित्व रहेगा, चीन का अस्तित्व रहेगा। शेष बातें गौण हैं.. .."

"उनके अनुसार चीन की जनसंख्या बहुत अधिक है", पहले अधिकारी ने

कहा। शांति सुनिश्चित करने के लिए जनसंख्या में कमी उत्तम उपाय है।[1] और फिर जनता सीधी-सादी है। उनका आनंद-क्रोध, सुख-दुख किसी भी तरह विद्वानों की कल्पना के समान सूक्ष्म नहीं हो सकता। व्यक्ति को जानने और घटनाओं को समझने के लिए आत्मनिष्ठ होना प्रथम शर्त है। शेक्सपीयर का ही उदाहरण लें....''

''बकवास!'' यूवी ने सोचा, किन्तु ऊंची आवाज में उन्होंने कहा, ''अपनी जांच से मुझे यह लगा कि बांध बनाने का पुराना तरीका बिल्कुल गलत था। भविष्य में हम नहरें बनायेंगे। आप भद्रजनों की क्या राय है?''

श्मशान की तरह सन्नाटा छा गया। अधिकारियों के चेहरे पर मृत्युवत लहर दौड़ गई; कुछ ने स्वयं को अस्वस्थ महसूस किया। उन्हें कल बीमारी की छुट्टी लेनी होगी।

''वह छी यओ का तरीका था!'' एक युवा अधिकारी ने विरोध किया। वह अत्यंत गुस्से में था।

''मेरा नम्र निवेदन है कि मान्यवर यह निर्णय वापस ले लें।'' साम्राज्य के भविष्य का भार अपने कंधों पर महसूस करने वाले एक वयोवृद्ध अधिकारी ने अपनी जान का जोखिम उठाने का साहस कर दृढ़ विरोध किया। ''बांध बनाने का तरीका आपके स्वर्गीय आदरणीय पिता ने सुझाया था। 'सही पुत्र वही है, जो तीन वर्ष तक पिता की राह नहीं छोड़ता।'[2] और अभी आपके पिता के स्वर्ग सिधारे तीन वर्ष भी नहीं हुए।''

यूवी खामोश बैठे रहे।

''और यह भी विचार करें कि आपके स्वर्गीय आदरणीय पिता ने कितनी मुसीबतें उठाईं!'' यूवी के मामा के दत्तक पुत्र ने कहा। उनकी दाढ़ी और बाल सफेद हो चुके थे। ''उन्होंने बाढ़ रोकने के लिए देव से 'हिराड'[3] उधार लिया, हालांकि वे इसके लिए देवी के क्रोध के भाजन बने, पर बाढ़ का पानी घटा। मेरे विचार में हमें उन्हीं का तरीका जारी रखना चाहिए।''

1. उस समय के छद्म विद्वानों और अधिकारियों द्वारा ''जनसंख्या में कमी'' के संदर्भ में प्रस्तुत तर्क। उदाहरण के लिए छन यूवान ने माडर्न रिव्यू, खंड 3, अंक 73 (1 मई, 1926) के ''निरर्थक गपशप में'' भ्रांतिपूर्ण तर्कों के सहारे जन्म नियंत्रण पर जोर दिया था कि न केवल अपनी जनसंख्या बढ़ाने की कोई जरूरत नहीं है, बल्कि यहां तक कि आधी जनसंख्या कम भी कर दी जाए तो कोई नुकसान नहीं होगा। उस समय ऐसे अनेक तर्क दिये जाते थे।
2. कन्फ्यूशियस के सूक्तिसंग्रह का एक उद्धरण।
3. पौराणिक मिट्टी, जो बढ़ती रहती थी और कभी नष्ट नहीं होती थी।

यूवी खामोश बैठे रहे।

''मान्यवर, आपके पिता जिस काम को करने में असफल रहे, उसे आप अवश्य पूरा करें'', एक मोटे अधिकारी ने व्यंग्यपूर्ण स्वर में कहा। हालांकि यूवी की खामोशी से उसे लगा कि वे उसकी बात से लगभग सहमत हैं, पर उसके माथे से पसीना चूने लगा। ''अपने परिवार का पुराना तरीका अपनाकर परिवार का नाम पुनः प्रतिष्ठित करें। मान्यवर को किंचित नहीं मालूम कि वे आपके स्वर्गीय आदरणीय पिता के संबंध में कैसी बातें कर रहे हैं....''

''संक्षेप में कहें तो बांध बनाने का लाभ संपूर्ण विश्व में प्रमाणित हुआ है'', वयोवृद्ध अधिकारी ने अपने मोटे सहकर्मी के अविचारपूर्ण कथन को छिपाने के उद्देश्य से बीच में टोकते हुए कहा, ''सभी नये तरीके 'आधुनिक' हैं-छी यओ यही गलती कर बैठे।''

यूवी धीमे से मुस्कराए, ''मैं जानता हूं। कुछ लोग कहते हैं कि मेरे पिता भूरा भालू हो गए, कुछ कहते हैं कि वे तीन पांव के कछुआ बन गए, इससे भी अधिक कुछ लोग मुझ पर प्रसिद्ध होने या पैसे कमाने का आक्षेप करते हैं। उन्हें कहने दें। मैं आपको बताना चाहता हूं कि मैंने पहाड़ों और झीलों का मानचित्र तैयार किया है। मैंने लोगों से उनकी राय पूछी है, मैंने इस समस्या को सही संदर्भ में देखा है और फिर एक निर्णय पर पहुंचा हूं। जो भी हो, हमें नहरों का उपयोग करना चाहिए। यहां उपस्थित मेरे सहकर्मी भी यही राय रखते हैं।''

यूवी ने अपने दोनों हाथों से अपनी दोनों तरफ संकेत किया। वयोवृद्ध, पके बाल व दाढ़ी वाले, छोटे सफेद चेहरे के, मोटे और स्वेदित, मोटे और अस्वेदित सभी ने संकेत की गई दिशा में देखा। उन्हें पंक्तियों में बैठी काली, मरियम और भिखमंगों जैसी आकृतियों के अलावा और कुछ नहीं दिखा। वे आकृतियाँ न तो हिलीं, न बोलीं और न ही मुस्कराईं, ऐसा लगा कि लोहे में ऐली बेजान आकृतियाँ बैठी हों।

4

यूवी के जाने के बाद समय तेजी से बीता। अगोचर रूप में राजधानी दिन-प्रतिदिन समृद्ध होती गई। सबसे पहले कुछ अमीरों ने माड़ीदार रेशम पहनना शुरू किया, फिर फल की बड़ी दुकानों में नारंगी और चकोतरे बिकने आए। रेशम की दुकानों में नये वस्त्र लटके और संपन्न लोगों की मेजों पर शार्क फिन शोरबा, अच्छी सोयाबीन सास और सिरका में डूबे घोंघे दिखे। बाद में, पुरुषों के पास अभी भालू की खाल के कंबल और लोमड़ी के चमड़ों के अस्तर

लगे जेकैट ही थे, मगर उनकी पत्नियाँ सोने की बालियां और कंगन पहनने लगीं।

कोई भी अपने दरवाजे पर खड़ा होकर ताजा दृश्य देख सकता था। किसी दिन बांस के तीरों से भरी गाड़ी गुजरती, अगले दिन चीड़ के तख्ते होते; कभी कृत्रिम पहाड़ बनाने के लिए अद्‌भुत आकार की चट्टानों से भरी गाड़ी जाती या दलिया में मिलाने के लिए जिंदा मछलियां जातीं। यहां तक कि आपको एक फुट दो इंच लम्बे कछुवों से भरी गाड़ियां सीधी राजधानी की ओर जाती दिखाई दे सकती थी, वे बांस की झांपियों में रखे होते और उनका सिर खाल के अंदर छिपा होता।

"मां, बड़े कछुए को देखो!" लड़के चिल्लाते हुए दौड़ते और गाड़ियां घेर लेते।

"रास्ते से हटो, बदमाशो। यह कीमती खजाना सम्राट का है। क्या तुम अपने सिर गंवाना चाहते हो?"

राजधानी में मूल्यवान चीजों के साथ ही यूवी का भी समाचार आता। झोंपड़ियों की ओलतियों के नीचे, सड़क के किनारे लगे पेड़ों की छाया में उनके बारे में किस्से कहे जाते। सबसे लोकप्रिय किस्सा था कि वे रात में कैसे भूरे भालू में बदल जाते हैं और कैसे अपने नथुने और पंजों से उन्होंने नौ नदियों का निकर्षण किया, कैसे उन्होंने स्वर्गिक सैन्य टुकड़ियों और सेनापतियों को ऊ चीछी को पकड़ने के लिए भेजा, वही राक्षस बाढ़ लाया था और उसे कछुआ पहाड़ के नीचे बंद कर दिया गया था। सम्राट शुन के साहसिक कार्यों की अब कोई चर्चा नहीं होती थी; ज्यादा से ज्यादा राजकुमार तानचू के निकम्मेपन का उल्लेख किया जाता था।

जब से यूवी के राजधानी लौटने का समाचार फैला था, प्रतिदिन उनका जुलूस देखने के लिए सड़क पर भीड़ जमा हो जाती। पर वह कभी नहीं आया। हां, उनके बारे में विश्वसनीय समाचार आने लगे थे और आखिरकार एक सुबह हजारों की भीड़ के साथ वे राजधानी चीचओ पहुंचे। उस सुबह बदली नहीं छाई थी, केवल भिखमंगों जैसे समर्थकों की भीड़ साथ चल रही थी। लम्बे हाथ-पांव के मनुष्य का ढांचा, सांवला चेहरा और भूरी दाढ़ी के साथ यूवी सबसे पीछे चल रहे थे। उनकी टांगें टेढ़ी थी, वे अपने दोनों हाथों में एक नुकीला बड़ा काला पत्थर थामे चल रहे थे-यह श्वान क्वेइ[1] सम्राट शुन ने उन्हें प्रदान किया था।

1. क्वेई जेड का नुकीला टुकड़ा होता था, जिसे दरबार के समारोह या बलिदान के समय सामंत अपने साथ रखते थे। 'श्वान' का अर्थ 'काला' होता है।

"रास्ता दो, रास्ता दो!" आवाज लगाते हुए वे भीड़ से रास्ता बनाते शाही महल तक गए।

महल के द्वार पर लोगों के जयघोष और टीका-टिप्पणी की तेज आवाज नदी की लहरों के समान हिलोरें ले रही थीं।

सम्राट शुन वर्षों से ड्रैगन सिंहासन से राज्य चला रहे थे, अब उम्र की थकान के साथ उन्हें हल्का खतरा महसूस हो रहा था। यूवी के प्रवेश करने पर उन्होंने शिष्टाचार में खड़े होने में तेजी दिखाई। अभिनंदन के आदान-प्रदान के बाद मंत्री काओ या ओ ने कुछ शिष्ट वचन कहे। फिर सम्राट ने कहा,

"मुझे ज्ञान की बातें बताएं।"

"क्या कहना बाकी है?" यूवी ने रुखाई के साथ कहा। "मेरा हर दिन इसी बुद्धि-विवेक के कठिन निर्वाह की कोशिश में बीतता रहा।"

"इसके निर्वाह में—इसका क्या अर्थ हुआ?" काओ याओ ने जिज्ञासा प्रकट की।

"जब पर्वतों को घेरती और पहाड़ियों को डुबोती भयंकर बाढ़ आई तो पानी ने लोगों को भी निगल लिया", यूवी ने कहा। "मैं गाड़ी से जमीन पर, नाव से पानी में, स्लेज से कीचड़ में और पालकी से पर्वतों पर गया। प्रत्येक पर्वत पर मैंने पेड़ काटकर गिराए और ई की सहायता से सभी के खाने के लिए चावल और मांस का इंतजाम किया। मैंने खेतों में जमा पानी को नदियों में बहाया और फिर नदी के पानी को समुद्र में; ची की सहायता से लोगों के बीच अत्यधिक आवश्यक सामग्रियां बांटीं। जहां कहीं भी कमी थी, मैंने जिलों से वहां सामान भिजवाए। निवासियों को दूसरी जगहों पर बसाया। इस तरह आखिर में हर जगह के लोग शांति से बस सके और व्यवस्था लौटी।"

"बहुत अच्छा यह समझदारी की बात है", काओ याओ ने सहमति प्रकट की।

"हूं!" यूवी ने कहा, "शासन करने के लिए व्यक्ति को बुद्धिमान और शांतचित्त होना चाहिए। ईश्वर पर विश्वास करें और ईश्वर पूर्वजों की तरह आप पर भी कृपा करेगा।"

सम्राट शुन ने ठंडी सांस लेते हुए राज्य कार्य यूवी को सौंपा और अपने सामने खुलकर बोलने और पीठ पीछे आलोचना न करने का आदेश दिया। यूवी की सहमति के बाद सम्राट ने फिर से ठंडी सांस लेते हुए कहा, "तानचू की तरह मेरी अवज्ञा मत करना, वह दुर्व्यसनों में लिप्त रहता है, सूखी जमीन पर नाव

चलाता है और ऐसी मुश्किलें खड़ी करता है कि जीना असंभव हो रहा है। वह असह्य हो गया है।"

"मैंने अपने विवाह के चार दिन बाद घर छोड़ दिया", यूवी ने कहा। "मेरा एक पुत्र है। उसका नाम आ छी है। पर मैं उसे पिता का समुचित प्यार नहीं दे पाया। बाढ़ नियंत्रण के लिए मैंने साम्राज्य को पांच क्षेत्रों में बांटा। प्रत्येक क्षेत्र पांच हजार वर्ग ली और बारह प्रांतों का है और समुद्र तक फैला हुआ है। मैंने पांच गर्वनर नियुक्त किये, म्याओ के अलावा सभी अच्छे व्यक्ति हैं। आप म्याओ पर अवश्य ही नजर रखें।"

"यह तुम्हारे साहसिक कार्यों का ही परिणाम है कि मेरा साम्राज्य फिर से व्यवस्थित हो पाया", सम्राट ने प्रशंसा की।

इसके बाद काओ याओ और सम्राट शुन ने आदर में सिर झुकाए। दरबार समाप्त होने के तुरंत बाद सम्राट ने राजाज्ञा जारी कर सभी नागरिकों को आदेश दिया कि वे यूवी के कार्यों से सीखें, अन्यथा उन्हें दंडित किया जाएगा।

इससे व्यापारियों के बीच तहलका मच गया, किंतु सौभाग्यवश राजधानी लौटने के बाद यूवी के रवैये में थोड़ा बदलाव आया। अभी भी घर पर उनका खान-पान साधारण था, पर बलिदान या सार्वजनिक अवसरों पर वे पूरा ताम-झाम करते थे। सामान्य तौर पर वे अभी भी साधरण कपड़े पहनते थे, मगर दरबार जाते समय या किसी से मिलते समय भव्य और भड़कीले कपड़े पहनते थे। इस तरह यापार प्रभावित नहीं हुआ और कुछ दिनों के बाद व्यापारियों ने भी कहना शुरू कर दिया कि यूवी सबके लिए एक आदर्श उदाहरण हैं और काओ याओ के नये कानून बुरे नहीं हैं। फिर पूरे विश्व में ऐसी शांति छाई कि जंगली जानवरों ने नृत्य किया और अमरपक्षी भी इस आनंद में सम्मिलित होने के लिए धरती पर उतरे।

नवंबर 1935

मोठ संग्रहण

1

पिछले छः महीनों से बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के 'वयोवृद्ध सदन' की भी शांति खो गई थी। कुछ वृद्ध बड़े उत्साह से कानाफूसी में मग्न थे, वे तेजी से अंदर- बाहर आ जा रहे थे। अकेले पोई[1] इस सांसारिक मामले से विरक्त थे। शरद का मौसम था और हल्की ठंड थी। अपने बुढ़ापे के कारण उन्हें ठंड का खतरा था, इसलिए वे धूप में ड्योढ़ी पर बैठकर दिन बिताते। कोई तेज कदमों से उनकी तरफ आता तो भी वे सिर उठाकर नहीं देखते।

"भैया!"

यह शूछी की आवाज थी। शिष्टाचार के आग्रही पोई सिर उठाने के पहले उठकर खड़े हो गए और छोटे भाई को बैठने के लिए कहा।

"भैया, राजनीतिक स्थिति अच्छी नहीं दिखती।" शूछी ने बैठते हुए कहा। वे हांफ रहे थे और उसकी आवाज में थरथराहट थी।

"क्या बात है?" पलटने पर पोई ने अपने भाई का चेहरा सामान्य से अधिक पीला हुआ देखा।

"आपने उन दो अंधे संगीतज्ञों के बारे में अवश्य सुना होगा, जो शाङ राज्य से भागकर यहां आये हैं।"

"हां, कुछ दिनों पहले सान ईशङ ने उनका उल्लेख किया था। मैंने विशेष ध्यान नहीं दिया।"

"मैं आज उनसे मिला। एक उस्ताद छूयी हैं और दूसरे शार्गिद छ्याङ हैं। वे अपने साथ ढेर सारे वाद्ययंत्र भी लाये हैं। स्पष्टतया कुछ दिनों पहले उन्होंने एक प्रदर्शनी भी लगाई। दर्शकों ने उनकी खूब प्रशंसा की। पर ऐसा लगता है

1. पोई और शूछी कुचू के राजा के पुत्र थे। शाङ राज्य पर चओ राज्य की विजय के बाद उन्होंने शओयाङ पर्वत पर चो का अनाज खाने से इंकार किया था और भूख से मर गए थे।

कि वे यहां युद्ध की तैयारी कर रहे हैं।"

"वाद्ययंत्रों से युद्ध की तैयारी? यह तो पूर्वजों की राजसी युक्ति के अनुरूप नहीं है।" पोई ने सोचते हुए कहा।

"केवल संगीत से ही नहीं। आप शाङ नरेश के अनुचित कार्यों से तो परिचित ही हैं। एक आदमी ने जब सुबह के समय ठंडे पानी से बिना डरे नदी पार की तो राजा ने उसकी हड्डियों की मज्जा की जांच करवाने के लिए उसकी टांगें कटवा दी। उसने राजकुमार पीकान का हृदय चीरकर देखा कि उसमें सात सुराखें हैं या नहीं। यह तो पहले की सुनी-सुनाई बातें थीं पर अंधे संगीतज्ञों ने आने के बाद इसे प्रमाणित कर दिया है। उन्होंने निश्चयात्मक रूप से सिद्ध कर दिया कि शाङ नरेश ने प्राचीन नियमों को तोड़ दिया है। जो कोई भी प्राचीन नियमों को तोड़ता है, उस पर आक्रमण होना चाहिए। किन्तु मेरे विचार से उसके राज्य पर आक्रमण करना भी पूर्वजों की राजसी युक्ति के अनुरूप नहीं है. ..."

"केक का आकार दिन-प्रतिदिन छोटा होता जा रहा है, यह अशुभ संकेत है", पोई ने चिंतित स्वर में कहा। "किन्तु मैं तुम्हें सलाह दूंगा कि बाहर कम निकलो और अपनी जीभ पर काबू रखो। हर सुबह अपनी छाया-मुक्केबाजी का अभ्यास करो।"

"जी, अच्छा...." आज्ञाकारी छोटे भाई ने बड़े भाई की राय चुपचाप स्वीकार कर ली।

"स्वयं ही सोचो।" पोई जानते थे कि शूछी संतुष्ट नहीं हुआ है। "पश्चिम का सरदार' पूर्वजों के प्रति आदरभाव रखता है, इसलिए हमें यहां आतिथ्य मिला है। यदि केक छोटा हो रहा है तो हम शिकायत नहीं कर सकते। नहीं, इससे बुरी स्थिति हो आए तो भी नहीं।"

"तो क्या हम लोग यहां बुढ़ापे में शरण लेने के लिए रह रहे हैं?"

"अधिक बातें मत करो। मुझमें सुनने की शक्ति नहीं है।" पोई खांसने लगे और शूछी ने आगे कुछ नहीं कहा।

खांसी का दौरा समाप्त होने पर फिर से निःशब्दता छा गई। अंतिम शरद के डूबते सूर्य की किरणों में उनकी दाढ़ी बर्फ की तरह चमक रही थी।

1. चओ का राजा वन, जब वह शाङ राज्य का जागीरदार था और उसका नाम ची छाङ था।

2

दिन-प्रतिदिन असंतोष बढ़ता ही गया। केवल केक का आकार ही छोटा नहीं हुआ, आटा भी किनकिना और घटिया होता गया। वयोवृद्ध सदन में भी कानाफूसियां बढ़ गई। बाहर से घोड़ों और गाड़ियों के गुजरने की आवाजें आती रहीं। शूछी पहले से अधिक बाहर जाने को उत्साहित रहता। लौटने पर हालांकि वह कुछ नहीं कहता, पर उसकी चिंतामग्न मुद्रा पोई को बेचैन कर देती। उन्हें पूर्वाभास हो रहा था कि शीघ्र ही वे शांति से अपना भोजन भी नहीं कर पायेंगे।

ग्यारहवें महीने के अंत में एक सुबह शूछी अपने नियमित शारीरिक अभ्यास के लिए उठा। प्रांगण में आने पर उसे कुछ आवाजें सुनाई पड़ीं, उसने मुख्य द्वार खोला और तेजी से बाहर निकला। दस केक बनाने में जितना समय लगता है, उतने समय में वह लौटा। वह घबराया हुआ था और हांफ रहा था। ठंड से उसकी नाक लाल हो गई थी और उसकी सांस धौंकनी की तरह चल रही थी।

"भैया, उठें! युद्ध शुरू हो गया!" पोई के बिस्तर के सामने शिष्ट ढंग से खड़े होकर उसने आवाज लगाई। उसकी आवाज में असामान्य अधीरता थी।

पोई ठंड के कारण इतनी सुबह उठना नहीं चाहते थे। पर दयालु स्वभाव के पोई अपने भाई को सामने परेशान खड़ा देखकर उठ बैठे। उनके दांत किटकिटा रहे थे। उन्होंने कंधों पर भेड़ की चमड़ी का अस्तर लगा गाउन डाला और रजाई के अंदर ही पजामा ठीक कर पहना।

शूछी ने बताया, "मैं नियमित शारीरिक अभ्यास करने जा रहा था कि मुझे घोड़ों और आदमियों का शोरगुल सुनाई पड़ा। भागकर सड़क पर पहुंचा तो मैंने उन्हें देखा। सबसे पहले एक पालकी आई, जिस पर सफेद पर्दे लगे थे और जिसे कम से कम इक्यासी कहार उठाये हुए थे। पालकी में एक काष्ठ फलक था। काष्ठ फलक पर "महान चओ राजवंश के राजा वन की आत्मा का आसन" लिखा था। उसके पीछे सेना की एक टुकड़ी थी। मैं निश्चित हूं कि वे शाङ के विरूद्ध प्रयाण कर रहे हैं। चओ का वर्तमान राजा योग्य पुत्र है। युद्ध के लिए प्रयाण करते समय वह राजा वन का काष्ठ फलक लेकर चलता है। मैं बहुत देर तक वहां नहीं रहा, पर जब लौटकर आया तो मैंने अपनी दीवार पर लगी एक सूचना देखी...."

इस बीच पोई तैयार हो गए थे। दोनों भाई बाहर निकले। ठंड से दोनों सिकुड़े हुए थे। पोई कभी-कभी बाहर निकलने का साहस करते थे। उनके लिए

बाहर का दृश्य नवीनतापूर्ण था। कुछ कदम चलने पर शूछी ने दीवार पर लगी सूचना की तरफ संकेत किया।

राजकीय आदेश

चूंकि शाङ के राजा चवू ने अपनी पत्नी की राय मानकर ईश्वर से स्वयं को अलग कर लिया, तीन प्रकार की पूजा की उपेक्षा की और अपने रैक्त संबंधों से स्वयं को विमुख कर लिया।

चूंकि उसने पूर्वजों के संगीत का परित्याग किया और अपनी पत्नी को खुश करने के लिए पारंपरिक धुनों को तोड़क विरल संगीत की रचना की।

हम ईश्वर के आदेश के अनुसार उन्हें न्यायोचित सजा प्रदान करने का प्रस्ताव करते हैं।

आप अपनी मर्जी से जो करें। दूसरी या तीसरी बार इस आदेश को जारी करने की आवश्यकता न आने दें।

इसे पढ़ने के बाद दोनों भाई चुपचाप मुख्य सड़क की ओर बढ़े। सड़क के दोनों किनारों पर इतनी भीड़ थी कि चींटी के सरकने लायक भी जगह नहीं बची थी। पर उनके रास्ता मांगने पर लोगों ने "बूढ़ों का आदर करो" संबंधी राजा वन के आदेश का अनुसरण करते हुए उन्हें आगे जाने की जगह दी। सामने से बख्तरबंद सेना की पंक्तियां गुजर रही थीं। तीन सौ बावन केक बनाने में जितना समय बीतने के बाद कंधों पर रंगीन बादल के समान नौ नोकों वाले झंडे लिए टुकड़ी निकली। उसके पीछे बख्तरबंद सेना की एक और टुकड़ी थी। उसके बाद घुड़सवार सरकारी और सैनिक अधिकारियों की टुकड़ी राजकुमार के आगे-आगे चल रही थी। राजकुमार सांवला था और उसकी मूंछे थीं। उसके बाएं हाथ में कांसे की कुल्हाड़ी थी और दाएं हाथ में उसने वृषभपुच्छ पताका ले रखी थी। उसकी गरिमा दर्शकों को प्रभावित कर रही थी। चओ राजवंश का राजा ऊ[1] 'ईश्वर के आदेश' का पालन करने जा रहा था।

सड़क की दोनों तरफ पंक्तियों में खड़ी विस्मित जनता सिर और शांत थी। इस निस्तब्धता में अचानक शूछी पोई को अपने साथ लिए आगे बढ़े। घुड़सवारों से बचकर निकलते हुए वे राजा के घोड़े के पास पहुंचे और गर्दन ऊंची कर चिल्लाए :

"अपने मृत पिता का अंतिम संस्कार करने के बजाय तुम युद्ध करने जा

1. राजा वन का पुत्र ची फा।

रहे हो—क्या यह पुत्रोचित कहा जा सकता है? एक नागरिक की हैसियत से तुम अपने राजा की हत्या की कोशिश कर रहे हो—क्या इसे सदाचार कहा जा सकता है?"

सड़क के किनारे खड़ी भीड़ और बख्तरबंद टुकड़ी पहले तो भयभीत और स्तब्ध रह गई। चओ राजा के हाथ का वृषभपुच्छ हिला। किंतु शूछी के छोटे भाषण के बाद भयानक खलबली मच गई। दोनों भाइयों के सिर के ऊपर लंबी तलवारें चमकीं।

"ठहरो!"

धर्माध्यक्ष च्याङ शाङ[1] के आदेश की अवहेलना की हिम्मत किसी ने नहीं की। उनके हाथ उठे थे, उन्होंने धर्माध्यक्ष के गोल-मटोल चेहरे को देखा—उनकी भी दाढ़ी और सिर के बाल सफेद हो गए थे।

"ये ईमानदार व्यक्ति हैं—इन्हें जाने दो!"

सैनिक अधिकारियों ने एक साथ अपनी तलवारें नीची की और उन्हें म्यान में रख दिया। चार बख्तरबंद व्यक्ति सामने आए, सावधान की मुद्रा में खड़े होकर शूछी और पोई को आदरपूर्ण सलामी दी। फिर दोनों तरफ से एक-एक व्यक्ति ने दोनों भाइयों को पकड़ा और वे उन्हें फुटपाथ की तरफ ले गए। लोगों ने उन्हें जाने का रास्ता दिया।

भीड़ के पीछे पहुंचने के बाद चारों व्यक्ति पुनः आदरपूर्वक सावधान की मुद्रा में खड़े हो गए। उन्होंने बूढ़ों की बांह छोड़ दी और दोनों की पीठ पर जोर से धक्का दिया। दोनों भाई कराहते हुए लड़खड़ाते कदमों से कुछ गज आगे गए, पर स्वयं को न संभाल सके और जमीन पर चारों खाने चित्त गिर पड़े। शूछी ने सौभाग्य से अपने हाथ आगे कर दिए थे, इसलिए अधिक चोट नहीं लगी, केवल चेहरा कीचड़ से सन गया। पोई तो बूढ़े थे, उनका सिर एक पत्थर से टकराया और वे बेहोश हो गए।

3

सेना के आँखों से ओझल होने के बाद भीड़ ने शूछी और पोई को घेर लिया। पोई अवसन्न पड़े थे और शूछी वहीं जमीन पर बैठे थे। जो कुछ लोग उन्हें जानते थे, उन्होंने दूसरों को बताया कि वे ल्याओशी के कुचू राजा के पुत्र हैं। वे राजगद्दी पर बैठने का अधिकार हार चुके थे और अंतिम राजा द्वारा

1. चओ राजा ऊ के सलाहकार।

स्थापित वयोवृद्ध सदन में शरण लिए हुए थे। इस जानकारी के फैलते ही भीड़ में उनकी प्रशंसा होने लगी। कुछ ने उंकडूं होकर सिर झुकाया और शूछी का चेहरा देखना चाहा; कुछ अदरक का काढ़ा बनाने अपने घर गए और कुछ वयोवृद्ध सदन में सूचित करने गए और उन्होंने स्ट्रेचर के रूप में इस्तेमाल करने के लिए किवाड़ भिजवाने को कहा।

एकसौ तीन या एक सौ चार केक बनाने के जितना समय बीत गया। कोई नई बात नहीं होने से भीड़ छंटती गई। अंत में दो बूढ़े लंगड़ाते हुए आए। वे किवाड़ ले आए थे। किवाड़ के ऊपर पुआल बिछाया हुआ था—यह "बूढ़ों को आदर करो" संबंधी राजा वन के आदेश के अनुरूप था। उन्होंने झटके से किवाड़ नीचे रखे। किवाड़ की खड़खड़ाहट से पोई की आंखें खुल गईं—उनमें अभी प्राण शेष था! विस्मय और खुशी से रोते हुए शूछी ने अपने भाई को उठाकर कामचलाऊ स्ट्रेचर पर लिटाने में बूढ़ों की मदद की। वे साथ में चलते रहे, उनका हाथ किवाड़ में बंधी रस्सी पर था।

अभी वे साठ-सत्तर कदम भी आगे नहीं गए होंगे कि उन्हें दूर से किसी के पुकारने की आवाज सुनाई पड़ी।

"अरे! जरा ठहरो! अदरक का काढ़ा।" एक जवान मेट्रन हाथ में मिट्टी की सुराही लिए तेज कदमों से चली आ रही थी। वह इस डर से नहीं दौड़ रही थी कि कहीं काढ़ा छलक कर गिर न पड़े।

वे रुककर उसका इंतजार करने लगे। शूछी ने उसे धन्यवाद दिया। हालांकि पोई को होश में आया देखकर वह थोड़ी परेशान हुई, फिर भी उससने उनसे पेट गर्म करने के लिए काढ़ा पीने को कहा। परंतु गर्म चीज की अरुचि होने के कारण पोई ने इंकार कर दिया।

"क्या करना चाहिए? यह अदरक आठ साल पुराना है। कोई दूसरा इतनी अच्छी चीज नहीं दे सकता और मेरे परिवार में अदरक का काढ़ा किसी को पसंद नहीं...." वह सचमुच परेशान दिख रही थी।

शूछी को सुराही लेनी पड़ी और एक-दो घूंट लेने के लिए पोई को राजी करना पड़ा। अभी भी बहुत काढ़ा बचा था। पेट दर्द का बहाना कर शूछी ने स्वयं सारा काढ़ा पी लिया। उसकी पलकें लाल हो गईं, किन्तु उसने अदरक के काढ़े की प्रशंसा की और फिर से धन्यवाद दिया। इस तरह उन्होंने पोई को उस मुसीबत से निकाला।

वयोवृद्ध सदन में लौटने के बाद उन्होंने अनावश्यक तकलीफ नहीं महसूस

की। तीन दिनों के बाद पोई बैठने लायक हो गए, हालांकि उनके ललाट पर अभी भी एक बड़ा गूमड़ था और भूख मर गई थी।

अधिकारी और नागरिक दोनों ही उनको छोड़कर जाने को तैयार न थे। वे सरकारी समाचारों और अफवाहों से निरंतर घबराए हुए थे। बारहवें महीने के अंत में उन्होंने सुना कि मङ के पास सेना ने नदी पार की और सभी सामंत राजकुमार उनके साथ हो गए। कुछ ही दिनों के बाद ऊ राजा की महान विज्ञप्ति वितरित की गई। वयोवृद्ध सदन के निवासियों की कमजोर दृष्टि का ध्यान रखकर उसे विशेष तौर पर अखरोट के आकार के रेखाक्षरों में लिखा गया था। फिर भी पोई ने उसे पढ़ने का प्रयास नहीं किया, छोटे भाई ने उसे पढ़कर सुनाया था, उन्होंने उसी से संतोष कर लिया। सामान्यतः उसमें उन्हें कुछ आपत्तिजनक नहीं लगा, पर संदर्भ से अलग "पूर्वजों के लिए यथोचित धार्मिक विधि का अनुष्ठान किए बिना उनका परित्याग करना, दुष्टतापूर्वक अपने देश का त्याग करना....." जैसे कुछ मुहावरों का प्रयोग देखकर उन्हें दुख हुआ।

अफवाह बढ़ती गई। कुछ ने कहा कि जब चओ की सेना मूये पहुंचे तो उसने शाङ के आदमियों से घमासान लड़ाई की। पूरा मैदान शाङ सेना की लाशों से ढक गया और लाठियां तिनके की तरह खून की नदी में बहने लगीं। दूसरों ने कहा, हालांकि शाङ राजा के पास सात लाख सेना थी, पर उनकी सैन्य टुकड़ी ने लड़ने से इंकार कर दिया। धर्माध्यक्ष च्याङ शाङ के नेतृत्व में चओ सेना के पहुंचने पर उन्होंने पीठ दिखाई और ऊ राजा का मार्ग आसान कर दिया।

विभिन्न बखानों में अंतर होने पर भी एक बात निश्चित थी—विजय सिद्धि मिली है। इसकी सत्यता इस समाचार से निश्चित हो गई कि हिरन मीनार का खजाना और महान सेतु[1] का सफेद चावल ढोकर लाया जा रहा है। चल-फिर सकने लायक सभी सैनिक चायघरों, शराबखाने, नाई की दुकान या ओलतियों के नीचे और निजी मकानों के द्वार पर बैठे युद्ध की कहानियां सुनाते थे। हमेशा जिज्ञासु श्रोताओं की तैयार भीड़ इकट्ठी हो जाती थी। चूंकि बसंत आ गया था और घर के बाहर भी अधिक ठंड नहीं लगती थी, इसलिए ये कहानियां कभी-कभी देर रात तक चलती थीं।

पोई और शूछी दोनों को अपच हो गया था। वे हर खाने में अपने हिस्से का पूरा केक नहीं खा पाते थे। उनकी सोने की आदत भी नहीं बदली थी। वे

1. हिरन मीनार और महान सेतु शांग के चाऊ राजा के गोदाम थे। हिरन मीनार में हीरे-जवाहरात और महान सेतु में अनाज रखा जाता था।

रात में ठीक समय पर सोने चले जाते थे; पर उन्हें अनिद्रा का रोग हो गया था। पोई बिस्तर पर करवटें बदलते रहते, शूछी उद्विग्न और दुखी होकर प्रायः उठ बैठते और कपड़े बदलकर ओंन में टहलने या व्यायाम करने चले जाते।

कृष्ण पक्ष की एक तारों भरी रात को जब सभी बूढ़े चैन की नींद सो रहे थे, द्वार पर खुसफुस हो रही थी। शूछी ने जिंदगी में छिपकर कभी किसी की बात नहीं सुनी थी, पर वे भी स्वयं को रोक न सके।

"बेचारा हतबुद्धि शाङ राजा। हारते ही वह भागकर हिरन मीनार गया।" कहने वाला निस्संदेह मोर्चे से लौटा घायल सैनिक था। "उसकी मौत आई थी। उसने अपने खजाने का ढेर बनाया और स्वयं उसके बीच में बैठकर ढेर में आग लगा दी।"

"नहीं ऐसा न कहो! यह तो बहुत बुरा हुआ!" दरबान ने टिप्पणी की।

"चिंता न करो! वह जल गया, पर उसका खजाना बचा रहा। हमारे राजा ने सभी सामंत राजकुमारों से पहले शाङ प्रदेश में प्रवेश किया। राजधानी के उपनगरों की जनता ने उनका जोरदार स्वागत किया। हमारे राजा ने अपने अधिकारियों को 'अपने साथ शांति' का नारा लगाने को कहा। फिर तो शाङ राज्य के नागरिक श्रद्धा से झुक गए। अधिकारियों ने शहर में हर दरवाजे पर बड़े रेखाक्षरों में 'आज्ञाकारी नागरिक' लिखा पाया। हमारे राजा रथ में बैठे सीधे रिन मीनार गए। जहां शाङ राजा ने अपनी जान ली थी, उस जगह पहुंचने पर उन्होंने शाङ राजा पर तीर छोड़े....."

"क्यों? क्या उन्हें डर था कि वह नहीं मरा हो?" किसी ने पूछा।

"कौन जाने? मुझे तो इतना मालूम है कि उन्होंने तीन तीर छोड़े, उसके शरीर में तलवार घोंपी और अपनी कुल्हाड़ी चलाई—सांय! उन्होंने उसका सिर काटा और उसे एक बड़े सफेद झंडे से लटका दिया।"

शूछी के रोंगटे खड़े हो गए।

"उसके बाद वे शाङ राजा की दो रखैलों की तलाश में गए। पर उन्होंने पहले ही आत्महत्या कर ली थी। हमारे राजा ने तीन और तीर छोड़े, अपनी तलवार घोंपी और काली कुल्हाड़ी से उनके सिर काटकर छोटे सफेद झंडे से लटका दिया। इस तरह....."

"क्या दोनों रखैलें सचमुच सुंदर थीं?" दरबान ने पूछा।

"कौन जाने? झंडे का खंभा बहुत ऊंचा था और वहां भीड़ लगी थी। मेरा घाव दर्द कर रहा थ, इसलिए मैं अधिक निकट नहीं गया।"

"कहते हैं उनमें से एक, ताची लोमड़ी परी थी। केवल पिछले पंजों के अलावा उसका सारा शरीर बदल गया था। वह हमेशा दोनों पंजों में पट्टी बांधे रहती थी। क्या यह सच है?"

"कौन जाने? मैंने उसके पांव नहीं देखे। पर उस इलाके की अनेक औरतों के पांव सूअर के पैरों जैसे होते हैं।"

शूछी सदाचारी आदमी थे। जब राजा के सिर से बातचीत खिसककर औरतों के पांव पर चली गई तो उनकी भंवे तन गई। उन्होंने अपने कान बंद किए और भागकर अपने कमरे में पहुंचे। पोई अभी तक जगे हुए थे, उन्होंने संयत स्वर में पूछा,

"क्या तुम अभी तक व्यायाम कर रहे थे?"

जवाब देने के बदले शूछी धीमे से जाकर भाई के बिस्तर की पाटी पर बैठ गए। आगे झुककर उन्होंने अभी-अभी सुनी बातें सुनाईं। दोनों कुछ देर तक खामोश रहे। थोड़ी देर के बाद परेशान शूछी ने आह भरी और भाई से कहा,

"यह तो राजा वन के सभी नियमों का उल्लंघन कर रहा है।... उसमें केवल पुत्रोचित शोक की ही कमी नहीं, बल्कि मानवीयता की भी कमी है। क्यों?.. अब तो हम उसका चावल भी नहीं खा सकते!"

"तो हम क्या करें?"

"मेरे विचार से अच्छा होगा कि हम लोग यह जगह छोड़ दें..."

कुछ देर मंत्रणा करने के बाद उन्होंने चओ घराने का और केक न खाने तथा अगली सुबह वयोवृद्ध सदन छोड़ देने का फैसला किया। उन्होंने यह भी निर्णय लिया कि वे अपने साथ कुछ नहीं ले जाएंगे और ह्वाशान पर्वत तक दोनों साथ ही जाएंगे। अपने जीवन के अंतिम वर्ष वे कंद-मूल के सहारे गुजारेंगे। इसके अलावा, "ईश्वर निष्पक्ष है, किन्तु वह प्रायः भले लोगों की सहायता करता है।" शायद उन्हें अर्कमूल और कवक मिल जाए।[1]

इस निर्णय से उनके दिमाग का भारी बोझ उतर गया। शूछी ने फिर से कपड़े बदले और लेट गए, थोड़ी देर में ही उन्होंने पोई के नींद में बड़बड़ाने की आवाज सुनी। उन्हें आंतरिक खुशी हुई। उन्होंने कवक की सुगंध भी महसूस की। इस सुगंध का पान करते हुए वे गहरी नींद में सो गए।

---

1. बूढ़ों के लिए लाभदायक एक प्रकार की जड़।

4

अगली सुबह दोनों भाई समय से पहले उठे। उन्होंने हाथ-मुंह धोए और बालों में कंघी की। उन्होंने अपने साथ कुछ भी नहीं लिया। वास्तव में लेने के लिए भेड़ की चमड़ी का अस्तर लगा गाउन, ठंडा और कुछ बचे केक के अलावा कुछ था भी नहीं। वे वयोवृद्ध सदन से यों निकले, जैसे टहलने जा रहे हों। पर हमेशा के लिए वयोवृद्ध सदन छोड़ने के अहसास ने उन्हें दुखी किया और वे वयोवृद्ध सदन की अंतिम झलक लेने के लिए एक से अधिक बार मुड़े।

सड़क-गलियों में अधिक लोग नहीं थे। उन्हें कुएं से पानी भरती केवल कुछ औरतें मिलीं। उन औरतों की आंखों पर अभी भी नींद सवार थी। उपनगर पहुंचते-पहुंचते सूरज ऊपर आ गया और गलियों में चहल-पहल हो गई। अधिकांश राहगीर गर्व से सिर ऊंचा किए चल रहे थे, पर उन्होंने प्रथा के अनुसार बूढ़ों को रास्ता दिया। अब वे जंगल के इलाके में प्रवेश कर रहे थे। उन्हें जंगल में कुछ नये पर्णपाती पेड़ दिखाई पड़े, जिनका नाम वे नहीं जानते थे। पर्णपाती पेड़ों की कोंपलें निकल रही थीं। ऐसा लग रहा था कि मटमैला-हरा कोहरा मंडरा रहा हो और उसके मध्य वे चीड़ और साइप्रस की गहरी हरियाली देख रहे हों।

इस क्षेत्र में सुंदरता और स्वतंत्रता का आनंद लेते हुए पोई और शूछी ने महसूस किया कि उनकी जवानी लौट आई है। उनकी चाल में झरने की गति आ गई और उनके हृदय में आनंद की धारा हिलोरें लेने लगीं।

तीसरे पहर वे एक चौराहे पर पहुंचे। उन्हें नहीं मालूम था कि उन्हें किस रास्ते जाना चाहिए। उन्होंने पास आए बूढ़े से भद्रता के साथ पूछा।

"खेद की बात है!" उसने कहा। "अगर आप दोनों थोड़ी देर पहले पहुंचे होते तो अभी-अभी यहां से गुजरी घुड़सवारों की टुकड़ी के साथ चले गए होते। आप इस रास्ते जाएं। आगे अनेक दोराहे मिलेंगे, वहां फिर से आपको पूछना पड़ेगा।"

शूछी को याद आया कि दोपहर में बूढ़े, कमजोर, लंगड़े और खरसैल घोड़ों को हांकते घायल सैनिक उनसे आगे निकले थे। उन्होंने बड़ी मुश्किल से स्वयं को कुचलने से बचाया था। उन्होंने बूढ़े व्यक्ति से पूछा कि ये घोड़े कहां ले जा रहे थे।

"आपको नहीं मालूम? अब हमारे राजा ने 'ईश्वर के आदेश' का पालन किया है, इसलिए अब उन्हें सेवा की जरूरत नहीं है। इसलिए वे 'घोड़ों को

ह्वाशान पर्वत की दक्षिणी ढलान पर भेज' रहे हैं और हम अपने 'जानवरों को आड़ू के बगीचे में चलाएंगे।' भगवान की कृपा है, अब पूरा विश्व शांति से अपना खाना खा पाएगा।"

इस समाचार ने दोनों भाइयों पर ठंडा पानी उड़ेल दिया। वे कांप उठे, मगर उन्होंने चेहरे पर कोई भाव नहीं आने दिया। बूढ़े को धन्यवाद देकर वे उसके बताए रास्ते से आगे बढ़े। ह्वाशान पर्वत की दक्षिणी ढलान पर घोड़ों के चरने के समाचार ने उनके सपने को चकनाचूर कर दिया, दोनों भाइयों का दिल आशंकाओं से भर गया।

हालांकि उनके दिल में आशंकाएं थीं, मगर वे खामोशी से चलते रहे। शाम तक वे पेड़ों से भरी एक पीली पहाड़ी के पास पहुंचे। पहाड़ी पर उन्हें मिट्टी की झोपड़ियां दिखाई पड़ीं। उन्होंने रात में वहीं रुकने का निर्णय लिया।

अभी वे पहाड़ी की तलहटी से लगभग दस कदम दूर ही थे कि जंगल से फटे-पुराने कपड़े पहने और सफेद पगड़ी बांधे पांच तगड़े व्यक्ति निकले। सबसे आगे वाले व्यक्ति के हाथ में तलवार थी और दूसरों ने लाठी ले रखी थी। पहाड़ी की तलहटी में रास्ता रोककर खड़े उन पांचों व्यक्तियों ने श्रद्धापूर्वक सिर झुकाकर पूछा,

"कैसे हैं, आदरणीय सज्जन?"

दोनों भाई भय से ठिठक गए। पोई तो डर से कांपने लगे। शूछी अधिक व्यवहार कुशल थे। उन्होंने आगे बढ़कर उन व्यक्तियों से उनके नाम और काम पूछे।

"मैं ह्वाशान पर्वत का प्रधान छोटा छुङ छी हूं, हाथ में तलवार लिए व्यक्ति ने कहा। "मैं अपने आदमियों के साथ मार्ग कर वसूलने आया हूं।"

"हमारे पास धन नहीं है, प्रधान," शूछी ने भद्रता से जवाब दिया। "हम लोग वयोवृद्ध सदन के रहने वाले हैं।"

"ओह!" तुरंत भाव बदलते हुए छोटे छुङ छी ने कहा। "फिर तो आप दोनों 'इस साम्राज्य के दो महान वृद्ध पुरुष' हैं। हम भी स्वर्गीय राजा की शिक्षा का सम्मान करते हैं और बूढ़ों के प्रति आदरभाव रखते हैं। इसलिए हमारा आपसे आग्रह है कि आप कोई स्मृतिचिन्ह छोड़ जाएं।" जब शूछी ने कोई जवाब नहीं दिया तो उसने अपनी तलवार चमकाई और गुस्से में बोला, "अगर आप इन्कार करते रहे तो ईश्वर के आदेश के अनुसार हमें आपकी आदरपूर्ण जांच करनी होगी और आपकी पवित्र नग्नता को श्रद्धापूर्ण आंखों से देखना

होगा।"

पोईऔर शूछी ने तुरंत अपने हाथ ऊपर कर दिए। लाठी लिए एक व्यक्ति ने अच्छी तरह से जांच करने के लिए गाउन, अस्तर लगे जैकेट और कमीज सभी कपड़े उतार लिये।

"सच कह रहे थे, इन दोनों अकिंचन प्राणियों के पास कुछ भी नहीं है।" निराश होकर उसने छोटे छुङ छी से कहा।

पोई को कांपता देखकर छोटा छुङ छी आगे बढ़ा और उसने सौम्यता से उनके कंधे पर अपना हाथ रखा।

"डरें नहीं", उसने कहा। "शाङहाए वाले आपको नंगा ही छोड़ देते, मगर हम इतने असभ्य नहीं हैं कि ऐसा नीच व्यवहार करें। अगर आपके पास हमारे लिए कोई स्मृतिचिन्ह नहीं है तो यह हमारा दुर्भाग्य है। अब आप जा सकते हैं।"

आतंकित पोई ने ठीक से कपड़े पहने बिना ही जल्दबाजी में कदम बढ़ाया, शूछी भी उनके पीछे बढ़े। वे जमीन पर आंखें गड़ाए चल रहे थे। पांचों लुटेरों ने भद्रता से उन्हें जाने दिया।

"क्या आप दोनों सचमुच जा रहे हैं?" उन्होंने पूछा। "क्या चाय के लिए भी नहीं रुकेंगे।"

"नहीं, धन्यवाद! इस बार नहीं...." बिना रुके हुए पोई और शूछी ने सिर हिलाकर कहा। वे दोनों आगे निकल गए।

ह्वाशान पर्वत की दक्षिणी ढलान पर घोड़ों को भेजे जाने और वहां पर्वत के प्रधान छोटे छुङ छी की उपस्थिति से दोनों ईमानदार व्यक्तियों को उस इलाके में प्रवेश करने में डर लगा। विचार-विमर्श करने के बाद वे उत्तर की ओर बढ़े। सूर्योदय से सूर्यास्त तक बिना आराम किए भिक्षा के सहारे चलते हुए वे शाओयाङ पर्वत पहुंचे।

यह उनके लिए उचित जगह थी। पर्वत न तो अधिक ऊंचा था और न अधिक विस्तृत, घना जंगल भी नहीं था कि बाघ, भेड़िये या डाकू घात में बैठे हों। एकान्तवास के लिए यह अच्छी जगह थी। चारों तरफ नजर दौड़ाने पर पहाड़ की तलहटी में उन्हें कोमल हरे रंग की ताजा पर्णावली, सुनहरी धरती और जंगली घास के बीच तारों की तरह खिले लाल और सफेद रंग के छोटे फूल दिखाई पड़े। आनंद के साथ अपनी छड़ी का टेक लेकर वे आगे बढ़े और आखिरकार चोटी से लटकी चट्टान पर पहुंचे। उन्होंने वहीं शरण ली। अपना

पसीना पोंछने और खुलकर सांस लेने के लिए वे वहां बैठ गए।

सूर्य पश्चिम में अस्त हो रहा था। पक्षी चहचहाते हुए जंगल में अपने घोंसलों को लौट रहे थे। अभी चढ़ने के समय से कम शांति थी, किन्तु आस-पास की नवीनता ने उन्हें आह्लादित किया। सोने के लिए भेड़ के चमड़े के अस्तर लगे अपने गाउन बिछाने से पहले शूछी ने भात भरे दो कटोरे निकाले। उनकी भूख मिटाने के लिए वह पर्याप्त था। रास्ते में भिक्षा में मिले भोजन में उतना ही बच गया था। दोनों भाई पहले ही इस राय से सहमत थे कि शओयाङ पर्वत पहुंचे बिना 'चओ का अनाज न खाने' की अपनी सौगंध का पालन करने में वे असमर्थ रहेंगे। उसी के अनुसार उन्होंने चावल खाकर खत्म कर दिया। अगले दिन से वे कोई समझौता नहीं करेंगे और अपने सिद्धांत का पालन करेंगे।

कौओ की कांव-कांव से सुबह सबेरे ही उनकी आंखें खुल गईं, किंतु वे फिर से सो गए और दोपहर तक सोए रहे। पोई की पीठ और पांव में दर्द था। वे नहीं उठ सकते थे। शूछी को अकेले ही भोजन की तलाश में जाना पड़ा। कुछ देर तक भटकने के बाद उन्होंने महसूस किया कि पर्वत का अधिक ऊंचा और विस्तृत न होना बाघ, भेड़िए और डाकू से मुक्त होना फायदेमंद तो है, मगर इसके साथ ही इसी कारण से कुछ असुविधाएं भी हैं। तलहटी के शओयाङ गांव के वृद्ध स्त्री- पुरुष, लकड़ियां काटने यहां आते थे और चूंकि बच्चे भी यहां खेलने आते थे, इसलिए खाने लायक एक भी जंगली फल मिलना मुश्किल था... सारे फल तोड़ और चुन लिए गए थे।

स्वाभाविक रूप से उसे कबक का ख्याल आया। हालांकि पर्वत पर देवदारू के पेड़ थे, पर वे इतने पुराने नहीं थे कि उनकी जड़ में कवक हों। और अगर हों भी तो वे कुदाली के बिना उन्हें कैसे खोदकर निकालते। फिर उसे अर्कमूल का ख्याल आया। पर उसने केवल उसका जड़ देखा था और वह पर्वत के सभी पौधों को उखाड़कर उसकी जड़ नहीं देख सकता था। उसे स्वयं पर गुस्सा आया कि उसने पहले कभी अर्कमूल के पत्ते क्यों नहीं देखे? क्रोध से उसके गाल लाल हो गए। निराश होकर वहीं खड़े थोड़ी देर तक वह सिर खुजलाता रहा।

फिर उसे एक विचार सूझा, इससे उसे शांति मिली। वह एक चीड़ के पेड़ के पास गया और चीड़ की सूइयों से उसने अपनी जेब भर ली। इसके बाद नदी के किनारे गया और सूइयों को दो पत्थरों के बीच दबाकर उसने उनके हरे छिलके उतारे। छिलका उतारने के बाद उसे धोया और उसकी लेई बनाई। एक चौरस पत्थर पर लेई लेकर वह गुफा को लौटा।

पोई ने उसे देखते ही पूछा, "तीसरे भाई, क्या तुम्हें कुछ मिला? कुछ घंटों से मेरे पेट में मरोड़ उठ रही है।"

"कुछ भी नहीं है, बड़े भाई। इसे देखें।"

उन्होंने दो पत्थरों के सहारे लेई वाले चौरस पत्थर को टिकाया और उसके नीचे सूखी टहनियां रखकर आग सुलगाई। बहुत देर के बाद चीड़ की गीली लेई में बुलबुला उठना शुरू हुआ। उनकी सुगंध से उनके मुंह में पानी आ गया। शूछी संतोष के साथ मुस्कराए। उन्होंने यह पाक कला धर्माध्यक्ष च्याङ शाङ के पचासीवें जन्म दिवस के अवसर पर दिए भोज के समय सीखी थी। वहां वे उन्हें बधाई देने गए थे।

सुगंध देने के बाद लेई फूली और सुखकर बड़े आकार की हो गई। वास्तविक केक तैयार हो गया था। शूछी ने गाउन की बांह हथेली में लेकर गर्म चौरस पत्थर उठाया और मुस्कराते हुए उसे बड़े भाई के सामने रखा। पोई ने उसे फूंका और दबाकर एक टुकड़ा तोड़ा। टुकड़े को जल्दी से उन्होंने मुंह में रखा।

चबाने के साथ-साथ उनकी भवें तनती गईं। गर्दन ऊंची कर कई बार निगलने की कोशिश की और फिर विरक्ति के साथ सारा थूक दिया। शूछी को निंदात्मक नजरों से देखते हुए उन्होंने कहा,

"कड़वा... और घटिया..."

शूछी को लगा कि वे रसातल में गिर गए। सारी उम्मीदों पर पानी फिर गया। कांपती उंगलियों से उन्होंने भी एक टुकड़ा तोड़ा और मुंह में लेकर उसे चबाना शुरू किया। निस्संदेह वह खाने लायक नहीं था। कड़वा.... और घटिया...

निराश होकर वे सिर लटकाकर बैठ गए। उन्होंने घोर माथापच्ची की, मानो कोई आदमी रसातल से निकलने के लिए हाथ-पांव चला रहा हो। सोचते-सोचते वे कल्पनालोक में खो गए और फिर से बच्चे हो गए। कुचू राजा के पुत्र। वे आया की गोद में बैठे थे। आया देहात की रहने वाली थी। वह उन्हें छि य ओ पर पीत सम्राट के विजय, महान यूवी द्वारा ऊ चिछी की गिरफ्तारी और उस अकाल की भी कहानी सुनाती थी, जब किसान भूख से मोइ खाने पर मजबूर हुए थे।

उन्हें अपना यह पूछना भी याद आया कि मोठ कैसा होता है, पर्वत पर उन्होंने इस प्रकार के पौधे देखे थे। उनकी शक्ति लौट आई। वे उठ खड़े हुए और मोठ के तलाश में लम्बे डग भरते हुए झाड़-झंखाड़ में गए।

सचमुच वहां मोठ की कमी नहीं थी। एक ली से कम दूरी में ली उन्होंने अपने गाउन का आधा पल्ला भर लिया।

नदी के किनारे जाकर उन्होंने पत्ते धोए और फिर उसे लेकर लौटे। जिस चौरस पत्थर पर उन्होंने चीड़ की लेई तैयार की थी, उसी पर रखकर उसे पकाया। जब पत्ते गहरे रंग के हो गए तो उनका विश्वास बढ़ गया। इस बार पहले बड़े भाई को देने का उन्हें साहस नहीं हुआ। उन्होंने स्वयं एक चुटकी ली और आंखें बंदकर चखा।

"कैसा बना है?" चिंतित स्वर में पोई ने पूछा।

'स्वादिष्ट!"

हंसते हुए दोनों भाइयों ने पकाए मोठ का मजा लिया। बड़ा होने के कारण पोई ने कुछ ज्यादा खाया।

इसके बाद वे हर दिन मोठ लाने लगे। पहले शूछी अकेले ही मोठ ले आते थे और पोई पकाते थे। बाद में स्वस्थ होने के बाद पोई भी मोठ की खोज में जाने लगे। उनके व्यंजन भी बढ़ते गए-झोलदार मोठ, मोठ का शोरबा, मोठ पूड़ी, उबला मोठ, मोठ के पत्ते की सब्जी और मोठ के सूखे पत्ते....।

कुछ दिनों के अंदर उन्होंने आस-पास के सारे मोठ समाप्त कर डाले। हालांकि उन्होंने जड़ छोड़ दी थी, पर ताजा पत्ते धीरे-धीरे निकलते थे। इसलिए रोज पिछले दिन की अपेक्षा थोड़ी दूर आगे जाना पड़ता था। उन्होंने कई बार घर बदले, पर हर बार परिणाम एक ही होता था। धीरे-धीरे रहने की नई जगह भी मिलनी मुश्किल हो गई, क्योंकि वे बहुतायत में मोठ और पास में पानी दोनों चाहते थे और शओयाङ पर्वत पर दोनों सुविधाओं से पूर्ण जगह कम थी। शूछी को डर हुआ कि बूढ़े होने के कारण कहीं पोई को ठंड न लग जाए। उन्होंने बड़े भाई से घर पर रहकर पकाने का काम करने का आग्रह किया और मोठ लाने की जिम्मेदारी स्वयं ले ली।

पोई ने पहले ही विरोध किया, किन्तु बाद में सहमत हो गए और इससे उन्हें आराम और खाली समय मिल गया। शओयाङ पर्वत ऐसे भी उजाड़ नहीं था। समय के साथ खाली बैठे-बैठे उनके स्वभाव में परिवर्तन आया। मूलतः चुप रहने वाले पोई अब बातूनी हो गए। वे बच्चों या लकड़ी काटने वालों के साथ बातें करते थे। एक दिन शायद अति उत्साह में या फिर किसी ने उन्हें बूढ़े भिखारी कहकर संबोधित किया उनसे न रहा गया और उन्होंने बता दिया कि वे दोनों भाई ल्याओशी के कुचू राजा के पुत्र हैं। वे सबसे बड़े और उनके भाई

तीसरे पुत्र हैं। उनके पिता ने तीसरे भाई को अपना उत्तराधिकारी चुना था, पर पिता की मृत्यु के बाद तीसरे ने सम्मानवश उन पर जोर डाला। पिता की इच्छा का आदर करते हुए समस्या टालने के लिए वे भाग गए थे। उनके तीसरे भाई ने भी यही किया था। वे दोनों रास्ते में मिले थे और एक साथ ही पश्चिम के सरदार राजा वन की तलाश में गए थे और उनके वयोवृद्ध सदन में रहने लगे थे। चूंकि चओ राजा ने उनके राज्य को मिटा दिया था और वे चओ का अनाज नहीं खा सकते थे, इसलिए वे भागकर शओयाङ पर्वत आ गए थे कि वनस्पतियों के सहारे जीवित रहेंगे..।

जब शूछी को बड़े भाई की बताई बात मालूम हुई, तब तक इतनी देर हो चुकी थी कि उन्हें रोका नहीं जा सकता था-बात फैल चुकी थी। यद्यपि वे बड़े भाई को उलाहना नहीं दे सकते थे, मगर उन्होंने मन ही मन सोचा, "पिताजी ने उन्हें अपना उत्तराधिकारी न चूनकर अपनी दूर दृष्टि दिखाई।"

शूछी की राय सही निकली, बात फैलने का परिणाम बुरा हुआ। गांव में निरंतर उनकी चर्चा होती रही और गांव के लोग पर्वत चढ़कर विशेषकर उन्हें देखने आने लगे। उन्हें महान व्यक्ति, दानव और दुर्लभ माना जाने लगा। लोग उनके पीछे-पीछे देखने जाते थे कि चे कैसे मोठ जमा करते हैं। लोग उन्हें घेरकर बैठ जाते कि वे कैसे खाते हैं। इसके साथ ही असमाप्य सद्भावनाएं और अनंत सवाल होते। उनका सिर चकराने लगता। फिर भी उन्हें नम्रता से पेश आना होता। थोड़ी अधीरता या भवों की हल्की सिकुड़न भी उन्हें 'बूढ़े स्वभाव' का विशेषण दिलवा सकती थी।

यों लोगों की राय उनके पक्ष में थी। बाद में कुछ युवतियां भी उन्हें देखने गईं। किन्तु लौटने पर उन कुमारियों ने घोषणा की कि 'उनका दर्शन' मूल्यवान नहीं था, कि वे छली गई थीं।

सबसे अंत में उन्होंने शओयाङ गांव के सबसे विख्यात व्यक्ति सरदार श्याओपिङ का ध्यान आकर्षित किया। वह सरदार रानी ता ची के मामा की दत्तक पुत्री का दामाद था। उसे तर्पण प्रधान[1] की पदवी प्राप्त थी। ईश्वर के आदेश का अधिकार बदलता देख वह पचास गाड़ी सामान और आठ सौ स्त्री-पुरुष गुलामों को लेकर नये राजा को अपना समर्थन देने गया था। दुर्भाग्य

1. प्राचीन समय में समारोहों के अवसर पर कोई वृद्ध व्यक्ति शराब से ईश्वर का तर्पण करता था। उसे तर्पण प्रधान की पदवी मिलती थीं यहप्रथा हान और वेई राजवंशों से आरंभ हुई, जैसे शाही अमादमी का तर्पण अधिकारी, शाही कालेज का तर्पण अधिकारी आदि।

से ये घटना मङ स्थान पर सैन्य टुकड़ियों के जमा होने के कुछ ही दिनों पहले घटी थी। अभियान की व्यस्तता के कारण चओ राजा के पास इतना समय नहीं था कि वे उसके साथ समुचित व्यवहार करे। उन्होंने चालीस गाड़ियां और सात सौ पचास गुलाम रख लिए और शओयाङ पर्वत की तलहटी में उसे दो हेक्टर उपजाऊ जमीन दे दी थी। इसके साथ ही उन्होंने 'अष्ट तत्व विद्या' के अध्ययन का भी आदेश दिया। सरदार श्याओपिङ साहित्य प्रेमी भी था, किन्तु गांव के सभी लोग अनपढ़ थे और उन्हें साहित्यिक विषयों की समझ नहीं थी। उकता कर उसने अपने नौकरों को अपनी पालकी तैयार करने का आदेश दिया, ताकि वह दोनों बूढ़ों से मिलने जा सके और उनसे साहित्य संबंधी, विशेषकर कविता के विषय में विमर्श करे। वह स्वयं भी कवि था,उसकी कविताओं का एक संकलन भी था।

उनसे विमर्श करने के बाद दोबारा अपनी कुर्सी पर बैठते समय उसने अप्रसन्नता व्यक्त की। घर लौटने के बाद उसका क्रोध बढ़ गया। उसके विचार में दोनों दकियानूस बूढ़े काव्य विमर्श में असमर्थ थे। एक तो वे निर्धन थे। जीवन निर्वाह के लिए हमेशा साधन की तलाश में रहते थे, वे अच्छी कविता कैसे लिख सकते थे? दूसरे कुछ 'गुप्त कारणों' से उन्हें कविता के 'संयमन' का बोध नहीं था। तीसरे अपने सुदृढ़ दृष्टिकोण पर अडिग रहने के कारण उन्हें कविता की 'सहिष्णुता' का ज्ञान नहीं था।[1] सबसे दुखद बात यह थी कि उनका चरित्र अंतर्विरोधों से भरा था। अपने सकारण क्रोध से वशीभूत होकर उसने स्पष्ट घोघणा की :

"चूंकि 'आकाश के नीचे की धरती राज्य की सीमा में है', इसलिए वे जो मोठ खाते हैं, क्या वह भी हमारे राज्य की संपत्ति नहीं है?"

उधर पोई और शूछी दिन-प्रतिदिन दुबले होते जा रहे थे। सामाजिक प्रतिबद्धता के कारण यह नहीं हो रहा था, क्योंकि उन्हें देखने आने वालों की संख्या घट रही थी। समस्या यह थी कि मोठ भी घटता जा रहा था और एक मुट्ठी मोठ जमा करने के लिए अधिक शक्ति व्यय करनी पड़ती थी तथा बहुत दूर तक जाना पड़ता था।

पर मुसीबत अकेले नहीं आती। कहते हैं कुएं में गिरने वाले के सिर पर

1. "धर्मविधि ग्रंथ" में कन्फ्यूशियस ने 'संगमन' और 'सहिष्णुता' की शिक्षा को आवश्यक बताया है। सामंतवादी चीन में ये दोनों तत्व साहित्य सूजन और आलपेचना की कसौटी माने जाते हैं।

ऊपर से पत्थर भी गिरता है।

एक दिन वे पकाया मोठ खा रहे थे। मोठ इतना कम हो गया था कि वे तीसरे पहर भोजन कर रहे थे। उसी समय लगभग बीस वर्ष की एक अपरिचित औरत आई। वह किसी समृद्ध परिवार की नौकरानी जान पड़ती थी।

"क्या आप लोग भोजन कर रहे हैं?" उसने पूछा।

शूछी ने उसे देखा और सिर हिलाते हुए जल्दी से मुस्कराने की कोशिश की।

"यह क्या है?" उसने पूछा।

"मोठ!" पोई ने कहा।

"आप मोठ क्यों खा रहे हैं?"

"क्योंकि हम चओ का अनाज नहीं खाते..."

पोई के बोलने के साथ ही शूछी ने उन्हें चेतावनी भरी नजरों से देखा, किन्तु वह औरत देखने से ही समझदार लग रही थी। उसने तुरंत उनका आशय समझ लिया। वह तिरस्कार भाव से हंसी और फिर क्रोध के वशीभूत होकर उसने स्पष्ट घोषणा की :

"आकाश के नीचे की धरती हमारे राज्य की सीमा में है। इसलिए आप दोनों जो मोठ खाते हैं, क्या वह हमारे राजा का नहीं है?"

पोई और शूछी ने एक-एक शब्द ध्यान से सुना। उन पर मानो बिजली गिर पड़ी हो, वे अवाक और स्तंभित रह गए। उनकी चेतना लौटने तक औरत जा चुकी थी। उन्होंने मोठ समाप्त नहीं किया—काश उन्होंने उसे नहीं खाया होता। मोठ देखकर उन्हें शर्म महसूस हुई। पर वे हाथ उठाकर उसे किनारे भी नहीं कर सकते थे। उनके हाथ मानो भारी हो गए थे।

5

लगभग बीस दिनों के बाद एक लकड़ी काटने वाला अचानक एक दिन पोई और शूछी की लाशों के पास पहुंच गया। उनकी लाशें पर्वत के पीछे एक गुफा में पड़ी थी। उनकी लाशें सड़ी नहीं थीं, जबकि उनके कृशकाय होने के कारण यह संभव भी था। इससे यह भी अंदाजा लगा कि उनको मरे अधिक दिन नहीं हुए थे। उनके मेड़ के चमड़ों के अस्तर लगे गाउन गायब थे, किसी को नहीं मालूम कि वे कहां गए। गांव में इस समाचार के पहुंचते ही हलका मच गया और रात तक लोगों की भीड़ पहाड़ पर आती जाती रही। हर काम में हस्तक्षेप करने वाले कुछ व्यक्तियों ने बाद में उनकी लाशें मिट्टी से ढक दीं और वहां

एक प्रस्तर फलक लगाकर आगामी पीढ़ी के हित के लिए कुछ लिख देने का विचार किया। अब चूंकि गांव में कोई लिखना नहीं जानता था, इसलिए उन्होंने सरदार श्याओपिङ की सहायता मांगी।

श्याओपिङ ने अभिलेख लिखने से मना कर दिया।

"उन मूर्खों के लिए? वे इसके लायक नहीं हैं। वे वयोवृद्ध सदन गए, कोई बात नहीं! पर वे राजनीति से दूर नहीं रहे। वे शओयाङ पर्वत आए, कोई बात नहीं! पर वे कविता लिखने की कोशिश करते रहे। उन्होंने कविताएं लिखीं तो भी कोई बात नहीं! पर उन्होंने अपनी स्थिति समझने और 'कला के लिए कला' का सृजन करने के बजाय विरोध व्यक्त किया। आप ही बताएं, क्या ऐसी कविता का कोई स्थायी महत्व है?

हम पश्चिमी पहाड़ी पर चढ़े
और हमने मोठ तोड़े,
एक लुटेरे ने दूसरे की जगह ले ली,
उसने अपनी कमी नहीं देखी।
शनलुङ और शुन सम्राट गुजर गए
श्या राजवंश भी उजड़ गया।
हम किसका अनुसरण करें?
चलो प्रस्थान करें! यह हमारा दुर्भाग्य है।

"मैं आपसे पूछता हूँ, यह क्या कूड़ा है? कविता में संयमन और सहिष्णुता होनी चाहिए। उनकी लिखाई केवल 'विलाप' नहीं है बल्कि सीधी 'गाली' है। फूल के बिना कांटे भी नहीं बर्दाश्त किए जाते, सीधी-सीधी गाली कौन बर्दाश्त करेगा? साहित्य की बात छोड़ भी दें, उन्होंने अपने पिता की भूमि छोड़कर पुत्रोचित व्यवहार भी नहीं किया। यहां आकर सरकार की नीतियों की आलोचना करना किसी सभ्य नागरिक का कार्य नहीं कहा जा सकता.... मैं नहीं लिख सकता!.."

सरदार श्याओपिङ की सारी बात अनपढ़ों को समझ में नहीं आई, पर उसके गुस्से से उन्हें लगा कि वह इस योजना के विरुद्ध है। उन्हें अपना विचार त्यागना पड़ा। इसके साथ ही पोई और शूछी के अंतिम संस्कार के आयोजन का भी मामला खटाई में पड़ गया।

किन्तु गर्मियों की रातों में बाहर खुले में बैठकर वे दोनों भाइयों की बातें करते थे। कुछ कहते कि वे बुढ़ापे की वजह से मरे, कुछ कहते बीमारी से, कुछ

यह भी कहते कि भेड़ के चमड़ों के अस्तर लगे गाउन के लिए लुटेरों ने उनकी हत्या कर दी। बाद में उन्होंने मान लिया कि उन्होंने जानबूझकर भूखे रहकर मृत्यु का वरण किया, क्योंकि सरदार श्याओपिङ की नौकरानी आ चिन लगभग पंद्रह दिनों पहले पर्वत पर उनका मजाक उड़ाने गई थी। सीधे-सादे बूढ़ों ने क्रोध में आकर खाना छोड़ दिया होगा। पर इससे उन्हें मृत्यु ही प्राप्त हुई।

इससे आ चिन के कई प्रशंसक बन गए कि उसने अपनी बुद्धि का प्रयोग किया, हालांकि कुछ लोगों ने उसकी कठोर निंदा भी की।

पोई और शूछी की मृत्यु के लिए आ चिन ने स्वयं को जिम्मेदार नहीं माना। निस्संदेह यह सच था कि वह पर्वत पर उन्हें तंग करने गई थी, पर वह केवल मजाक था। यह भी सच था कि उन मूर्खों ने क्रोध में आकर मोठ खाना छोड़ दिया। यह उनकी हत्या नहीं थी, इससे तो उन्हें अप्रत्याशित सौभाग्य मिला था।

"ईश्वर बहुत दयालु है", उसने कहा। "उसने जब देखा कि वे नाराज होकर भूख से मर रहे हैं तो उसने एक हरिणी को उन्हें दूध पिलाने का आदेश दिया। मैं पूछती हूं, भला इससे अच्छी बात क्या हो सकती है? खेत जोतने की जरूरत नहीं, लकड़ी काटने की जरूरत नहीं, आप दिन-रात निठल्ले बैठे रहें और आपके मुंह में हरिणी के दूध की धार गिरती रहे। पर उन बूढ़े खुसटों ने लंबा जीवन कष्ट में बिताया था। वह तीसरा भाई, क्या नाम था उसका? जो भी हो, वह हमेशा कुछ अधिक चाहता था। हरिणी का दूध उसके लिए काफी नहीं था। दूध पीते हुए उसने सोचा यह हरिणी मोटी है। यदि हम इसे मारकर इसका मांस खाएं तो कितना मजा जाएगा! वह पत्थर उठाने के लिए धीरे से बढ़ा। पर वह दैवी हरिणी थी, वह आदमी के मन की बात जानती थी। वह धुआं बनकर गायब हो गई। उनके लालच से ईश्वर को भी घृणा हुई। उसने हरिणी को जाने से मना कर दिया। इसलिए आप ही देखें, वे मेरे कुछ कहने से भूखे नहीं मरे, बल्कि अपने लालच और स्वार्थ से मरे..."

पूरी कहानी सुनने के बाद उसके श्रोताओं ने लंबी सांस ली। ऐसा लगा कि उनके कंधे से कोई भारी बोझ उतर गया हो। इसके बाद उन्होंने जब भी पोई और शूछी के बारे में सोचा,उनहें एक चट्टान के नीचे सफेद दाढ़ी वाला अपना मुंह खोले हरिणी को निगलने के लिए उकड़ूं बैठे दोनों भाइयों की अस्पष्ट आकृति दिखाई पड़ी।

दिसंबर 1935

दर्रे से विदाई

लाओ ची[1] संवेदनहीन लकड़ी के कुंदे की तरह स्थिर बैठे थे।

"आचार्य, खुंग छ्यू[2] फिर से आए हैं!" अंदर आते हुए उनको शिष्य कंगसांग छू ने कुछ चिढ़े स्वर में कहा।

"उन्हें अंदर आने के लिए कहो...."

"कैसे हैं, आचार्यप्रवर?" श्रद्धानत होकर कन्फ्यूशियस ने पूछा।

"हमेशा की तरह", लाओ ची ने उत्तर दिया। "और तुम? क्या तुमने हमारे यहां की सारी पुस्तकें पढ़ लीं?"

"हां, किन्तु..." पहली बार कन्फ्यूशियस कुछ घबराए हुए दिखे।

"मैंने छ क्लासिक पढ़ लिए : गीत ग्रंथ, इतिहास ग्रंथ, धर्मविधि ग्रंथ, संगीत ग्रंथ, परिवर्तन ग्रंथ तथा बसंत और शरद इतिवृत्त। मेरे विचार में अब तक मैंने सांगोपांग अध्ययन कर लिया है और इन पुस्तकों में वर्णित और विश्लेषित विषयों में पूर्ण दक्षता प्राप्त कर ली है। इसके बाद मैं बहत्तर राजकुमारों से मिला, उनमें से किसी ने मेरी सलाह नहीं ली। अपनी बात समझा पाना निश्चित ही कठिन कार्य है। या फिर शायद मार्ग की व्याख्या ही कठिन है?"

"तुम्हारा सौभाग्य है कि तुम किसी योग्य शासक से नहीं मिले", लाओ ची ने समझाया।

"छः शास्त्रीय ग्रंथ प्राचीन राजाओं की छोड़ी लीक हैं। वे नये पथ को कैसे प्रकाशित कर सकते हैं? तुम्हारे शब्द ऐसे रास्ते के समान हैं, जिससे अनेक पग गुजरे हैं—किन्तु वे पग रास्ते के समान नहीं हो सकते।" थोड़ी देर रुकने के बाद उन्होंने आगे कहा, "सफेद बगुलों को केवल एक-दूसरे को एकटक देखना होता

1. चीन के एक पुराने दार्शनिक। उन्होंने 'अकर्मण्यवाद' दर्शन की शुरूआत की थी। वे बसंत और शरद काल में छू राज्य में रहते थे।
2. कन्फ्यूशियस।

है और मादा गर्भ-धारण कर लेती है। कीड़ों में नर पवनाभिमुख होकर पुकारता है और मादा अनुवात से उत्तर देती है, इस प्रकार मादा गर्भाधान कर लेती है। उभयलिंगी जीव स्वयं ही गर्भाधान कर लेते हैं। प्रकृति को नहीं बदला जा सकता, भाग्य अपरिवर्तनीय है, समय को रोकना असंभव है, मार्ग को अवरुद्ध नहीं किया जा सकता। यदि तुम्हारे पास मार्ग है तो हर कार्य संभव है; यदि तुम उसे खो देते हो तो कुछ भी संभव नहीं।"

मानो किसी ने सिर पर प्रहार किया हो, कन्फ्यूशियस संवेदनाहीन लकड़ी के कुंदे की तरह ऐसे स्थिर बैठे रहे, जैसे उनकी आत्मा प्रस्थान कर गई हो।

लगभग आठ मिनट बीत गए। उन्होंने गहरी सांस ली और चलने के लिए उठ खड़े हुए। आचार्य प्रवर के निर्देशों के लिए हमेशा की तरह बड़ी भद्रता से उन्होंने धन्यवाद व्यक्त किया।

लाओ ची ने उन्हें रोका। वे भी उठे और छड़ी का सहारा लेकर उन्हें पुस्तकालय के द्वार तक छोड़ने गए। जब कन्फ्यूशियस अपनी गाड़ी में सवार होने वाले थे तो वृद्ध आचार्य ने यंत्रवत धीमे स्वर में कहा,

"जा रहे हो, क्या चाय नहीं पियोगे?...."

"धन्यवाद!"

कन्फ्यूशियस अपनी गाड़ी में सवार हो गए। अनुप्रस्थ छड़ के सहारे खड़े होकर उन्होंने आदरपूर्वक दोनों हाथ जोड़े और आचार्य प्रवर से विदाई ली। रान यू ने हवा में चाबुक चलाया और आवाज दी "अई...ई...!" गाड़ी आगे बढ़ गयी। जब गाड़ी दस गज से दूर निकल गई तो लाओ ची अपने कक्ष में लौट आए।

"आज आप प्रफुल्ल दिख रहे हैं, आचार्य प्रवर।" लाओ ची जाकर अपने आसन पर बैठ गए, कंगसांग छू आदर के साथ उनकी बगल में खड़े हो गए। "आपने तो भाषण ही दे डाला...."

"हां, बस", अशक्त सांस लेते हुए लाओ ची ने थके स्वर में कहा, "मैंने बहुत बोल दिया।" अचानक उन्हें ख्याल आया। "खुंग छ्यू ने मुझे जो जंगली हंस दिया था, उसका क्या हुआ? क्या उसे सुखाकर लवणित किया गया? यदि हां तो उसे भाप से पकाकर खा लो। मेरे तो दांत नहीं हैं, वह मेरे काम का नहीं है।"

कंगसांग छू बाहर निकल गए। लाओ ची ने उनके जाने के बाद शांति से आंखें बंद कीं।

पुस्तकालय में सब कुछ शांत था, केवल ओलती से बांस के खंभे के रगड़ खाने की आवाज आई। कंगसांग छू ने वहां लटके जंगली हंस को उतारा था।

तीन महीने बीत गए। लाओ ची पहले जैसे ही संवेदनाहीन लकड़ी के कुंदे की तरह बैठे थे।

"आचार्य प्रवर! खुंग छ्यू मिलने आए हैं!" घबराहट के साथ प्रवेश करते हुए उनके शिष्य कंगसांग छू ने कहा। "वे बहुत दिनों से नहीं आए थे, मुझे पता नहीं, इस बार वे किसलिए आए हैं?....."

"उन्हें अंदर बुलाओ...." हमेशा की तरह लाओ ची ने संक्षेप में कहा।

"आप कैसे हैं, आचार्य प्रवर?" श्रद्धानत होकर कन्फ्यूशियस ने पूछा।

"हमेशा की तरह", लाओ ची ने उत्तर दिया। "बहुत दिनों से तुम्हें नहीं देखा। निस्संदेह तुम अपने आवास में बैठे मेहनत से पढ़ते रहे होंगे?"

"बिलकुल नहीं", कन्फ्यूशियस ने नम्रता के साथ अस्वीकार किया। "मैं आवास में बैठा मनन कर रहा था। अब मुझे ज्ञान का अभास होने लगा है। कौए और मुटरी चोंच लड़ाते हैं, मछली अपनी लार से एक-दूसरे को गीला करती है, स्फेक्स दूसरे कीड़े में बदल जाते हैं, जब छोटा भाई गर्भ में आता है तो बड़ा रोता है। लंबे समय से रूपांतरण के चक्र से बाहर रहकर मैं भला कैसे दूसरों को रूपांतरित करने में सफल हो सकता हूं?...."

"सही कह रहे हो", लाओ ची ने कहा। "तुम्हें ज्ञान प्राप्त हो गया।"

आगे कोई शब्द उच्चरित नहीं हुआ। वे शायद संवेदनाहीन लकड़ी के दो कुंदे हो गए थे।

लगभग आठ मिनट गुजर गये। कन्फ्यूशियस ने गहरी सांस ली और चलने के लिए उठ खड़े हुए। आचार्य प्रवर के निर्देशों के लिए बड़ी भद्रता से उन्होंने धन्यवाद व्यक्त किया।

लाओ ची ने उन्हें नहीं रोका। वे भी उठे और छड़ी का सहारा लेकर उन्हें पुस्तकालय के द्वार पर छोड़ने गए। जब कन्फ्यूशीयस अपनी गाड़ी में सवार होने वाले थे तो वृद्ध आचार्य ने यंत्रवत धीमे स्वर में कहा,

"जा रहे हो, क्या चाय नहीं पियोगे?...."

"धन्यवाद!"

कन्फ्यूशियस अपनी गाड़ी में सवार हो गए। अनुप्रस्थ छड़ के सहारे खड़े होकर उन्होंने आदरपूर्वक दोनों हाथ जोड़े और आचार्य प्रवर से विदाई ली। रान यू ने हवा में चाबुक चलाया और आवाज दी "अई...ई...!" गाड़ी आगे बढ़

गयी। जब गाड़ी दस गज से दूर निकल गई तो लाओ ची अपने कक्ष में लौट आए।

"आज आप कुछ उदास दिख रहे हैं, आचार्य प्रवर।" लाओची जाकर अपने आसन पर बैठे, कंगसांग छू आदर के साथ उनकी बगल में खड़े हो गए। "आप बहुत कम बोले...."

"हां, बस", अशक्त सांस लेते हुए लाओ ची ने थके स्वर में कहा। "किन्तु तुम नहीं समझते। मेरे विचार में अब मुझे चलना चाहिए।"

"क्यों?" लगा जैसे आकाश से बिजली गिरी हो, कंगसांग छू को आचार्य की बात से ठेस लगी।

"खुंग छ्यू मेरे विचारों को समझता है। वह जानता है कि केवल मैं ही उसे भली भांति समझता हूं और इसके कारण वह अशांत रहेगा। मेरा नहीं जाना कष्टकर हो सकता है...."

"पर क्या वे भी समान मार्ग से अनुयायी नहीं हैं? आपको क्यों जाना चाहिए?"

"नहीं", लाओ ची ने विरोध में हाथ हिलाया। "हमारा मार्ग समान नहीं है। संभव है हम दोनों के पैरों में समान खड़ाऊं रेगिस्तान[1] की यात्रा के लिए हैं, उसके खड़ाऊं राजदरबार जाने के लिए हैं।"

"फिर भी आप उनके आचार्य हैं।"

"इतने वर्षों तक मेरे साथ रहने के बावजूद तुम अभी तक इतने भोले-भाले हो?" लाओ ची ने दबी हंसी के साथ कहा। "कितना सच है कि प्रकृति को नहीं बदला जा सकता और भाग्य अपरिवर्तनीय है। तुम्हें समझना चाहिए कि खुंग छ्यू तुम्हारे जैसा नहीं है। वह अब कभी नहीं आएगा और न ही मुझे आचार्य कहकर संबोधित करेगा। वह 'बूढ़ा आदमी' संबोधन के साथ मेरा उल्लेख करेगा और मेरी पीठ के पीछे युक्तियां चलाएगा।"

"मैं ऐसा सोच भी नहीं सकता था। किंतु मनुष्यों के मूल्यांकन में आप हमेशा सही होते हैं, आचार्य प्रवर...."

"नहीं, आरंभ में मैंने भी भूलें कीं हैं।"

"ठीक है फिर", कुछ देर सोचने के बाद कंगसांग छू ने कहा, "हम लोग उनका विरोध करेंगे...."

लाओ ची पुनः दबी हंसी हंसे और उन्होंने अपना मुंह खोला।

1. चीन का उत्तर-पश्चिमी रेगिस्तान।

"देखो! मेरे कितने दांत बचे हैं?"

"एक भी नहीं।"

"और मेरी जीभ?"

"वह अभी तक है।"

"क्या कुछ समझे?"

"आचार्य प्रवर, आपका आशय यह तो नहीं है कि कड़ी चीजें पहले चली जाती हैं और मुलायम चीजें बनी रहती हैं?"

"ठीक! मेरे विचार में तुम अपनी सामान बांधकर पत्नी के पास लौट जाओ। जाने से पहले मेरे काले बैल को तैयार कर दो और जीन तथा नमदे को धूप दिखा दो। मुझे सुबह सबसे पहले उनकी जरूरत पड़ेगी।"

हानकू दर्रे[1] के पास आने पर चौड़े रास्ते से सीधे वहां जाने के बजाए बैल की लगाम थामे लाओ ची दीवार की धीमी परिक्रमा लगाने के लिए उपमार्ग के रास्ते पर चले। उन्होंने उसे मापने की सोची। दीवार अधिक ऊंची नहीं थी, अपने बैल की पीठ पर खड़े होकर वे स्वयं दीवार को पार कर सकते थे। पर इसका मतलब बैल को अंदर ही छोड़ देना होता। बैल को पार कराने के लिए क्रेन की जरूरत पड़ती और उस समय तक लू पान[2] और मो ती[3] पैदा नहीं हुए थे, जबकि लाओ ची स्वयं कोई जुगत भिड़ाने में असमर्थ थे। संक्षेप में उन्होंने अपने दार्शनिक मस्तिष्क को झकझोरा, मगर उन्हें कोई उपाय नहीं सूझा।

उन्हें नहीं मालूम था कि जब वे उपमार्ग को मुड़े थे, तभी एक गुप्तचर ने उन्हें देख लिया था और उसने दर्रे के रक्षक को इसकी सूचना दे दी थी। वे बीस गज से कुछ अधिक दूर गए होंगे कि घुड़सवारों की एक टुकड़ी उनके पीछे आ गई। आगे-आगे गुप्तचर था, गुप्तचर के पीछे दर्रे का रक्षक शी था और उसके पीछे चार सिपाही तथा दो सीमाशुल्क अधिकारी थे।

"ठहरो!" किसी ने कहा।

लाओ ची ने बैल की लगाम खींची और संवेदनाहीन लकड़ी के कुंदे की तरह निश्चल हो गए।

"ठीक है! ठीक है!" आगे आने पर पहचानने के बाद रक्षक ने चौंकते हुए

1. चीन के उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में जाने का प्राचीन रणनीतिक दर्रा।
2. कुंगशू पान नाम से भी विख्यात लू पान लू राज्य के कुशल कारीगर और आविष्कारक थे।
3. प्राचीन चीनी दार्शनिक मो ती ने मो संप्रदाय की स्थापना की थी। मो चि की पुस्तक का संकलन वास्तव में उनके शिष्यों ने किया था। यह कहानी उस पुस्तक के एक अध्ययन पर आधारित है।

कहा। वह अपने घोड़े से उतरा और उसने झुककर अभिवादन किया। "मैं सोच रहा था कि कौन हो सकता है? आप हैं लाओ तान[1], पुस्तकालयाध्यक्ष! आश्चर्य है!"

लाओ ची जल्दी से अपने बैल से उतरे। अपनी छटी आंखों से उन्होंने रक्षक को पहचानने की कोशिश की और अनिश्चय के स्वर में बोले, "मेरी स्मृति धुंधली हो रही है.... आप?..."

"निस्संदेह, स्वाभाविक है! मैं आपको याद नहीं होऊंगा। मैं रक्षक शी हूं। 'कर लगाने का सार' पुस्तक के अध्ययन के लिए जब मैं पुस्तकालय गया था तो आपसे मिला था।"

इस बीच सीमाशुल्क अधिकारी जीन और नमदे में कुछ खोज रहे थे। एक ने अपने सूए से छेद कर दिया और उंगली डालकर अंदर की चीजों को टटोला। फिर चेहरे पर तिरस्कार भाव लिए वह चुपचाप लौट आया।

"क्या आप दीवार का चक्कर लगाने निकले हैं?" रक्षक शी ने पूछा।

"नहीं, मैं ताजा हवा प्राप्त करने के लिए बाहर जाने की सोच रहा था.."

"बहुत अच्छा। आजकल स्वास्थ्य पर विशेष चर्चा हो रही है। स्वास्थ्य अत्यधिक महत्वपूर्ण है। पर यह हमारा दुर्लभ सौभाग्य है, हमारा आपसे आग्रह है कि आप कुछ दिनों सीमाशुल्क कार्यालय में रुकें, जिससे हम आपके निर्देशों से लाभान्वित हो सकें...."

लाओ ची के कुछ उत्तर देने से पहले चारों सिपाही आगे बढ़े और उन्होंने लाओ ची को उठाकर बैल पर बिठा दिया। एक सीमाशुल्क अधिकारी ने बैल के पुट्ठे में अपना सूआ चुभोया। बैल अपनी पूंछ हिलाता हुआ दर्रे की तरफ भागा।

वहां पहुंचने पर उन्होंने उनके स्वागत में मुख्य हॉल खोला। यह हॉल फाटक-मीनार का मुख्य कक्ष था। इसकी खिड़कियों से बाहर पीले पठार के अलावा कुछ नहीं देखा जा सकता था, क्षितिज में विलीन होती पीले पठार की ढलान। आकाश नीला था और हवा शुद्ध। भव्य किला एक सीधी ढलान पर बना था। इसके दरवाजे के बाएं और दाएं की भूमि निपात ऐसा था कि इससे जाने वाला गाड़ी का रास्ता दो खड़ी चट्टानों के बीच बना प्रतीत होता था। मिट्टी का एक पिंड अवश्य ही उसे रोकने के लिए पर्याप्त था।

उन्होंने उबला पानी पिया और कुछ बेखमीर रोटियां खाईं। थोड़ी देर तक

1. लाओ ची का ही एक नाम।

आराम करने देने के बाद रक्षक शी ने लाओ ची को भाषण देने के लिए बुलाया। अस्वीकार करने का प्रश्न ही नहीं उठता था, लाओ ची तुरंत तैयार हो गए। हाल में श्रोताओं के आने और बैठने के समय पूरी हलचल और गड़बड़ी रही। उन्हें यहां लाने वाले आठ आदमियों के अतिरिक्त चार सिपाही, दो सीमाशुल्क अधिकारी, पांच गुप्तचर, एक प्रतिलिपिक, एक लेखाकार और एकरसोइया भी आ गए थे। उनमें से कुछ नोट लेने के लिए कूंची, चाकू और तख्ती[1] लेकर आए थे।

लाओ ची बीच में संवेदनाहीन लकड़ी के कुंदे की तरह बैठ गये। गहरी चुप्पी के बाद वे खांसे और फिर सुफेद दाढ़ी के पीछे उनके होंठ हिले। ध्यानपूर्वक सुनने के लिए अचानक सभी ने सांसें रोक लीं और लाओ ची ने धीमे स्वर में बोलना आरंभ किया,

"जिस मार्ग को बताया जा सके, वह अपरिवर्ती मार्ग नहीं है। जिस नाम का नाम रखा जा सके, वह अपरिवर्ती नाम नहीं है। नाम हीनता से ही स्वर्ग और धरती अस्तित्व में आए।

"मां का नाम है, मगर वह दस हजार जीवों को पालती है, प्रत्येक जीव अलग प्रकार के...."[2]

श्रोताओं ने एक-दूसरे को देखा। किसी ने नोट नहीं किया। लाओ ची ने आगे कहा,

"सच है, जो स्वयं को इच्छाओं से मुक्त कर लेता है, केवल वही गुप्त सार देख सकता है।"

"जो स्वयं को इच्छाओं से मुक्त नहीं कर पाता, वह केवल परिणाम देख सकता है।"

"ये दोनों चीजें एक ही सांचे से निर्गमित होती हैं, फिर भी दोनों के नाम भिन्न हैं। 'समान सांचे' को हम रहस्य कह सकते हैं।"

"या फिर 'किसी भी रहस्य से गहरा' "

"सारे गुप्त सार इसी द्वार से निर्गमित होते हैं....."

सभी के चेहरे से व्यथा झलक रही थी। कुछ की समझ में नहीं आ रहा था कि वे अपने हाथ-पांव कहां रखें। एक सीमाशुल्क अधिकारी ने लंबी जंभाई ली, प्रतिलिपिक सो गया और उसके हाथ से कूंची, चाकू और तख्ती धम से चटाई

1. कागज के आविष्कार के पूर्व बांस या लकड़ी की तख्ती पर लिखा जाता था। गलती होने पर उसे चाकू से मिटाया जाता था।
2. 'मार्ग और उसकी शक्ति' पुस्तक के उद्धरण।

पर गिर पड़े।

ऐसा लगा कि लाओ घी का ध्यान इन बातों पर नहीं गया; फिर भी उन्होंने अवश्य ध्यान दिया होगा, क्योंकि उन्होंने विस्तार से बताना आरंभ किया। पर दांत नहीं होने के कारण उनका उच्चारण स्पष्ट नहीं था; हूनान उच्चारण के साथ उनका शेनशी उच्चारण मिल गया और "ल" तथा "न" की ध्वनि भी मिल गई; इसके अलावा "अड़" भी बहुत प्रयोग कर रहे थे। श्रोताओं ने पहले से ज्यादा कुछ नहीं समझा। उलटा अधिक विस्तार के कारण उनकी व्यथा भीषण हो गई।

उपस्थिति बनाए रखने के लिए उन्हें यह सब बर्दाश्त करना ही था। जो थोड़ी दूर थे, उनमें से कुछ लेट गए और कुछ तिरछे होकर पसर गए। हरेक अपने विचार में खो गया। अंततः लाओ ची ने समाप्त किया।

"बिना संघर्ष के कार्य करना ही संतों का मार्ग है।"

उनके चुप होने पर भी कोई नहीं हिला। लाओ ची एक पल रुके और फिर बोले,

"अड़, बस।"

यह सुनते ही ऐसा लगा कि वे किसी लंबे स्वप्न से जगे हों। इतनी देर तक बैठे रहने से उनके पैर इतने सुन्न हो गए थे कि वे जल्दी से खड़े भी नहीं हो पाए। किन्तु उनके हृदय में वही आनंद और विस्मय था, जो किसी कैदी के हृदय में क्षमादान मिलने पर होता है।

लाओ घी को बगल के कमरे में ले जाया गया और उनसे आराम करने का अनुरोध किया गया। कुछ घूंट उबला पानी पीने के बाद वह लकड़ी के कुंदे के समान गतिहीन और स्थिर होकर बैठ गए। इस बीच बाहर गरमा-गरम बहस होती रही। इसके बाद चार प्रतिनिधि उनसे मिलने आए। उनमें हुई बातचीत का सारांश था : चूंकि वह बहुत जल्दी-जल्दी बोले और शुद्ध मानक भाषा का प्रयोग नहीं किया, इसलिए कोई नोट नहीं ले सका। अगर कोई लिखित प्रमाण नहीं रहा तो दुख की बात होगी। इसलिए उन्होंने उनसे कुछ लिखवा देने का आग्रह किया।

"वे क्या बोल रहे थे? मेरी समझ में तो एक शब्द भी नहीं आया।" लेखाकार ने कहा, ::एक बार लिख लिया गया तो इसका अर्थ होगा कि आप व्यर्थ नहीं बोले।"

लाओ ची उनकी बात अच्छी तरह नहीं समझ सके। पर चूंकि शेष दोनों ने उनके सामने कूंची,चाकू और तख्ती रख दी तो उन्होंने अनुमान किया कि वे

उनसे भाषण का पाठ चाहते हैं। अस्वीकार करने का प्रश्न ही नहीं उठता था, लाओ ची तुरंत तैयार हो गए। देर हो गई थी, इसलिए उन्होंने सुबह लिखने का वचन दिया। वार्ता के परिणाम से संतुष्ट होकर प्रतिनिधिमंडल चला गया।

अगले दिन सुबह बदली छाई हुई थी। लाओ ची ने स्वयं को अस्वस्थ महसूस किया, पर उन्होंने लिखना आरंभ कर दिया। वे जल्दी से जल्दी दर्रे से विदा होना चाहते थे और उनको पाठ दिए बिना वे जा नहीं सकते थे। तख्तियों के ढेर को देखकर वे और अस्वस्थ हो गए।

पर चेहरे पर कोई भाव लाये बिना उन्होंने चुपचाप लिखना आरंभ किया। उन्होंने पिछले दिन का भाषण याद करने के लिए मस्तिष्क पर जोर दिया और जो-जो याद आता गया, वे लिखते गए। उस समय तक चश्मे का आविष्कार नहीं हुआ था, उनकी कमजोर बूढ़ी आंखों पर बहुत अधिक तनाव पड़ा। उनकी आंखें सिकुड़कर रेखाछिद्र के समान रह गई। वे लगातार डेढ़ दिनों तक लिखते रहे,बीच में केवल उबला पानी पीने और बेखमीर रोटियां खाने के लिए रुके, फिर भी वे पांच हजार बड़े रेखाक्षरों से अधिक नहीं लिख पाए।

उन्होंने सोचा, "दर्रे से निकल सकने के लिए यही काफी होगा।"

उन्होंने एक डोरा लिया और तख्तियों को पिरो लिया। उन्होंने तख्तियों की दो लड़ियाँ बनाई। फिर अपनी छड़ी के सहारे वे रक्षक के कार्यालय तक अपनी पांडुलिपि देने और अपने तुरंत जाने की इच्छा व्यक्त करने गये।

रक्षक शी अत्यंत खुश था। उसने खुले दिल से उनकी प्रशंसा की, मगर उनके जाने की बात सोचकर वह अत्यंत दुखी भी था। कुछ दिनों तक और रोकने की व्यर्थ कोशिश के बाद उसका चेहरा दुखी हो गया, आखिरकार उसने अपनी सहमति दे दी और अपने सिपाहियों को काले बैल की जीन कसने का आदेश दिया। अपनी अलमारी से उसने अपने हाथों से नमक और तिल की एक-एक थैली और पंद्रह बेखमीर रोटियां उतारी। सारे सामानों को उसने जब्त की गई एक सफेद बोरी में रखा और रास्ते के लिए लाओ ची को दे दिया। उसने यह भी स्पष्ट कर दिया कि ऐसा अधिमानक व्यवहार केवल वरिष्ठ लेखकों के लिए सुरक्षित है। अल्पायु आदमी को केवल दस रोटियां ही मिलती हैं।

बार-बार धन्यवाद देने के बाद लाओ ची ने बोरी ले ली। वे सभी के साथ किले से उतरे। दर्रे के पास बैल पर चढ़ने के लिए रक्षक शी के अनुनय करने तथा वे बैल की लगाम लेकर चले; थोड़ी देर तक भद्रता के साथ झुकने के बाद वे बैल पर सवार हो गए। विदा लेने के बाद उन्होंने बैल का मुंह मोड़ा। बैल पांव

घसीटते हुए ढलान से उतरने लगा।

थोड़ी देर के बाद ही बैल की चाल तेज हो गई। बाकी लोगों ने दर्रे से उन्हें जाते हुए देखा। सात-आठ गज जाने तक उन्हें लाओ ची के सफेद बाल और पीला गाउन तथा काला बैल और सफेद बोरी दिखाई देती रही। इसके बाद धूल उठी और उसने आदमी और जानवर दोनों को ढक दिया, सब कुछ धूसर हो गया। अब उन्हें पीली धूल के अलावा कुछ नहीं दिखाई दे रहा था--सब कुछ आंखों से ओझल हो चुका था।

सीमा शुल्क कार्यालय में लौटने पर सभी ने राहत की सांस ली, मानो उनके कंधे से कोई भारी बोझ उतर गया हो। उन्होंने अपने होंठों पर यों जीभ फेरी, मानो कोई फायदा हुआ हो। उनमें से कई रक्षक शी के पीछे-पीछे उसके कार्यालय तक गए।

"यही पांडुलिपि है?" तख्तियों की एक लड़ी उठाकर देखते हुए लेखाकार ने पूछा। "यह कम से कम साफ-साफ तो लिखा है। मेरे विचार में बाजार में इसका ग्राहक पाया जा सकता है।"

प्रतिलिपिक भी बढ़कर आगे आया और उसने आरंभ से पढ़ना शुरू किया,

"जिस मार्ग को बताया जा सके, वह अपरिवर्ती मार्ग नहीं है!" हूं... वही पुराना घालमेल। यह सिरदर्द मोल लेने के लिए काफी है, इसे सुनकर ही मुझे ज्वर चढ़ने लगता है...."

"सर दर्द की सबसे अचछी दवा नींद है", लेखाकार ने तख्ती रखते हुए कहा।

"हां, इसे दूर करने के लिए मुझे सोना पड़ेगा। सच्चाई यह है कि मैं उनके प्रेम प्रसंग सुनने की उम्मीद से गया था। अगर मुझे मालूम होता कि यही अगड़म- बगड़म सुनना है तो मैं घंटों व्यथा सहने के लिए वहां बैठने नहीं जाता. ..."

"यह तुम्हारी गलती है कि तुमने आदमी को गलत पहचाना।" रक्षक शी हंसा। "उनके क्या प्रेमप्रसंग होंगे? उन्होंने कभी प्रेम नहीं किया।"

"आप कैसे जानते हैं?" प्रतिलिपिक ने चौंककर पूछा।

"क्या तुमने उनकी बातें नहीं सुनीं निष्क्रिय रहकर सारी चीजों को सक्रिय किया जा सकता है?' यह फिर से तुम्हारी गलती है कि तुम झपकी ले रहे थे। इस बूढ़े की महत्वाकांक्षाएं आकाश से ऊंची हैं और भाग्य कागज से पतला है।[1]

1. 'लाल भवन का स्वप्न' नामक प्रसिद्ध क्लासिकी चीनी उपन्यास का एक मुहावरा।

जब वे सारी चीजों को सक्रिय करना चाहते हैं तो स्वयं निष्क्रिय हो जाते हैं। यदि वे किसी एक से प्रेम करेंगे तो उन्हें सभी से प्रेम करना होगा। इसलिए वे कैसे प्रेम कर सकते हैं? भला कैसे साहस कर सकते हैं? स्वयं को देखो, तुम किसी सुन्दर या कुरूप लड़की को देखते हो, तुम उसे यों देखते हो, जैसे वह तुम्हारी पत्नी हो। जब तुम्हारा विवाह हो जाएगा तो तुम भी अपने लेखाकार की तरह संभवतः अच्छा व्यवहार करने लगोगे।

बाहर तेज हवा चली। उन्होंने थोड़ी ठंड महसूस की।

"पर यह बूढ़ा कहां जा रहा है? यह क्या करना चाहता है?" प्रतिलिपिक ने अवसर का फायदा उठाकर विषय बदला।

"उनके अनुसार, वे रेगिस्तान में जा रहे हैं", रक्षक शी ने तीखे स्वर में कहा। "वे नहीं पहुंच पाएंगे। उन्हें वहां नमक और आटा नहीं मिलेगा-यहां तक कि पानी भी दुर्लभ होगा। मुझे पूरा विश्वास है कि जब भूख सताएगी तो वे लौट आएंगे।"

"फिर हम उनसे दूसरी पुस्तक लिखवाएंगे", लेखाकार ने खुश होकर कहा। "वे बेखमीर रोटियों से संतुष्ट हो जाएंगे। हम उन्हें बताएंगे कि अब नियम बदल गए हैं और हम युवा लेखकों को प्रोत्साहित कर रहे हैं। हम तख्तियों की दो लड़ियों के लिए उन्हें केवल पांच बेखमीर रोटियां देंगे।"

"शायद वे न मानें। वे नाराज हो जाएंगे या तमाशा खड़ा कर देंगे।"

"भूखे रहने पर वे कैसे तमाशा खड़ा कर सकते हैं?"

"मुझे तो लगता है कि ऐसा कचरा कोई भी पढ़ना नहीं चाहेगा।" प्रतिलिपिक ने हाथ चमकाते हुए कहा "हमें पांच रोटियों की कीमत भी वापस नहीं मिलेगी। उदाहरण के लिए यदि उनकी कही बात सच है तो दर्रे के रक्षक को अपनी नौकरी छोड़ देनी चाहिए। निष्क्रियता प्राप्त करने और सचमुच महत्वपूर्ण होने का यही एक तरीका है....."

"चिन्ता न करो", लेखाकार ने कहा। "कोई न कोई अवश्य पढ़ेगा। क्या बहुत से सेवानिवृत्त रक्षक और ऐसे एकांतवासी नहीं हैं, जो अभी तक रक्षक नहीं बने?...."

बाहर तेज हवा चली और पीली धूल का बवंडर उठा। आधा आकाश पीली धूल से भर गया। रक्षक ने दरवाजे की तरफ देखा। वहां अभी भी अनेक गुप्तचर और सिपाही खड़े थे और उनकी बातचीत सुन रहे थे।

"तुम लोग मुंह फाड़े क्या देख रहे हो?' वह चिल्लाया। "शाम हो रही है।

क्या इस समय निषिद्ध मालों की दीवार पर तस्करी नहीं होती है? जाओ और चक्कर लगाओ।"

बाहर खड़े आदमी आदेश सुनते ही धुएं की तरह विलीन हो गए। अंदर खड़े आदमी चुप हो गए। प्रतिलिपिक और लेखाकार दोनों चले गए। रक्षक शी ने बांह से अपनी मेज की धूल झाड़ी और फिर तख्तियों की दोनों लड़ियां उठाई। उसने तख्तियों की लड़ियों को नमक, तिल, कपड़े, दाल, बेखमीर रोटी और अन्य जब्त सामानों के बीच आलमारी में रख दिया।

दिसंबर, 1935

आक्रमण का विरोध

ची श्या[1] के शिष्य कुंग सुन काओ कई बार मो चि[2] से मिलने गए, किन्तु मो चि के बाहर होने के कारण उनकी भेंट नहीं हो पाई थी। चौथे या पांचवें प्रयास के बाद उनकी उनसे भेंट हो पाई। मो चि अभी लौटे ही थे कि कुंग सुन काओ उनके द्वार पर पहुंचे। दोनों एक साथ अंदर गए।

प्रारंभिक औपचारिकताओं के बाद चटाई के छेदों को देखते हुए कुंगसुन काओ ने भद्रता के साथ पूछा,

"आप युद्ध के विरूद्ध हैं, आचार्य प्रवर?"

"हां", मो चि ने कहा।

"आपके अनुसार वरिष्ठ व्यक्तियों को युद्ध नहीं करना चाहिए।"

"नहीं करना चाहिए", मो चि ने कहा।

"पर जब सूअर और कुत्ते तक लड़ते हैं तो भला मनुष्य...."

"ओह, तुम कन्फ्यूशियसवादी। तुम याओ और शुन[3] से दिखावटी प्रेम जताते हो, किन्तु तुम्हारा व्यवहार में सूअर और कुत्तों के अनुसार स्वयं को ढालना चाहते हो। दुख की बात है।" मो ति उठकर रसोई की तरफ जाते हुए बोले, "तुम मुझे नहीं समझते....."

रसोई से होते हुए वे पिछले दरवाजे से निकलकर कुएं के पास गए। चर्खी चलाकर उन्होंने कुएं से आधा घड़ा पानी खींचा। दोनों हाथ से घड़ा उठाकर उन्होंने दस घूंट भरे। पानी पीने के बाद उन्होंने घड़ा रखा और मुंह पोंछा। अचानक बगीचे के कोने में खड़े एक व्यक्ति पर उनकी नजर पड़ी, उन्होंने पूछा,

"आ ल्येन! तुम कब लौटे?"

---

1. ची श्या कन्फ्यूशियस के शिष्य थे। उनके शिष्य कुंगसुन काओ संभवतः काल्पनिक चरित्र हैं।
2. देखिए : "दर्रे से विदाई" का नोट।
3. पौराणिक संत सम्राट।

आ ल्येन ने उन्हें पहले ही देख लिया था। वे भागते हुए उनके पास आए और बगल में खड़े होकर उन्होंने अपने आचार्य का आदरपूर्ण अभिवादन किया। फिर रोष प्रकट करते हुए बोले,

"मैं अभी होकर आ रहा हूं। वे अपनी उपदेशों का स्वयं ही पालन नहीं करते। उन्होंने मुझे एक हजार माप बाजरा देने का वचन दिया था, किन्तु केवल पांच सौ माप दिया। मैं नहीं रह सकता।"

"अगर वे तुम्हें एक हजार से अधिक देते तो क्या रुक गए होते?"

"हां।"

"फिर तो उनके द्वारा अपने उपदेशों का पालन न करने के कारण तुम नहीं आए हो, बल्कि इसलिए लौट आए कि तुम्हें बहुत कम मिल रहा था।"

मो चि फिर से रसोई में गए और उन्होंने पुकार, "कंग चूचि![1] मेरे लिए मक्के की लोई तैयार कर दो!"

उत्साही युवक कंग चूचि केन्द्रीय कक्ष से बाहर निकले।

"आचार्य प्रवर, क्या आपको दस दिनों से अधिक के लिए खाद्य सामग्री चाहिए?"

उसने पूछा।

"हां", मो चि ने कहा "क्या मुगसुन काओ चले गए?"

"हां", कुंग चूचि हंसा। "वे बहुत क्रोधित थे। कह रहे थे कि हम जंगली जानवरों की तरह उचित-अनुचित का विचार किए बिना सभी से प्रेम करते हैं और अपने पूर्वजों के प्रति विशेष श्रद्धाभाव नहीं रखते।"

मो चि मुस्कराए।

"आचार्य प्रवर, क्या आप छू राज्य जा रहे हैं?"

"हां! तो तुम भी इसके बारे में जानते हो?"

कंग चूचि मक्के का आटा गूंथने लगे और मो चि ने आग जलाने के लिए चकमक पत्थर और रद्दी माक्सा लिया। पानी उबलने के लिए उन्होंने लकड़ी की घुन्नियां सुलगाईं। लपटों को देखते हुए उन्होंने धीमे स्वर में कहा, "हमारा समदेशी कुंगशू पान[2] अपनी दक्षता के निरंतर उपयोग से समस्याएं खड़ी कर देता था। यूवे से युद्ध करने हेतु छू राजा के लिए लंगर और भाले[3] का आविष्कार

1. कंग चूचि, छाओ कुंग चि, क्वान छ्येनआओ और छिन हवालि मो चि के शिष्य थे।
2. कुंग शू पान लू राज्य के दक्ष कारीगर और आविष्कारक थे।
3. प्राचीन चीन में युद्ध पोत के हथियार।

कर उसे संतोष नहीं हुआ। अब वह युद्ध में उपयोगी सीढ़ियों का आविष्कार कर सुंग राज्य पर आक्रमण हेतु अपने राजा को प्रेरित करना चाहता है। सुंग जैसा छोटा राज्य छू के विरुद्ध कैसे टिक पाएगा? इसे रोकना चाहिए।"

जब कंग चूचि ने मक्के की लोइयां भाप से पकाने के लिए रखीं तो मो चि अंदर गए। उन्होंने अलमारी में से खोजकर लवणित सूखे पालक और एक पुराना तांबे का चाकू निकाला। उन्होंने कपड़े का एक टुकड़ा भी निकाला। जब कंग चूचि भाप से पकाई मक्के की लोइयां ले आया तो उन्होंने सब को एक साथ बांधा। उन्होंने अपने कपड़े नहीं बदले, तौलिया तक नहीं लिया। चमड़े की अपनी पेटी कसते हुए वे सीढ़ियां से उतरे और नीचे आकर उन्होंने फूस से बनी अपनी चप्पल पहनी। अपनी गठरी कंधे पर रख, बिना पीछे देखे वे बाहर निकल गए। उनकी गठरी से अभी भी भाप निकल रही थी।

"आचार्य प्रवर, आप कब तक लौटेंगे?" कंग चूचि ने पीछे से पूछा।

"बीस दिनों से अधिक लग जायेंगे", आगे बढ़ते हुए मो चि ने उत्तर दिया।

2

सुंग राज्य की सीमा पार करने तक मो चि की फूस की चप्पल तीन-चार बार टूट चुकी थी और उनके तलवे जल रहे थे। रुककर उन्होंने जब देखा तो पाया कि चप्पल में बड़े छेद हो गए हैं और उनके पैर में गांठ और फफोले पड़ गए हैं। इसके बावजूद उन्होंने चलना जारी रखा। चलते हुए वे चारों तरफ देखते भी जा रहे थे। वह इलाका किसी तरह भी उजाड़ नहीं था, किन्तु हर तरफ युद्ध और बाढ़ से हुए विनाश के चिह्न थे—लोगों की अपेक्षा कम तेजी से उनमें परिवर्तन आया था। तीन दिनों तक वे चलते रहे, किन्तु उन्हें कहीं एक भी ऊंचा मकान, एक भी बड़ा पेड़, एक भी मनुष्य का जोशीला चेहरा या उर्वर खेत का टुकड़ा नहीं दिखाई पड़ा। और इस तरह वे राजधानी पहुंचे।

शहर की दीवार टूटकर गिर रही थी, किन्तु कुछ जगहों पर नये पत्थर जोड़े गए थे।

खाई के पास मिट्टी के ढेर थे, जो खाई के पास बैठे शायद मछलियां पकड़ रहे थे।

"उन्होंने अवश्य ही समाचार सुना होगा", मो चि ने सोचा। उन्होंने मछुआरों को निकट से देखा, मगर उनका कोई भी शिष्य उनमें नहीं था।

उन्होंने शहर से होकर जाने का निर्णय लिया। उत्तरी दरवाजे से घुसकर

दक्षिण जाने के लिए उन्होंने मुख्य मार्ग पकड़ा। शहर खाली पड़ा था और शांति थी। सभी दुकानों पर कीमत में छूट की सूचनाएँ टंगी थीं, पर ग्राहकों का नामोनिशान नहीं था और दूकानों में अधिक सामान भी नहीं था। गलियों में पीली धूल जमी थी।

"और वे ऐसे शहर पर आक्रमण करना चाहते हैं!" उन्होंने सोचा।

मुख्य सड़क से गुजरते हुए उन्हें गरीबी और बदहाली के अलावा कोई भी विशेष चीज नहीं दिखाई पड़ी। छू राज्य के आसन्न आक्रमण का समाचार संभवतः मिल चुका था, पर यहां के नागरिक आक्रमण के इतने अभ्यस्त हो चुके थे कि वे उसे अपनी नियति मानकर उसकी चिंता नहीं करते थे। और चूंकि उन सब उदासीन और भूखे लोगों के पास अपने जीवन के अलावा कुछ नहीं बचा था, इसलिए कहीं और चले जाने की बात उन्हें नहीं सूझी। दक्षिण दरवाजे का बुर्ज दिखाई पड़ने लगा था। पास में ही सड़क के किनारे दस-पंद्रह आदमी खड़े किसी वक्ता की बात सुन रहे थे। शायद कोई कथावाचक था।

नजदीक आने पर मो चि ने वक्ता की आकृति देखी। वह चिल्ला रहा था,

"हम उन्हें शुंग लोगों का विशुद्ध साहस दिखाएंगे! हम सभी मरने के लिए तैयार हैं!"[1]

मो चि ने अपने शिष्य छाओ कुंग चि की आवाज पहचान ली।

किन्तु आगे बढ़कर उससे मिलने के बजाए वे दक्षिण दरवाजे की तरफ बढ़ गये। उन्होंने अपनी यात्रा जारी रखी। और एक दिन तथा लगभग पूरी रात चलने के बाद वे एक झोंपड़ी की ओलती के नीचे आराम करने के लिए रुके। सुबह होने तक वे वहां सोए। जगने के बाद उन्होंने फिर से अपनी यात्रा आरंभ की। उनकी फूस की चप्पल लेशमात्र ही बची थी, अब उसे और नहीं पहना जा सकता था। उनकी गठरी में अभी भी कुछ लोइयां बची थीं, इसलिए वे उसका प्रयोग नहीं कर सकते थे। विवश होकर पैरों में लपेटने के लिए उन्होंने अपने वस्त्र को फाड़ा। कपड़ा इतना पतला था कि देहात की ऊबड़-खाबड़ सड़क से उनके पांव कट गए और चलना पहले से अधिक कठिन हो गया। उस दोपहर वे एक छोटे लोकस्ट पेड़ की छाया में सुस्ताने के लिए बैठे। उन्होंने खाने के लिए

1. छाओ कुङचि का भाषण क्वोमिनताङ सरकार की पैरोडी है। 1931 में जापानी साम्राज्यवादियों ने जब उत्तरपूर्व चीन पर अधिकार कर लिया तो क्वोमिनाता ट सरकार ने आत्मसमर्पण की नीति अपनाई थी। विरोध करने की बजाय लोगों को धोखा देने के लिए उन्होंने केवल लम्बे-चौड़े भाषण दिये। छाओ कुङचि क्वोमिनताङ सरकार के प्रवक्ताओं का प्रतिनिधित्व करता है।

अपनी गठरी खोली। दूर से एक हट्टा-कट्टा व्यक्ति एक भारी ठेला ठेलते हुए उनकी तरफ चला आ रहा था। पास आने पर उस व्यक्ति ने ठेले को छोड़ दिया और मो चि के निकट आकर पुकारा, "आचार्य प्रवर।" अपने चेहरे से पसीना पोंछता हुआ वह हांफ रहा था।

"ठेले में बालू है क्या?" अपने शिष्य क्वान छ्येनआओ को पहचानने पर मो चि ने पूछा।

"हां। युद्ध में उपयोगी सीढ़ियों से बचाव के लिए।"

"और क्या-क्या तैयारियां हो चुकी है?"

"कुछ पटसन, राख और रद्दी लोहा जमाकर लिया गया है, पर यह बहुत कठिन काम है। जिनके पास धन है, वे कुछ नहीं देंगे और जो देना चाहते हैं, वे निर्धन हैं। हां बड़ी-बड़ी बातें अवश्य सुनने को मिलती हैं....."

"कल शहर में मैंने छाओ कुंग चि का भाषण सुना। वह 'साहस' और मृत्यु की बातें कर रहा था। उसे जाकर समझाओ कि ऐसे निस्सार और रहस्यपूर्ण शब्दों का प्रयोग न करे। मृत्यु बुरी चीज नहीं है। यह आसान भी नहीं है। पर हमें लोगों के लाभ के लिए अवश्य मरना चाहिए।"

"उससे बात करना असंभव है", क्वान छ्येनआओ ने निराश स्वर में उत्तर दिया। "दो वर्षों तक यहां अधिकारी रहने के बाद वह हमसे बातें करना पसंद नहीं करता।"

"और छिन हूवालि?"

"वह बहुत व्यस्त है। वह अपनी आड़ी कमान को आजमा रहा है। मेरे विचार में वह पश्चिम दरवाजे के बाहर के मैदान में अभ्यास कर रहा होगा, इसलिए वह आपसे नहीं मिल सका। आचार्य प्रवर, क्या आप कुंग शू पान से मिलने छू राज्य जा रहे हैं?"

"हां। पर मुझे मालूम नहीं कि वह मेरी राय सुनेगा भी या नहीं? इसलिए अपनी तैयारी जारी रखो। उसके साथ होने वाली मेरी बातचीत से अधिक उम्मीद न लगाओ।"

क्वान छ्येनआओ ने सिर हिलाया। मो चि फिर से आगे चले। अपना चरमराता ठेला लेकर शहर में जाने से पहले वह अपने गुरु को जाते हुए देखता रहा।

3

छू राज्य की राजधानी इंग, सुंग से बिल्कुल भिन्न थी। यहां चौड़ी सड़कें

थीं, साफ-सुथरे मकान थे और दुकानों में उत्तम कोटि के सामान भरे थे। श्वेत हिम लिनेन, गहरी लाल मिर्च, चितकबरा मृगचर्म और कमल के बीज आदि सब कुछ दूकानों में थे। आने जाने वाले हालांकि उत्तर चीन के लोगों की अपेक्षा छोटे कद के थे, मगर ऊर्जावान लग रहे थे और उन्होंने साफ कपड़े पहन रखे थे। उनके बीच मो चि अपने पुराने जैकेट,फटे गाउन और पैरों में लपेटे चिथड़े के कारण किसी भिखारी के समान लग रहे थे।

शहर के बीच का बड़ा चौराहा दूकानों और लोगों से भरा था। यह मुख्य बाजार था और यहां चार सड़कें आकर मिलती थीं। विद्वान प्रतीत हो रहे एक बूढ़े से मो चि ने कुंगशू पान के घर का पता पूछा। दुर्भाग्यवश भिन्न बोली बोलने के कारण वे अपनी बात नहीं समझा सके। बूढ़े को दिखाने के लिए वे अपनी हथेली पर शब्दों को लिख ही रहे थे कि सभी ने गाना शुरू कर दिया। प्रसिद्ध गायिका साए श्यांग लिंग ने अपना 'श्या-ली-पा-रन'[1] गाना शुरू किया था और पूरे देश के सभी स्त्री-पुरुष एक स्वर से सुर मिला रहे थे। थोड़ी देर में ही बूढ़े विद्वान ने भी गुनगुनाना आरंभ कर दिया। यह समझकर कि वह आदमी उनकी हथेली पर लिखे शब्द पढ़ने नहीं जाएगा, मो चि ने "कुंग" रेखाक्षर भी पूरा नहीं किया और वहां से आगे बढ़ गए। परंतु हर जगह गायन चल रहा था, उनकी समझ में एक शब्द भी नहीं आ सका। गायिका ने जब अपना गीत समाप्त किया, तभी शांति लौट आई। इस बीच मो चि को एक बढ़ई की दूकान मिली। वहां उन्होंने कुंगशू पान का पता पूछा।

"लंगर और भाला बनाने वाले शानतुंग के श्री कुंग शू?" पीले चेहरे और काली मूंछों वाला मोटा बढ़ई काफी जानकार व्यक्ति था। "ज्यादा दूर नहीं है। पिछले चौराहे तक वापस जाएं और दाईं तरफ की दूसरी गली में घुसें। फिर पूरब, उसके बाद दक्षिण और फिर उत्तर की ओर मुड़ें। वहीं तीसरा मकान उनका है।"

अपनी हथेली पर उन्होंने फिर से नाम लिखा और आश्वस्त हो लिए कि बढ़ई किसी दूसरे का पता नहीं बता रहा है। बढ़ई को धन्यवाद देने के पहले उन्होंने पूरा रास्ता फिर से याद किया और फिर बताई दिशा में आगे बढ़े। सचमुच तीसरे मकान के द्वार पर एक सुंदर काठ की तख्ती लगी थी और उस पर पुरानी लिपि में शब्द लिखे थे : लू के कुंग शू पान का मकान।

मो चि ने जानवर के आकार में बनी तांबे की कुंडी खटखटाई। चढ़ी भौंहों

1. प्राचीन चीन के लू राज्य के लोकसंगीत का प्रसिद्ध नाम।

और क्रोधित आंखों से देख रहे नौकर को सामने पाकर उन्हें आश्चर्य हुआ। नौकर ने डपटकर कहा,

"मेरे मालिक किसी से मिलना नहीं चाहते। तुम्हारे अनेक देशबंधु यहां पैसे मांगने आए।"

मो चि को इतना समय नहीं मिला कि वे अच्छी तरह देख सकें और इसी बीच दरवाजा क्षटाक से बंद हो गया। मो चि ने फिर से कुंडडी हिलाई, मगर अंदर कोई आवाज नहीं हुई। उनकी एक झलक ने ही नौकर को परेशान कर दिया। वह अपने मालिक को बताने गया। कुंगशू पान के हाथमें बढ़ई का कोनिया था, वे अपने युद्ध में उपयोगी सीढ़ियों के नमूने का माप ले रहे थे।

"मालिक, आपका एक और देशबंधु आपसे मिलना चाहता है..." नौकर ने कहा। "मगर वह आदमी देखने में विचित्र है...."

"क्या नाम है?"

"मैंने नहीं पूछा..." नौकर ने डरते हुए कहा।

"वह कैसा लगता है?"

"भिखारी जैसा। तीस से कुछ अधिक उम्र होगी। लंबा और काला...."

"ओह, फिर तो मो ती हैं!"

चौंककर कुंग शू पान ने नमूना और कोनिया एक तरफ रखा। वे सीढ़ियों से तेजी से उतरे। नौकर भी चौंककर द्वार खोलने के लिए उनसे आगे भागा। मो चि और कुंगशू पान ने गलियारे में एक दूसरे का अभिवादन किया।

"तो आप हैं!" खुश होकर कुंगशू पान ने कहा। वे उन्हें अपने केन्द्रीय कक्ष में ले गए।

"आप ठीक तो थे न? क्या अभी भी पहले की तरह व्यस्त है?"

"हां, वही पुरानी कहानी है...."

"किन्तु आप इतनी दूर चलकर आए.... आप अवश्य ही मुझे कोई निर्देश देने आए होंगे।"

"उत्तर के एक व्यक्ति ने मेरा अपमान किया है", मो चि ने शांत स्वर में कहा। "मैं चाहता हूं कि तुम जाकर उसकी हत्या कर दो..."

कुंगशू पान ने परेशानी महसूस की।

"मैं तुम्हें दस सिक्के दूंगा", मो चि ने आगे कहा।

यह बात कुंगशू पान के बर्दाश्त के बाहर हो गई। उनका मुंह लटक गया और ठंडे स्वर में कहा,

"मेरा अंतःकरण हत्या की अनुमति नहीं देता।"

"बहुत अच्छा।" प्रभावित होकर मो चि ने कहा। खड़े होकर दो बार शीश झुकाया। फिर शांत होकर उन्होंने आगे कहा, "तो फिर मुझे कुछ बताने दो। उत्तर चीन में मैंने सुना कि सुंग राज्य पर आक्रमण करने के लिए तुम युद्ध में उपयोगी सीढ़ियां बना रहे हो। सुंग ने क्या गलती की है? छू के पास आवश्यकता से अधिक जमीन है और जनसंख्या भी कम है। तुम्हारे पास जो चीज आवश्यकता से अधिक है, उसे बड़ी मात्रा में पाने के लिए हत्या करना बुद्धिमानी नहीं है। निर्दोष सुंग पर आक्रमण करना मानवता नहीं है। इसे जानते हुए भी मध्यस्थता न करना राजभक्ति नहीं है। मध्यस्थता करने पर भी राजा को समझाने में असफल हो जाना मनोबल का संकेत नहीं है। अंतःकरण के वशीभूत होकर एक व्यक्ति की हत्या से इंकार करना, किन्तु अनेक लोगों की हत्या करने के लिए तैयार रहना, इसके पीछे कोई तार्किक संगति नहीं है। आप क्या सोचते हैं, बोलें?"

"क्यों...." कुंगशू पान ने इस पर विचार किया। "आप सही कह रहे हैं, आचार्य प्रवर।"

"ऐसी स्थिति में क्या आप अपनी योजना नहीं त्याग सकते?"

"असंभव।" कुंगशू पान ने दुखी होकर कहा। "मैं इसके बारे में पहले ही राजा को बता चुका हूं।"

"ऐसी स्थिति में मुझे राजा के पास ले चलो।"

"ठीक है। पर अभी तो बहुत समय है। पहले हम खाना खा लें।"

मो चि ने उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया। वे उने के लिए झुक रहे थे—वे अधिक देर तक स्थिर नहीं बैठ सकते थे। उनके जिद्दी स्वभाव से कुंगशू पान परिचित थे। वे भी उसी समय राजा से मिलने जाने को तैयार हो गए। जूते और कपड़े लाने के लिए पहले वे कमरे में गए। लौटकर उन्होंने निष्कपट भाव से कहा,

"आचार्य प्रवर, आप कृपया कपड़े बदल लें, यहां की स्थिति अपने घर से अलग है—यहां सब कुछ सुव्यवस्थित और सुसज्जित होना चाहिए। बदलना अच्छा रहेगा..."

"ठीक है। ठीक है।" मो चि ने भी समान निष्कपट भाव से उत्तर दिया। "ऐसा नहीं है कि मुझे चिथड़े पहनना पसंद है.... मुझे बदलने का समय नहीं मिल पाया....."

उत्तर चीन के प्रसिद्ध संत के नाम से छू राज पूर्व-परिचित थे, इसलिए कुंगशू पान द्वारा परिचय कराते ही उन्हें बोलने की अनुमति मिल गई।

छोटे कपड़े पहने मो चि लंबी टांगों के बगुले के समान लग रहे थे। वे कुंगशू पान के साथ महल के एक विशेष कक्ष में गए। छू राजा को सादर नमस्कार करने के बाद मो चि ने शांत भाव से बोलना आरंभ किया।

"एक आदमी अपनी भरी गाड़ी से घृणा करता है, मगर पड़ोसी की खाली गाड़ी देख ललचता है, वह अपने ब्रोकेड वस्त्र से घृणा करता है, मगर पड़ोसी का छोटा जैकेट देखकर ललचता है, वह अपने चावल और मांस से घृणा करता है, मगर पड़ोसी के चोकर को देखकर ललचता है। आप ऐसे आदमी को क्या कहेंगे?"

"चौर्योन्मादी", राजा ने निष्कपट भाव से कहा।

"छू के पास पांच हजार वर्ग ली भूभाग है, जबकि सुंग के पास पांच सौ", मो चि ने कहा। "यह खाली गाड़ी की तुलना में भरी गाड़ी के समान है। छू के पास यूनीनमंग कछार है, जहां गेंडा और हिरण भरे हैं; इसके पास छांग-च्यांग और हान नदी हैं, जहां भरपूर मात्रा में मछली, कछुए और मगरमच्छ हैं। कोई दूसरा राज्य इतना समृद्ध नहीं है, जबकि सुंग राज्य में महोख, खरगोश और साधारण मछली की भी कमी है। यह चोकर की तुलना में चावल और मांस के समान है। छू के पास चीड़, काटाल्पा, देवदार और कपूर के बड़े पेड़ हैं, जबकि सुंग राज्य में एक भी बड़ा पेड़ नहीं है। यह छोटे जैकेट की तुलना में ब्रोकेड वस्त्र के समान है। मेरी विनीत राय में महामान्य के अधिकारियों द्वारा सुंग राज्य पर आक्रमण की योजना इसी के बराबर है।"

"इसमें कोई संदेह नहीं!" छू राजा ने सहमति में सिर हिलाते हुए कहा।

"पर चूंकि कुंग शू मेरे लिए युद्ध में उपयोगी सीढ़ियां बना रहे हैं, इसलिए हमें यह तो करना ही होगा।"

"फिर भी आप निश्चित नहीं हो सकते कि आपकी विजय होगी", मो चि ने कहा।

"अगर आपके पास लकड़ी के कुछ टुकड़े हों तो हम परख सकते हैं।"

छू राजा विद्वानों से प्रेम करते थे। उन्होंने तुरंत अपने मंत्रियों को लकड़ी के टुकड़े लाने का आदेश दिया। मो चि ने अपनी कमर से चमड़े की पेटी खोली और उसे धनुष के आकार में मोड़ा। उन्होंने धनुष का घुमावदार हिस्सा कुंगशू पान की तरफ रखा। कल्पना की गई कि कुंग शू पान एक शहर हैं। इसके बाद

उन्होंने लकड़ी के टुकड़ों को दो हिस्सों में बांटा, हर हिस्से में दर्जन से अधिक टुकड़े थे। एक हिस्सा उन्होंने अपने पास रखा और दूसरा हिस्सा कुंगशू पान को दिया। ये उनके आक्रमण और बचाव के हथियार थे।

वे दोनों लकड़ी के टुकड़ों से शतरंज के खेल के समान युद्ध के लिए तैयार हुए। जब एक ने आक्रमण किया तो दूसरे ने बचने की कोशिश की; जब एक पीछे हटा तो दूसरे ने उसका पीछा किया। छू राजा और उनके मंत्रियों की समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था।

अनुमानतः नौ बार आक्रमणकारी और प्रतिरक्षकों ने विभिनन चालें चलने की कोशिश की और उन्होंने देखा कि वे नौ बार आगे बढ़े और पीछे हटे। फिर कुंगशू पान ने हाथ खींच लिए। इसके बाद मो चि ने धनुष की डोरी तनी। यह इसका प्रतीक था कि अब आक्रमण करने की उनकी बारी है। उन्होंने फिर ये व्यूह रचना की, आगे बढ़े और पीछे हटे, पर तीसरी बारी में मो चि के हिस्से का एक टुकड़ा कुंगशू पान के क्षेत्र में जा पहुंचा।

हालांकि छू राजा और उनके मंत्रियों की समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था, मगर अपने टुकड़ों को रखते हुए कुंगशू पान के चेहरे पर झलकी निराशा से उन्होंने समझ लिया कि वे आक्रमण और बचाव दोनों चालों में हार चुके थे।

छू राजा ने भी निराशा की टीम महसूस की।

"मैं आपको हराना जानता हूं", थोड़ी देर के बाद कुंग शू पान ने खीझकर कहा, "किन्तु मैं आपको नहीं बताऊंगा।"

चौंकते हुए राजा ने पूछा, "आपलोग क्या बातें कर रहे हैं?"

"कुंगशू पान मेरी हत्या करने को सोच रहा है", मो चि ने उत्तर दिया। "वह सोचता है कि यदि मेरी हत्या हो गयी तो सुंग राज्य का रक्षक नहीं रहेगा और फिर उस पर अधिकार किया जा सकता है। परंतु छिन ह्वाली और अन्य तीन सौ मेरे शिष्य मेरे बनाए बचाव हथियारों से लैस सुंग की राजधानी में छू राज्य के आक्रमण की प्रतीक्षा कर रहे हैं। मैं मर भी गया तो शहर बचा रहेगा।"

"निश्चित ही अच्छी रणनीति है!" छू राजा ने प्रभावित होकर कहा। "ऐसी स्थिति में मैं सुंग राज्य पर आक्रमण नहीं करुंगा।"

छू राजा को सुंग पर आक्रमण करने से मना करने के बाद मो चि की इच्छा सीधे लू जाने की थी; पर पहले कुंगशू पान के साथ उनके घर उनसे लिए कपड़े लौटाने जाना था। तीसरा पहर हो गया था। भूख से दोनों की हालत खराब थी। स्वाभाविक तौर पर कुंगशू पान ने खाना खाकर जाने के लिए मो चि पर जोर

दिया। दोपहर के भोजन के समय बीत चुका था। उन्होंने जोर दिया कि मो चि रात का खाना यहीं खाएं और रात भी यहां व्यतीत करें।

"नहीं, मुझे आज ही जाना होगा", मो चि ने कहा। "मैं अगले वर्ष फिर आऊंगा और छू राजा के लिए अपनी पुस्तक भी ले आऊंगा।"

"वह पुस्तक तो न्याय के बारे में है न!" कुंगशू पान ने पूछा। "जी-जान से संकट और विपत्ति में फंसे लोगों की सहायता करने की आपकी कोशिश अकुलीनों के लिए बड़ी बात हो सकती है-कुलीनों पर इससे क्या प्रभाव पड़ेगा। देशबंधु, एक बात याद रखें कि वे राजा हैं।"

"इससे क्या फर्क पड़ता है। रेशम, सन, चावल और बाजरा सभी कुछ तो अकुलीन पैदा करते हैं, किन्तु कुलीनों को उनकी जरूरत होती है। इससे तो नयाय की बात और सही सिद्ध होती है।"

"यह सच है।" कुंगशू पान ने उत्साहित होकर कहा। "आपके आने के पूर्व मैं सुंग राज्य को जीतना चाहता था। अब आपसे मिलने के बाद ऐसा लगता है कि यदि यह न्याय के विरूद्ध है तो इससे मुझे खुशी नहीं होगी..."

दोनों बातें कर रहे थे तभी खाना परोसा गया। खाने में मछली और सूअर के व्यंजन और शराब थी। मो चि ने शराब और मछली नहीं ली, केवल थोड़ा सा सूअर का मांस खाया। अकेले पीते हुए कुंगशू पान को थोड़ी झेंप हुई। उन्होंने जब देखा कि मो चि ठीक से नहीं खा रहे हैं तो उनहोंने उनके खाने में कुछ लाल मिर्च डाली।

लाल मिर्च की चटनी और रोटी की तरफ संकेत करते हुए उन्होंने कहा, "जरा इसे खाकर देखें, अच्छा लगेगा। यहां के प्याज अपने राज्य की तरह गूदेदार नहीं होते।"

कुछ और शराब पीने के बाद उनका उत्साह कुछ और बढ़ा।

"समुद्री लड़ाई के लिए मैंने लंगर और भाला का आविष्कार किया है। क्या आपके न्याय में भी लंगर और भाला है?...."

"न्याय का लंगर और भाला तुम्हारे आविष्कार से अच्छा है", मो चि ने जोर देकर कहा "प्रेम से पकड़ता हूं और 'आदर' से निहत्था कर देता हूं। जो प्यार से नहीं पकड़ते, वे दूसरों का स्नेह खो देते हैं। जो आदर से निहत्था नहीं करते, वे असभ्य होते हैं। स्नेहहीन और असभ्य होने का अर्थ लोगों की नजरों में गिर जाना है। परस्पर प्रेम और आदर का फल परस्पर हित है। यदि तुम लंगर से दूसरों पर आक्रमण करते हो और भाले से निहत्था करते हो तो तुम्हें उसका

जवाब भी वैसा ही मिलेगा। लंगर और भाले के प्रयोग का अर्थ परस्पर नुकसान है। इसलिए न्याय के मेरे लंगर और भाले समुद्री लड़ाई के तुम्हारे हथियारों से अच्छे हैं।"

"पर मेरे देशबंधु, न्याय पर जोर देते हुए आपने चावल का मेरा कटोरा तोड़ दिया!" कुंगशू पान ने इस लंबी झिड़की के बाद विषय बदलते हुए कहा। उन्हें हल्का नशा भी हो गया था। पीकर वे संभल नहीं पाते थे।

"सुंग राज्य के सभी कटोरे तोड़ने से यह अच्छा है।"

"तब तो इसका अर्थ यह हुआ कि मैं खिलौने बनाता रहूंगा। आप जरा रुकें, मैं आपको अपनी बनाई एक नई चीज दिखाता हूं।"

वे उछलकर पीछे के कमरे में गए और बक्से से कुछ निकालकर ले आए। उनके हाथ में लकड़ी और बांस से बनी एक मुटरी थी। मो चि को मुटरी देते हुए उन्होंने कहा,

"चाभी भरने के बाद यह तीन दिन तक उड़ता रहेगा। यह बहुत ही बढ़िया है।"

"बढ़ई के बनाए पहिए से अधिक नहीं" लापरवाही से देखने के बाद मो चि ने मुटरी को चटाई पर रख दिया। "बढ़ई के तराशने के बाद तीन इंच मोटी लकड़ी 7500 किलोग्राम भार ढो सकती है। जिससे मनुष्य को फायदा हो, वह उत्तम और श्रेष्ठ है; जिससे फायदा न हो वह फूहड़ और गंदा है।"

"ओह, मैं भूल ही गया था।" दूसरी झिड़की सुनने पर कुंगशू पान ने कहा। "मुझे आपकी प्रतिक्रिया पहले ही समझ लेनी चाहिए थी।"

"इसलिए न्याय पर टिके रहो", मो चि ने उनकी आंखों में देखते हुए स्पष्ट शब्दों में कहा। "इससे न केवल तुम श्रेष्ठ समझे जाओगे, बल्कि पूरा विश्व भी तुम्हारा होगा। ठीक है, मैंने तुम्हारा बहुत समय लिया। अब चलता हूं, अगले वर्ष फिर मिलूंगा।"

यह कहने के साथ ही उन्होंने अपनी गठरी उठाई और चलने को तैयार हो गए। कुंग शू पान अच्छी तरह जानते थे कि ये रोकने से नहीं रुकेंगे, इसलिए उन्हें जाने दिया। मो चि को द्वार से बाहर छोड़ने के बाद वे अपने कमरे में लौटे। थोड़ी देर सोचने के बाद उन्होंने विलक्षण सीढ़ी और मुटरी के नमूने पीछे के कमरे में रखे संदूक में ले जाकर रख दिये।

मो चि वापसी में बहुत धीरे-धीरे चल रहे थे। एक तो वे थके हुए थे; दूसरे, उनके पांव घायल थे; तीसरे, उनके पास खाने के लिए कुछ नहीं बचा था और

वे भूखे थे; चौथे, अपने कार्य की सफलता के बाद उन्हें कोई जल्दबाजी नहीं थी। पर इस बार वे अधिक दुर्भाग्यशाली सिद्ध हुए। सुंग राज्य की सीमा पर उनकी दो बार तलाशी ली गई, राजधानी के पास उन्हें राष्ट्रीय बचाव कलक्टर[1] मिले उन्होंने उनकी फटी-पुरानी गठरी ले ली। दक्षिण द्वार से बाहर निकलने पर तूफान आ गया और जब उन्होंने नगर द्वार के नीचे शरण लेनी चाही तो भालों से लैस दो चौकीदारों ने उन्हें भगा दिया। भीगने और भीषण ठंड सहने के कारण दस दिनों तक उनकी नाक बंद रही।

अगस्त, 1934

1. यह उस समय की क्वोमिनतांग सरकार के रवैये की ओर संकेत करता है। जापानी आक्रमणकारियों का प्रतिरोध करने के बजाए लोगों को धोखा देने और लूटने के लिए क्वोमिनतांग ने 'लोक संगठन' गठित किये थे।

पुनर्जीवन

एक बंजर इलाका। इधर-उधर टीले हैं। किसी भी टीले की ऊंचाई छः-सात फीट से अधिक नहीं है। एक भी पेड़ नहीं है। हर तरफ जंगली घास उगी हुई है। मनुष्य और घोड़ों के चलने से एक पगडंडी बन गई है। पगडंडी के पास ही एक तालाब है। कुछ दूरी पर मकान दिखाई पड़ रहे हैं।

च्यांङ चि का प्रवेश : पतला और सांवला चेहरा। सफेद दाढ़ी। उसने ताओ टोपी और गाउन पहन रखा है और हाथ में एक सोटा है।

च्यांङ चि : घर से निकलने के बाद से मुझे पीने के लिए कुछ नहीं मिला। ओफ्फ प्यासा, असहनीय प्यास अच्छा होगा कि मैं तितली बन जाऊं! पर यहां फूल भी तो नहीं हैं... अरे यह तो तालाब है। कैसा सौभाग्य है। (वह दौड़कर तालाब के पास जाता है, सतह पर जमी कसपत हटाकर अंजुलि से पानीपीता है। वह लगभग दस घूंट पानी पीता है।) हां, अब जान में जान आई। अब मुझे धीरे-धीरे चलना चाहिए। (वह इधर-उधर देखता हुआ आगे बढ़ता है)। अरे, एक खोपड़ी! खोपड़ी कहां से आ गई? (वह सोटे से घास हटाकर खोपड़ी उठाता है।) क्या लालच, कायरता और धर्म के प्रति अनादर से तुम्हारी यह दशा हुई? (च...च्व) क्या पद खोने और उसके बाद सिर कलम होने से तुम्हारी यह हालत हुई? या फिर तुम इतने लज्जित थे कि अपने मां-बाप, पत्नी और बच्चों को मुंह नहीं दिखा सके?(च..च्व) क्या तुम्हें नहीं मालूम कि आत्महत्या कायरों का काम है? (च...च्व...च) या फिर भोजन और कपड़े की कमी से तुम्हारी यह दशा हुई?

(च...च्व) या फिर...? ओह...मैं भी कैसी मूर्खता कर रहा हूँ! भला यह खोपड़ी कैसे जवाब देगी? सौभाग्य से छू राज्य भी अब ज्यादा दूर नहीं है, जल्दबाजी की जरूरत नहीं है। मैं भाग्य देवता से इसका पुराना रूप वापस देने को कहूंगा, रक्त-मांस से पूर्ण जीवित शरीर। उसके घर लौटने के पहले, अपने परिजनों के बीच लौटने के पहले, मैं उससे कुछ बातें कर सकूंगा (वह अपना सोटा जमीन पर रख देता है और पूर्व दिशा में मुंह कर अपने हाथ आकाश की तरफ उठाता है और पूर्व दिशा में चिल्लाता है) हे, भाग्य के देवता, मैं भूरी श्रद्धा के साथ आपको नमन करता हूं। (आकाश में अंधेरा छा जाता है और हवा चलने लगती है। बिखरे बालों और गंजे, दुबले और मोटे, स्त्री और पुरुष, युवा और वृद्ध भूतों की टोली प्रकट होती है।)

भूत : च्वांङ चओ! जन्मजात मूर्ख! तुम्हारी दाढ़ी सफेद हो गई, पर अभी तक बुद्धि नहीं आई! मृत्यु समय और व्यक्ति से निरपेक्ष है। शून्य ही समय है। सम्राट तक को पूरा चैन नहीं है। जिससे तुम्हारा मतलब नहीं, उसमें हस्तक्षेप मत करो, जल्दी से छू राज्य को जाओ और अपना कार्य पूरा करो.

च्वाङ चि : तुम बड़े जड़बुद्धि हो। मर गए, लेकिन बुद्धि नहीं आई। क्या तुम्हें मालूम नहीं की जीवन मृत्यु है और मृत्यु जीवन, कि गुलाम मालिक हैं? मैं जीवन के स्रोत का जिज्ञासु हूं, मैं तुमसे प्रभावित नहीं होने वाला।

भूत : ठीक है फिर, हम तुम्हें अभी अपना कमाल दिखाते हैं!

च्यांङ चि : मेरे साथ छू राजा का आदेश है, मैं तुम्हारी बंदरघुड़की से नहीं डरता, सुन लो शैतान के बच्चो। (वह फिर से आकाश की तरफ अपने हाथ उठाता है और पूरी ताकत से चिल्लाता है।) भाग्य देवता, मैं पूरी श्रद्धा के साथ आपको नम करता हूं।

आकाश नीला, पीली है धरती

विश्व है अव्यवस्था की बंजर भूमि;
सूर्य और चंद्रमा हैं उगते और डूबते
नक्षत्र अपनी जगह व्यवस्थित हैं रहते।
चाओ, छ्येन, सुन, ली,
चओ, ऊ, चंग, वांग
फंग, छन, छू, वेइ,
च्यांग, शन, हान, यांग।[1]
ताओ धर्मगुरु के आदेश से आओ! यहां आओ!
(आकाश साफ हो जाता है और हवा चलने लगती है। पूर्व दिशा में भाग्य देवता की अस्पष्ट आकृति उभरती है। उनका चेहरा काला और पतला है। चेहरे पर उलझी दाढ़ी है और उनके हाथ में एक चाबुक है। भूत अंतर्धान हो जाते हैं।)

भाग्य : च्यांग चओ, क्या बात हो गई कि तुमने मुझे बुलाया? अपनी प्यास बुझाने के बाद भी तुम अपने भाग्य से संतुष्ट नहीं रह सकते क्या?

च्यांग चि : मैं तो छू राजा से मिलने जा रहा हूं। यहां से गुजरते समय मुझे एक खोपड़ी दिखाई पड़ी। वह खोपड़ी अभी तक सिर के समान लग रही है। इस गरीब आदमी के मां-बाप होंगे, पत्नी-बच्चे होंगे, और यह यहां मर गया। दुख की बात है। हे भगवान, मैं आपस से विनती करता हूं कि आप उसे उसका रूप वापस दे दें, उसे जीवन दे दें। वह अपने घर लौट सके।

भाग्य : हा, हा। तुम मेरे साथ ईमानदारी से पेश नहीं आ रहे हो। पेट भरने के पहले ही तुम ऐसी बातों में उलझ जाते हो, जिनका तुमसे कोई वास्ता नहीं। तुम कभी भी पूर्ण गंभीर या पूर्ण अगंभीर नहीं रहते। मैं तुम्हें सलाह देता हूं कि तुम मुझे तंग करना बंद कर दो और अपने रास्ते जाओ। याद रखो कि 'भाग्य जीवन और मृत्यु निर्धारित करता है'

1. प्रथम चार पंक्तियां "सहस्र रेखाक्षर" और आखिरी चार पंक्तियाँ "एक सौ नाम" पुस्तक की हैं। यह ताओ मंत्र नहीं है।

और मैं कोई भी काम सोच-समझकर करता हूं।

च्यांङ चि : हे भगवान! आप असत्य बोल रहे हैं। वास्तव में जीवन और मृत्यु जैसी कोई चीज नहीं होती। एक बार मैंने सपना देखा कि मैं तितली हो गया हूं। तितली बनकर इध र-उधर मंडरा रहा हूं। पर जगने के बाद मैंने पाया कि मैं च्वांग चओ ही हूं, अत्यंत व्यस्त च्वांग चओ। आज तक मैं निश्चित नहीं कर पाया कि च्वांग चओ ने अपने तितली होने का सपना देखा था या तितली ने स्वयं को च्वांग चओ के रूप में देखा था। ठीक इसी तरह हम कैसे कह सकते हैं कि यह खोपड़ी अभी तक जीवित है या नहीं या जिसे जीवन की वापसी कहते हैं, वह वास्तव में मृत्यु नहीं है? मेरी आशा है भगवान कि आप इस बार अवश्य ही मुझे अनुगृहीत करेंगे। चूंकि मनुष्य को उदार होना पड़ता है, इसलिए भगवान को भी असभ्य नहीं होना चाहिए।

भाग्य (मुस्कराते हुए): तुम ऐसे लोगों में हो जो बोलते तो हैं पर करते नहीं। तुम मनुष्य हो, भगवान नहीं हो... ठीक है, मैं तुम्हें दिखाता हूं।
(भाग्य देवता अपनी चाबुक से झाड़ी की तरफ संकेत करते हैं और तत्क्षण स्वयं गायब भी हो जाते हैं। झाड़ी के पास तेज लपट उठती है और एक आदमी अपने पांवों पर खड़ा होता है। वह तीस वर्ष के लगभग का है। वह लंबा है और उसका चेहरा लाल है। वह देखने में किसान लगता है। वह ऊपर से नीचे तक नंगा है। अपनी आंखें मलने के बाद जब वह सामने देखता है तो उसकी नजर च्वांग चि पर पड़ती है।)

आदमी : ह... ह?

च्वांङ चि : ह... ह....? (आदमी को निकट से देखने के लिए वह मुस्कराते हुए आगे बढ़ता है।) तुम्हारे साथ क्या हुआ?

आदमी : ओह मैं सो गया था। तुम्हारे साथ क्या हुआ? (वह अपने आसपास देखता है और फिर अचानक चिल्लाता है।)

मेरी गठरी कहां गई? मेरा छाता कहां गया? (वह स्वयं को देखता है।) ऐ, मेरे कपड़े कहां हैं? (वह सिकुड़कर बैठ जाता है।)

च्वांड चि : परेशान मत हो! शांत रहो! तुम्हें अभी-अभी जीवन मिला है। तुम्हारे कपड़े सड़ रहे होंगे या कोई उन्हें उठा ले गया होगा?

आदमी : क्या कह रहे हो?

च्वांड चि : क्या नाम है तुम्हारा? तुम कहां के रहने वाले हो?

आदमी : मैं यांग च्या गांव का बड़ा यांग हूं। मेरे शिक्षक ने मेरा नाम पीकुंग रखा था।

च्वांड चि : तुम यहां क्या कर रहे थे?

आदमी : मैं अपने रिश्तेदारों से मिलने जा रहा हूं। मुझे यहां नहीं सोना चाहिए था। (चिंतित स्वर में) पर मेरे कपड़े? मेरी गठरी? मेरा छाता?

च्यांग चि : परेशान मत हो! शांत रहो! तुम किस काल के व्यक्ति हो?

आदमी (आश्चर्य की मुद्रा में) : क्या? काल? मेरी समझ में नहीं आया... मेरे कपड़े कहां हैं?....

च्वांड चि : सचमुच, तुम बड़े मूर्ख हो। तुम जीवित रहने के योग्य नहीं हो। तुम्हें कुछ और नहीं, सिर्फ अपने कपड़ों की चिंता है, अहंवादी? अपनी पहचान बताए बिना तुम्हें कपड़ों की चिंता लगी है? इसलिए तो मैं पूछ रहा हूं कि तुम किस काल के हो, खैर छोड़ो, तुम नहीं समझ सकते (कुछ सोचकर) हां, यह बताओ, तुम जब अपने गांव में रहते थे, उस समय क्या घटनाएं घटी थीं?

आदमी : घटनाएँ? बहुत सारी। कल ही तो दूसरी भाभी की सातवीं दादी से लड़ाई हुई थी।

च्वांड चि : मैं इसे घटना नहीं मानता!

आदमी : तुम नहीं मानते? इसे घटना नहीं मानते.... तो फिर पुत्रोचित निष्ठा के लिए यांग श्याओसान का मरणोपरांत सम्मान किया गया।....

च्वांड चि : हां, यह कोई घटना जैसी बात हुई.... हालांकि, अभी भी ठीक-ठीक बताना मुश्किल होगा कि यह बात कब हुई थी? (कुछ सोचकर) क्या कोई इससे महत्वपूर्ण घटना नहीं घटी थी, ऐसी घटना, जिससे पूरे इलाके में खलबली मच गई हो?

आदमी : पूरे इलाके में खलबली मच गई हो?... (वह सोचता है) हां, हुई थी न! तीन या चार महीने पहले की बात है, हिरन मीनार की[1] नींव के लिए वे बच्चों की बलि देना चाहते थे, उस समय पूरे गांव में खलबली मच गई थी। जल्दी ही सभी बच्चों के पहनने के लिए तावीज बनाई गई थी....

च्वांड चि (चौंककर) : हिरन मीनार? तुमने क्या समय बताया?

आदमी : उन्होंने तीन या चार महीने पहले इसे बनाना शुरू किया था।

च्वांड चि : तो इसका मतलब तुम चवू राजा के काल में मरे? अद्भुत तुम्हें मरे पांच सौ साल से भी अधिक हो गए।

आदमी (कुछ गुस्से में) : हम अभी-अभी तो मिले हैं, महोदय! ठीक है, आपको ऐसा मजाक नहीं करना चाहिए। मैंने तो बस झपकी भर ली और आप पांच सौ साल पहले मरने की बात कर रहे हैं? जल्दी करो और मेरे कपड़े दो, मेरी गठरी और मेरा छाता वापस करो। मेरे पास मजाक के लिए समय नहीं है।

च्वांड चि : ठहरो! मुझे सोचने दो! तुम्हें नींद कैसे आ गई?

आदमी : मुझे नींद कैसे आ गई? (सोचकर) आज सुबह मैं इस जगह पर चला आया, मेरे सिर पर किसी ने डंडे से प्रहार किया। आंखों के आगे अंधेरा छा गया और फिर मैं शायद बेहोश हो गया।

च्वांड चि : क्या तुम्हें दर्द हो रहा था?

आदमी : नहीं, मुझे याद नहीं।

च्वांड चि : हूं.... (सोचकर) हां... मेरी समझ में आ गया। शांड

1. वह जगह जहां शांड राजवंश के निरंकुश शासक ने आत्महत्या की थी।

राजवंश के चवू राजा के शासनकाल में तुम इस रास्ते से अकेले जा रहे होगे और किसी बटमार ने तुम पर पीछे से आक्रमण किया होगा। तुम्हारी हत्या करने के बाद वह तुम्हारे सामान ले गया होगा। पांच सौ वर्ष बीत गए, अब चओ राजवंश है। तुम अपने कपड़े पाने की उम्मीद कैसे कर रहे हो? तुम्हारी समझ में कुछ आया कि नहीं।

आदमी (च्वांङ चि को घूरकर) : नहीं, मेरी समझ में नहीं आया। मुझे मूर्ख मत बनाओ, मेरे कपड़े दो, मेरी गठरी और छाता वापस करो। मैं एक प्रतिष्ठित व्यक्ति हूं और अपने रिश्तेदारों से मिलने जा रहा हूं। मेरे पास मजाक के लिए समय नहीं है।

च्वांङ चि : एक आदमी कितना बेवकूफ हो सकता है!.....

आदमी : कौन बेवकूफ है? मेरा सामान खो गया और मैंने तुम्हें यहां पाया। यदि तुमने नहीं लिया तो फिर किसने लिया? (वह खड़ा होता है)।

च्वांङ चि (परेशान होकर) : मेरी बात सुनो। तुम यहां एक खोपड़ी के रूप में पड़े थे, मैं तुम पर दया खाकर भाग्य के देवता से प्रार्थना की और तुम्हें जीवित करवाया। अपने बारे में सोचो। इतने वर्षों तक मरे रहने के बाद तुम्हारे कपड़े कैसे बच सकते हैं? मैं कृतज्ञता के लिए नहीं कह रहा हूं, पर बैठो और सोचकर बताओ कि चवू राजा के समय किस प्रकार के कपड़े होते थे.....।

आदमी : तुम बेसिर पैर की बात कर रहे हो। तुम्हारी बात पर तो तीन साल का बच्चा भी विश्वास नहीं करेगा, मैं तो तैंतीस साल का हूं। (वह उसकी तरफ बढ़ता है।) तुम.. .....

च्वांङ चि : मैं तुम्हें कह रहा हूं, मेरे पास शक्ति है। तुमने छियूवान के च्वांङ चओ के बारे में अवश्य सुना होगा?

आदमी : नहीं, कभी नहीं सुना। और अगर तुम्हारे पास शक्ति भी है तो इसका क्या फायदा? बिना कपड़े के जीवित होने का क्या उपयोग है? क्या मैं इस अवस्था में रिश्तेदारों के

पास जा सकता हूं? मेरी गठरी खो गई .... (वह च्वांङ कि बांह पकड़कर सिसकने लगता है।) मैं तुम्हारे एक शब्द पर भी विश्वास नहीं करता। यहां केवल तुम्हीं हो। तुम मेरा सामान वापस कर दो। तुम्हें वापस करना होगा, वरना मैं तुम्हें गांव के प्रधान के पास ले जाऊंगा।

च्वांङ चि : ठहरो। मेरे कपड़े पुराने और कमजोर हैं, इन्हें ऐसे मत खींचो। मैं एक सलाह देता हूं, कपड़ों का मोह छोड़ दो। कपड़े अनिवार्य नहीं है। कभी कपड़े पहनना सही है और कभी नहीं। पक्षियों के पंख होते हैं और जानवरों के रोएं, जबकि बैंगन और ककड़ी बिलकुल नंगे होते हैं। इसलिए तो हम कहते हैं, "यह बात सही हो सकती है, पर इसकी उल्टी बात भी, संभव है, गलत न हो।" तुम यह नहीं कह सकते कि कभी भी कपड़े नहीं पहनना सही है; तुम यह भी नहीं कह सकते कि हमेशा कपड़े पहनना सही है!... ..

आदमी (गुस्से में) : बेवकूफ मत बनाओ। मेरा सामान वापस करो या फिर मैं तुम्हें बताता हूं। (वह घूंसा तानकर बढ़ता है और च्वांग चि को पकड़ता है।)

च्वांङचि (खुद को छुड़ाते हुए) : तुम्हारी ऐसी हिम्मत! यदि तुम मुझे नहीं जाने दोगे तो भाग्य के देवता से तुम्हारी मृत्यु की प्रार्थना करूंगा।

आदमी (ठंडी हंसी के साथ पीछे हटते हुए) : ठीक है। या तो मेरी पुनः हत्या कर दो या मेरे कपड़े वापस दो। मेरी गठरी और छाता लौटा दो। उस गठरी में बावन सिक्के, एक किलोग्राम चीनी और दो किलोग्राम सूखे खजूर थे.....

च्वांङ चि (गंभीरता के साथ) : तुम निश्चत हो, तुम्हें अफसोस नहीं होगा?

आदमी : तुम्हें क्या लगता है?

च्वांङ चि (निश्चयात्मक मुद्रा में) : ठीक है फिर! तुम ऐसे मूर्ख हो कि हम तुम्हें तुम्हारे पूर्व रूप में परिवर्तित कर देते हैं। (वह पूर्व दिशा में मुंह कर अपने हाथ आकाश की तरफ उठाता है और तेज आवाज में चिल्लाता है।) भाग्य के महान देवता, मैं

पूरी श्रद्धा से आपको नमन करता हूं!
आकाश नीला है, पीली है धरती
विश्व है अव्यवस्था की बंजर भूमि;
सूर्य और चंद्रमा हैं उगते और डूबते
नक्षत्र अपनी जगह व्यवस्थित हैं रहते।
चाओ, छ्येन, सुन, ली,
चओ, ऊ, चंग, वांङ,
फंग, छन, छू, वेइ,
च्यांग, शन, हान यांङ।
ताओ धर्मगुरु के आदेश से आओ! यहां आओ!
(देर तक सन्नाटा छाया रहता है। कुछ भी नहीं होता।)
आकाश नीला है, पीली है धरती!
ताओ धर्मगुरु के आदेश से आओ! यहां आओ!
(देर तक सन्नाटा छाया रहता है। कुछ भी नहीं होता।)
(च्यांङ चि चारों तरफ देखता है और फिर धीरे-धीरे अपने हाथ नीचे करता है।)

आदमी : मैं मरा या नहीं?

च्यांङ चि (घबराकर) : मेरी समझ में नहीं आ रहा, क्यों इस बार मेरा प्रयास विफल रहा....

आदमी (आगे बढ़कर) : बहुत हो गया। अब बकवास बंद करो। मेरे कपड़े वापस करो।

च्यांङ चि (पीछे हटकर) : मुझे हाथ लगाने की हिम्मत न करना, जंगली! तुम दर्शन के बारे में क्या जानते हो?

आदमी (उसे पकड़कर) : चोर! लुटेरे! मैं तुम्हारा ताओ थोला फाड़ दूंगा और मुआवजे के तौर पर तुम्हारा घोड़ा ले जाऊंगा....
(च्यांङ चि स्वयं को उससे बचाकर अपनी बांह से एक सीटी निकालता है और उसे तीन बार बजाता है। वह आदमी चौंक कर ठहर जाता है। अगले क्षण एक सिपाही प्रकट होता है।)

सिपाही (दौड़ते हुए आवाज देता है) : उसे रोको/ उसे मत जाने दो!.... (वह जब सामने आता है, तब पूरी तरह से दिखता है। वह लू भूमि

का लंबा और मजबूत कद-काठी का आदमी है। उसने वर्दी और टोपी पहन रखी है। उसके हाथ में एक सिपाहियों वाली बेंत है। उसका चेहरा चिकना और लाल है।) उसे रोको! दोगला है!

आदमी (च्यांङ चि को फिर से पकड़ता है) : उसे रोको! दोगला है! .....
(सिपाही दौड़कर च्यांग चि का कालर पकड़ता है और अपनी बेंत उठाता है। वह आदमी उसे छोड़कर आगे चला जाता है और अपनी नग्नता छिपाने की कोशिश करता है।)

च्यांङ चि (बेंत पकड़कर अपना सिर तिरछा करता है) : यह क्या तरीका है?

सिपाही : क्या तरीका है? लगता है तुम्हें मालूम ही नहीं है!

च्यांङ चि (क्रोधित होकर) : एक तो मैंने तुम्हें बुलाया और तुम आकर मुझे ही पकड़ रहे हो?

सिपाही : क्या?

च्यांङ चि : सीटी तो मैंने बजाई थी....

सिपाही : तुम्हारा मतलब कि तुमने कपड़े चुराए और फिर सीटी बजाई, अजीब मूर्ख हो?

च्यांङ चि : मैं यहां से गुजर रहा था, मैंने इस आदमी को यहां मरा देखा और इसे जीवन दिलवाया। जीवित होने के बाद इसने मुझे पकड़ लिया और मुझ पर कपड़े चुराने का अभियोग लगा रहा है। क्या मैं चोर लगता हूं?

सिपाही (बेंच नीचे करता है) : यह बताना मुश्किल है। "हमें तो आदमी का दिल नहीं, आदमी का चेहरा दिखाई पड़ता है।" तुम मेरे साथ थाने चलो।

च्यांङ चि : मैं नहीं जा सकता। मुझे छू राजा से मिलने जाना है-मुझे चलना चाहिए।

सिपाही (चौंककर ध्यान से च्यांङ चि का चेहरा देखता है) : क्या, आप च्यांङ हैं?

च्यांङ चि (खुश होकर) : हां, मैं छियूवान का च्यांङ चओ हूं। तुम्हें कैसे पता चला?

च्यांङ चि : हमारे अधीक्षक हाल ही में आपके बारे में ढेर सारी बातें बता रहे थे। वे कह रहे थे कि आप छू राजा के पास

अपना भाग्य आजमाने जा रहे हैं और शायद इस मार्ग से गुजरें। हमारे अधीक्षक भी एकान्तवासी हैं, यह नौकरी तो शौकिया तौर पर कर रहे हैं। वे आपके प्रशंसक हैं। उन्होंने "चीजों की समानता के बारे में" पढ़ा है। अब जैसे, "अब जीवन है, तब मृत्यु है; जहां मृत्यु है, वहां जीवन है। जो संभव है, वह असंभव है और जो असंभव है, वह संभव है।' क्या बात कही है। ऊंचे दर्जे की बात है। क्यों नहीं आप मेरे साथ चलकर हमारे दफ्तर में थोड़ी देर आराम कर लें?

(वह आदमी नाराज होकर झाड़ी में घुसता है और वहां बैठ जाता है।)

च्वांङ चि : देर हो चुकी है और मुझे चलना चाहिए। मैं समय नहीं निकाल सकता। वापसी के समय मैं तुम्हारे आदरणीय अधीक्षक से मिलूंगा।

(च्वांग चि यह कहते हुए आगे बढ़कर अपने घोड़े पर बैठ जाते हैं। उनके चाबुक उठाने के पहले ही वह आदमी झाड़ी से निकलकर घोड़े की लगाम पकड़ लेता है। सिपाही पीछे से आकर उस आदमी की बांह पकड़ लेता है।)

च्वांङ चि : तुम अभी भी मुझे परेशान क्यों कर रहे हो?

आदमी : तुम मेरा सामान लेकर जा रहे हो। मैं क्या करूंगा? (सिपाही से) आप ही बताएं हवलदार साहब....

सिपाही : (अपने कान पीछे खुजलाकर) : यह मुश्किल है, मैं स्वीकार करता हूं. . क्यों, महोदय.... मुझे लगता है (वह च्वांङ चि को देखता है) चूंकि आपने दो-दो कपड़े पहन रखे हैं, क्यों नहीं आप इसे एक दे देते कि यह अपनी नग्नता ढक सके?

च्वांङ चि : मुझे यह करने में खुशी होगी, क्योंकि इन कपड़ों पर मेरा नाम नहीं लिखा है, पर मैं छू राजा से मिलने जा रहा हूं। मैं गाउन के बिना दरबार में नहीं जा सकता। और मैं कमीज दे दूं, यह भी नहीं हो सकता, क्योंकि केवल गाउन

नहीं पहना जा सकता।....

सिपाही : सही कह रहे हैं। आपके लिए दोनों ही जरूरी है। (उस आदमी से) तुम चलो, फुटो यहां से।

आदमी : मैं अपने रिश्तेदारों से मिलने जा रहा हूं....

सिपाही : चुप करो! अब अगर अधिक परेशान किया तो सीधे थाने ले जाऊंगा। (वह अपनी बेंत उठाता है।) चलो, दफा हो जाओ। (वह आदमी पीछे हटता है। सिपाही उसके पीछे-पीछे घास में जाता है।)

च्वांङ चि : अच्छा, अलविदा!

सिपाही : अलविदा! आपकी यात्रा शुभ हो।

(अपना चाबुक चलाकर च्वांङ चि घोड़े को भगाते हैं। सिपाही दोनों हाथ पीछे किए उन्हें जाते हुए देखता है, च्वांङ चि दूर जाकर धूल के बादल में विलुप्त हो जाते हैं। इसके बाद वह जिधर से आया था, उस दिशा में लौटता है।)

(वह आदमी अचानक झाड़ी से निकलता है और सिपाही की वर्दी पकड़ लेता है।)

सिपाही : क्या विचार है?

आदमी : मैं क्या करूं?

सिपाही : मुझे क्या मालूम?

आदमी : मैं रिश्तेदार से मिलना चाहता हूं....

सिपाही : तो फिर जाओ और मिलो।

आदमी : मेरे पास कपड़े नहीं है।

सिपाही : क्या रिश्तेदारों से मिलने के लिए कपड़ों का होना जरूरी है?

आदमी : तुमने उसे जाने दिया, अब तुम भी जाना चाहते हो। लेकिन मैं तुम्हें ही दोष दूंगा, अब तुम्हारी ही जिम्मेदारी है। अब मैं और किसके पास जाऊं? मैं इस तरह तो नहीं रह सकता न? मेरा जीवित रहना भी बेकार है।

सिपाही : मैं तुम्हें चेतावनी देता हूं, आत्महत्या करना कायरों का काम है।

आदमी : तो फिर कोई रास्ता निकालो।

सिपाही (हाथ छुड़ाकर) : मैं कुछ भी नहीं कर सकता।

आदमी (फिर से उसकी बांह पकड़ता है) : फिर मुझे थाने ले चलो।

सिपाही (हाथ छुड़ाकर) : असंभव। मैं तुम्हें इस नग्नावस्था में शहर की गलियों से नहीं ले जा सकता। चलो, दफा हो जाओ।

आदमी : तो फिर मुझे एक पैंट दो!

सिपाही : मेरे पास यही एक पैंट है। यदि यह मैं तुम्हें दे दूं तो मेरी शालीनता खत्म हो जाएगी। (वह स्वयं को छुड़ाता है।) परेशान मत करो। चलो, दफा हो जाओ।

आदमी (उसकी गर्दन पकड़कर) : फिर तो मैं तुम्हारे साथ ही चलूंगा।

सिपाही (परेशान मुद्रा में) : असंभव।

आदमी : तो फिर तुम भी नहीं जा सकते।

सिपाही : तुम क्या करोगे? क्या चाहते हो?

आदमी : तुम मुझे थाने ले चलो, बस! मैं यही चाहता हूं।

सिपाही : रहने भी दो! क्या फायदा है, परेशान मत करो। दफा हो जाओ।

आदमी : वर्ना.... (वह पूरी ताकत से स्वयं को छुड़ाता है।)

आदमी (उसे और मजबूती से पकड़कर) : वर्ना मैं रिश्तेदारों के सामने नहीं जा सकता। मैं आदमी की श्रेणी में नहीं रह सकूंगा। दो किलोग्राम सूखे खजूर, एक किलोग्राम चीनी... तुमने उसे जाने दिया... अब तो मैं तुमसे हिसाब करूंगा.....

सिपाही (छुड़ाने की कोशिश करता है) : बंद करो तमाशा! चलो दफा हो जाओ। .... वर्ना.... वर्ना (वह जोर से सीटी बजाता है।)

दिसंबर, 1935

❐

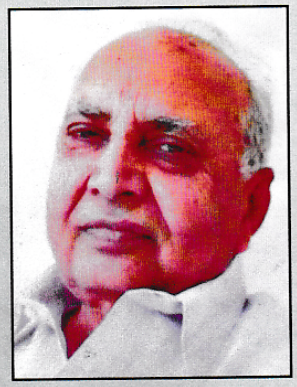

फणीश सिंह

जन्म 15 अगस्त 1941 को ग्राम नरेन्द्रपुर जिला सिवान (बिहार) में। 15 वर्ष की आयु में प्रयाग हिन्दी साहित्य सम्मेलन से 'विशारद' की परीक्षा उत्तीर्ण की। एम.ए. तथा बी. एल. करने के पश्चात अगस्त 1967 में पटना उच्च न्यायालय में वकालत आरंभ की। छात्र जीवन से ही हिंदी साहित्य से अनुराग। इनके लेख और यात्रा संस्मरण विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। 1983 में मास्को और 1986 में कोपेनहेगन विश्व-शान्ति सम्मेलन में शामिल हुए। भारत-सोवियत मैत्री संघ के प्रतिनिधि के रूप में तत्कालीन सोवियत संघ की पाँच बार यात्रा की। 2006 में ऐप्सो के सात सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल के साथ चीन की यात्रा की। वे अब तक छः महाद्विपों के 75 देशों की यात्रा कर चुके हैं। हाल में इन्होंने दक्षिण पूर्व एशिया पर अपने भ्रमण के पश्चात एक रोचक पुस्तक की रचना की है। गोर्की और प्रेमचंद के कृतित्व एवं जीवन दृष्टिकोणों की सादृष्यता पर शोध कार्य की प्रेरणा ली और इस विषय में पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। हिन्दी साहित्य एवं अन्य सामाजिक विषयों पर इनकी 20 रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी है। भारतीय सांस्कृतिक संबद्ध परिषद के सलाहकार समिति के सदस्य। ऐप्सो के बिहार राज्य परिषद के महासचिव। राज्य के अनेक सांस्कृतिक संस्थाओं के पदाधिकारी। कौमी एकता संदेश के संपादक।

अभिधा प्रकाशन
E-mail : abhidhapublication@gmail.com
Mob. : 08092037270

ISBN 978-93-87533-70-7